राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग द्वारा गोवा में आयोजित पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में कंप्यूटर प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ।

राजभाषा विभाग द्वारा गोवा में आयोजित पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
–निराला

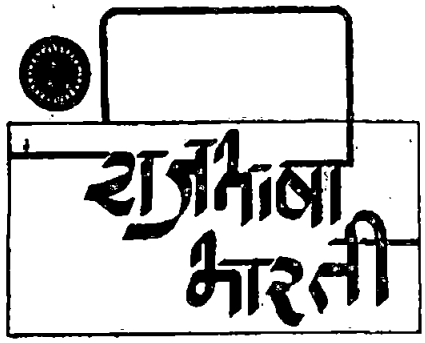

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 30

अंक : 120

जनवरी–मार्च, 2008

❑ संपादक :
बिजय चंद्र मंडल
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24619521

❑ सहायक संपादन :
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054

❑ निःशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

ईमेल–ru-ol@mha.nic.in
patrika—ol@mha.nic.in
पोर्टल–www.rajbhasha.gov..in.

विषय-सूची

		पृष्ठ
❑ संपादकीय		(iii)
❑ चिंतन		
1. हिंदी भाषा की मानकता	–डॉ. बैजनाथ प्रसाद	1
2. बाजार में हिंदी	–हरिनारायण ठाकुर	6
3. राष्ट्रीय चेतना में तमिल और हिंदी का योगदान–एक तुलना	–डॉ. एम. शेषन	15
4. पारिभाषक शब्दावली का प्रयोग बनाम अनुवाद की दुरूहता	–अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी	23
❑ साहित्यिकी		
5. हिंदी-पंजाबी संबंध: ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन परिप्रेक्ष्य	–नीलम शर्मा 'अंशु'	27
6. हिंदी लोक नाटकों का मंचीय लेखन	–डॉ. मुकुल चंद पांडेय	29
❑ पुरानी यादें –नए परिप्रेक्ष्य		
7. प्रगतिशील काव्यांदोलन के सशक्त स्तंभ: डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	–ओम प्रकाश द्विवेदी	31
8. हरिवंश राय बच्चन : संरचना एवं प्रयोग	–दयानाथ लाल	36
❑ विश्व हिंदी दर्शन		
9. विश्व पटल पर हिंदी की दशा और दिशा	–डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव	40
❑ पर्यावरण		
10. शहरों में बढ़ता यातायात–जनित प्रदूषण	–संजय चौधरी	43
❑ विविध		
11. सतर्कता जागरुकता का प्रसार-भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम	–प्रेम कुमार	48

विषय-सूची	पृष्ठ

- **राजभाषा संबंधी गतिविधियां :**
  - (क) राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 52
  - (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 58
  - (ग) कार्यशालाएं 65
  - (घ) हिंदी दिवस 74
- **हिंदी के बढ़ते चरण** 85
- **संगोष्ठी/सम्मेलन** 88
- **पुरस्कार/प्रतियोगिताएं** 95
- **प्रशिक्षण** 100
- **विविध** 111
- **पाठकों के पत्र** 113

संपादकीय

भाषा और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है।साहित्य के माध्यम से लेखक अपनी भावनाओं, जिज्ञासाओं, समाज के जीवन विषयों का निरूपण जनता की भाषा में करते हुए जन-चेतना को उत्साहित, उद्वेलित और अनुशासित भी करता है । भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है । किसी भाषा के द्वारा ही हम एक-दूसरे से करीब आते हैं और संपर्क स्थापित करते हैं । प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है जिसकी झलक उस राष्ट्र की सरल, सुबोध व परिमार्जित भाषा से परिलक्षित होती है । राष्ट्र की एकता को और भी दृढ़ बनाने के लिए एक सार्वभौम भाषा की जरूरत होती है । वही भाषा "राजभाषा" कहलाती है जिस भाषा में राज्य के सभी कार्य हों । सभी अपने-अपने विचार सरलता से व्यक्त कर सकें ।

हिंदी भारत की राजभाषा है और राजभाषा विभाग देश भर में फैले सरकारी कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों/अधीनस्थ कार्यालयों आदि में सरकारी काम-काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने और राजभाषा हिंदी को इसका उचित स्थान दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत है ।

क्षेत्रीय भाषा साथ लिए बिना राजभाषा हिंदी अथवा राष्ट्रभाषा हिंदी अपने सही स्थान पर नहीं पहुंच पाएगी । हमें व्यावहारिक होना होगा क्योंकि उसका कारण है, यदि हम व्यावहारिक नहीं होंगे तो राजभाषा को हम उसका स्थान नहीं दिला पाएंगे । आज राजभाषा हिंदी को उसके उच्चासन तक पहुंचाने में प्रेम और व्यवहार की जरूरत है ।

'राजभाषा भारती' परिवार का सदैव यही प्रयास रहता है कि राजभाषा भारती जहां सूचनापरक हो वहीं पाठकों के सामान्य ज्ञान और साहित्यिक ज्ञान में भी वृद्धि करे । प्रस्तुत अंक में 'चिंतन' स्तंभ के अंतर्गत हिंदी भाषा की मानकता, बाजार में हिंदी, राष्ट्रीय चेतना में तमिल और हिंदी का योगदान, पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग, भूमंडलीयकरण के दौर में हिंदी तथा कैसे आगे बढ़ें रथ हिंदी का आदि लेखों में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं । "साहित्यिकी" स्तंभ में हिंदी-पंजाबी संबंध तथा लोक नाटकों में हिंदी लेखन के बारे में जानकारी दी गई है । डॉ. शिवमंगल सिंह, 'सुमन' तथा हरिवंश राय बच्चन के साहित्य पर 'पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य' के अंतर्गत प्रकाश डाला गया है । इसके अतिरिक्त विश्व हिंदी दर्शन, पर्यावरण, कृषि तथा विविध स्तंभों में विभिन्न लेखों के माध्यम से नवीनतम, रोचक तथा शिक्षाप्रद जानकारियां देने का प्रयास किया गया है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं ।

आशा है इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

–संपादक

चिंतन

हिंदी भाषा की मानकता

—डॉ. बैजनाथ प्रसाद*

मानकीकरण भाषा-प्रयोग के धरातल पर चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो भाषा-रूप के स्तर पर 'विभिन्नता में एकता' लाने का प्रयास करती है। भाषा प्रयोग के धरातल पर हम पाते हैं कि प्रयोक्त एक ही चीज के लिए अनेक विकल्पों का प्रयोग करता है और इस स्थिति में एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाती है कि किस विकल्प को मानक माना जाए। विकल्पों के प्रयोग के पीछे भौगोलिक एवं क्षेत्रीय आधार काम करतें हैं और प्रयोक्ता जिस विकल्प का चयन करता है उसके साथ उसके भौगोलिक परिवेश एवं क्षेत्र के भाषा-व्यवहार का योग होता है, इसलिए वह उस विकल्प को आसानी से छोड़ नहीं पाता है और इस स्थिति में भाषा का मानक रूप खंडित होता है। विकल्पों की विभिन्नता ध्वनि (वर्ण) के स्तर से लेकर वाक्य के स्तर तक पाई जाती है। नीचे की तालिकाओं में हिंदी भाषा के मानकीकरण से जुड़ी कुछ समस्याओं का समाधान केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्लीद्वाराप्रकाशित 'ए बेसिक ग्रामर ऑफ मॉडर्न हिंदी' पुस्तक के आधार पर किया जा रहा है।

तालिका-एक

एक वर्ण के लिए एक से अधिक लिपि

मानक	इतर
अ	अ/अ
आ	आ/आ
ख	रव
झ	भ्क
ण	रा
थ	थ
ध	घ/ध
भ	भ/भ
ल	ल
क्ष	क्ष
द्य	द्य

त्र, त्र (ये दोनों मानक हैं)

तालिका-दो

शब्द के एक ही प्रकार्य के लिए एक से अधिक शब्द-रूप

मानक	इतर
किया	करा
की	करी
कीजिए	करिये/करिए
मुझे	मेरेको
तुझे	तेरेको
हमारा	हमारेको
तुम्हारा	तुम्हारेको

तालिका-तीन

वाक्य-प्रयोग के एक से अधिक प्रकार

मानक	इतर
मुझे किताबें खरीदनी हैं।	मुझे किताबें खरीदना है।
मुझे काम करना है।	मैंने काम करना है।
आपके दर्शन हुए।	आपका दर्शन हुआ।
उसके प्राण निकल गए।	उसका प्राण निकल गया।
उसके होश उड़ गए।	उसका होश उड़ गया।
उसके दाम बताइए।	उसका दाम बताइए।
आप वहाँ जाएँगे ?	आप वहाँ जाओगे?
आप पढ़ाएँगे?	आप पढ़ाओगे?
वह बोला।	उसने बोला।
मोहन बोला।	मोहन ने बोला।
राधा बोली।	राधा ने बोला।

*रीडर, हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़-160014

तालिका-चार

एक ही शब्द के लिए एक से अधिक वर्तनी रूप

खड़ी पाईवाले वर्णों की खड़ी पाई हटा देने से वे वर्ण हल बन जाते हैं, पर जिस वर्ण में ख़ड़ी पाई नहीं है उसे किसी वर्ण के साथ संयुक्त करते समय उसमें हल चिह्न लगाना मानक है।

मानक	इतर
भक्त	भक्त
भक्ति	भक्ति
शक्ति	शक्ति
मुक्ति	मुक्ति
भुक्ति	भुक्ति
संयुक्त	संयुक्त
पक्का	पक्का
अंग	अङ्ग.
उद्देश्य	उद्देश्य
द्वैमासिक	द्वैमासिक
द्विवेदी	द्विवेदी
द्विमासिक	द्विमासिक
द्वारा	द्वारा
द्वंद्व	द्वंद्व/द्वन्द्व
विद्यालय	विद्यालय
महाविद्यालय	महाविद्यालय
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय
चिह्न	चिह्न/चिन्ह
ब्रह्म	ब्रहम
ब्रह्मा	ब्रहमा
ब्राह्मण	ब्राहमण
ब्रह्मांड	ब्रहमांड

तालिका-पांच

जहाँ श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग स्वरों के विकल्प के रूप में हो वहाँ स्वर रूप का ही प्रयोग मानक है।

मानक	इतर
गई	गयी
आई	आयी
सुनाई	सुनायी
लिखाई	लिखायी
सफाई	सफायी
करवाई	करवायी
चढ़ाई	चढ़ायी
धुलाई	धुलायी
बनवाई	बनवायी
जाए	जाये
गए	गये
जाएँगे	जायेंगे
आएँगे	आयेंगे
किए	किये
दिए	दिये
लिए	लिये
इसलिए	इसलिये
चाहिए	चाहिये
समझिए	समझिये
कीजिए	कीजिये
लिखिए	लिखिये
देखिए	देखिये
पढ़िए	पढ़िये
चलिए	चलिये
ठहरिए	ठहरिये
उलटिए	उलटिये
पलटिए	पलटिये
बैठिए	बैठिये
नई	नयी
चलिए	चलिये
सुनिए	सुनिये
हुआ	हुवा
होएगा	होवेगा
जाएगा	जावेगा
कौआ	कौवा

तालिका-छह

यदि 'य' और 'व' व्याकरणिक रूप न होकर शब्द के ही मूल तत्त्व हों तो 'यी' को 'ई' में बदलना अमानक (इतर) है। 'यी' को ज्यों के त्यों छोड़ देना ही मानक है।

मानक	इतर
स्थायी	स्थाई
दायित्व	दाइत्व
उत्तरदायित्व	उत्तरदाइत्व
अव्ययी भाव	अव्यई भाव

तालिका-सात

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय चार वर्णों में से कोई वर्ण हो, वहाँ एकरूपता और मुद्रण व लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का प्रयोग ही मानक है।

मानक	इतर
अंक	अङ्क./अङ्.क
अंग	अङ्ग./अङ्.ग
पंक	पङ्क./पङ्.क
चंचल	चञ्चल
दंड	दण्ड
पाखंड	पाखण्ड
चंडीगढ़	चण्डीगढ़
दंत	दन्त
संत	सन्त
कंत	कन्त
कांता	कान्ता
हिंदी	हिन्दी
बिंदी	बिन्दी
मंदी	मन्दी
चंदा	चन्दा
संबंध	सम्बन्ध
चंपा	चम्पा
चंपारण	चम्पारण
संपत्ति	सम्पत्ति
ठंडा	ठण्डा
एकांत	एकान्त

तालिका-आठ

यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए या वही पंचमाक्षर वर्ण दुबारा आए तो पंचमाक्षर का अनुस्वार करना अमानक (इतर) है। पंचमाक्षर को उसी रूप में छोड़ना मानक है।

मानक	इतर
वाङ्मय	वांमय
अन्न	अंन
सम्मान	संमान
साम्मिलित	संमिलित
सम्मेलन	संमेलन
सम्मति	संमति
दन्त्य	दंत्य

तालिका-नौ

संधि-नियम के कारण कुछ शब्दों के पंचमाक्षर का अनुस्वार नहीं होना ही मानक है।

मानक	इतर
चिन्मय	चिंमय
उन्मुख	उंमुख
सन्मार्ग	संमार्ग
तन्मय	तंमय

तालिका-दस

किशोरीदास वाजपेयी ने 'हिंदी शब्दानुशासन' पुस्तक में चंद्रबिंदु को हिंदी की निज प्रकृति बताते हुए स्पष्ट किया है कि संस्कृत में जिन शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग मिलता है, तद्भव रूप में उन शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग मिलता है, तद्भव रूप में उन शब्दों में अनुस्वार के स्थान पर चंद्रबिंदु हो गया है और यह प्रकृति हिंदी की सहजता से जुड़ी है। यह मानक भी है। अनेक शब्द ऐसे हैं जिनमें चंद्रबिंदु ही मानक है, पर बिंदु का प्रयोग देखा जाता है।

मानक	इतर
दंत/दाँत	दांत
चाँद	चांद
पंच/पाँच	पांच
हँसना/हँस	हंसना/हंस
साँप	सांप

मानक	इतर
यहाँ	यहां
वहाँ	वहां
जहाँ	जहां
कहाँ	कहां

तालिका-ग्यारह

(क) विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से अलग लिखना मानक है।

मानक	इतर
मोहन ने	मोहनने
मोहन को	मोहनको
मोहन से	मोहनसे
हाथ से	हाथसे
हाथ में	हाथमें
दिल्ली में	दिल्लीमें
संसार से	संसारसे
मोहन के लिए	मोहनके लिए
कार्यालय का	कार्यालयका
सरकार की	सरकारकी

(ख) सर्वनाम शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न मिलाकर लिखना मानक है।

मानक	इतर
मैंने	मैं ने
हमने	हम ने
तुमने	तुम ने
आपने	आप ने
उसने	उस ने
उन्होंने	उन्हों ने
मुझसे	मुझ से
उससे	उस से
उसका	उस का
हमसे	हम से
तुमसे	तुम से
उनमें	उन में
इन्होंने	इन्हों ने

(ग) यदि सर्वनाम शब्द के बाद दो विभक्ति चिह्न हों तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए।

मानक	इतर
जिसमें से	जिस में से/जिस मेंसे
तुममें से	तुम में से/ तुम मेंसे
उसमें से	उस में से/ उस मेंसे
इसमें से	इस में से/ इस मेंसे

(घ) सर्वनाम और विभक्ति के बीच नियात ('ही' और 'भी') हो तो सभी को पृथक्-पृथक् लिखा जाए,

मानक	इतर
आप ही के लिए	आपही के लिए

तालिका-बारह

विदेशी शब्दों से संबंधित मानकता

(क) अंग्रेजी शब्द 'Doctor', 'Call', 'Coffee' आदि के प्रथम स्वर के लिए देवनागरी में कोई चिह्न नहीं था। इसलिए देवनागरी में 'ॉ' चिह्न का विधान किया गया।

मानक	इतर
डॉक्टर	डाक्टर
कॉल	काल
कॉफी	काफी
कॉलेज	कालेज/कालिज

(ख) अरबी-फारसी की मुख्यतः पांच ध्वनियाँ (क़, ख़, ग़, ज़ और फ़) हिंदी में आई हैं जिनमें से दो (क़ और ग़) तो हिंदी उच्चारण (क और ग) में परिवर्तित हो गई हैं। 'ख़' लगभग हिंदी में 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो (ज़ और फ़) धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने और बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

मानक	इतर
कलम	क़लम
किला	क़िला
कागज	काग़ज/कागज़
दाग	दाग़

लेकिन 'ज़' और 'फ़' का प्रयोग जहां आवश्यक हो, किया जाना चाहिए, विशेष रूप से जहाँ शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो।

बिना नुक्ते वाले शब्द	नुक्ते वाले शब्द
जलील (श्रेष्ठ)	ज़लील (तुच्छ)
जर (खींचना)	ज़र (धन)
जरी (वीर)	ज़री (सोने के तार का काम)

यहाँ द्रष्टव्य है कि अरबी-फारसी के शब्दों को लिखने में सबसे बड़ी कठिनाई शब्दों के वास्तविक रूप के परिज्ञान को लेकर है। कहाँ 'क' लिखा जाए और कहाँ 'क़', कहाँ 'ख' लिखा जाए और कहाँ 'ख़', कहाँ 'ग' लिखा जाए और कहाँ 'ग़', कहाँ 'ज' लिखा जाए और कहाँ 'ज़' और कहाँ 'फ' लिखा जाए और कहाँ 'फ़'? इसका निर्णय वही कर सकता है जो अच्छी तरह उर्दू पढ़े हुए हो, अन्यथा नुक्ते को लेकर बड़ा अनर्थ होगा।

नुक्ते-संबंधी ज्ञानाभाव से गढ़े गए शब्द

मानक	इतर
जनाव	ज़नाव
जगह	ज़गह
जमा	ज़मा
जब्र	ज़ब्र
जवाब	ज़वाब
जिगर	ज़िगर/ज़िग़र

तालिका-तेरह

अंक-संबंधी मानकता

(क) भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप को स्वीकार किया गया है।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0.

(ख) लेकिन राष्ट्रपति संघ के किसी राष्ट्रीय प्रयोजन के लिए भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूपों के साथ-साथ देवनागरी रूप का प्रयोग भी प्राधिकृत कर सकते हैं।

(ग) देवनागरी लिपि में 'नौ' अंक के दो-तीन रूप प्रचलन में थे, जैसे-९, ९, ९। इनमें से मराठी में प्रयुक्त रूप ९ को ही मानक स्वीकार किया गया हैं।

तालिका-चौदह

इस तालिका के अंतर्गत कई सूचनाओं को समेटा गया है-

(क) 'तक' शब्द के पहले और बाद में क्रमशः सर्वनाम और विभक्ति हो तो तीनों को अलग-अलग लिखना मानक है, जैसे-'मुझ तक को'

(ख) क्रिया के बाद 'कर' आने पर मिलाकर लिखना मानक है।

मानक	इतर
मिलाकर	मिला कर
पढ़कर	पढ़ कर
लिखकर	लिख कर
जाकर	जा कर
आकर	आ कर
खा-पीकर	खा-पी कर
पढ़-लिखकर	पढ़-लिख कर
रो-रोकर	रो-रो कर

(ग) कुछ शब्दों के एक से अधिक रूपों को मानक मान लिया गया है।

मानक	मानक
गर्दन	गरदन
गर्म	गरम
गर्मी	गरमी
वापस	वापिस
बर्तन	बरतन
दुकान	दूकान

एक जीवंत भाषा में कुछ ऐसे अपवादों का होना अस्वाभाविक नहीं है और इनसे हिंदी की मानकता समाप्त नहीं होती है।

निष्कर्ष:

ऊपर हिंदी की मानकता से संबंधित जिन सूचनाओं का उल्लेख किया गया है, वे ही पर्याप्त नहीं है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली ने भाषाविदों के परामर्शों को आधार बनाकर जिस पुस्तक का प्रकाशन किया है, उसमें मानकता से संबंधित अनेकों तथ्यों का सोदाहरण विश्लेषण है। इसलिए हिंदी की मानकता के परिज्ञान के लिए आवश्यक हो जाता है कि हम 'ए बेसिक ग्रामर ऑफ माडर्न हिंदी' पुस्तक को नियमित रूप में पढ़ें और अनिवार्य सूचनाओं को सामान्य भाषा और प्रशासनिक भाषा दोनों में व्यवहृत करें। ■

बाजार में हिंदी

–हरिनारायण ठाकुर

यदि आवश्यकता आविष्कार की जननी है, तो आविष्कार भी आवश्यकताओं को पैदा करते हैं । इस बात को कम से कम आज के बाजारवाद ने सिद्ध कर दिया है। जैसा बाजार वैसा उत्पाद, जैसा उत्पाद वैसा बाजार । आज अमेरिका (न्यूयार्क) में विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहे हैं, तो इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हिंदी भाषा सबसे समृद्ध, वैज्ञानिक और जनरुचियों के अनुकूल है । बल्कि इसका सीधा मतलब यह है कि इस भाषा में दुनिया का संबसे बड़ा बाजार उपलब्ध है । भारत के बाहर एशियाई, यूरोपीय और अमेरिकी देशों में भी इस भाषा को जानने और समझनेवालों की कमी नहीं है । इनमें से अनेक हमारे बहुराष्ट्रीय बिरादरी के अपने लोग भी हैं । इसलिए हिंदी भाषा बाजार और व्यवहार के अनुकूल बनती जा रही है । कुछ आवश्यकता के अनुरूप, जैसे--अहिंदी भाषियों की समझ और मल्टी-मीडिया के इस्तेमाल के लिए, तो कुछ आविष्कार के अनुरूप, जैसे विज्ञापन और 'एस.एम.एस.' तथा कंप्यूटिंग साफ्टवेयर जैसी तकनीकों की समझ के अनुरूप । ऐसे में भाषा का यह रूप हिंदी के स्वास्थ्य के लिए कितना अनुकूल है? इस पर विचार करना आवश्यक है ।

हिंदी भाषा के भूत, भविष्य और वर्तमान पर विचार करें, तो गजब का विरोधाभास दिखाई पड़ता है । हम नहीं कहते कि हिंदीवालों ने ही हिंदी का नुकसान किया है । विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय परिसर से बाहर हिंदी और संस्कृत के विद्वानों ने बेशक इसके शब्द भंडार को समृद्ध किया है । संस्कृत शब्दों के प्रचलन की भाषा-संस्कृति हिंदी की धरोहर है । मगर इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि संस्कृत के कठिन शब्दों के प्रयोग से हिंदी भाषा बोझिल भी हुई है । इसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी है । संतोष की बात है कि मीडिया, बाजार और जनरुचियों ने संस्कृतनिष्ठ हिंदी को सिरे से नकार दिया है। ऐसे में हम हिंदीवालों का फर्ज बनता है कि समय और समाज की जरूरतों के अनुरूप सरल शब्दों से हिंदी को सजाएं । मगर हो क्या रहा है? हम गंभीर मुद्रा में तटस्थ खड़े तमाशा देख रहे हैं । आज कला, मनोरंजन, समाचार, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्म, दूरदर्शन, कंप्यूटर और साइबर स्पेस--हर जगह हिंदी कोई न कोई स्पेस बनाकर खड़ी है । हिंदी हंस रही है, मगर हम रो रहे हैं । आज हिंदी के स्वागत में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख आंखें बिछाए खड़े हैं, प्रशंसा के कसीदें काढ़ रहे हैं और हम हैं कि कहे जा रहे हैं--'यह अंग्रेजी और हिंग्लिश साली कहां से टपक पड़ी?' हिंदी बदल रही है, पर हिंदीवाले बदलना नहीं चाहते । यूरोप और अमेरिका की बातें छोड़ दीजिए, अपने ही देश में आजादी के बाद कन्वेंटी युवाओं की तीन-तीन, चार-चार पीढ़ियां आ गईं और हम हैं कि अपना राग बेसुरा करना नहीं चाहते । क्या हुआ सरकार के तकनीकी शब्दावली निर्माण और अनुवाद कार्यक्रम का? कठिन संस्कृतनिष्ठ शब्दावली में हमने विज्ञान के पारिभाषिक और तकनीकी पदों का अनुवाद तो कर दिया, पर नतीजा? अंग्रेजी से भी कठिन विज्ञान की हिंदी हो गई । इसलिए आज उच्च शिक्षा में विज्ञान के छात्र अंग्रेजी में ही पढ़ना पसंद करते हैं । वैज्ञानिक हिंदी उनके पल्ले नहीं पड़ती ।

हिंदी की लिपि देवनागरी है--इससे कौन इनकार कर सकता है? वाक्य-विन्यास उसका अपना है--इसको कहां कहां से चुनौती मिल रही है? फिर केवल शब्द और वर्तनी को लेकर इतना हाय-तौबा क्यों हैं? क्या फर्क पड़ता है हम 'इसमें' के बदले 'इस में' लिखें, 'लिए' के बदले 'लिये' लिखें; अर्थ-ग्रहण में कहीं कोई कठिनाई नहीं होती । कम से कम द्वि-अक्षरी वर्णों और अनुनासिकों को लेकर तो आज कोई कठिनाई नहीं है । राजभाषा विभाग और केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने एक तो अच्छा काम किया कि वर्षों पहले पंचमाक्षर और चंद्रविंदु की बाध्यता समाप्त कर दी । सभी अनुनासिकों के लिए अब एक अनुस्वार(–)ही निर्धारित है। द्वि-अक्षरी वर्णों के लिए एक ही वर्ण निर्धारित कर दिया । अब 'अ' के बदले 'अ' 'झ' के बदले 'झ' और 'ण' के

*नागेंद्र नगर, लेन नं.-1, बेला रोड, मिठनपुरा, पो-रमना, मुजफ्फरपुर (बिहार)

बदले 'रा' नहीं लिखे जाते। उसी प्रकार 'चोंच' को 'चोञ्च' और 'कंठ' को 'कण्ठ' लिखने की बाध्यता भी नहीं है। 'उपरोक्त', 'राष्ट्रपति' जैसे अनेक शब्द व्याकरण से गलत है, किंतु खासे प्रचलन में हैं। अब यहां हम व्याकरण बांचना शुरू करेंगे, तो भाषा का प्रवाह रुक जाएगा। निस्संदेह विश्वभाषा के इतिहास में पाणिनी का कोई जोड़ नहीं है। किंतु पाणिनी के कारण आज संस्कृत कहां हैं? वही हाल फारसी का है। बिना व्याकरण के ऐसी भाषाओं को सीखा नहीं जा सकता। व्याकरण भाषा के पीछे चलता है, आगे नहीं। लोकभाषाओं को कौन कहे, संसार की कई समृद्ध भाषाएं भी बिना व्याकरण की हैं। बोलचाल की भाषाएं व्याकरण से नहीं चलती। "भाषा वह होती है, जिसे लोग बोलते हैं। भाषा वह नहीं होती, जो विश्वविद्यालयऔर हिंदी की दर्जनों संस्थाएं बनाते हैं।" हरिशंकर परसाई के ये पुराने शब्द आज भी नए हैं। देश दुनिया के लाखों लोग जो बिना किसी लिपि के आपसी व्यवहार कर लेते हैं, संचार माध्यमों से चिपके रहकर ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन प्राप्त करते हैं, उनकी भाषा की समझ क्या है? उन्होंने तो कभी हिंदी या अंग्रेजी नहीं सीखी? इसलिए भाषा के सवालों पर गौर से सोचने की जरूरत है। आज की युवा पीढ़ी और तकनीकी दुनिया इंतजार नहीं करती। लेकिन हम इंतजार में बैठे हैं –कभी तो सुधार होगा। हिंदी का वह स्वर्णयुग कभी आने वाला नहीं, जिसमें हम आप अपने इतिहास और स्मृतियों की तस्वीरें देखेंगे। कौन जानता है आने वाले समय में हिंदी का स्वरूप इससे भी खराब हो? संभव है लिपि के स्तर पर 'अ', 'इ' और 'उ' ध्वनियां अपने ह्रिस्व या दीर्घ रूपों को छोड़कर एक ही में स्थिर हो जाएं।

किसी भी भाषा की पहचान के तीन स्तर होते हैं--वर्ण, लिपि और वर्तनी, शब्द या पद और वाक्य-विन्यास। हिंदी भाषा में कम से कम वर्ण, लिपि और वाक्य-विन्यास के स्तर पर तो कोई समस्या नहीं है। वर्तनी की चर्चा पहले की जा चुकी है। इन क्षेत्रों में उसके स्वरूप प्राय: स्थिर हैं। जो भी विकास या ह्रास हो रहे हैं, शब्दों के स्तर पर ही। स्वाभाविक है, भाषा में सर्वाधिक महत्व शब्द और पदों का है। इसी से कोई भाषा समृद्ध होती है। इस दृष्टि से हिंदी के शब्द और मुहावरों का कोई शानी नहीं है। हमने समय-समय पर सभी भाषाओं से शब्द लिए हैं। शब्द खुद-ब-खुद मीडिया, बाजार और दैनिक कार्य-व्यापार से प्रचलित हो जाते हैं--चाहे वे किसी भी भाषा के हों। शब्द निर्माण भाषा के अंदर भी होता है और बाहर भी। हिंदी में जहां अंग्रेजी, फारसी, चाइनिज, जापानी तथा अन्य एशियाई और यूरोपीय भाषाओं के प्रचलित शब्द आए हैं, वहीं यहां से संसार की अन्य भाषाओं में भी हिंदी के शब्द जा रहे हैं। खुद अंग्रेजी के अखबारों में हिंदी हेडिंग्स लग रहे हैं।

किंतु जब-जब वैज्ञानिक-तकनीकी क्रांति होती है, हम कुछ अधिक ही चिंतित और सशंकित हो जाते हैं। हम भाषा पर संकट और चुनौतियों की बाते करने लगते हैं। दशकों पहले जब दूरदर्शन आया, तो हम ऐसे ही चिंतित हुए थे। मगर हुआ क्या? दूरदर्शन का जन्म ही अंग्रेजी कार्यक्रमों के साथ हुआ। किंतु अंग्रेजी कार्यक्रमों के साथ दूरदर्शन अपनी सालगिरह भी नहीं मना सका। देखते ही देखते उसके तीन चौथाई कार्यक्रम हिंदी में बदल गए। फिर कंप्यूटर युग आया। काफी मशक्कत कर हमने उसका नाम 'संगणक' रखा और लगे हाथों घोषणा कर दी कि अब हिंदी सहित कोई भारतीय भाषा टिकने वाली नहीं है, इंटरनेट युग में वह हाशिये पर चली जाएगा। पर देखते ही देखते हिंदी के सैकड़ों फांट (टापिंग लिपि) विकसित हो गए। स्मरण रहे आज संसार में कंप्यूटर टाइपिंग के सबसे अधिक फांट हिंदी में ही हैं। भले ही यह देवनागरी लिपि की जटिलताओं के कारण हो और इसमें 'की-बोर्ड' की विसंगति के लिए 'यूनिकोड' जैसी फांट-व्यवस्था की जा रही हो; किंतु यह हिंदी के प्रति हाई-टेक बिरादरी की सतर्कता और सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की तत्परता और संलग्नता का ही परिणाम है कि हिंदी आज लाख मुसीबतों के बावजूद चल पड़ी है। आज के इंटरनेट और मोबाइल युग में भी हम बेचैन थे। किंतु अब तो एस.एम.एस. तक हिंदी में किए जा रहे हैं। अब तो आई. बी.एम. तकनीक की बहुभाषी 'मास्टर प्रणाली' विकसित हो रही है, जिससे लोग किसी भी देश की किसी भी भाषा में एक मोबाइलनुमा यंत्र के जरिये सीधे-सीधे बातचीत कर सकेंगे। आज हिंदी के बगैर देशी-विदेशी किसी भी चैनल का काम ही नहीं चलता। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से लेकर दूरदर्शन, सिनेमा और विज्ञापन तक दुनिया में सबसे अधिक कार्यक्रम हिंदी में ही बनते हैं। आज मीडिया और संचार जगत में हिंदी का बाजार भाव सबसे ऊंचा है।

'हिंदी' से 'हिंदुई', 'हिंदवी', 'रेखता', 'उर्दू', 'हिंदुस्तानी', 'खड़ीबोली', और 'हिंग्रेजी' या 'हिंग्लिश' तक की यात्रा में हिंदी ने अनेक उतार-चढ़ाव झेलें हैं। उसका उत्तरोत्तर विकास हुआ है। किंतु यह विकास किसी 'गिलक्राइस्ट' की भाषा नीति या व्याकरण के नियमों के कारण नहीं हुआ है। हर समय इसका विकास जनता और बाजार ने किया है। सच तो यह है कि हिंदी भले ही हमारी मातृभाषा हो, इसके नामकरण और स्वरूप निर्माण का श्रेय हमारा नहीं है। इसलिए 'हिंदी भारतमाता के माथे की बिंदी है' जैसे भावुक और लिजलिजे नारों से इसका नुकसान ही होगा। हमें इसके राष्ट्रवादी-साम्राज्यवादी रूप पर नहीं इसके वैश्विक स्वरूप पर गर्व होना चाहिए।

स्मरण रहे "हिंद और हिंदू शब्द का पहला प्रयोग ईरानियों की प्राचीनतम धर्मपुस्तक 'अवेस्ता' और प्राचीन पहलवी में मिलता है।"[1] यद्यपि हिंदी ने प्राचीन और मध्यकालीन भाषाओं से बहुत कुछ लिया है, पर "संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि किसी भी प्राचीन आर्य भाषा में 'हिंदी' शब्द नहीं मिलता है।"[2] इसके लिए तीन शब्द 'हिंदवी, हिंदुई और हिंदी बार-बार आते हैं, जो प्रकारांतर से एक ही भाषारूप को व्यक्त करते है। "हिंदवी शब्द का पहला प्रयोग अबू सईद के फारसी इतिहास (1049) में मिलता है।"[3] इसके कई सौ वर्ष पूर्व ईरान के प्रसिद्ध "बादशाह नौशेरवां (531-579)" ने बजरोया नामक विद्वान को पंचतंत्र का अनुवाद करने के लिए भारत भेजा था। इस अनुवाद की भूमिका में पंचतंत्र की भाषा को 'जबाने हिंदी' कहा गया है।"[4] जाहिर है यहां 'जबाने हिंदी' संस्कृत को कहा जा रहा है। इसी प्रकार "1227 में मिनहाजुस्खि की पुस्तक "हबकाते नासिरी"[5] में 'जबाने हिंदी' का अर्थ 'पालि या अपभ्रंश'[6] और प्रसिद्ध घुमक्कड़ "इब्नबतूता (1333) की पुस्तक 'रेहला इब्नबतूता' में इसका प्रयोग उत्तर भारत की किसी स्थानीय बोली के लिए हुआ है।"[7] जायसी की 'पद्मावत' में 'हिंदुई' का अर्थ अवधी है। इसी प्रकार ब्रजभाषा, बुंदेली, लाहौरी आदि हिंदी की अन्य बोलियों के लिए भी फारसी में इस शब्द का प्रयोग हुआ। अर्थात् छठी शताब्दी से अमीर खुसरो (1253-1325) तक लगातार अरबी और फारसी भाषा में इस शब्द का प्रयोग होता रहा। इस प्रकार हिंदी का प्रयोग समय-समय पर विभिन्न भारतीय आर्यभाषाओं के लिए होता आया है। किंतु खुसरो के बाद से निश्चय ही यह शब्द संस्कृत, प्राकृत, पालि या अपभ्रंश के लिए नहीं आया है। यहां यह हिंदी और उर्दू जैसी खड़ीबोली की भाषाओं का पर्याय है। आगे चलकर यही हिंदी, हिंदुई या हिंदवी खड़ीबोली हिंदी बन जाती है। यहां से इस भाषा का स्पष्ट इतिहास और स्वरूप मिलने लगता है। खुसरो इस भाषा के सबसे बड़े हिमायती और प्रचारक दिखाई पड़ते हैं, जब वे कहते हैं--"मैं हिंदोस्तान की तूती हूं। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो, तो हिंदवी में पूछो मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा।"[8]

हिंदी या हिंदवी के इस प्राचीन प्रयोग ने जहां एक ओर हिंदी क्षेत्र की संपूर्ण लोकभाषाओं को एक सूत्र में जोड़ा, वहीं यह भ्रम भी पैदा किया कि हो न हो ये सभी भाषाएं एक ही मूल से निकली हैं और चूंकि सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत थी, इसलिए अधिकांश पंडितों ने एक स्वर से घोषित कर दिया कि उत्तर भारत की समस्त आर्यभाषाएं संस्कृत से ही निकली हैं। बहुत दिनों तक यह बात विद्वानों में मुहावरों की तरह चलती रही। भाषावैज्ञानिक अध्ययन में यही सब बताया जाता रहा। किंतु अब यह बात गलत प्रमाणित हो चुकी है। इसलिए बच्चन सिंह लिखते हैं कि "संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से उत्तर भारत की आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता रहा है और इसके लिए सिद्धांत भी गढ़े गए थे। किंतु अब यह धारणा कि हिंदी या बंगला आदि अपभ्रंश से निकली, खंडित हो चुकी है।"[9]

वस्तुतः भाषा का सर्वाधिक विकास सामाजिक-सांस्कृतिक (धार्मिक भी) आंदोलन और बाजार के कारण होता है। और यह बाजार भारत में ईरानी और अरबी व्यापारियों के कारण बढ़ा और फला-फूला। भारत से मलमल कपड़े और मसाला आदि का व्यापार भी उन्हीं के संपर्क से हुआ। सूफी संप्रदाय भी उन्हीं के साथ भारत में आया, जिसने हिंदी या हिंदवी भाषा का क्रांतिकारी विकास और प्रसार किया। इस प्रकार यहां की भाषाओं का विस्तार तो हुआ ही, साथ ही अरबी-फारसी और तुर्की व्यापारियों की बोलचाल की भाषा के साथ यहां के शब्दों का भी मेलजोल होने लगा और बनती-बिगड़ती एक भाषा बनी, जिसे हिंदी या उर्दू कहा गया। निश्चय ही यह बाजार की

भाषा थी । उर्दू का मतलब ही होता है--बाजार, वस्तुत: उर्दू और हिंदी में लिपि और कतिपय शब्दों को छोड़कर कोई अंतर नहीं है । दोनों सगी बहनें हैं । इसलिए अयोध्या प्रसाद खत्री कहते है कि "हिंदी और उर्दू में अंतर केवल लिपि के कारण है और कि फारसी लिपि में न लिखी जाए तो उर्दू हिंदी ही है ।"[10] इसके पूर्व प्रेमसागर लिखते हुए लल्लू लाल कहते हैं-- "यावनी शब्द छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में यह नाम प्रेमसागर धरा ।"[11] खड़ी बोली आंदोलन : अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ' के संपादक भुवनेश्वर मिश्र कहते हैं-"दिल्ली आगरे की भाषा उर्दू कहलाती है । उर्दू में फारसी शब्द के स्थान पर संस्कृत शब्द रखकर आधुनिक हिंदी बनी । तब हिंदी और उर्दू दो भाषा कैसे कही जावेगी ?"[12]

उपर्युक्त वक्तव्यों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि खड़ी-बोली हिंदी का विकास उर्दू-फारसी से हुआ । इसलिए अयोध्या प्रसाद खत्री ने खड़ीबोली हिंदी की कोटियों में 'मौलवी स्टाइल' की बोली को सर्वाधिक सशक्त और सुंदर माना है । उन्होंने खड़ीबोली के पद्यको पांच भागों में विभक्त किया था-"ठेठ हिंदी, पंडितजी की हिंदी, मुंशीजी की हिंदी, मौलवी साहिब की हिंदी और यूरेशिय हिंदी ।"[13] यह भाषा-वैज्ञानिक सत्य जैसा पहले था, वैसा आज भी है कि हिंदी और संस्कृत में केवल लिपि और शब्द भर का रिश्ता है । संधि और समास प्राय: तत्सम शब्दों में ही होता है । मुहावरे तो हिंदी ने शिष्ट भाषाओं से अधिक लोक भाषाओं से लिए हैं । हिंदी का जितना गहरा संबंध उर्दू, फारसी और अब अंग्रेजी से है, उतना संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं से नहीं । यद्यपि संस्कृत ने भारतीय आर्यभाषाओं को काफी समृद्ध बनाया है, इनकी शब्द संपदा तो संस्कृत की ही देन है; फिर भी संस्कृत हिंदी आदि भारतीय आर्यभाषाओं की जननी है--ऐसा कहना एक भाषावैज्ञानिक झूठ है ।

किसी भी भाषा का मूल आधार उसकी संरचना और वाक्य-विन्यास हैं । संस्कृत और हिंदी के वाक्य-विन्यास में कहीं कोई समानता नहीं है । कुछ उदाहरणों द्वारा इसे समझा जा सकता है । सभी जानते हैं कि हिंदी, अंग्रेजी, फारसी, उर्दू आदि सभी भाषाओं में नियत पद-क्रम होता है। जैसे : राम आम खाता है । किंतु संस्कृत में पद-क्रम का कोई नियम नहीं है । जैसे : राम: आम्रं खादति । आम्रं खादति राम: । खादति राम: आम्रं । आस्ति तत्र एको तरु: । एको तरु: तत्र अस्ति-इत्यादि । यह संस्कृत भाषा की उदारता और विशेषता कही जा सकती है, पर इसका कोई प्रभाव हिंदी पर दिखाई नहीं पड़ता । इसी प्रकार लिंग, वचन, काल और कारकों के संबंध में भी हिंदी और संस्कृत में असमानता देखी जा सकती है । संस्कृत में तीन वचन, तीन लिंग और पांच काल (लकार) होते हैं, जबकि अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू और फारसी आदि भाषाओं में लिंग, वचन और काल में समानता पाई जाती है । इसी प्रकार प्राकृत, अपभ्रंश और ब्रजभाषा आदि से भी इसकी असमानता गिनाई जा सकती है ।

सच तो यह है कि खड़ीबोली हिंदी और उर्दू का निर्माण और विकास देश में बोली जाने वाली लोकभाषाओं के साथ अरबी फारसी और तुर्की की स्टाइल के मेलजोल से हुआ, जिनमें समय-समय पर अन्य भाषाओं के शब्द और व्याकरण भी मिलते चले गए । यह भाषा अमीर खुसरो के समय से ही जनता की बोलचाल की भाषा रही होगी । उसके बाद भी मध्यकाल में इसका यही रूप जनता में प्रचलित रहा होगा, जिसकी खोज नहीं की गई । बाद में उन्नीसवीं सदी के आरंभ में जब इसे साहित्य और संस्कृति की भाषा बनाया गया, तो स्वाभाविक तौर पर इसके स्वरूप को लेकर प्रश्न उठने ही थे; क्योंकि तब तक उर्दू एक विकसित भाषा बन चुकी थी । स्मरण रखना चाहिए कि राजपूत काल के बाद जब इस देश में दिल्ली सल्तनत का बोलबाला हुआ तथा धार्मिक आंदोलनों तथा बाजार और व्यापार में इजाफा हुआ, तो भाषा का विकास भी तेजी से होने लगा । खुसरो इसी काल के कवि और विद्वान थे । खुसरो अरबी और फारसी के साथ-साथ हिंदी भाषा और संस्कृति के भी भारी विद्वान थे । सल्तनत काल के कई राजाओं के दरबारी कवि होने के बावजूद उन्हें जनता की जुबान और जनरुचियों का गहरा अनुभव था । अपने अनेक फारसी ग्रंथों के साथ-साथ उन्होंने 'खालिकाबरी' नामक एक फारसी-हिंदी कोश भी लिखा, जिसमें हिंदवी और हिंदी शब्दों की भरपूर चर्चा की गई है । खुसरो गयासुद्दीन तुगलक के लडके के शिक्षक भी थे । संभव है इस ग्रंथ की रचना तुगलक के लड़के को हिंदी या हिंदवी सिखाने के लिए ही की गई होगी । "खुसरो ने अपने समय की भारतीय भाषाओं को निम्नलिखित प्रकार से विभाजित किया है--(1) सिंधी, (2) लाहौरी

(3) काश्मीरी, (4) बंगाली, (5) गौड़ी, (6) गुजराती, (7) तिलंगी, (8) मावरी (कर्नाटकी, कोंकड़ी) (9) ध्रुव समुंदरी, (10) अवधी, (11) देहलवी और इसके इतराफ की जबान ।''[14]

यही देहलवी और इसके इतराफ अर्थात् दिल्ली के आस-पास मथुरा और आगरे की जबान हिंदी कहलाई । यही भाषा दिल्ली सल्तनत के बीच आम लोगों के आपसी व्यवहार और बाजार की भाषा थी । यही भाषा सूफी संतों के मत प्रचार और काव्य की भाषा थी। इस भाषा के प्रचार का बहुत बड़ा श्रेय सूफी संतों को जाता है । इल्तुतमिश के समय से ही दिल्ली सूफियों का केंद्र बन गई थी । सूफियों के आदिसंत कुतुब साहब का केंद्र वहीं था । इन सूफियों ने नीति निर्धारित कर ली थी कि धर्म प्रचार में वे 'हिंदवी' जबान का ही प्रयोग करें; क्योंकि वे इसी जबान में जनता तक पहुंच सकते थे । मतलब यह कि हिंदवी जनता की जबान थी इसलिए इन सूफी संतों और अलाउद्दीन के दक्षिण अभियान के साथ यह भाषा दक्षिण में भी गई और बीजापुर तथा गोलकुंडा इस भाषा के दो बड़े केंद्र बने । इस काल के सूफी संतों ने अपनी लिखित वाणियों में फारसी और देवनागरी दोनों ही लिपियों का प्रयोग किया । नामदेव, कबीर, रैदास, आदि संतों की वाणियों की लिपि देवनागरी रही ।

मध्यकाल में भारतीय बाजार लगभग स्थिर रहे । मुगलों का अपना शक्ति-संपन्न राज्य स्थापित हो चुका था, तब तक किसी बाहरी बाजार और भाषा की जरूरत नहीं पड़ी । किंतु देश का विस्तार अफगानिस्तान से लेकर असम और दक्षिणी समुद्र तक हो चुका था । इसलिए व्यापार और व्यापारियों की कमी नहीं थी । इस काल का बाजार अखिल भारतीय था । इसलिए जनता की जुबान हिंदवी समान रूप से पूरे भारतवर्ष में फैली । ''अकबर के समकालीन विद्वान अबुल फजल ने उस समय के भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है-- (1) देहलवी, (2) बंगाली, (3) मुलतानी, (4) मारवाड़ी, (5) गुजराती, (6) तिलंगी, (7) मरहठी, (8) कर्नाटकी, (9) सिंधी, (10) अफगानी, (11) बिलोचिस्तानी, (12) काश्मीरी ।''[15] ध्यान देने की बात है कि जो देहलवी खुसरो की सूची में 11वें नंबर पर थी, यहां प्रथम स्थान पर आ गई है । अर्थात् मुगलकाल में यह भाषा सबसे प्रमुख भाषा बन गयी । कालांतर में इसी देहलवी के दो रूप खड़ीबोली हिंदी और उर्दू बने । देहलवी या हिंदवी नाम खुसरो का ही दिया हुआ है । इस भाषा के प्रचार के लिए खुसरो ने अनेक यत्न किए । इस भाषा में उन्होंने दोहे-चौपाई, मुकरियां और पहेलियां तो लिखी ही, फारसी में ऐसी-ऐसी गजलें लिखीं, जिसके एक बोल फारसी के और दूसरे बोल हिंदवी के थे । इससे विशुद्ध फारसीवालों की रुचि भी हिंदवी में बढ़ी । मुगल काल में इसी भाषारूप को 'रेखता' कहा गया, जिसका अर्थ होता है--बहुत सी चीजों का मिश्रण । इस प्रकार फारसी लिपि में 'रेखता' और हिंदवी का प्रचार होता रहा । मुगल काल में हिंदवी की काफी उन्नति हुई । पर उसमें फारसी शब्दों का प्रयोग बढ़ता गया । फारसी बहुल होने के कारण और अन्य देशी शब्दों के मेल के कारण भी इसका नाम हिंदवी से 'रेखता' हो गया । शाहजहां के समय इसका नाम 'रेखता' से बदलकर 'उर्दू' कर दिया गया । किंतु रेखता नाम इतना प्रचलित हो चुका था कि उर्दू जुबान के लिए अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर तक यह नाम चलता रहा ।

देवनागरी लिपि में इस शैली के गद्य का विकास अभी नहीं हो पाया था; किंतु सूफियों के जमाने से ही पद्य देवनागरी लिपि में भी लिखे जाते थे । ध्यान देने की बात है कि सल्तनत और मुगल काल दोनों ही सूचियों में ब्रजभाषा नहीं है । अवधी तो सल्तनत काल से ही थी, पर ब्रज भाषा मुगलकाल के उत्तरार्द्ध (अकबर के समय) में विकसित हुई। किंतु 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के आते ही यहां के बाजार पर अंग्रेज़ी भाषी लोगों का कब्जा होने लगा । ईसाई मशीनरियों का भी बोलबाला हुआ । तब बाजार, व्यापार और धर्म प्रचार के लिए यहां की भाषा और संस्कृति को जानना आवश्यक हो गया, बिल्कुल आज की तरह । बाजार की भाषा स्थानीय ही होनी चाहिए, ताकि विचार-विनिमय में कोई दिक्कत न हो । धर्म की भाषा भी आम जनता की भाषा हो । इसलिए कंपनी के कर्मचारियों की शिक्षा और यहां की भाषा और संस्कृति के अध्ययन के लिए 1800 ई. में कलकत्ता में 'फोर्ड विलियम कॉलेज' की स्थापना हुई, जिसके भाषा विभाग के प्रथम अध्यक्ष प्राच्य भाषाओं के प्रसिद्ध विद्वान 'गिल क्राइस्ट' हुए । इन्हीं 'गिल क्राइस्ट' ने हिंदी, हिंदुई और हिंदवी को सम्मिलित रूप से 'हिंदुस्तानी' कहा था और इसे कई शैलियों में विभाजित किया । 'हिंदुस्तानी' के

अध्ययन, प्रगति और विकास के लिए इस कॉलेज में एक ही समय में भारतीय भाषा और साहित्य के तीन मिजाज के तीन अध्यापकों की नियुक्ति हुई थी । वे थे—लल्लू लाल (संस्कृत और फारसी मिजाज), सदल मिश्र (संस्कृत मिजाज) और इंशा अल्ला खां (फारसी मिजाज) इन लोगों के प्रयास से हिंदी का जो स्वरूप बना, ऐतिहासिक होते हुए भी कालांतर में विवादास्पद हो गया । किंतु हिंदी खड़ीबोली का लिखित इतिहास जानने के लिए प्रथम स्रोत के रूप में ये ही विद्वान और उनकी कृतियां उपलब्ध हैं ।यद्यपि कुछ विद्वानों के अनुसार लल्लू लाल (1803 ई.) से भी कुछ पहले कुछ लोगों ने ब्रजभाषा की मिठास के विरुद्ध कर्कशता के लिए इस बोली का नाम 'खड़ीबोली' रखा था; किंतु सन् 1803 ई. में लल्लू लाल ने ही इसे खड़ीबोली का नाम दिया, जिसे बाद में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने प्रचारित किया—इसका लिखित प्रमाण है ।

'प्रेम सागर' के लगातार तीन संस्करणों से खड़ीबोली हिंदी के विकास का संकेत मिल जाता है । "1803 के बाद के प्रथम संस्करण (1823) में उसके आवरण पृष्ठ पर रोमन लिपि में लिखा था--'Pure Hindee Language of Khari Boli, द्वितीय संस्करण (1811) के आवरण पृष्ठ पर लिखा था—'Hindwee' और तृतीय संस्करण (1842) पर केवल Hindee लिखा था ।" [16] इस बात से पता चलता है कि उस समय 'हिंदवी' नाम काफी प्रचलन में था । हिंदवी, हिंदी और उर्दू समानार्थक शब्द थे । खड़ीबोली नाम उसी भाषा का देवनागरी रूप था, जो उसको उर्दू की अपेक्षा अधिक शुद्ध और देशी सिद्ध करने के लिए दिया गया था। कुछ दिनों तक खड़ीबोली नाम चला । किंतु 1823 ई. के बाद से हिंदवी के इस देवनागरी रूप का नाम पूर्णत: हिंदी हो गया । इसलिए प्रेमसागर के तीसरे संस्करण (1842) में केवल 'हिंदी' लिखना पड़ा । इस बीच इस नागरी हिंदी में शब्दों के रूप क्या हों ? इस पर लगातार विवाद हो रहे थे। इस विवाद से हिंदी जगत परिचित है । राजा शिव प्रसाद 'सितारेहिंद' और अयोध्या प्रसाद खत्री जैसे विद्वानों ने हिंदी भाषा को सरल और व्यापक बनाने हेतु इसे अप्रचलित संस्कृतनिष्ठ शब्दों से दूर करने की कोशिश की । सत्ता और शासन का आश्रय मिलने के कारण उर्दू-फारसी का बोलबाला था । नटवर जी लिखते हैं--"संस्कृत के पंडित और ब्रजभाषा के कवि जनता से दूर होते जा रहे थे । राजा शिव-प्रसाद 'सितारेहिंद' और खत्री अयोध्या प्रसादजी ने इस भयंकर खतरे से लोगों को सावधान ही नहीं किया, उपाय भी बताए-दिखाए । राजा साहब और खत्रीजी का उद्देश्य समान होने पर भी क्रिया में इतना भेद अवश्य था कि एक नागरी में उर्दू को ज्यों-की-त्यों ले लेना चाहते थे और दूसरे क्लिष्टता को बाद देकर । संस्कृतनिष्ठ भाषा के हिमायतियों ने दोनों का इतना विरोध किया कि राजा साहब का दिल बैठ गया और वे चुप हो गए । किंतु खत्रीजी कुछ दिन उदासीन रहकर भी, अंत तक अपनी धुन पर अड़े रहे ।" [17] भारतेंदु ने दोनों के बीच की राह निकाली । किंतु उन्होंने खड़ीबोली को गद्य तक ही सीमित रखा । पद्य में वे ब्रजभाषा के ही हिमायती बने रहे ।

वस्तुत: भाषा निर्माण और विकास के उस युग में जहां हिंदी को उर्दू-फारसी और अंग्रेजी से होड़ लेनी थी, केवल संस्कृत के कठिन शब्दों को अपनाने से ही इसका विकास नहीं हो सकता था । इसलिए 'सितारेहिंद' और 'खत्रीजी' सरीखे विद्वान उर्दू-फारसी और अंग्रेजी के भी प्रचलित शब्दों को इसमें रखकर इसे जनता की जुबान बनाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि किसी को इसे बोलने और समझने में कठिनाई न हो । खत्रीजी ने उस समय लोगों के बीच प्रचलित हिंदी के इस व्यापक रूप को देखकर ही इसे पांच-छ: भागों में विभक्त किया था । पंडित, मौलवी और मुंशियों की हिंदी के अलावे 'यूरोशियन हिंदी' उन्हीं का दिया हुआ नाम था । उस जमाने की 'यूरोशियन हिंदी' कविता कुछ इस प्रकार लिखी जाती थी :-

"उस वह फेस ग्लूमी वह लबीं पर शाई !
है फ्रेश हाफ्ज में बंदी न अब तक मूली ।

♦ ♦ ♦

पीस का नाम वो निशां अब वर्लड में बाकी नहीं ।
हर तरफ सुनने में आता है सीमी बारबेरियन ।

♦ ♦ ♦

नेचारियों से मिला लेंगे रिलेशन अपना ।
तर्क मजहब से अगर हिंद में बदनामी है ।
जाके लंडन में बदल डालेंगे नेशन अपना ।

♦ ♦ ♦

जाया जो उन का कोई मोमेन्ट हो गया ।
बिल्कुल खजाना माल का वैकेंट हो गया ।" [18]

जाहिर है यहां प्रचलित उर्दू और अंग्रेजी के ऐसे-ऐसे शब्द कविता में आए हैं, जिनको समझने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होगी। भाषा निर्माण के दिनों के ऐसे प्रयास को भले ही आज हास्यास्पद कह दिया जाए, किंतु आज की हिंदी ऐसे एशियाई और यूरोपियन शब्दों को बखूबी पचा चुकी है। आज हिंदी साहित्य की किसी भी विधा में ऐसे शब्दों और प्रयोगों की कमी नहीं है। यद्यपि आज खत्रीजी के समय की परिस्थिति नहीं है। हिंदी को उस प्रकार वर्गों में बांटे जाने की जरूरत नहीं है। किंतु उसका 'यूरोशियन' रूप तो प्रचलित ही है। कई मामलों में उस समय खत्री जी की बात नहीं मानी गई; किंतु आजादी के बाद जब भारत का संविधान बना और भाषानीति का निर्धारण हुआ, तो संविधान के अनुच्छेद 343 : (1) में राष्ट्रभाषा हिंदी के अक्षरों की लिपि तो देवनागरी ही रही, किंतु अंकों की लिपि रोमन (1, 2, 3. . . .) कर दी गई, ताकि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी को हिंदी भाषा के अंकों और संख्याओं को समझने में दिक्कत न हो। 'उर्दू-हिंदी में केवल लिपि का भेद है', 'खड़ीबोली में भी सुंदर और सरस कविता हो सकती है', 'ब्रजभाषा एक मृत भाषा है' --खत्रीजी की ये सारी बातें आज सही साबित हो चुकी हैं।

आज हिंदवी, हिंदुई, हिंदी और हिंदुस्तानी जैसा कोई विवाद नहीं है; हिंदी अपने विकासशील रूप में ही प्रचलित है। आज इसके शब्दों को लेकर कुछ सवाल उठ रहे हैं। निश्चय ही यह सवाल अंग्रेजी या उर्दू-फारसी के शब्दों को लेकर हैं। वस्तुत: खत्री जी का दिया हुआ 'यूरोशियन हिंदी' नाम आज ही सार्थक हुआ है। आज के वैश्विक युग में किसी भी भाषा में शब्दों का आदान-प्रदान भाषा का एक स्वाभाविक चरित्र सा बन गया है। इसलिए हिंदी में भी अंग्रेजी जैसे यूरोपीय शब्दों के अतिरिक्त अरबी, फारसी, उर्दू, बंगला, नेपाली, चीनी, जापानी, रशियन, तमिल आदि एशियाई भाषा के शब्द बहुतायत से आए हैं और इनका आना अब पहले से अधिक हो गया है।

हिंदी के बोलचाल और साहित्य की भाषा में भी आज हाय, हैलो, यार, डार्लिंग, एस, गुड रिंग, मार्केट, मीडिया, प्रेस, पार्टी-सार्टी, भेज-नॉनभेज, ऑडियो-वीडियो, सिंगल-डबल, पापा-मम्मी, पावर-सावर, चाउ-च्वींग आदि बहुतायत से आ रहे हैं। पहले भी, यदि हम गौर करें, तो रेणु के उपन्यासों की भाषा कैसी है? 'परती परिकथा' या 'मैला आंचल' में ऐसे प्रयोगों की भरमार है। हमें प्रेमचंद से लेकर शिवपूजन सहाय, बेनीपुरी, मनोहर श्याम जोशी और सुधीश पचौरी तक की भाषा पर ध्यान देना होगा। आज कोई धार्मिक सामाजिक आंदोलन नहीं चल रहे हैं; किंतु टेक्नॉलाजी और सूचना-तंत्र के व्यापक विकास के कारण आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भूमंडलीकरण हुआ है। संपूर्ण विश्व ही एक बाजार के रूप में तब्दील हो गया है। ऐसे में हमारी भाषा और साहित्य में कुछ विदेशी शब्द आ रहे हैं, तो इसमें बुरा क्या है ? हिंग्लिश या हिंग्रेजी भी हिंदी ही है। वस्तुत: हिंदी एक प्रगतिशील और जीवंत भाषा है, जो समय और समाज के साथ अपने स्वरूप और स्वभाव को सामंजित करती चलती है। इसलिए खुसरो (दिल्ली सल्तनत) से लेकर आज तक यह साहित्य, संस्कृति और समाज की भाषा बनी हुई है। आज के विश्व बाजार में भी यह बाजार की भाषा है।

सारांश यह कि हिंदी सल्तनत काल से लेकर आज तक बाजार की भाषा रही है। शब्द आप चाहे जिस भाषा के ले लीजिए, वाक्य-विन्यास में कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। हिंदी अमीर खुसरो के समय भी बाजार और व्यापार की भाषा थी और मुगल काल में भी। नवजागरण और ब्रिटिश काल की तो यह खास भाषा थी। हमने आजादी की लड़ाई और समाज सुधार के कार्यक्रम इसी भाषा में चलाए थे।

सवाल यहां यह नहीं है कि हिंदी भाषा कहां से और कब निकली। सवाल यह है कि हिंदी अब विश्व भाषा परिवार की एक सशक्त भाषा है। इसकी शब्द संपदा संस्कृत से भी समृद्ध हुई है और अन्य देशी-विदेशी भाषाओं से भी। अब इसे आज की जरूरत के अनुरूप बनने-संवरने की जरूरत है। हिंदी में आंख मूंदकर अंग्रेजी शब्दों को घुसेड़ने का जमाना भी अब गया। अब केवल जरूरी तकनीकी और बाजार के प्रचलित अंग्रेजी शब्दों को ही लिया जा रहा है। हिंदी आज के बाजार की भी भाषा बन चुकी है और इसका श्रेय आई.टी. प्रोफेशनल्स और देशी-विदेशी मीडिया को जाता है। आज इंटरनेट पर हिंदी की अनेक 'वेब साइटें' हैं। हिंदी का सबसे पहला पोर्टल भारत के ही 'नयी दुनिया' अखबार ने बनाया, जिसे 'वेब दुनिया डाट कॉम' कहते हैं। 'वेब दुनिया' की परिकल्पना

इसी परिवार के आई. टी. इंजीनियर विनय छजलानी ने की थी, जिन्होंने अमेरिका से अच्छी-खासी पढ़ाई करने के बाद भी हिंदुस्तान में रहना-बसना तय किया । बी.आई.टी, पिलानी के 1984 के टॉपर विनय ने हिंदी के लिए नएं-नएं सॉफ्टवेयर ईजाद किएं । उन्होंने हिंदी में ई-मेल के लिए 'ई-पत्र', चैट के लिए 'ई-वार्ता', ग्रीटिंग्स के लिए 'कामना' और खोज के लिए 'वेबदुनिया खोज' नामक सर्च इंजन बनाए। विनय छजलानी ने हिंदी समाज को 'जन-ज़न का इंटरनेट' का नारा दिया और कई दूसरी भारतीय भाषाओं के लिए भी इंटरनेट के दरवाजे खोले ।''[19] 'गूगल' की तरह हिंदी में पहला सर्च-इंजन 'रफ्तार डाट काम' बनाने वाले युवा इंजीनियर पीयूष वाजपेयी हैं । 'डीमोज' के संपादक और 'चिट्ठा विश्व' नामक पोर्टल चलाने वाले देवाशीष चक्रवर्ती हिंदी 'नेट ब्लागिंग' को लोकप्रिय बनाने वाले पहले भारतीय हैं । उन्होंने हिंदी में 'वर्डप्रेस', 'पेब्बल', 'इंडिक्जूमला', 'आईजूमला', 'स्कटल' आदि अनेक साफ्टवेयर विकसित किए हैं । वे अब हिंदी विश्वकोष 'विकिपीडिया' नामक पोर्टल पर काम कर रहे हैं । इसी प्रकार हिंदी विज्ञापनों की दुनिया भी प्रसून जोशी जैसे युवा कवि-पत्रकारों के चालू शब्दों से गुलजार है । इन्होंने आज की पीढ़ी को 'ठंडा मतलब कूलकूल और कोका कोला' बखूबी समझा दिया है ।

मगर सवाल उठता है कि तब क्या भाषा को हम बाजार की मर्जी पर छोड़ दें, जो क्षण-क्षण बदल रहा है? नहीं ऐसा कतई नहीं है । संस्कृतनिष्ठ हिंदी से निजात पाने का मतलब अंग्रेजी या दूसरी भाषाओं के अपरिचित शब्दों का अंधाधुध प्रयोग नहीं है । ''हिंदी को गुरुकुल कांगड़ी और काशी विद्यापीठ वाले शुद्धतावादी आग्रहों से बचाने की जरूरत तो है, लेकिन इस बात की कतई जरूरत नहीं कि 'बदलाव' को 'चेंज' लिखने की मूर्खता गले लगा लिया जाए । लोगों ने देख लिया है कि 'आवश्यकता' और 'नीड' के बीच 'जरूरत' का एक संतुलित मध्यम मार्ग भी है ।'' [20] संतोष की बात है कि हिंदी के अधिकांश क्षेत्र आज इसी मध्यम मार्ग को अपनाते नजर आ रहे हैं । ''हिंदी मीडिया की ओवर ड्राइंग 'ओवर रियेक्ट' करने वाली आचार्य बिरादरी को भी अब धीरे-धीरे यह बात समझ में आने लगी है कि 'अंग्रेजी' की अति करने वाले मीडियाई प्रयोग जितनी जल्दी शुरू हुए थे, उतनी ही जल्द समाप्त भी हो गए ।'' [21] यहां 'फिट' 'हिट' और 'कूलकूल' जैसे अंग्रेजी जुमले पापुलर हैं, तो 'डंडा', 'कोकाकोला,' 'प्यास, 'चीज', और 'मस्त' जैसे हिंदी शब्द भी खासे लोकप्रिय हैं । ''हिंदी की सामान्य शैली वह है, जो 'निविदा की निर्दिष्ट अर्हताओं के अनुपालन' की जगह 'टेंडर की शर्तों पर अमल', जैसे पदबंधों के प्रयोग को बढ़ावा देती है, जो मोबाइल फोन को 'चलंत दूरभाष', टेलीफोन को 'दूरभाष', कंप्यूटर को 'संगणक', 'टैक्स' को 'कर', शेयर होल्डर को 'अंशधारक' कहने की जिद नहीं करती ।''[22] आज की ग्लोबल हिंदी करोड़ों लोगों की जुबान बनकर न केवल देश, बल्कि ग्लोब के हर कोने में लाखों टर्मिनलों, मशीनों, स्क्रीनों, कैमरों, स्पीकरों और काउंटरों पर विश्वभाषा बिरादरी की सम्मानित सदस्या बनी विराजमान है । हिंदी बाजार की भाषा के रूप में रोजगार की भाषा भी बनती जा रही है-- इसमें कोई शक नहीं है । आनेवाले समय में इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हैं ।

किंतु यह भाषा बाजार, मीडिया और संचार की भाषा बनने का जश्न चाहे जितना मना लें, आज की तारीख में वह ज्ञान-विज्ञान की भाषा नहीं है । आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली का अभाव और रोजगार की दुनिया से कटे होना-हिंदी की दो प्रमुख बीमारियां हैं जो काफी 'क्रोनिक' है । आज ज्ञान-विज्ञान का हिंदी अनुवाद करते समय 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' द्वारा निर्धारित निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए :-

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाया जाएं । हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप ही उनका लिप्यांतर किया जाए इससे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंदी भाषाभाषियों को तकनीकी शब्दों को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी । जैसे : मार्क्सवाद, फ्रायडवाद, ब्रेल, लाइसेंस, परमिट, टेलीफोन, रायल्टी, टैरिफ आदि ।
2. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता और सुबोधता पर ध्यान दिया जाना चाहिए । अतिशय सुधारवादी और विशुद्धता वादी शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए ।

1752 HA/08—2A

3. भारतीय भाषाओं के शब्दों में अधिक से अधिक एकरूपता लाने का प्रयास किया जाना चाहिए । किसी भी भाषा के शब्द जो अधिक से अधिक प्रयोग में हो, उनका प्रयोग किया जाना चाहिए ।

4. ऐसे पारिभाषिक विदेशी शब्द, जिसके सरल पर्याय देशी भाषाओं में प्रचलित हो चुके हैं, उनका प्रयोग उसी रूप में होना चाहिए । जैसे : डाक, तार, महाद्वीप आदि ।

5. अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो चुके हैं, उनका प्रयोग उसी रूप में होना चाहिए । जैसे : टिकट, सिगनल, पेंशन, पुलिस, ब्यूरो, रेस्तरां, डीलस्क आदि ।

6. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का लिंग स्पष्ट न होने पर उनका प्रयोग पुल्लिग में ही करना चाहिए ।

7. संकर शब्दों का प्रयोग पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता, उपयोगिता, सुगमता और संक्षिप्तता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए । जैसे : क्लासिकी, गारंटित, रोमांटिक, रूमानियत आदि ।

8. पंचम वर्ण के लिए प्राय: अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाता है । किंतु संस्कृत, उर्दू-फारसी और अंग्रेजी के शब्दों में उच्चारण की आवश्यकता के अनुरूप यथासंभव हलंत ( ),, अद्‌र्ध चंद्रविंदु चंद्रविंद (ँ) या पंचमाक्षरों का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

ज्ञान-विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावलियों को अंग्रेजी से हिंदी में उल्टा करने में यथासाध्य पत्रकार और आई-टी. प्रोफेशनलों की भी मद्‌द ली जानी चाहिए । इस प्रकार ज्ञान-विज्ञान की तकनीकी शब्दावली और भाषाओं को भी हिंदी में सरल और लोकप्रिय बनाया जा सकता है ।

संदर्भ संकेत :

1. हिंदी साहित्य कोश : भाग-1, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ-887 के आधार पर .
2. वही, पृष्ठ-888.
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ-17.
4. वही, पृष्ठ-19.
5. वही,
6. वही.
7. वही.
8. हिंदी साहित्य कोश : भाग-2, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ-19.
9. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ-15.
10. अयोध्या प्रसाद खत्री, : भूमिका, 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ', बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना.
11. प्रेमसागर, लल्लू लाल.
12. भुवनेश्वर मिश्र, संपादक, खड़ी बोली आंदोलन : अयोध्या प्रसाद खत्री, अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना. पृष्ठ-64.
13. अयोध्या प्रसाद खत्री : 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ', बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना. पृष्ठ-203.
14. हिंदी साहित्य कोश : भाग-1, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ-888.
15. वही, पृष्ठ-889.
16. वही.
17. ललित कुमार सिंह नटवर : परिचायिका, 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ', बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना. पृष्ठ-235.
18. 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ', बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना. पृष्ठ-298-99.
19. अविनाश : कादंबिनी, जुलाई, 2007, पृष्ठ-18.
20. संजय अभिज्ञान/हरजिंदर, वही.
21. वही.
22. वही.

1752 HA/08—2B

राष्ट्रीय चेतना में तमिल और हिंदी का योगदान–एक तुलना

–डॉ. एम. शेषन्*

प्रस्तावना:

भारतीय भाषाओं की आधुनिक कविता में अत्यंत प्रबल प्रवृति राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति है। उसकी मूल चेतना देशभक्ति रही है। देश शक्ति व्यक्तिपरक न होकर एक समष्टिपरक भाव है अर्थात् वह रागात्मक भाव व्यक्ति के प्रति न होकर समष्टि के प्रति होता है। इस दृष्टि से देखें तो न केवल तमिल वरन् समस्त भारतीय भाषाओं में भी देशभक्ति की यह समष्टिगत चेतना समान रूप से विद्यमान रही है। क़िसी प्रदेश विशेष के निवासियों की यह समष्टिगत चेतना और विश्वास कि वे एक हैं, उनकी आशा-आकांशाएं समान हैं, उनकी परंपराएं एक हैं, और वे सब मिलकर अपना भविष्य उज्ज्वल करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं, इन्हीं भावनाओं और विचारों से राष्ट्रीयता का जन्म होता है। मातृभूमि के प्रति प्रेम, विदेशी आक्रांताओं से देश की रक्षा, आंतरिक झगड़ों और कलहों से देश को कमजोर न बनने देने के प्रयत्नों तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों और दुर्बलताओं की ओर संकेत करने आदि बातों में राष्ट्रीय भावना रूपायित होती है। इस दृष्टि से देखें तो राष्ट्र प्रेम की भावना हिंदी एवं तमिल दोनों भाषाओं के काव्य में सदा रही है, हाँ, उसका स्वरूप राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेशों के कारण समय-समय पर बदलता अवश्य रहा है।

वर्तमान लेख की उपादेयता:

वैसे राष्ट्रीय चेतना संपन्न देशभक्ति की कविताओं पर अलग-अलग रूप से एवं विस्तार के साथ अध्ययन और शोधकर्ता तमिल और हिंदी दोनों भाषाओं में हुए हैं और उनके माध्यम से दोनों भाषाओं की राष्ट्रीयधारा के चिन्तन और भावनाओं का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मगर दोनों भाषाओं की कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावनाओं का समन्वित रूप से तुलनात्मक रीति से अध्ययन अब तक प्रस्तुत नहीं किया गया है। भावधारा एवं रागात्मक अभिव्यक्ति में समान भावभूमि के होते हुए तुलनात्मक ढंग से देखा जाए तो हिंदी में देशभक्ति की कविता का पृष्ठाधार तमिल की अपेक्षा अत्यन्त विस्तृत दिखता है। राष्ट्रीय चेतना के उठने के कारणों पर विचार किया जाना तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत निबन्ध में इसी पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है।

विषयविस्तार:

दोनों प्रदेशों की भौगोलिक इकाई, उसका राजनीतिक, सामाजिक परिवेशगत भेद एवं समस्याओं का भिन्न होना ही इसका मुख्य कारण है। भारत के पाँच प्रदेशों की मातृभाषा हिंदी है जब कि तमिल सीमित क्षेत्र की भाषा होने के कारण साहित्यिक सर्जन के परिमाण में भेद आना स्वाभाविक है।

(अ) तमिल में राष्ट्रीय भावना का विकास:

तमिल प्रदेश में राष्ट्रीय कविता का लगभग दो सौ साल का पुराना इतिहास है जबकि हिंदी प्रदेश में आधुनिक राष्ट्रीयता का प्रथम उत्थान हमें सन् 1857 के विद्रोह से मिलता है। वहाँ, उत्तर भारत में, खासकर हिंदी प्रदेश में, अंग्रेज़ शासक के विरुद्ध हिन्दुस्तान की संगठित राष्ट्रीय भावना का वह प्रथम आह्वान था और तभी से वहाँ राष्ट्रीयता का जयनाद आरंभ हुआ। जहाँ तक तमिल प्रदेश का, या कहिए दक्षिण भारत का संबंध है, वहाँ ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना, समुद्रतटवर्ती प्रदेशों में अंग्रेजों और ईसाई पादरियों का आगमन, व्यापार के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में धीरे-धीरे उनका हस्तक्षेप और बाद में उनका आधिपत्य जमाना, ईसाई धर्म का यहाँ जोरों से प्रचार-प्रचार तथा बड़े पैमाने पर निम्नवर्ग को धर्म परिवर्तन के लिए उकसाना आदि कारणों से हिंदुओं को अपने हिंदू धर्म की रक्षा के निमित्त उनसे प्रतिरोध करने की धीमी आवाज़, राजनीतिक दखल एवं हस्तक्षेप से क्रुद्धहोकर उनका विरोध करना यही यहाँ की मुख्य समस्याए थीं।

*गुरु कृपा, मकान नं. 25, प्लाट नं. 790, डॉ. ए. रामास्वामी सलाई, के. के. नगर (पश्चिम), चैन्नई-600 078

उत्तर भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रथम चरण में पुनरुत्थानवादी आंदोलन सामाजिक क्षेत्र तक सीमित रहा। और राजनीतिक समस्याओं से उसने अपने आपको प्राय: अलग ही रखा, परन्तु इस सीमित क्षेत्र में भी देशभक्ति की भावना की अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त गुंजाइश थी। उस युग में दोनों प्रदेशों में देशभक्ति के अन्तर्गत प्राचीन गौरव, विदेशी संस्कृति और सभ्यता के प्रति घृणा और वर्तमान अध: पतन, अनाचार, अशिक्षा, वर्णाश्रम धर्म की अव्यवस्था, अछूतों और स्त्रियों की हीनावस्था के प्रति चिंता और विद्रोह आदि का समावेश था।

यद्यपि तमिल प्रदेश में भी कमीवेशी से उतनी ही समस्याएं थीं, जितनी हिंदी प्रदेश में, फिर भी उत्तर की अपेक्षा यहाँ जन-जागरण की चेतना कुछ धीमी ही रही। तमिल प्रदेश में 'हिंदू धर्म की नींव पक्की रही और उत्तर भारत की भांति यहाँ विदेशी, विधर्मी आक्रांताओं के कारण उनकी सभ्यता और संस्कृति में वे विकृतियाँ नहीं आईं जो कि उत्तर में देखी गईं। लगभग एक हज़ार वर्ष तक उत्तर भारत ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से जितना झेला, भोगा और कई प्रकार की यातनाएं सहीं उसका लवलेश भी दक्षिण को सहना नहीं पड़ा। एक तरह से उत्तर भारत कवच और ढ़ाल बनकर दक्षिण की सभ्यता और संस्कृति की रक्षा कर रहा था ऐसा मानें तो कोई अत्युक्ति नहीं है। इस कारण दक्षिण की संस्कृति और सभ्यता में वे बाधाएं और वे विकृतियाँ नहीं आईं जो उत्तर में देखी गईं। सभ्यता और संस्कृति का, परंपराओं और विश्वासों का, जीवन के रहन-सहन के तौर-तरीकों में कोई अधिक परिवर्तन यहाँ दृष्टिगोचर नहीं हुआ। एक तरह से दक्षिण भारत हिंदू धर्म, हिंदू सभ्यता और संस्कृति का गढ़ माना जा सकता है।

अत: दक्षिण में जब ईस्ट इण्डिया कंपनी का विस्तार हुआ तो गोरों की नई सभ्यता और संस्कृति के प्रति यहाँ के स्थानीय मूलनिवासी उन्हें संशय और वितृष्णा की दृष्टि से देखा करते थे और उन्हें अवांछित अतिथि के रूप में माना।

सन् 1794 में मुत्तुपुलवर नामक कवि ने 'मुत्तु वीराळी' नामक काव्य की रचना की तो उसमें ईस्ट इण्डिया के लोगों की नीच प्रवृत्ति और व्यवहार के प्रति प्रच्छन्न प्रहार किया गया। इस कविता में पहली बार यह संकेत मिलता है कि उस युग में देशभक्ति की भावना से युक्त लोग धीरे-धीरे एक दूसरे के निकट आने लगे। इस कविता का उद्देश्य था राष्ट्रवादी शक्तियों को एकत्र करना और गोरों को यहाँ से भगाना। इस रचना को देशभक्ति का आह्वान करने वाली पहली तमिल कविता मानना उचित लगता है। प्रादेशिक निवासियों की उत्तेजित मन:स्थिति का वर्णन इस काव्य में हुआ है।

"एक स्वदेशी जन ने
खून पसीना बहाया
और अपने खेत में
खीरा उगाया
खीरों का मूल्य तय करने
एक अंग्रेज़ अफसर आया
उसकी बात कोई क्यों माने?
उसी मूल्य पर खीरा क्यों कोई बेचें?

आगे की कुछ पंक्तियों में गोरों के विरुद्धएक संगठन स्थापित किए जाने का उल्लेख है।

"इस देश के निवासी
देशभक्त और साहसी
कुछ कर दिखाने को
संगठित हो चुके हैं।"

कंपनी की बढ़ती सेना को रोकने के निमित्त बिखरी देशभक्ति की शक्तियों को एकत्र करने का प्रयास इन पंक्तियों में हैं।

यद्यपि तमिल प्रदेश में, उस युग में गोरों के विरुद्ध संघर्ष करने का एक व्यवस्थित एवं संगठित प्रयास नहीं हुआ फिर भी स्पष्ट है कि विदेशी शासन के विरुद्ध लोगों में राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना को जगाने का कार्य शुरू हो चुका था और भिन्न-भिन्न रूपों में उसकी अभिव्यक्ति हुई। अत: ऐसा लगता है कि 'मुत्तुवीराळी' ही तमिल की प्रथम देशभक्ति से युक्त कविता है। स्मरणीय है कि विदेशी कंपनी-शासन के विरुद्ध पहला संगठित प्रहार के विचार इस कविता में प्राप्त हैं। तमिल प्रदेश का इतिहास बताता है कि तिरूनेवली के पांचालमकुरूचि के पालयक्कर कट्टबोम्मन द्वारा सन् 1800-01 के बीच एक बड़ा संघर्ष गोरों के विरुद्ध हुआ।

वीरपाण्डिय कट्टबोम्मन् ने ईस्ट इण्डिया कंपनी की सरकार की अधीनता स्वीकार कर उन्हें 'कर' देने से साफ इनकार कर दिया था। इस कारण कंपनी सरकार और कट्टबोम्मन के बीच विरोध की स्थिति उत्पन्न हुई। फलतः कट्टबोम्मन की राजधानी पांचालम्कुरूचि में सन् 1800-01 के बीच दोनों के मध्य युद्ध छिड़ गया। दो वर्ष तक कई बार भयंकर युद्ध के बाद कट्टबोम्मन पराजित हुआ और कंपनी सरकार ने उसे फाँसी की सजा दी। तमिल में, उस युग में रचित गाथाओं और लोकगीतों में उसके अपार साहस और वीरता का प्रचुर मात्रा में चित्रण है। इस प्रकार सन् 1794 और 1805 के बीच लिखे गए तमिल काव्य का मूल स्वर कंपनी शासन के लिए आत्म समर्पण करने से साफ इनकार करना और गोरों के शासन का कड़ा विरोध करना रहा है। इसे हम राष्ट्रीय चेतना का प्रथम चरण मान सकते हैं।

तमिल में राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविताओं की रचना का दूसरा चरण सन् 1877 में रामस्वामी राजा के 'प्रतापविलासम्' नामक नाटक की रचना से प्रारंभ होता है। इस नाटक में देश भक्तिपूर्ण कुछ कविताएँ समाविष्ट हैं और पात्र राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हैं। इस नाटक में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त सफेदपोशी भारतीयों की स्वार्थी और दासोचित मनोवृत्तिवाले व्यक्तियों की निंदा व्यंग्यपूर्ण शब्दों में की गई है।

हिंदी कवियों की भाँति राष्ट्रीय चेतना से युक्त कवियों की मूल प्रवृत्ति भी देश के अतीत गौरव गुणगान और उसके द्वारा लोगों में नई जागृति उत्पन्न करना रही। देशभक्ति से पूर्ण अगली रचना भी संयोग से नाटक की रचना ही है। सन् 1891 में पी. सुंदरनार द्वारा रचित 'मनोन्मनीयम्' एक काव्यनाटक है। इसमें भी नाटक का मूलस्वर राष्ट्रीय भावना रही। नाटककार के अनुसार देशभक्ति किसी भी मानव की प्रथम और सर्वप्रमुख प्रवृत्ति होनी चाहिए। स्वतंत्रता को खो देने का तात्पर्य है अपना सर्वस्व खो देना।

उन्नीसवीं शती के अंत तक स्वतंत्रता की लड़ाई कोई संगठित रूप से नहीं हुई। वास्तव में गाँधी जी के राजनीतिक मंच पर उपस्थित होने के पश्चात् ही और सुब्रह्मण्य भारती के काव्य क्षेत्र में प्रवेश के साथ ही यहाँ राष्ट्रीय भावना जोर पकड़ने लगी। देशभक्ति के वे प्रथम वैतालिक के रूप में यहाँ अवतरित हुए। उनकी बहु प्रचारित देशभक्तिपूर्ण कविताए उस युग में राष्ट्रीय भावना को जगाने में अहम भूमिका अदा करती है।

भारती की साहित्यिक सेवा की अवधि लगभग 10 वर्ष की थी। दस वर्ष की इस लघु अवधि में उन्होंने अनेकानेक देशभक्ति के गीतों और लघु काव्यों की रचना की। भारती देश के राष्ट्रीय आन्दोलन के सक्रिय सदस्य थे और स्वतंत्रता सेनानी भी।

भारती के आगमन से तमिल काव्य में राष्ट्रीयता की लहर जोर पकड़ने लगी और तमिल काव्य में राष्ट्रीयता को प्रमुख प्रतिपाद्य के रूप में अपनाया जाने लगा। हिंदी कवियों की भांति भारती ने भारत के विगत गौरव गरिमा का, विशेष रूप से, उसके ज्ञान और दर्शन की महत्ता का वर्णन अत्यन्त विस्तार से किया है। अपने खंड काव्य 'पांचाली शपदम्' में उन्होंने भारत माता का मानवीकरण द्रौपदी के रूप में किया है।

तिरु. वि. क. के नाम से प्रसिद्ध तिरू. वी. कल्याण सुन्दरम् भारती के समकालीन तमिल विद्वान और बड़े देशभक्त थे। वे तमिल के प्रथम गाँधीवादी लेखक और प्रबल वक्ता भी थे। उन्होंने तमिलनाडु के जनसाधारण के मध्य राष्ट्रीय भावना का प्रचार किया। भारत देश की प्राचीन महिमा और उसकी उन्नति का वर्णन उनकी कविता में द्रष्टव्य है। पराधीन भारत की करुणाजनक वर्णन एवं भारतमाता को मुक्त करने का आह्वान भी उनकी कविताओं का प्रतिपाद्य रहा।

गाँधीयुग के अन्य प्रसिद्ध कवि हैं नामक्कल रामलिंगम् जो तमिलों के बीच 'गाँधीय कविज्ञर' (गाँधीवादी कवि) के नाम से विख्यात हैं। रामलिंगम को गाँधीवाद का प्रचारक कवि मानना अधिक उपयुक्त होगा। उनकी दृष्टि में गाँधीजी राष्ट्रीयता के पर्याय थे तो राष्ट्रीयता गाँधीजी का पर्याय थी।

इनके अतिरिक्त विश्वनाथदास नामक सफल अभिनेता, गीतकार एवं नाटककार ने राष्ट्रीय भावना को जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनकी कविताओं का मूल प्रतिपाद्य देशभक्ति था और अपनी कविताओं और गीतों के माध्यम से विशिष्ट ढंग से रंगमंच को प्रभावित कर दर्शकों के

मन में देशभक्ति को जगाने का स्तुत्य कार्य भी किया था। कविमणि देशिक विनायकम पिल्लै तथा कवि शुद्धानंद भारती, राय चोक्कलिंगम्, कोत्तमंगलम् सुब्बु, एस. डी. सुन्दरम्, सुरभि तंगवेलु के प्रगीत काव्यों में लोगों में व्याप्त सामाजिक वैषम्य और भेदभाव को दूर करने का आह्वानमिलता है। इन लोगों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर तीव्र प्रहार भी किया। इसी भांति क्रांतिकारी कवि के नाम से प्रसिद्ध भारतीदासन ने भी गाँधीवाद के समर्थन में कविता रचने के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक विषमता को दूर करने का भरसक प्रयास किया। उनके मतानुसार जब तक लोगों में व्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक विषमता दूर नहीं होगी तब तक स्वतंत्रता को कोई मूल्य नहीं होगा।

(आ) हिंदी में: हिंदी में राष्ट्रीयता के आरंभिक काल में देशभक्ति के अन्तर्गत प्राचीन आर्य गौरव का गान प्रमुख रहा। दूसरा विदेशी संस्कृति और सभ्यता के प्रति वितृष्णा एवं वर्तमान अध:पतन, अनाचार, अव्यवस्था के प्रति चिंता और विद्रोह आदि का समावेश था।

काँग्रेस का नेतृत्व जब गाँधीजी के हाथों में आ गया था वहीं से राष्ट्रीयता का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट होता गया। राष्ट्र अब प्रादेशिकता, प्रान्तीयता, सांप्रदायिकता आदि से ऊपर उठकर संपूर्ण हिंदुस्तान की एक संगठित इकाई बन गया और उसका राजनीतिक रूप भी स्पष्ट हो चुका था। राजनीतिक चेतना अब सामाजिक तथा सांस्कृतिक चेतना से आगे बढ़ चुकी थी। यह निश्चित हो चुका था कि सभी विषमताओं का मूल कारण विदेशी शासन ही है। गुलामी सबसे बड़ा अभिशाप है अतएव पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष राष्ट्रीयता का पहला और प्रमुख अंग बन गया।

भारत की आत्मा मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन, निराला, सुभद्राकुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर आदि कवियों के स्वर में चीत्कार कर गई। नवीन, दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, सोहनलालद्विवेदी,माखनलाल चतुर्वेदी आदि अनेक कवियों की राष्ट्रीय कविताओं में बलिदान के प्रति उत्कट उत्साह प्रकट होता है और उसके मूल में पराजय की अप्रत्यक्ष स्वीकृति असंदिग्ध है। इस युग की राष्ट्रीय कविता का यह एक सार्वभौम भाव रहा है। लेख के आकार के बढ़ जाने को भय से मैं अधिक विस्तार में जाने के अपने लोभ का संवरण कर आगे संक्षेप में बताना चाहूँगा।

राष्ट्रीय धारा के इन कवियों की कविताएं केवल अतीत के नष्ट गौरव और वर्तमान की दुर्दशा पर ही आँसू नहीं बहाए, वरन् वे जनमानस में शक्ति का संचार करने के लिए उन्हें उद्बोधन भी देते रहे। मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक, गयाप्रसादशुक्ल सनेही जैसे कवियों की रचनाओं का जागरण उद्बोधन और राष्ट्रप्रेम का गीत कहा गया है।

राष्ट्रीय धारा के इन कवियों ने अपनी मातृभाषा के प्रति उदासीन और विदेशी भाषा के प्रति लगाव रखनेवाले जन को सचेत किया। अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतेन्दु युग की अपेक्षा परवर्ती युग के कवियों में राजनीतिक चेतना अधिक प्रबल रही। लगभग सभी कवियों ने मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने का आह्वान दिया था। देश के लिए फाँसी के तख्ते पर 'भारतमाता की जय' का नारा लगाते हुए झूल गए थे। इसी भांति सभी कवि अपनी रचनाओं द्वारा 'करो या मरो' का संदेश देते हैं। सुभद्राकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, निराला, दिनकर, नवीन आदि कवि जनता को गुलामी और उसके कारण पग-पग पर होने वाले तिरस्कार तथा अपमान की याद दिलाते हैं। स्पष्ट है कि इन कवियों में राजनीतिक चेतना पर्याप्त मुखर थी। वे उस समय की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के प्रति उदासीन नहीं थे।

इस प्रकार हम हिंदी के राष्ट्रीय काव्य में तीन स्पष्ट स्वर देखते हैं। (1) दासता पर दुख और क्षोभ तथा स्वतंत्रता की उत्कट कामना (2) आत्मगौरव, स्वाभिमान आत्मविश्वास जगाने के लिए प्राचीन भारत और उसकी सांस्कृतिक समृद्धि का गौरवगान (3) नई परिस्थितियों, नये विचारों और बदलते जीवन मूल्यों के आलोक में आत्मचिन्तन, आत्मविश्लेषण और नये जीवन मूल्यों का निमार्ण। प्रथम दो स्वर आजादी के पूर्व लिखे गए काव्य में मिलते हैं, पर आज का कवि अपने प्राचीन इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्यों आस्था, विश्वास की पुन:परीक्षा करने के लिए आतुर हैं। काव्य सौंदर्य और कला वैभव की दृष्टि से उनमें से अधिकांश मन को रसभग्न

नहीं करतीं, क्योंकि उनका विषय था सामयिक राजनीतिक आन्दोलन और जनक्रांति। उनका तात्कालिक प्रभाव तो अवश्य रहा, मगर उनका स्थायी साहित्यिक और कलात्मक मूल्य कम ही होता है। केवल कुछ कवियों ने साहित्य में स्थायी महत्त्व प्राप्त किया।

(इ) दोनों की तुलना: इस प्रकार दोनों भाषाओं में बीसवीं शती के प्रथम चरण में राष्ट्रीय सांस्कृतिक मूल्यों के सहज प्रहरी के रूप में अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता के मन में जागृति उत्पन्न करने का कार्य किया है। दोनों भाषाओं के ये कवि आधुनिक युग में प्रथम वैतालिक के रूप में क्रियाशील रहे। इन कवियों को भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति के शलाका पुरूष के रूप में मानना ही उचित लगता है। दोनों भाषाओं की रचनाओं में प्राप्त समान भावभूमि और उसकी अद्‌भुत समानधर्मिता हमें अचंभे में डाल देती है। दोनों ही कवि मानवता की भावना से संपन्न कवि रहे हैं। दोनों भाषाओं के कवियों को भारतीय अस्मिता की जैसी पहचान थी, विवेकसम्मत एवं मर्यादापुष्ट पहचान देखी गई वैसे उस युग के अन्य कवियों में देखने को नहीं मिलती। ये कवि अपनी-अपनी भाषा के लोकप्रिय कवि भी थे और उनकी इस लोकप्रियता के पीछे उनका श्रद्‌धा समन्वित, संस्कारी हृदय और बुद्‌धि दोनों का समन्वय स्पष्ट है। जिस युग में इन कवियों का जन्म हुआ था, वह भारत की पराधीनता का पीड़ा काल था और ये कवि इसके भुक्तभोगी थे। दोनों भाषाओं के ये कवि उस युग में जनजागरण की लहर उत्पन्न करने में सशक्त कवि माने जाते हैं। ये भारतीय नवजागरण के अग्रदूत एवं भारतीय समाज के पुनरुथान के संदेशवाहक के रूप में अपने-अपने साहित्य में स्मरण किए जाते हैं। बीसवीं शती का उत्तर भारत सांस्कृतिक और साहित्यिक चेतना के लिए सबसे अधिक किसी कवि का ऋणी है तो वे हैं हिंदी में मैथिलीशरणगुप्त जी और तमिल में सुब्रह्मण्य भारती, इसमें दो मत नहीं है।

उस युग के भारतीय सांस्कृतिक उत्थान में कविश्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुब्रह्मण्य भारती और मैथिलीशरण गुप्तजी की गणना की जाती है। मैथिलीशरण गुप्तजी को आधी शताब्दी तक अपनी काव्यभारती के प्रचार का अवसर मिला। अत: उनकी वाणी से जनजागरण का कार्य अपेक्षाकृत अधिक हुआ जबकि सुब्रह्मण्य भारती केवल बीस वंर्ष के कम समय तक ही काव्यक्षेत्र में सक्रिय रहे। इतने कम समय में फिर भी उनकी ओजस्वी वाणी और तेजदीप्त लेखन से तमिल जनता में जो नवजागरण हुआ वह महत्त्वपूर्ण रहा। गुप्तजी तो न केवल हिंदी प्रदेशों के जाने पहचाने कवि हुए, दक्षिण भारत में भी हिंदी को सर्वसुलभ और आकर्षक बनाने में वे अग्रणी माने जाते हैं। भारती सरल, सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग के प्रबल समर्थक थे। अपने राष्ट्रगीतों एवं अन्य काव्यकृतियों में भी वे सरल, जनप्रिय, बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करते थे। इन कवियों ने विषय चयन की दृष्टि से जनजागरण को प्रधानता दी, क्योंकि वह जनजागरण का युग था। अत: युग की माँग को दोनों भाषाओं के कवियों ने खूब पहचाना। गुप्तजी तो खड़ी बोली को काव्य के लिए उपयुक्त सक्षम भाषा बनाने में लगे थे जबकि भारती तमिल कविता को पंडितों की दुरूह भाषा के चंगुल से छुड़ाकर सर्वजन सुलभ और सरल बनाने के प्रयास में लगे थे। इस प्रकार दोंनों भाषा क्षेत्र के कवि अपने-अपने भाषा क्षेत्र में भाषा संस्कार में लगे थे और उसमें नई प्राण प्रतिष्ठा करने में तत्पर थे। भाषा पर अधिकार प्राप्त करना एक दुष्कर कार्य है। विशेषकर उस भाषा पर जिसका जनजीवन और काव्य-जगत में पूर्ण रूप से सर्वमान्य प्रयोग प्रारंभ न हुआ हो। दोनों प्रदेशों के कवि इन विषम परिस्थितियों में अपनी पूरी निष्ठा और आस्था के साथ तमिल और खड़ीबोली को साथ लेकर निरन्तर चलते रहे और उसे राजमार्ग पर दौड़ने योग्य बनाने में सफल हुए।

दोनों प्रदेशों के कवि अपने अतीत गान से काव्य क्षेत्र में प्रवृत्त हुए थे। अतीत गौरव का गान वर्तमान की दुर्दशा से फूटता है। वर्तमान की दुर्दशा में जब असहाय स्थिति होती है तब मन में टीस और कसक के साथ उद्‌बोधन की प्रेरणा जगती है। इस दृष्टि से दोनों भाषाओं के कवि युग स्रष्टा और युग द्रष्टा कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। परतंत्र भारत की दुर्दशा को दोनों प्रदेशों के कवियों ने भोगा था, झेला था, उसे समाप्त करने का सुनहला स्वप्न भी देखा था।

हमें इन दोनों भाषाओं के कवियों को केवल कवि रूप में ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के पोषक एवं उन्नायक के रूप में देखना ही सही लगता है। भारतीय संस्कृति के

प्राचीन और नवीन आदर्शों से समन्वित करने में कवि तत्पर थे। ऐसा साहित्यिक समीकरण दोनों प्रदेशों के कवियों की काव्य कृतियों में सहज संभव हो सका। साहित्य साधना में दोनों ही प्रदेशों के कवियों का नये-पुराने का सामंजस्य अन्यत्र दुर्लभ है।

एक और बात की ओर मैं ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। दोनों प्रदेशों के कवियों का व्यक्तित्व निमार्ण धर्म, संस्कृति, कला और मानवता के पंचतत्त्वों से हुआ। जिस युग में दोनों प्रदेशों के ये कवि काव्य जगत में प्रवृत्त हुए वह युग समग्र भारत में दैन्य, निराशा, ग्लानि तथा आत्महीनता के भावों से भरा था। राष्ट्र को उस समय साहस, विश्वास, आशा, स्वाभिमान तथा उद्‌बोधन की बड़ी आवश्यकता थी। दोनों भाषाओं के कवियों ने राष्ट्रीयता और देशभक्ति की जो कल्पना की उसमें केवल किसी एक जाति-विशेष का स्थान न होकर भारत भर में निवास करने वाले समस्त जातियों, वर्गों के व्यक्तियों और सभी संप्रदायों का समानाधिकार है। दोनों प्रदेशों के राष्ट्रकवियों ने, विशेषकर मैथिलीशरण गुप्त और भारती ने सांप्रदायिक सद्‌भाव और सौहार्द के संबंध में अनेक स्थलों पर बड़े संतुलित विचार व्यक्त किए हैं। विशेषकर मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में। 'मातृमंदिर' शीर्षक कविता में गुप्तजी कहते हैं:

"जाति धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद-व्यवधान यहाँ
सब का स्वागत, सब का आदर, सबका समसमान यहाँ
राम-रहीम बुद्ध ईसा का सुलभ एक सा ध्यान यहाँ
भिन्न-भिन्न भवसंस्कृतियों के गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ
नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ
सबका शिवकल्याण यहाँ है पाओ सभी प्रसाद यहाँ।"

भारती का भी चिंतन यही है यहाँ मुक्ति तो परैयरों, पुलैयरों, मरवरों कुरवरों (हरिजन) सब के लिए है।

"परैयरों पुलयरों के साथ
परवरों कुरवरों और मरवरों को भी
मुक्ति यहाँ मिले "

यह अद्‌भुत संयोग की बात है कि मैथिलीशरण गुप्त और सुब्रह्मण्य भारती दोनों कवियों ने गौतम बुद्‌ध ईसा मसीह, मुहम्मद साहब, गुरुनानक देव आदि पर स्वतंत्र रूप से कविताएं लिखीं हैं। आज देश में जिस राष्ट्रीय एकता, अखण्ड भारत और सांप्रदायिक सद्‌भावना की बात की जा रही है वह इन दोनों कवियों में की कृतियों में सर्वोपरि है। दोनों प्रदेशों के कवियों ने अपनी-अपनी भाषा में गर्व और गौरव के साथ जीने का संदेश अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। जब तक हिंदी और तमिल जनजीवन में व्याप्त रहेगी तब तक इन दोनों भाषाओं के कवि, विशेषकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी एवं तमिल के राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती दोनों ही इस देश की भाषाओं के अमर गायक के रूप में जनता के मन में जीवित रहेंगे।

भारती की अनेक कविताओं में जिस स्वर्णिम अतीत का भावविभोर होकर जयगान किया है उनमें भारतभक्ति भरपूर है। एक उद्‌धरण–

उज्जवल हिमगिरि शृंग हमारा
विश्वभर में यह है - न्यारा
सुधामयी गंगा हमारी
इसकी कोई नहीं सानी रे।

अनेक स्थलों पर अखण्ड भारत की कवि ने गुहार लगाई है उन्हीं के शब्दों में-

"चाँदी जैसे हिमपर्वत पर विहार करेंगे हम
पश्चिम के विस्तृत सागर में हम नित पोत चलायेंगे
शालाओं में हम सब मिलकर मंदिर का निर्माण करेंगे
भारत-सिंहलद्वीप मध्य सेतु का नवनिर्माण करेंगे हम
रामेश्वर के सागर पर हम सड़कें नई बिछाएंगे
बंगभूमि की जलधारा से मध्यदेश में शस्य उगाएंगे"

इसी भंति एक अन्य कविता में भारती ने सुन्दर कल्पना की है-

चाँदनी रात में, सिन्धु नदी तट पर, केरल की सुन्दरियों के साथ तेलुगु भाषा के सुमधुर गीत गाएंगे। कावेरी तट पर गंगा के तटवर्ती प्रदेश पर उत्पन्न गेहूँ चेरे प्रदेश के हाथी दाँत और वीर मराठों की कविता को एकत्र करने का स्वप्न भारती ने देखा था।

"सिन्धुनदी में, चाँदनी रात में,
चेर प्रदेश की सुन्दर युवतियों के संग
मधुर तेलुगु भाषा में गीत गाते हुए
नाव चलाते खुशियाँ मनाएंगे हम।"

तात्पर्य यह कि भारत की सांस्कृतिक संपदा और भौगोलिक महत्ता का जयघोष करते हुए भारती ने भावात्मक एकता, राष्ट्रीय अखण्डता और नवयुग की चेतना का शंखनाद किया था। एक प्रसंग में वे कहते हैं-

"एक माँ की कोख से ही जन्मे हम
अरे विदेशियो! हम अभिन्न हैं।
मन मुटाव से क्या होता है?
हम भाई-भाई ही रहेंगे।
और कहेंगे 'वन्दे मातरम्"

कुछ इसी प्रकार का भाव गुप्तजी की कविताओं में भी व्यक्त हुआ है।

"तेरे प्यारे बच्चे हम सब बन्धन में बहुबार पड़े
जननी, तेरे लिए भला हम किससे जूझें कब न लड़ें
भाई-भाई लड़े भले ही टूट सका कब नाता?
जय जय भारत माता।"

स्पष्ट है कि भारती का काव्य आद्यंत राष्ट्रप्रेम से अनुस्यूत है। स्वतंत्रता की अदम्य आकांक्षावश दोनों भाषाओं के इन कवियों ने स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय चरितनायकों और पूज्यपुरूषों का श्रद्धावश स्मरण किया है, नमन किया है। गुरुगोविन्दसिंह, लाला लाजपतराय, छत्रपति शिवाजी, गोपालकृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्र के महापुरूषों का भारती ने वन्दन अभिनन्दन किया है। गुप्तजी ने 'गुरुकुल' नामक अपनी कविता में अनेक महापुरूषों को श्रद्धांजिल अर्पित की है।

इस प्रकार हिंदी और तमिल के राष्ट्रीय कवि सामाजिक जनजागरण के पुरस्कर्ता के रूप में मान्य हुए हैं। इनका पुनरुत्थान केवल हिंदु पुनरुस्थान तक सीमित नहीं है। नारी के समानाधिकार के लिए दोनों भाषाओं के कविकटिबद्धहैं। नारी की दयनीय दशा और उसकी महिमा हिंदी कवियों के कृतित्व का केंद्र बिंदु है। 'उर्मिला', योशोधरा' 'विष्णुप्रिया', 'कैकेयी' अदि नारी पात्र गुप्तजी की अमर चरित्रसृष्टि हैं। गुप्तजी ने विशेष रूप से परित्यक्ता, किन्तु पतिव्रता नारी रत्नों को अपने काव्यों का आलंबन बनाया है। इन कवियों ने भारतीय नवजागरण में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। भारती में तो अखण्ड भारत की परिकल्पना थी Pan India Outlook थी।

उपर्युक्त राष्ट्रीय, सांस्कृतिक चेतना के अतिरिक्त भक्ति भावना के क्षेत्र में भी इन दोनों भाषाओं के कवियों में अद्भुत भावसाम्य देखा जा सकता है। तमिल आलवार भक्तों की परंपरा में भारती भी गोपीभाव से अनुप्राणित दिखाई देते हैं। गुप्तजी तो राम में रमे रहे। भारती मूलतः शक्ति उपासक थे। भारती की अमरकृति 'कण्णन पाट्टु' अर्थात् कृष्णगीत उनकी आध्यात्मिक चेतना का प्रकर्ष है। इसमें उन्होंने कृष्ण को माता-पिता, स्वामी-सेवक, मित्र-सखा, गुरु-शिष्य, प्रेमी-प्रिया, कुलदेवता आदि अनेक रूपों में अर्चित किया है। गुप्तजी द्वारा प्रणीत 'तेरे घर के द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊं मैं, जैसे गीत में रहस्यवादी स्वर झंकृत हुआ है।

(ई) निष्कर्षः तुलनात्मक अध्ययन, विश्लेषण के आधार पर यह माना जा सकता है कि भारतीय राष्ट्र, समाज, प्रकृति, संस्कृति के ये कवि, उद्गाता, आख्याता रहे हैं। राष्ट्रोत्थान इन दोनों भाषाओं के कवियों का शुभसंकल्प रहा है। उनकी रचना संसार में बराबर समतुल्यता दर्शित होती है इसे यहाँ रेखांकित करना ज़रूरी है। वस्तुतः दोनों भाषाओं के ये कवि भारतीय साहित्य और उसकी महान संस्कृति और उसकी महान संस्कृति के ज्योतिस्तंभ हैं इसमें दो मत नहीं।

दोनों भाषाओं के कवियों को विश्वकवि के रूप में मानना ही सही लगता है। प्राचीनता की प्रशंसा करने मात्र से आज संसार उनका स्मरण नहीं कर रहा है। बदलते युग की नब्ज पहचान कर मानवोद्धार के निमित्त वांछनीय नए चिन्तन, नित नूतन साहित्यिक रूपों में उन्होंने अपनी भाषा के काव्य को नया मोड़ देते हुए भारतीय समाज का सही पथप्रदर्शन किया था। इसी कारण से वे विश्वकवि के स्तर पर उठ सके, एक महाकवि बन सके, यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी। बदलते युग की आवश्यकताओं के अनुकूल निरर्थक रूढ़ियों और परंपराओं को उन्होंने किनारे कर दिया। नूतनता के प्रति नया उत्साह और आवेग गुप्तजी और अन्य हिंदी कवियों की अपेक्षा सुब्रह्मण्य भारती में अधिक दीखती है। संक्षेप में, दोनों भाषाओं के ये कवि राष्ट्रीय चेतना संपन्न हमारी भारतीय संस्कृति के शलाका पुरुष के रूप में समादृत हैं।

राष्ट्रीय कविताओं के काव्यगत मूल्यांकन के संबंध में दो बातें कहना चाहूँगा। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान रचित

काव्य का संबंध आंदोलन से रहा है और आंदोलन से संबद्ध काव्य प्रायः सामयिक तथा उत्तेजक ही होता है। उसमें स्थिर प्रभाव-क्षमता नहीं होती। लेकिन इस प्रकार के देशव्यापी आन्दोलन से सर्वथा अछूता रहना भी कवियों के लिए संभव भी नहीं है। अत: आन्दोलन का प्रभाव काव्य पर छनकर आता है। फिर भी इनमें से अधिकांशतः को स्थायित्व प्राप्त नहीं हुआ।

इन सीमाओं के रहते हुए आधुनिक हिंदी साहित्य में इस काव्य प्रवृत्ति का अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है। इसका ऐतिहासिक महत्त्व अक्षुण्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से उसने एक महान राष्ट्र की प्रबुद्ध चेतना को वाणी दी है। इस धारा के कवियों ने सोई हुई जनता को झकझोरा, उनके बुझते हृदयों में साहस, अपार नैतिक बल और आत्मविश्वास की चिनगारी जगाई। इस युग के कवि आत्मकेन्द्रित नहीं थे, केवल अपनी वैयक्तिक आध्यात्मिक उन्नति के प्रति चिन्तित नहीं थे, वे अपनी मातृभूमि और देशवासियों के हित और मंगल के लिए चिन्तामग्न थे। उनके उज्जवल भविष्य और अर्थिक दशा सुधारने का संकल्प लिए ये कवि जीवनभर सरस्वती की आराधना करते रहे और देशवासियों को बार-बार कहते रहे कि वे हीनताग्रंथि से मुक्त हों और अपने में आत्मबल संचित करें, स्वयं अपने ऊपर और मातृभूमि पर गर्व करें। आत्मविश्वास और आत्मगौरव का भाव उत्पन्न करने के लिए उन्होंने आवश्यक समझा कि पूर्वजों के शौर्य, पराक्रम, त्याग और बलिदान का स्मरण कराया जाए।

संदर्भ-ग्रंथ

1. हिंदी

1. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त
2. हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास-सोलहवाँ खण्ड-अधुनातम काल-काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. भारतीय साहित्य-डॉ. नगेन्द्र
4. भारतीय कविता में राष्ट्रीय चेतना-केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली।

2. तमिल

1. देशियम् वलरत्त तमिल-क. दिरबियम्
2. देसियमुम् तमिलनाडुम्- मा.पो. शिवज्ञान ग्रामणी
3. विडुतलैप्प् पोरिल तमिळकम्- मा.पो. शिवज्ञान ग्रामणी
4. विडुतलै इयक्कमुम् तमिळकमुम्- विशेषांक "दिनमणि" (दैनिक)

3. अंग्रेजी

1. Freedom Struggle- A memoir special issue-published by "The Hindu" (English Daily)
2. History of Tamil: Her people and culture- By Dr. K.K. Pillai, University of Madras.
3. Cultural History of Tamilnadu-By Dr. N. Subramanian

राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिए जरूरी है और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है।

—लोकमान्य तिलक

पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग बनाम अनुवाद की दुरूहता

—अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी*

तकनीकी प्रकृति की सामग्री के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के सटीक प्रयोग की अपेक्षा रहती है। पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग से ही तो आखिर पाठ में अर्थ-गौरव आता है। एक उदाहरण केद्वाराइसे समझा जा सकता है:

मूल पाठ - The Wire was live.

अनूदित पाठ - तार में विद्युतधारा प्रवाहित हो रही थी।

मूल पाठ में व्यवहत शब्द live के लिए अनूदित पाठ मेंविद्युतधारा प्रवाहित हो रही थी- ऐसा लिखा गया है। यहां live के सहज पर्यायों यथा जीवित, जीवंत आदि का प्रयोग नहीं किया गया है। यदि ऐसा करते तो अनुवाद कुछ इस प्रकार होता :

तार जीवंत/जीवित था।

कहने की आवयकता नहीं कि उक्त वाक्य स्वयं ही निष्प्राण एवं अर्थ-संप्रेषण-विकल है। इस वाक्य में live शब्द पारिभाषिक रूप में आया है। इस शब्द के सटीक हिंदी पर्याय का चुनाव किए बिना अनुवाद में अर्थ की स्थापना नहीं हो सकती थी। एक और उदाहरण लिया जा सकता है:

मूल पाठ - Water is scarce.

अनूदित पाठ - जल की कमी है।

इस पाठ में प्रयुक्त शब्द scarce के अनेक पर्याय हो सकते हैं। यथा अपर्याप्त, कम, विरल, दुर्लभ, दुष्प्राप्य आदि। यदि इन पर्यायों पर ध्यान दें तो अनुवाद कुछ इस प्रकार बनेगा:

जल दुर्लभ है।

जल दुष्प्राप्य है। आदि

यहां भी दुर्लभ, दुष्प्राप्य, विरल जैसे विशेषण जल की एक दशा को दर्शाते तो हैं पर इनके प्रयोग से मूल वाक्य का निहितार्थ अभिव्यक्त नहीं हो पाता है। मूल वाक्य में जल के संरक्षण का संदेश दिया गया है। यदि इस संदेश को अभिव्यक्त करते हुए अनुवाद करना हो तो जल की कमी है ऐसा कहना ज्यादा संगत होगा।

इन उदाहरणों से समझा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद करते समय अनुवादक से अत्यंत सूझ-बूझ की अपेक्षा की जाती है। ऐसे अवसरों पर अनुवादक को उपलब्ध वैकल्पिक पर्यायों पर ही ध्यान नहीं देना होता है वरन मूल पाठ के संदेश को अनूदित पाठ में पूर्णत: अभिव्यक्त करने के लिए अन्य समानार्थी शब्दों पर भी विचार करना होता है।

उदारीकरण की शुरुआत के साथ ही यह आर्थिक जगत में अनेक संकल्पनाएं प्रकट हुई। विशेषकर बैंकिंग तथा सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में उनके नवोन्मेषकर विचार सामने आए। इन विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिन शब्दों का सहारा लिया गया वे पारिभाषिक शब्द कहलाए। इनमें अधिकांश शब्द अंग्रेजी भाषा की अभिव्यक्तियों से संबंधित हैं। इन शब्दों का व्यापक इस्तेमाल हुआ। फलस्वरूप ये विश्व की अनेक भाषाओं में घुल-मिल गए। हिंदी भाषा में ये शब्द बोलचाल के स्तर पर तो स्वीकार कर लिए गए पर समस्या आई अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय। राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों के अनुसरण में द्विभाषिकता की स्थिति आई और तकनीकी शब्दों का निर्माण होने लगा। अनुवाद की प्रमाणिकता के लिए मानक शब्दावली का प्रयोग आवश्यक हैं। पर क्या शब्दावली का प्रयोग ही हमारा लक्ष्य है? हमारा लक्ष्य तो संप्रेषण है न! पर हम मार्ग को ही गंतव्य समझ बैठे हैं। परंपरागत बैंकिग कारोबार भारत के लिए कुछ नया न था। अपनी कार्यपद्धतिके अनुरूप हमारे पास अपनी शब्दावली भी थी। पर नूतन तकनीक के सहारे जिस यूनिवर्सल बैंकिंग का आरंभ हुआ सच पूछें तो उसमें

*उप मुख्य अधिकारी, राजभाषा, यूको बैंक, शिलपुखुरी गुवाहाटी-781003

हमारा कुछ भी न था। हमारे पास बस आयातित शब्दावली और आयातित तकनीक ही थी। हम तकनीक के गृहीता थे। यहां तक तो सब ठीक-ठीक रहा पर जब हम इस तकनीक के प्रक्रिया साहित्य का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने बैठे तो कठिनाई आ खड़ी हुई। बैंकिंग तथा सूचना प्रोद्योगिकीकी अंग्रेजी में विकासमान शब्दावली को हिंदी में प्रतिस्थापित करने के लिए विद्वान तथा भाषा वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत की। कुछ काम भी हुआ। पर जिस गति से विद्वान शब्द गढ़ते उससे तीव्र गति से विदेशी शब्द हमारी भाषा में घुसपैठ कर जाते। एक सुनिश्चित अनुशासन के अभाव में अनुवादकों ने पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद के लिए अपने-अपने मानक गढ़ लिए। यह एक अराजक स्थिति थी। अनुवाद के क्षेत्र में यह अराजकता आज भी बनी हुई है। इस अराजकता के कारण ही एक वर्ग हिंदी के अनुवाद को दुरूह ठहराने लगा है। एक हद तक यह स्थिति है भी।

उदारीकरण के वाहक विचारों में प्रयुक्त की गई शब्दावली के हिंदी पर्याय देने में विद्वान ने जबरदस्त उत्साह दिखाया। इस उत्साह के कारण शब्दावली प्रयोग में मनमानी चल पड़ी। कुछ अनुवाद सिर्फ अनुवाद के लिए ही किए गए। अर्थ संप्रेषित हो रहा है या नहीं इस पर ध्यान नहीं दिया गया। ऐसे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं:

Corporate Sector	के लिए निगमित क्षेत्र
Bench marking	के लिए आधार नियतन
Brand equity	के लिए ब्रैंड साम्या
Reverse mortgage	के लिए प्रतीप बंधक
Flagship company	के लिए ध्वजवाही कंपनी
Hedge fund	के लिए संरक्षण निधि
Credit Squeeze	के लिए ऋण संकुचन
Relationship Manager	के लिए संपर्क प्रबंधक

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय प्रयोग की जानेवाली शब्दावली के चयन-स्वातंत्र्य की एक सीमा है। अनुवादक किस सीमा तक जाकर पर्याय का चयन करे और किस कीमत पर? लक्ष्य भाषा में मूल भाषा का अर्थ मुखर हो सके इसके लिये अनुवादक को किसी भी हद तक जाना चाहिए। पर उसे भावाभिव्यक्ति की कीमत पर पर्यायों की खोज करने स्वातंत्र्य निश्चय ही नहीं दिया जाना चाहिए। अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्त इन पारिभाषिक शब्दों के प्रस्तुत किए गए विकल्पों पर गौर करने से स्पष्ट होता है कि यहां अनुवाद करते समय शब्द के लिए शब्द देने की निष्ठा तो है पर अर्थ-संप्रेषण के प्रति असावधानता बरती गई है। जबकि इनका मिश्र अनुवाद किया जाना चाहिए था। यथा:

Corporate Sector	के लिए कारपोरेट क्षेत्र
Bench marking	के लिए बेंच मार्क करना
Brand equity	के लिए ब्रैंड एक्विटी
Reverse mortgage	के लिए रिवर्स बंधक
Flagship company	के लिए फ्लैगशिप कंपनी
Hedge fund	के लिए हेज निधि
Credit Squeeze	के लिए क्रेडिट स्कवीज
Relationship Manager	के लिए रिलेशनशिप प्रबंधक

वाक्य विन्यास से संबंधित कुछ अन्य उदाहरण लिए जा सकते है:

This is one area where we have to exercise a lot of care because classification of overdraft accounts as performing or otherwise depends on various factors unlike other categories of advances.

शब्दकोशों तथा शब्दावलियों की सहायता से एक स्थल पर इसका अनुवाद इस प्रकार मिला है:

> यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हमें अत्यंत ध्यान देना होगा क्योंकि अध्याहरण खातों का अर्जक आस्तियों अथवा अन्यथा में वर्गीकरण करना अग्रिमों की अन्य कोटियों के असदृश अनेक विभिन्न कारकों पर निर्भर होता है।

उपर्युक्त अनुवाद की दुरूहता चीख-चीख कर बयान कर रही है कि किसी बेदर्द अनुवादक ने मूल पाठ के मर्म को आत्मसात किए बिना ही अपना काम सम्पन्न कर दिया है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए उक्त पाठ के कुछ स्थलों पर चर्चा करना चाहूंगी। पाठ में प्रयुक्त care शब्द ध्यान देना नहीं है वरन सावधान रहना है। Overdraft account अध्याहरण (अधि+आहरण) नहीं है वरन वह सीधे-सीधे ओवरड्राफ्ट ही है। यहां performing or other-wise को अर्जक अथवा अन्यथा करने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। इसे अर्जक अथवा अनर्जक आस्तियां

करने से अर्थ स्पष्टतर हो जाता है । Unlike other categories of advances को अग्रिम की अन्य कोटियों के असदृश न कह कर इसे अग्रिम की अन्य कोटियों के विपरीत कहा जाना चाहिए था। इस प्ररिप्रेक्ष्य में उक्त पाठ का एक प्रस्तावित परिवर्धित अनुवाद इस प्रकार किया जाता है:

> अन्य प्रकार के अग्रिमों के कोटि-वर्गीकरण करने के विपरीत ओवरड्राफ्ट खातों का अर्जक अथवा अनर्जक आस्तियों मे कोटि-वर्गीकरण करना विविध कारकों पर निर्भर करता है । अत: हमें यहां अत्यंत सावधान रहना चाहिये ।

पाठकों ने लक्ष्य किया होगा कि प्रस्तुत अनुवाद में over-draft शब्द का मात्र लिप्यंतरण किया गया है, or otherwise को अथवा अनर्जक आस्तियां कहा गया है, this is one area को हटा दिया गया है तथा वाक्य विन्यास भी बदला हुआ है । इस वाक्य में unlike शब्द को कूट शब्द कह सकते हैं ।

एक और उदाहरण देखें

> The price of card excluldes service tax and educational cess.
>
> अनुवाद:- कार्ड के मूल्य में सेवा कर तथा शिक्षा उपकर अतिरिक्त है ।

इस अनुवाद को पढ़ कर सर्वप्रथम तो मैं कोई अर्थ ही नहीं समझा पाया । कोशिश करने के बाद जो अर्थ मेरे पल्ले पड़ा वह इसके मूल पाठ की संगति में नहीं था । मैं समझ ही नहीं पाया कि कार्ड के मूल्य में सेवा कर तथा शिक्षा उपकर शामिल है या नहीं? जबकि अंग्रेजी पाठ में किसी प्रकार की अस्पष्टता नहीं मिली । हिंदी अनुवाद में जो दुरूहता आ गई है मेरी समझ से उसका कारण excludes क्रियापद का शाब्दिक अनुवाद है । उक्त वाक्य के कुछ अनुवाद प्रस्तावित किए जाते हैं:

> कार्ड की मुद्रित कीमत में सेवा कर तथा शिक्षा उपकर शामिल नहीं है । या सेवा कर तथा शिक्षा उपकर कार्ड पर छपी कीमत के अतिरिक्त है ।

इन दोनों प्रस्तावित अनुवादों में पहला अनुवाद मूल के ज्यादा निकट है । उसमें excludes क्रियापद का अनुवाद शामिल नहीं है (not included) -ऐसा किया गया है और इसमें एक शब्द-मुद्रित-जोड़ा भी गया है । अखिर कार्ड की कीमत सेवा कर तथा शिक्षा उपकर के साथ ही तो लगाई गई है अंतर इतना ही है कि जहां टाक मूल्य कार्ड पर छपा है वहीं सेवा कर तथा शिक्षा उपकर की राशि कार्ड पर मुद्रित नहीं है । तात्पर्य यह है कि सेवा कर तथा शिक्षा उपकर की राशि अलग से वसूली जाएगी । इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि किस प्रकार शब्द विशेष के लिए शब्द विशेष का आग्रह अर्थ के मार्ग में बाधा बन जाता । प्रस्तावित दूसरे अनुवाद की वाक्य की संरचना मूल वाक्य से हट कर की गई है । यहां प्रयास यह रहा है कि अनुवाद मूल वाक्य का अर्थ हिंदी वाक्य में ढाल सके । शब्द अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखते । वे अर्थ की छाया निर्माण करते हैं जो अनेक कारणों से बनती है । अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय हम शब्द के लिए शब्द बिठाने की चेष्टा करते हैं । यही चेष्टा शब्दावली निर्माता भी करते पाए जाते हैं । अक्सर शब्द के लिए शब्द बिठाने के बाद भी, हमने देखा है, अभीष्ट अर्थ नहीं निकलता । अनेक अवसरों पर असंगत शब्दों की संगति से ऐसा ही होता पाया गया है । प्रयोग-बाहुल्य, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, जातीय स्मृति आदि ऐसे कुछ तत्व हैं जिनसे किसी शब्द विशेष से अर्थ विशेष की छाया संभव हो पाती है । उदाहरण के लिए संस्कृत के शब्द गुरू से अर्थ की जो छाया बनती है teacher, mentor आदि से वह छाया नहीं बन पाती । यही कारण है कि अंग्रेजी में भी management guru सदृश अभिव्यक्तियां आज प्रचलित हैं ।

हमें भूलना नहीं है कि अंग्रेज़ी में पारिभाषिक शब्दावली का क्रमिक विकास हुआ है । वहां पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण नहीं होता वरन वे संकल्पनाओं के साथ ही विकसित होती हैं । जबकि हिंदी के लिए हम अंग्रेजी में विद्यमान शब्दावली का अनुवाद करते और पारिभाषिक शब्दावली बनाते हैं । उदाहरणार्थ, कंप्यूटर के साथ जुड़ने वाला एक औज़ार जिसकी आकृति चूहे से मिलती-जुलती थी mouse कहलाई । इसे हिंदी में माऊस ही कहा जाए। यदि इसे मूषक कहने की चेष्टा की जाती है (जैसा इसे कहने की विफल चेष्टा की भी गई थी) तो यह हास्यस्पद ही होगा । अंग्रेजी में आज ऐसे सैकड़ों शब्द व्यवहृत हो रहे हैं जो अपने परिभाषित अर्थ की सीमा का अतिक्रमण करके सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में किसी सर्वथा भिन्न अर्थ कि व्यंजना करने लगे हैं । ऐसे शब्दों का अनुवाद करने में अपनी ऊर्जा नष्ट करने की भला क्या आवश्यकता हो सकती है?

कुछ उदाहरण देखें:

Hardware	Download	Cyberspace
Online	Language	Virtual world
Message	Onsite	Platform
Mail	Workstation	Enviornment

इस प्रकार शब्द के लिये शब्द बिठाने की यांत्रिक चेष्टा से हमें बचना चाहिए। हमें सजगतापूर्वक देखना चाहिए कि कौनसा शब्द किस शब्द के साथ बैठना चाहता है? जैसे सामाजिक जीवन में लोग समस्तरीय लोगों के साथ ही उठना-बैठना पसंद करते हैं उसी प्रकार भाषा में भी शब्द अपने समस्तरीय शब्दों की संगति ही चाहते हैं। विधर्मी जन के साथ बंधकर जैसे हम विकल हो जाते है वैसे ही शब्द भी विधर्मी शब्द का साहचर्य पाकर अपना अर्थ-गाम्भीर्य खो बैठते हैं। अत: अनुवादक को सभी तंत्रों से स्वतंत्र होकर शब्दों का चुनाव करना चाहिए। शब्दों का चुनाव करते समय वह मूल शब्द की छाया खोजता रहता है। अनुवाद की प्रामाणिकता बनाए रखने के आग्रह में अनुवादक उक्त छाया का अतिक्रमण नहीं कर पाता। भाषा में शब्दों की पारस्परिक संगति की साधना के उद्देश्य से जो अनुवादक जिस सीमा तक मूल शब्द की छाया का अतिक्रमण कर पाता है उसका अनुवाद भी उसी सीमा तक अनूदित पाठ की काया में प्रवेश कर पाता है। आखिर स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा की काया में प्रवेश करना ही तो अनुवाद है। ■

लेखक कृपया ध्यान दें

'राजभाषा भारती' में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं। लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। लेख ए-4 आकार के कागज पर टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यत: तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो। कृपया नोट करें कि हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किए जाएंगे। लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा। कृपया इस संबंध में पत्राचार न करें।

कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें :-

संपादक/उप संपादक
राजभाषा भारती
राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)
कमरा सं. ए-4, द्वितीय तल, लोकनायक भवन,
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

साहित्यिकी

हिंदी-पंजाबी संबंध : ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन परिप्रेक्ष्य

—नीलम शर्मा 'अंशु'*

पंजाबी आधुनिक भारतीय भाषाओं में से एक है, यह पूरबी और पश्चिमी पंजाब में बोली जाने वाली आधुनिक भारतीय भाषा है। इसका संबंध एक तरफ पंजाबी कौम से है तो दूसरी तरफ पांच दरियाओं के इलाके से है आश्चर्य की बात है कि पंजाब का यह नाम (जहां तक मैंने पढ़ा है) अकबर के शासन में पड़ा और वहां की भाषा के लिए पंजाबी शब्द भी पहली बार 16वीं सदी में प्रयोग किया गया प्रश्न यह उठता है कि क्या पंजाबी कौम, पंजाबी इलाका और पंजाबी जबान अकबर के समय में अचानक पैदा हो गई ? जी नहीं, अकबर से पूर्व भी यह धरती कायम थी और यहाँ के लोग वैसी ही बोली बोलते थे। अंतर सिर्फ इतना है कि उस वक्त इस बोली और अंचल का यह नामकरण नहीं था। खैर हम इसके विस्तार में नहीं जाएंगे।

वैसे, पंजाब को अहिंदी भाषी प्रदेश माना जाता रहा है, लेकिन जहां तक हिंदी पंजाबी संबंधों की बात है तो पंजाब में 10वीं सदी से हिंदी साहित्य सृजन होता रहा है, हिंदी के प्रारंभिक युग में पंजाब ने हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में योगदान दिया है। इसी काल में सिद्धों ने लोकभाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। इस सिद्ध साहित्य में हिंदी के प्रारंभिक रूप के दर्शन होते हैं। इन सिद्धों में चौरंगीनाथ, चटपटनाथ, बालानाथ, मसतानाथ, जयदेव आदि का संबंध पंजाब से रहा है। इनकी रचनाओं का हिंदी के आदिकालीन साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इसके पश्चात् जो गौरवशाली ग्रंथ सामने आता है। वह है 'चन्दबरदाई' का जिन्हें हिंदी का सबसे बड़ा प्रबंधकाव्य पृथ्वीराज रासो लिखने का श्रेय प्राप्त है। इन्हें जन्म देने का श्रेय भी पंजाब को है। उसी युग में यानी 12वीं सदी ने फारिद्यु शंकरगंज एवम् बुअलीशाह जैसे सूफी कवियों ने हिंदी को अपने लेखन का माध्यम बनाया।

उत्तर मध्य काल में पंजाब के इतिहास में सांस्कृतिक पुनरुत्थान युग आरंभ होता है। इस समय मुगल शक्ति के विरुद्ध आंदोलन का सूत्रपात किया सिक्ख गुरुओं ने। भारतीय आध्यात्मिक वाणी को उन्होंने सरल, सरस भाषा में प्रस्तुत किया जो कि ब्रजभाषा रही, रहीम, कृपाराम, हृदयराम आदि भी पंजाब की देन है। इनके अतिरक्त और भी कई नाम हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी स्वयं उच्च कोटि के कवि थे। उनका दशमग्रंथ हिंदी के श्रेष्ठतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त करने का अधिकारी है। उनके दरबार में भी हिंदी के अनेक कवि थे। पटियाला, नाभा, संगरूर और जींद आदि सिक्ख रियासतों में हिंदी साहित्य खूब पल्लवित हुआ।

हिंदी खड़ी बोली गद्यका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। भारतेन्दु को आधुनिक हिंदी गद्यका जन्मदाता माना गया। पंजाब में हिंदी साहित्य से संबंधी जो शोध कार्य हुए हैं उनमें पंजाब में खड़ी बोली गद्यकी 400-500 वर्ष पुरानी परंपरा प्रकाश में आई है। यह साहित्य गुरमुखी लिपि में है इसलिए अभी तक प्रकाश में नहीं आ सका, इस क्षेत्र में पंजाब हिंदी भाषी क्षेत्रों से कितना आगे रहा है तथा जो प्रचार-प्रसार हुआ उसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। पंजाब में हिंदी भाषा इतनी लोकप्रिय रही थी कि गुरुमुखी लिपि के माध्यम से वहां हिंदी पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती रही हैं।

वर्तमान समय में अनुवाद कार्य काफी सशक्त है, अनुवाद के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं को परस्पर एक-दूसरे के करीब लाया जा रहा है। ठीक उसी तरह हिंदी के प्रसिद्ध कवियों सूरदास, तुलसीदास, केशव, बिहारी, मतिराम, भूषण आदि की रचनाएं भी गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हैं जो इस बात को प्रमाणित करता है कि पंजाब में गुरूमुखी लिपि के माध्यम से हिंदी भाषा सर्वमान्य थी और हिंदी साहित्य के प्रति पंजाबियों में अत्याधिक रुचि थी,

*फ्लैट - 19/3, आई.सी. 1, फेज-1, ठाकुर पुकुर हाउसिंग प्रोजेक्ट, कालीतला, एम. जी. रोड, कोलकाता-104

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल लिखित हिंदी साहित्य का इतिहास भी पंजाबी में उपलब्ध है । ये सभी अनुदित ग्रंथ सांस्कृतिक, साहित्यिक अथवा ऐतिहासिक दृष्टि से तो महत्वपूर्ण हैं ही भाषा की दृष्टि से भी ।

प्रसिद्ध सूफी विद्वान मौलाना रूमी का कथन है । आप दीयों की तरफ मत देखें, प्रकाश की ओर देखें, दीये भले ही अलग-अलग हैं परंतु रौशनी तो एक ही है ।' यही बात थी गुरु ग्रंथ साहब पर भी अक्षरथ: फिट बैठती है । उन दिनों की भाषा हिंदुस्तानी थी, और साधु-संतों की संत-भाषा इसी का सुंदर और सरल रूप थी । गुरू साहिबान चाहते तो सिर्फ अपने गुरुओं की वाणी ही इसमें संकलित कर सकते परंतु मानवीय साझेदारी और एकता का नया मार्ग प्रशस्त करने हेतु उन्होंने पूरे हिंदुस्तान के संत साहित्य को एक जगह संकलित किया । यह सिर्फ हिंदी का हिंदुस्तान ही नहीं बल्कि विश्व भर के लिए एक नया तजुर्बा था कि आस्तिकता से संबंधित 35-40 महापुरुषों की वाणी को एक जगह प्रस्तुत किया जा सके । आधुनिक युग में यह प्रथा प्रचलित है कि किसी विश्व पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के विचार संकलित कर प्रमाणिक पुस्तक तैयार की जाए परंतु गुरु साहिबान ने आज से कई वर्ष पूर्व आध्यात्मिक और जीवन संबंधी आवश्यक पहलुओं पर ऐसा ग्रंथ रचकर नई प्रथा की शुरूआत की थी। इस ग्रंथ में गुरु नानक गुरु अगंद देव, गुरु अमरदास, रामदास, अर्जुन देव, तेग बहादुर, गोबिंद सिंह सहित भक्त कवियों में जयदेव, शेख फरीद, नामदेव, स्वामी रामानंद, कबीर, भगत वेणी, सघना भगत, धन्ना भगत, भीखण, रविदास, परमानंद, सूरदास, भाई मरदाना, भाई संता, सुंदर आदि की रचनाएं शामिल हैं ।

ये तो थी साहित्य की बात। हिंदी-पंजाबी संबंधों की दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी फिल्म उद्योग भी शुरू से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । फिल्म उद्योगसे बहुत से पंजाबी भाषी व्यक्तित्व जुड़े रहे हैं और जुड़े हुए हैं चाहे फिल्म निर्माण हो, निर्देशन हो, गीत-संगीत का क्षेत्र हो या फिर अभिनय । किन-किन नामों का उल्लेख किया जाए । केदार शर्मा हो या कपूर खानदान या कुंदन लाल सहगल हो या मुहम्मद रफी, मदन मोहन या फिर गीतकार प्रेम धवन, गुलजार, देव कोहली हों या जगजीत, भूपेन्द्र सिंह वगैरह-वगैरह ।

हिंदी फिल्मों के गीतों के बोल, पंजाबी शब्द जुड़े बिना अधूरे से माने जाते हैं चाहे वो गीत हो–उड़े जब-जब जुल्फें तेरी, कंवारियों का दिल मचले जिंद मेरिए या मैं निकला गड्डी लेकर, ओ सड़क पर इक मोड़ आया, मैं ओत्थे दिल छोड़ आया या फिर साडे नाल रहोगे तो ऐश करोगे, जिंदगी दे सारे मजे कैश करोगे । और, इन दिनों तो पंजाबी शब्दों का चलन कुछ ज्यादा ही नजर आ रहा है । अक्सर डॉयलॉग अदायगी भी पंजाबीयत का पुट लिए होती है ।

साधारणत: लोगों का नजरिया वही रहा है कि पंजाबी भाषी पंजाबी टोन में हिंदी बोलते हैं लेकिन आप जानते होंगे कि स्व. बलराज साहनी और स्व. सुनील दत्त रेडियो बी.बी. सी. के हिंदी विभाग के जाने-माने उद्घोषक रहे हैं ।

पंजाबी साहित्य के माध्यम से भी हिंदी फिल्म उद्योग समृद्ध हुआ है, पंजाबी संस्कृति, लोक-कथाओं, प्रेम कथाओं और उपन्यासों पर आधारित फिल्में बनी, मसलन, हीर-रांझा, सोहणी महीवाल, नानक सिंह के उपन्यास पर पवित्र पापी, राजेन्द्र सिंह बेदी के कथानक पर एक चादर मैली सी । अमृता प्रीतम के उपन्यास पर पिंजर जैसी असंख्य फिल्में गिनवाई जा सकती हैं, और वर्तमान समय की फिल्में तो खास तौर से पंजाबी समाज और संस्कृति के इर्द-गिर्द धूमती हैं, चाहे दिल वाले दूल्हनियां ले जाएंगे हो या गदर, कभी खुशी कभी गम या वीरज़ारा को लें । हिंदी फिल्मों में पंजाबी भाषी सरदार का किरदार अवश्य नजर आता है चाहे वो बाल कलाकार के रूप में हो या चरित्र अभिनेता के रूप में ।

पंजाब की जमीन से जुड़े ऐसे अनेकों नाम हैं जिन्होंने मातृभाषा पंजाबी होते हुए भी हिंदी को अपने लेखन-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, बहुत कम लोग जानते हैं कि अभिनेता बलराज साहनी अच्छे लेखक भी रहे हैं । हिंदी फिल्मों में काम करते हुए उन्होंने पंजाबी भाषा में साहित्य सृजन किया । उनकी पत्नी संतोष साहनी भी पंजाबी की सशक्त लेखिका हैं और सशक्त बाल साहित्य रचा है । हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ने दोनों का समग्र साहित्य हिंदी में प्रस्तुत किया है, अमृता प्रीतम और करतार सिंह दुग्गल सहित अनेकों लेखक पंजाबी-हिंदी दोनों भाषाओं में बराबर लिखते रहे हैं ।

पंजाबी-हिंदी संबंधों की एक और मिसाल थियेटर जगत भी है । हिंदी थियेटर को भी पंजाबी भाषियों ने समृद्ध किया चाहे वे पृथ्वीराज कपूर हों या अमरीश पुरी, ओम पुरी, अन्नू कपूर या कुलभूषण खरबंदा ।

और तो और, पंजाबी भाषी अनूप जलोटा ने अपनी गायकी से हिंदी भजन गायकी के जगत को एक अलग मुकाम दिया । एक नाम और, कोलकाता वासी गायक अमरीक सिंह अरोड़ा जो पैदा तो पंजाब में हुए, ने सिख होते हुए तथा अपनी सिख वेश-भूषा को बरकरार रखते हुए बंगाल की माटी पर गायक के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी है । ■

हिंदी लोकनाटकों का मंचीय लेखन

—प्रो. मुकुल चंद पांडेय*

यह सर्वमान्य तथ्य है कि अभिनय द्वारा व्यक्त जीवन को नाटक कहा गया है । तत्वत: नाटक में प्रदर्शन का ही प्राधान्य (प्रधानता) रहता है । इसी से यह दृश्य-काव्य के रूप में प्रतिष्ठित है । साहित्य की कोई अन्य विद्या दृश्य-काव्य के रूप में परिगणित नहीं होती । अतएव घटनाओं को जब दृश्य में प्रस्तुत किया जाएगा तब उनमें अनुकरण प्रमुख होगा ही । अनेक भावों और अवस्थाओं से युक्त नाटक मुख्यत: लोकवृत्त का अनुकरण ही है । धनंजय ने "अवस्था के अनुकरण को ही नाटक कहा है, अर्थात् नटों द्वारा प्रदर्शित कृत्य नाटक है ।

नाटक का अभिप्राय सुख दु:खादि से युक्त जीवन का दृश्य रूप में उपस्थापन ही माना गया है । नट धातु से इसकी व्युत्पत्ति मानी जाती है अर्थात् आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनवों द्वारा भावों का विलक्षण प्रयोग है ।

इस नाट्यशास्त्र अथवा 'रंगमंच विज्ञान' के अनेक रूप में विविध पक्षों पर अपने विचार रखने में तथा हिंदी में 'रंगमंच विज्ञान' की उपादेयता को रेखांकित करते हुए लोक जीवन में अभिनय के महत्व को "लोक नाटकों" की संज्ञा दी गई है । वास्तव में नाटक को लोक स्वभाव का अनुकरण कहा गया है और उसका प्रकृत रूप लोक रंगमंच पर ही प्रकट होता है ।

लोकनाटक मूलत: ग्रामीण जनता की वस्तु रही है परंतु आधुनिक सभ्यता के उत्कर्ष काल में शहरों में भी लोकनाट्य तथा लोकगीत के प्रति बड़ा आकर्षण दिखाई पड़ने लगा है । इसी से लोक रंगमंच के नाटक अब नगरों में भी अभिनीत होने लगे हैं । यह विधा अनेक रूपों में दर्शनीय है । इनमें रामलीला, रासलीला, कीर्तिवयां, अंकिया, जाया विदेसिया, स्वांग, तमाशा, नौटंकी, माच, ख्याल, भवाई गिद्दा, ललित, गोधलि, दशावतार, भगत, यक्षगान नाटक, कथाकली, विधि नाटकम् आदि प्रचलित हैं । लोकनाट्य वस्तुत: सामाजिकता की कला है और सामाजिक स्थिति एवं आवश्यकता के अनुरूप ही उसकी उत्पत्ति और विकास हुआ है चूंकि सभी देशों की सामाजिक, राजनीतिक तथा जन-जीवन के तत्व धार्मिक उत्सवों, पौराणिक कथाओं एवं अन्य प्रचलनों में अंतर का होना स्वाभाविक है अत: लोक जीवन के यथार्थ को रूपांतरित करने की कला ही लोक नाटय में प्रतिबिंबित होती है ।

विशिष्ट लोक नाट्यों में रामलीला और रासलीला का उल्लेखनीय महत्व माना जाता है । रामचरित में ऐसा वैशिष्ट है कि समाज उससे प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता । वस्तुत: मानवीय संस्कृति का आदर्श रामचरित उसका चरम निदर्शन है । यही कारण है कि रामलीला के प्रदर्शन के प्रति सामाजिकों की अत्यधिक रुचि रही है । नि:संदेह रामचरित लौकिक जीवन का प्रेरणास्रोत तथा अलौकिक जीवन का आधारस्तंभ रहा है । रंग मंच पर उससे प्रस्तुतीकरण से सभी वर्ग और सभी स्तर के दर्शकों को आनंद मिलता है । रुचि परिष्कार का अवसर प्राप्त होता है । संघर्षों पर 'विजय घोष' का ऐसा अवसर अन्यत्र मिलना कठिन है । विश्व के अनेक देशों में इसका कई रूपों में प्रदर्शन-मंचन होता है । इसको कई लेखकों ने संगीतमय, सुरों से सुसज्जित कर लिखा है जिसमें बरेली (उ.प्र.) के राधेश्याम कथा वाचक का लेखन बहुत ही रोमांचक रहा है । इसको हिंदी में कई मंडलियों ने अपने रूप में ढालने का प्रयास किया है । अब भी वह अपनी प्रासंगिकता बरकरार रखे हुए है ।

रसराज श्रीकृष्ण का अभिनटन तो विख्यात ही है । रासेश्वरी श्री राधा भी अभिनय-कला की प्रतिमूर्ति ही हैं, फिर गोपिकाओं का प्रेम भी अप्रतिम है । यही कारण है कि लोक जीवन में बहुचर्चित रासलीलाएं जनरंजक होती हैं । इसी रासलीला को हल्लीश, गोष्ठीं और नाट्य रासक का

*353, त्रिवेणी नगर, लखनऊ-226020

1752 HA/08—3A

मिश्रित रूप माना जाता है। सभी का संबंध श्रीकृष्ण से होता है। वर्तमान समय में रासलीला पारसी रंगमंच से प्रभावित हो रहा है जिसमें उछल-कूद, चमक-दमक की प्रधानता देखी जा रही है।

आधुनिक युग में ग्रामीण जीवन एवं शहरी जीवन में पहले जैसा अंतर नहीं रह गया है इसीलिए लोक नाट्य में धीरे-धीरे कलात्मकता कृत्रिमता का समावेश होता जा रहा है। फिल्मों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है, अब तो बार-बालाएं ज्यादातर लोक नाटकों में अपनी कला और अश्लील प्रदर्शन दिखलाने लगी हैं जिससे लोकनाट्य में अभिरंजन तथा फूहड़पन नजर आ रहा है।

अभिनव के मूलभूत नियमों का पालन न किए जाने के परिणामस्वरूप इनमें प्रामाणिकता, मौलिकता तथा यथार्थ-बोध का अभाव दृष्टिगत हो रहा है। कार्यावस्था को अर्थ प्रकृतियों एवं संधियों का सामंजस्य ढूंढना विशेष महत्वपूर्ण विषय नहीं रह गया है। इसका कारण यह है कि नाट्यशास्त्र अब नव्यशैली में लिखा जा रहा है।

लोक नाटकों में नौटंकी का प्रमुख स्थान है। इसी प्रकार बिहार में स्व. भिखारी ठाकुरद्वाराविरचित विदेसिया भी खूब लोकप्रिय रहा। कथावस्तु की दृष्टि से मंचीय लेख में सरल शब्दों का प्रयोग तथा मिलीजुली लोकवाणी का पुट ज्यादा समीचीन प्रतीत होता है। समाज में घटित नवीनतम घटनाओं, प्रवृतियों का चित्रांकन उनकी भाषा में प्रस्तुत करने में मंच पर अभिनय करने वाला पात्र अपना स्वाभाविक निरूपण करने में समर्थ हो पाता है। यूगीन समस्याओं जैसे परिवार कल्याण, एड्स-उन्मूलन, दहेज-प्रथा बाल-विवाह आदि को लोक नाटकों के माध्यम से लिखे जाने से हुएं नुक्कड़ नाटकों और नोटंकी की शैली में प्रस्तुत किया जाना अभिप्रेत है।

यही कारण है कि संवाद की दृष्टि से लोक नाटकों में पात्रों को यह छूट रहती है कि अपनी क्षमता के अनुसार संवादों को छोटा-बड़ा कर सकें।

भाषा शैली की दृष्टि से स्थानीय भाषा के प्रयोग पर ही बल दिया जाता है और उसकी शैली भी अत्यंत सरल होती है। शास्त्रीय नाटकों की भाषा प्राय: परिष्कृत ही होती है और शैली में भी अपेक्षाकृत थोड़ी दुरुहता अवश्य पाई जाती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि लोक नाटकों में स्थान, समय और घटनाओं की कोई सीमा नहीं होती, शास्त्रीय नाटकों में इन्हें अनिवार्यत: सीमित किया जाता है। सभी लोक नाटक मुख्यत: खुले रंगमंच पर प्रदर्शित होते हैं या अधिकांश शास्त्रीय नाटकों के लिए नाट्यगृह की अपेक्षा की जाती है। नाटककार को लोक-दृष्य के साथ सामंजस्य स्थापित करने से साधारणीकरण की प्रक्रिया निष्पन्न हो जाती है। नाटक हमें जीवन का प्रत्यक्षत: और बहुआयामी साक्षात्कार कराता है। सामान्यत: सभी कलाएँ आंख अथवा कान दोनों ही ज्ञानेंद्रियों से आत्मसात की जाती है परंतु लोक नाट्य रोमांचित कर अधिक जीवंत बनाने में समर्थ होता है।

लोक नाट्य की रमणीयता का सहज बोध रंगमंच पर उपस्थित बाद्ययंत्रों, सज्जा, रंगदीपन, प्रकाश व्यवस्था से अधिक मुखरित होती है। इस बात पर इसकी सफलता निर्भर करती है कि वह समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा आप-बीती के निकट लाने का यथार्थ बोध कराता है।

मंचीय लेखन की सौम्यता इस बात पर निर्भर है कि पात्रों के संवाद स्पष्ट तथा दृश्यांकन के अनुरूप हो और वाद-नृत्य, अभिनय में परिपक्वता प्राप्त है। मंचीय लेख में जिन मूलभूत तत्वों का समावेश वांछनीय है उसमें समाज सुधारवादी, संप्रदायवादी, प्रचारवादी आदि अनेक रूप हो, साथ ही जनोप योगी, छात्रोपयोगी, महिला वर्ग के लिए रोचक साथ ही एक से लेकर अनेक पात्रों वाले लोकनाटकों का स्वरूप निर्धारित किया गया है।

अभिप्राय यह है कि युगानुरूप लोकनाटकों का लोकजीवंत के यथार्थ चित्रण के परिप्रेक्ष्य में मंचीय लेखन वांछनीय है। ■

> हिंदी प्रेम की भाषा है।
>
> —महादेवी वर्मा

1752 HA/08—2D

पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य

प्रगतिशील काव्यांदोलन के सशक्त स्तंभः डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

—ओम प्रकाश द्विवेदी*

भारतीय साहित्य और संस्कृति का मूलमंत्र 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' ही रहा है। उपनिषदों, पुराणों तथा संस्कृत के महान ग्रथों से लेकर रामायण तक में इस लोक कल्याण के आदर्श को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है तथा इसी भावना को जनमानस में संचारित करने का प्रयास किया गया है। साहित्य के इतिहास से भी स्पष्ट है कि जब कभी इस लोक कल्याण की भावना को दबाने या ध्वस्त करने की चेष्टाएं हुई, किसी न किसी प्रबल सुधारक समन्वयकर्ता ने आकर नए-नए जीवन-मूल्यों के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व और कल्याण को प्रतिष्ठित किया है। तुलसी, कबीर हों अथवा गुरू नानकदेव, वे सभी कवि होने के साथ-साथ प्रबल समाज सुधारक भी माने जाते हैं। हिंदी का आधुनिक काव्य यथार्थ के प्रति अत्याधिक आग्रहकारी सिद्ध हुआ। भरतेंदु युग के सभी साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज, राज्य के प्रति यथार्थबोध ही व्यक्त किया है। द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता का स्वर सामाजिक जागरूकता का चित्र देने वाला रहा है। छायावाद युग तक आते-आते विज्ञान के आविष्कारों के कारण समस्त विश्व एक इकाई अर्थात् 'वसुधैवकुटुम्बकम' बन जाता है और विश्व के अन्य देशों के दर्शनों, आंदोलनों से भारतीय समाज भी प्रेरणा लेता है। यहां की परिस्थितियों में जो कुछ पनप रहा था वह तीव्रता के साथ स्वरूप धारण करता है। सन् 1940 तक विविध काव्यांदोलन अपनी दार्शनिक मान्यताओं के साथ हमारे सामने आते हैं। प्रगतिवादी काव्यधारा को निश्चित रूपरेखा देने में प्रगतिशील संघ और देश की आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों के साथ-साथ मार्क्सवाद का विशेष हाथ रहा है।

प्रायः सभी प्रगतिशील आलोचक इस बात पर सहमत दिखाई देते हैं कि प्रगतिशीलता मार्क्सवादी विचारों का साहित्य में प्रतिपादन है। मार्क्स मूल रूप से समाजद्रष्टा थे, उन्होंने समाज और उसके परिवर्तन के संबंध में अपनी दार्शनिक परिभाषाएं दी हैं। साहित्य में गहरी रूचि के बावजूद मार्क्स ने कहीं साहित्य या प्रगतिशील साहित्य की कोई परिभाषा नहीं दी है। कार्ल मार्क्स के समाज दर्शन सिद्धांत जब साहित्य पर लागू किए जाते हैं तो प्रगतिशील साहित्य और प्रगतिवाद का जन्म होता है। प्रगतिशीलता की परिभाषा और प्रगतिशील काव्य की सीमाओं को हिंदी-उर्दू के विद्वान आलोचकों ने कई ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ नामवर सिंह के अनुसार - "प्रगतिवाद के आरंभ में यह जो आध्यात्मिकतावाद, अराजकतावाद, विकृत यथार्थवाद अथवा प्राकृतिकतावाद की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं, उनका रिश्ता मार्क्सवाद से बहुत दूर का है - इसे आज का सामान्य विद्यार्थी भी जानता है। इससे पता चलता है कि हिंदी के लेखकों ने बाहर के मार्क्सवादी प्रभाव को अपने व्यक्तिवादी और भाववादी संस्कारों की सीमा में ही स्वीकार किया और उसी के अनुरूप उनमें प्रतिक्रियांए भी हुई। मध्यवर्गीय लेखकों के मन पर परिस्थिति का जैसा दबाव था, उसमें प्रायः इसी प्रकार का परिवर्तन संभव हो सका।"

डॉ. नामवर सिंह का यह निष्कर्ष बिल्कुल निष्पक्ष और त्रुटिहीन है। हमारे प्रगतिशील कवियों ने वास्तव में हृदय के रास्ते से प्रगतिशीलता को समझा और जाना था। डॉ. सिंह प्रगतिशील साहित्य की उपलब्धियों को भी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण निधि बताते हैं। नेमिचंद जैन ने 'साहित्य में प्रगतिशीलता' में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए यह कहा कि "प्रगतिशीलता कलाकार के व्यक्तित्व की सामाजिकता में है।" वे मानते हैं कि "जिस दिन व्यक्ति कवि सचेष्ट भाव से युगों पुराने संस्कारगत आंतरिक विरोध को सुलझाकर अपनी चेतना को पूर्णरूप से सामाजिक बना सकेगा उस दिन कविता फिर अपने प्रकृत रूप में निखर उठेगी।"

*राजभाषा सेवा, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी

प्रगति के बिंदु किसी न किसी रूप में हमारी कविता में पहले से ही मौजूद थे। बीज के रूप में पलने वाली वही विचारधारा उचित काल और अवकाश पाकर पल्लवित–पुष्पित होती हुई एक विशाल वृक्ष में परिणित हो गई। हिंदी कविता का आधुनिक इतिहास चूंकि भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र से ही माना जाता है, अत: इसी कालखंड में इस चेतना को ढूंढना ठीक समझते हैं। इस बात को स्पष्ट करते हुए युवा समीक्षक डॉ. रतनकुमार पांडेय लिखते हैं "हिंदी काव्य में प्रगतिशील चेतना के दर्शन भक्त कवियों की रचनाओं में होते हैं। किंतु लोकधर्म एवं लोकमर्यादाओं के भार से बोझिल होने से वह निस्तेज बना रहता है। ...... "प्रगतिशील कविता के कुछ मूलभूत तत्वों को हम आधुनिक काल की प्रारंभिक कविताओं में भी देख सकते हैं। यह वह कालखंड है जब भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतर्द्वन्दों के बीच भी एक दृष्टि लेकर आए। भारतेंदु की कविताओं में पहली बार जीवन की वास्तविक दशाओं को जगह मिली, परिणामस्वरूप कविताओं में यथार्थ–चित्रण की नई परंपरा का सूत्रपात हुआ।" हिंदी काव्यधारा में प्रगतिशील विचारधारा का बीजांकुरण हिंदी के आदि काल में ही हो चुका था। सरहपा, कण्हपा जैसे कवियों की समाज परिवर्तन की आकांक्षा प्रगतिशीलता ही है। समाज की विकृतियों को दूर करके उसे साफ–सुथरा रूप देना, उसके विकास केंद्वाराखोलना ही प्रगतिशीलता है। पुरानी हिंदी के कवियों की यह प्रगतिशीलता भक्तिकालीन संत कवियों में और भी मुखर होती हुई चली गई है।

प्रगतिवादी साहित्य जितना औपचारिक है, प्रगतिशील साहित्य उतना औपचारिक नहीं। प्रगतिवाद में राजनीतिक घोषणाएं स्पष्ट रूप से मिलती हैं जबकि प्रगतिशील में ये अंतर्निहित होती हैं। प्रगतिशील साहित्य, साहित्य पहले है राजनैतिक चिंतन बाद में; जबकि प्रगतिवादी साहित्य राजनीतिक चिंतन पहले है, और साहित्य बाद में। इन दोनों में यही मूलभूत अंतर है लेकिन जहां तक लक्ष्य का प्रश्न है, दोनों का एक ही लक्ष्य है और वह है, शोषित, उपेक्षित, दलित समाज को सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप से उच्च वर्ग के समकक्ष लाना और उसे प्रतिष्ठित करना।

जहाँ तक प्रगतिशील लेखक संघ का प्रश्न है, यह प्रगतिशील विचारधारा के कवियों और लेखकों का एक सम्मेलन था जिसमें इस साहित्यिक यात्रा के लक्ष्यों को दिशा दी जानी थी। यह सम्मेलन अपने इस उद्देश्य में काफी सार्थक भी रहा, क्योंकि प्रगतिशील साहित्य का मूल उद्देश्य जिस वर्ग का उत्थान था, सन् 1936 के बाद इन साहित्यकारों ने एक आंदोलन के रूप में साहित्य सर्जना करते हुए प्रथम सम्मेलन की कार्यसूची को ही प्रमुखता दी। इसके पूर्व, प्रगतिशील धारा एक विचारधारा के रूप में तो थी लेकिन एक आंदोलन के स्तर पर इसको रूप आकार नहीं मिल सका था। ऐसे प्रयास स्फुट रूप में जारी रह कर जीवन को प्रगतिशील करने के मार्ग पर अग्रसर तो थे, पर सामूहिक रूप से और आंदोलनकारी ढंग से, साहित्य सृजन का आरंभ सन् 1936 से माना जा सकता है। अत: प्रगतिशील आंदोलन का आरंभ भी सन् 1936 से ही माना जाना चाहिए। आरंभ में यह आंदोलन गद्यऔर पद्य दोनों के लिए पृथक पहचान नहीं रखता था औरगद्यऔरपद्यका सारा साहित्य, प्रगतिशील साहित्य माना जाता था, लेकिन परवर्ती काल में कथा साहित्य ने प्रेमचंद के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व के प्रभाव के फलस्वरूप अपनी अलग पहचान स्थापित कर ली थी। इससे हुआ यह कि कविता का क्षेत्र अलग–थलग पड़ गया और उसे अलग से पहचाने जाने की आवश्यकता बलवती हुई। इसी पहचान को बनाए रखने के लिए इस काव्यांदोलन को नाम दिया गया–'प्रगतिशील काव्यांदोलन'।

इतिहास के अंधेरे से घिसटकर भारतीय जीवन प्रक्रिया और संस्कृति हम तक जिस रूप में आई है या देशी–विदेशी विद्वानों द्वारालाई गई है, उसे यथार्थ मानकर हम अपने पूरे अतीत के प्रतिअश्रद्धहो उठते हैं। लेकिन भारतीय जीवन का यह तथ्य रेखांकित करने योग्य है कि यहां अग्निधर्मा ऋषिसंस्कृति निरंतर वस्तुवादी जड़ता से टक्करें लेती रही है और उसमें द्वंद्व का एक तीसरा आयाम पैदा करती रही है जिसे संस्कृत काव्यो में लक्ष्य किया जा सकता है। इसलिए महत भौतकी स्थितियों के पारस्परिक टकराव से भारती जीवन की द्वंद्वातमकता निर्धारित नही की जानी चाहिए। वैदिक ऋषियों से शुरू होकर यह संस्कृति, विवेकानंद, गांधी, और जयप्रकाश तक चली आती है। जरूरी नहीं है कि ये लोग जंगलों में ही रहते रहे हों ये सत्ता से दूर रहते हैं, मगर सत्ता और प्रतिष्ठानों को वास्तविक चुनौतियां इन्हीं की ओर से दी जाती रही हैं।

वैदिक धारा में ही जो कुछ गलत और त्याज्य समाहित हो गया था, उसका प्रतिरोध भी तभी से शुरु हो गया था। उसी में से संघर्षशील ध्वंश का लावा भी फूटा। लोकायत संप्रदाय के जनक लौक्य बृहस्पति वैदिक ऋषि थे। उन्होंने और परवर्ती चार्वाकों ने रक्तरंजित बलियज्ञों, कर्मकांडी वाह्याचारों, परासंसार की अपरोक्ष धारणाओं, 'शब्द' के अंधानुकरण और ईश्वरवाद को यथार्थ जीवन के लिए

घातक मानकर ठुकरा दिया । उन्होंने पूछा कि, "यदि एक सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और दयामय ईश्वर कहीं है तो समाज का विशाल बहुमत दुख और क्लेश का जीवन क्यों बिताता है ? यदि न्यायी ईश्वर कहीं है तो समाज के निर्धनों के प्रति असमानता, क्रूरता और भेदभाव क्यों है ?"

उन्होंने आगे कहा कि–"पशुश्चेन्निहत: स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति, स्वपिता यजमानेन तंत्र कस्मान्न हन्यते ।"–बार्हस्पत्य सूत्र-41 (यदि यज्ञ में बलिपशु को स्वर्ग मिलता है तो यजमान अपने बाप की ही बलि क्यों नहीं दे देता ।) और अगर "यद्येवं गम्यते स्वर्गो नरक: केन गम्यते?"–पद्म पुराण-10 (यदि पशु का खून बहानेवालों को ही स्वर्ग मिलता है तो नरक किसके वास्ते है?) अगर "गच्छतामिह जनतूनां व्यर्थं पाथेय कल्पनम् । गेहस्थ कृत श्राद्धेन पथितृप्तिरवारितां । ।"–बार्हस्पत्य सूत्र- 43 (ब्राह्मण को यहां खिला देने पर मृतात्मा को वहां मिल जाता है तो अपने प्रवासेय स्वजन के साथ पाथेय का बोझ क्यों बांधते हो, यहीं किसी भूखे को क्यों नहीं खिला देते ?)

धर्म में फैले प्रदूषण और अतर्क्य ईश्वरवाद के नाम पर विद्यमानसंसार में मनुष्य के शोषण से चार्वाक बहुत नाराज हो गए थे । वेद से प्रारंभ और उपनिषदकाल के बाद पल्लवित यह मत सैकड़ों वर्षों तक भारतीय चिंतन की अंतवर्ती धारा रहा और मध्यकाल तक इसके चिंतन ने सिद्धों नाथों आदि के बीच अनेकानेक बदली शक्लों में अपने को जीवित रखा; यहां तक कि आज भी भारतीय वैदिक मानस में यह तर्क और ज्वलित विद्रोह के रूप में अप्रत्यक्ष रूप सेविद्यमान है ।

प्रगतिशील काव्यांदोलन के आरंभिक दौर की तमाम रचनाओं की विडम्बना यह रही कि दर्शन उनमें स्वत: वर्ण्यवस्तु बनकर उतरा । उनमें अतिरंजना, आक्रोश, राजनीति, सिद्धांत कथन, भावुकता, प्रचार, जय-जयकार आदि का ही बोलबाला रहा और यह सब भी इतने स्थूल धरातल पर कि प्रबुद्ध पाठक को किसी भी स्तर पर अपने से जोड़ नहीं पाया, उसे भीतर से झकझोर देना तो दूर की बात रही । एक प्रखर जीवनदृष्टि के आलोक में सामाजिक यथार्थ का जो सजीव परिदृश्य सामने आना चाहिए था, वह न आ सका । प्रगतिशील काव्यांदोलन मार्क्सवाद-समाजवाद की जिस गहरी प्रेरणा को लेकर हिंदी कविता के मंच पर अवतरित हुआ, उसके प्रारंभिक दौर के अधिकांश काव्य में हमें इस प्रेरणा के दर्शन अवश्य होते हैं, किंतु उसके फलीभूत रूप की अपेक्षा ही बनी रहती है । यह स्थिति यह भी स्पष्ट करती है कि दर्शन की महानता ही किसी कविता को महान नहीं बना देती, कविता महान बनती है उस दर्शन द्वारा पाई गई दृष्टि के जिंदगी में सार्थक और सही विनियोग से; ऐसे विनियोग से, जो एकसाथ रचनाकार की सर्जनात्मक क्षमता, संवेदनागत निष्ठा तथा वैचारिक परिपक्वता से जुड़ा हो ।

प्रगतिशील रचनाओं का संबंध मुख्यत: त्रिलोचन, केदार, नागार्जुन, मुक्तिबोध तथा 'सुमन' की सर्जना से है । प्रखर सामाजिक यथार्थबोध तथा उसे रचना में रूपायित करना, अनुभूति की ईमानदारी, दृष्टि कर प्रामाणिकता, विचारों का खरापन, अभिव्यक्ति की सफाई, ताजगी तथा उसकी बुनावट, इन सारी दृष्टियों से यह सर्जना प्रगतिशील काव्यांदोलन के साथ आने वाले बदलाव को सार्थक तथा साभिप्राय बनाती है । संवेदना का ताप तथा वैचारिक ऊष्मा इनकी सर्जना में समान रूप से विद्यमान है, चाहे अभिव्यक्ति की भंगिमाएं अलग-अलग ही क्यों न हों । समग्र प्रगतिशील काव्यांदोलन की सही तथा समर्थ उपलब्धियां इन्हीं रचनाकारों के कृतित्व में दिखाई पड़ती हैं, वे परिणाम में बहुत विपुल भले न हों । मार्क्सवादी विचारदर्शन की प्रामाणिक भूमिका भी, अपने सांस्कृतिक तथा कलात्मक आशयों में इन्हीं रचनाकारों के कृतित्व में देखी जा सकती है ।

'सुमन' के कवि जीवन का प्रारम्भ यद्यपि वैयक्तिक प्रणय की निराशजन्य अभिव्यक्तियों से हुआ, परन्तु प्रगतिवाद के प्रारम्भिक दिनों में ही नई चेतना से प्रभावित होते हुए वे वैयक्तिक प्रणय की संकुचित भूमिका से निकल कर अधिक प्रशस्त भूमियों पर खड़े हो सकने में समर्थ हो सके । 'सुमन' वस्तुत: भावावेग के कवि हैं, धरती तथा जनजीवन के यथार्थ की वस्तुपरक रेखाएं उनके काव्य में कम उभरी हैं, अधिकतर युग की विषमता के विरोध में उनकी प्रतिक्रिया को ही सारे तीखेपन के साथ अभिव्यक्ति मिली है ।

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' मानव जीवन की अतल गहराइयों में उतरकर करुणा का सहज संचार करने वाले कवि हैं । इनकी करुणा मेघ वर्षा पर निर्भर करुणा नहीं, अपितु हृदय-निर्झर की अतल गहराई से प्रस्फुटित करुणा है । यही कारण है कि 'सुमन' हर दीन-दुखी की पीड़ा से अनायास जुड़ जाते हैं और उसकी पीड़ा इनकी अपनी पीड़ा बन जाती है और फिर फूट पड़ता है, करूणा का अजस्रप्रवाही निर्झर, जो झकझोर जाता है हमारा मानस और सोचने को विवश कर देता है कि ऐसा क्या है जो मनुष्य-मनुष्य में यह कृत्रिम संवेदनशून्यता पैदा कर रहा है । डॉ. शिव मंगल सिंह

'सुमन' मनुष्य-मनुष्य के बीच उपजी इसी संवेदनशून्यता की इसी गहरी खाई को पटाना चाहते हैं और वहां पर उगाना चाहते हैं मानवता का एक छतनार वृक्ष जिसके नीचे सभी एक-दूसरे के दु:ख-दर्द सून सकें और परस्पर सहभागी भी बन सकें। इसीलिए वे यह घोषणा करते हुए मिलते हैं कि उनके गीतों की स्त्रोतस्विनी का मूल उत्स है पददलितों की पीड़ा। वे कहते हैं-

"गीतों में पद दलितों की ही,
पीड़ा का मैंने गान किया"

कवि 'सुमन' अपने प्रगतिशील विचारों को वाणी देते हुए समाज की दयनीय दशा का अत्यंत मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि समाज में कितनी असमानताएं हैं। एक तरफ तो मानव पेट की आग शांत करने के लिए अपने आपको बेच रहा है, और दूसरी तरफ धनिक वर्ग मदिरा से मस्त होकर निकृष्ट कार्य कर रहा है-

"बिक रहा पूत नारीत्व जहाँ
चांदी के थोथे टुकड़ों में
कर्तव्य पालता धनिक वर्ग
मदिरा के जूठे चुकड़ों में।

डॉ. 'सुमन' के काव्य का एक सशक्त पक्ष है, सामाजिक विकृतियों को उभारना। कवि को इन विकृतियों को उभारने में काफी सफलता मिली है। कवि ने सामाजिक रूढ़ियों और परंपरागत मान्यताओं को काव्य में अंकित ही नहीं किया वरन् सामाजिक तथा आर्थिक दु:ख-दैन्य से संबंधित पक्षों को भी सजीव रूप में चित्रित किया है। समाज का यथार्थवादी चित्रण 'सुमन' जी के काव्य का प्रमुख अंग रहा है । इसके अंतर्गत इन्होंने किसान, मजदूर तथा अन्य शोषित वर्गों के यथार्थ जीवन का चित्रण किया है-

"हन्त ! भूखा मानव बैठा
गोबर से दाने बीन रहा है,
और झपट कुत्ते के मुंह से
जूठी रोटी छीन रहा है।"

प्रगतिशील कवि 'सुमन' जी ने पतन में ही उत्थान, असफलता में ही सफलता की किरण देखी है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं, अनेक अड़चनें आती हैं परन्तु मनुष्य आशा का सहारा लिए आगे बढ़ता जाता है। कवि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चलता है, गिरता है फिर उठ कर खड़ा हो जाता है। जीवन-पथ पर चलते हुए कठिनाइयों से हार मानकर बैठ जाना कवि के स्वभाव के प्रतिकूल है। वह असफलता को गले लगाकर बढ़ता जाता है। कवि का दृढ़ संकल्प 'जीवन के गान' में संकलित 'मेरा पथ मत रोको रानी', 'आज कवि कैसी निराशा', 'विद्रोह करो, विद्रोह करो' आदि कविताओं में दृष्टिगोचर होता है।

शोषित, पीड़ित के प्रति 'सुमन' की दृष्टि करूणाद्र मिलती है। वह जहां भी अन्याय, अत्याचार के दंश झेलते दुखी समाज के दृश्य देखते हैं वहां वे अपने को सहज नहीं रख पाते। इनके प्रति उनकी सघन संवेदना और करुणा अनायास ही 'सुमन' को भावविह्वल कर देती है। निराला के सच्चे अनुगामी होने के नाते इनके अर्जित संस्कारों में भी यही करुणा इन्हें मिली है। समाज के सबसे निचले पायदान पर अवस्थित समाज में व्याप्त अभावों और दुखों तथा उसके विपरीत आभजात्य वर्ग का वैभव विलास 'सुमन' जी को बार-बार संवेदित करता है तभी वे इस समाज में व्याप्त असमानता पर दु:ख प्रकट करते हैं-

"सभी भूखे थे नंगे थे तबाही ही तबाही थी
मगर अन्याय का प्रतिरोध करने की मनाही थी।"

वर्तमान समाज-व्यवस्था के प्रति असंतोष 'सुमन' जी की कृतियों में मुखरित हो उठा है। समाज में कुछ व्यक्तियों के हाथों में ही सारी व्यवस्था सिमट गई है। वे ही इसके कर्ता-धर्ता हैं, और सारी जनता उनकी अनुगामिनी है। लोकतंत्र कहने को तो है किंतु आज भी आधिपत्य उन्हीं नेतारूपी जमींदारों का ही है। मार्क्सवादी विचारधारा के कवि 'सुमन' साम्यवादी समाज की स्थापना के पक्षधर हैं जिसमें सबका समान अधिकार हो।

"चाहता हूं ध्वंस कर देना विषमता की कहानी
हो सुलभ सबको जगत में वस्त्र, भोजन, अन्न,
पानी।"

सुमन' जी के विचार में आज की हमारी धार्मिक भावनाएं व्यक्ति के कल्याण के लिए नहीं बल्कि बाह्य आडंबर व दिखावा अधिक हैं। पूजा, नमाज आदि अमीरों की शान-शौकत है और गरीबों के लिए समय का अपव्यय। गरीब यदि उतने समय काम में लग जाए तो अपनी रोटी का इंतजाम कर सकता है। वह मंदिरों, मसजिदों और गिरजाघरों में अवश्विास प्रकट करते हैं। कर्मकांड को ही ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्ग बताकर मजदूर वर्ग को श्रम

से विरत करने और उसके पारिश्रमिक को गलत ढ़ग से खर्च कराने तथा उन्हें ऋणी बनाने की साहूकारी प्रवृत्ति से भी डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' पूरी तरह परिचित थे और धर्म का यह पाखंड उनके लिए असह्य था । इसलिए वे इन कर्मकांडियों की पोल खोलने पर आमादा मिलते हैं और उनकी सच्चाई समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं । यही कारण है कि ऐसे ढोंगियों को दाता कहे जाने पर उनका मन व्याकुल हो उठता है और गरीब वर्ग को आगाह करने के लिए ही वे इन भाग्य के लुटेरों को खुले शब्दों में कोसते हुए मिलते हैं । 'हाय नहीं यह देखा जाता' से कवि की पीड़ा का सहज अनुमान लगाया जा सकता है–

"उससे भी भीषण जब मानव
व्याकुल भूख-भूख चिल्लाता
अपने ही बच्चे की रोटी छीन
उदर की ज्वाल बुझाता
बच्चा बेबस रोता रोता
भूखा तड़प तड़प मर जाता ।"

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि ही नहीं अपितु एक सशक्त हस्ताक्षर हैं । तत्कालीन विश्वव्याप्त मार्क्सवादी विचारधारा ने 'सुमन' जी के काव्य को अत्यधिक प्रभावित किया है । सामाजिक और धार्मिक आडंबरों से ग्रसित सामान्य जन को नूतन पथ दिखलाकर कवि ने गरीब मजदूर एवं दीन दुखियों को शोषणकारी, सामंतवादियों, साम्राज्यवादियों और पूँजीवादियों का अंत करने की प्रेरणा दी है । कवि का विश्वास है कि पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था का नाश करने के पश्चात् ही आदर्श समाज का निर्माण संभव हो सकेगा जब एक मनुष्य दूसरे के श्रमफल को लूट नहीं पाएगा ।

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने प्रगतिशील काव्यांदोलन को अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल संवृद्ध किया है अपितु उसे एक व्यापक दृष्टि तथा अपेक्षित गति प्रदान की है । यदि उन्हें इस आंदोलन का एक सशक्त स्तम्भ कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । युग की सभी वैयक्तिक तथा सामाजिक समस्याएं उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित हुई हैं । यद्यपि 'सुमन' जी अपने-आप को किसी वाद के घेरे में बँधा देखना नहीं चाहते और लगभग सभी वादों की झांकी उनकी कविताओं में देखने को मिल जाती है किंतु उनका सबसे सशक्त पक्ष नि:संदेह प्रगतिशीलता ही है । अंतत: हम कह सकते हैं कि कविवर 'सुमन' को प्रगतिशील काव्यांदोलन के प्रतिनिधि कवि के रूप में हमेशा याद किया जाएगा ।

** ** **

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. नामवर सिंह-आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां
2. नेमिचंद्र जैन-तारसप्तक-वक्तव्य
3. सं. प्रभाकर श्रोत्रिय : हिंदी कविता की प्रगतिशील भूमिका (भारतीय प्रगतिशीलता की अवधारणा और हिंदी काव्य-प्रभाकर श्रोत्रिय), दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लमिटेड, प्रथम संस्करण, 1978
4. डॉ. शिवकुमार मिश्र-'प्रगतिशील काव्यांदोलन में मार्क्सवाद की भूमिका' (हिंदी कविता की प्रगतिशील भूमिका-सं. प्रभाकर श्रोत्रिय) प्र. संस्करण
5. डॉ. सर्वदानन्द पाठक-'चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा', प्र. सं. 1965
6. प्रसिद्ध नारायण चौबे लोक-चेतना के राष्ट्रीय कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन'
7. के. दामोदरन-'भारतीय चिंतन परम्परा', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण दस
8. हंस 'हिंदी की प्रगतिशीलता पर एक नोट',
9. कल्पना-प्रगतिवाद का स्पष्टीकरण, अप्रैल, 1953
10. आलोचना-'प्रगतिवाद-साहित्य का नया दृष्टिकोण', जुलाई, 1952
11. डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'-सुमन समग्र, खंड एवं खंड-2

हरिवंशराय बच्चन : संरचना एवं प्रयोग

—दयानाथ लाल*

कभी न कण भर
खाली होगा –
लाख पियें दो लाख पियें –

के अमर गायक बच्चन जी की रचनाओं का मैं रसिक व्यक्ति हूँ और मैं क्या ? सच यह है कि हिंदी संसार के लगभग 95 प्रतिशत व्यक्ति उनके गीतों का रस लेने वाले आज भी हैं और आगे भी रहेंगे । उनके गीतों में भाँति-भाँति के रसों की भरमार है । विशेषता यह है कि उनके गीतों को पीते-पीते न तो पीने वाले थकते हैं और न तो पिलाते-पिलाते पिलाने वाले ही । ऐसा लगता है कि डॉ. बच्चन की मदिरा पीने वालों की प्यास कभी मिटती नहीं ।

जहाँ तक उनकी सम्प्रेषण-क्षमता का सवाल है तो उसके संबंध में भला क्या कहना ? राजेन्द्र गौतम बताते हैं । क्या ? – "अपनी सम्प्रेषण क्षमता के आधार पर बच्चन ने जितना विशाल पाठक एवं श्रोता समुदाय हिंदी संसार को दिया, उसका ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद है ।"[1] –'अभ्युदय' नामक पत्रिका की सुधि हमें यहाँ ताजी हो जाती है । उसमें एक बार मधुशाला के ऊपर एक लेख निकाला गया; जिसका शीर्षक था– "घूरन[2] के लत्ता कनातन[3] से ब्योत[4] बाँधे ।" इस लेख में, जैसा कि शीर्षक से ही पता चल जाता है; हिंदी के उमर खैयाम बनने के डॉ. बच्चन के स्वप्न पर कटु व्यंग्य था । जो हो, परन्तु पाठकों की सच्ची सराहना से बच्चन की मधुशाला कहाँ से कहाँ तक पहुँच गई और 'अभ्युदय' पत्रिका का लेख जहाँ था वहीं का वहीं घूरे में पड़ा रह कर सड़ गया; गल गया; समाप्त हो गया । सच है सोने की पहचान सुनार करता है; लोहार क्या करेगा ? मैं साठ वर्ष की आयु का हो चुका हूँ । लेकिन अभी तक मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला; जिसे हालावादी महाकवि डॉ. हरवंशराय बच्चन की मधुशाला पसन्द न हो । जब-जब डॉ. बच्चन की याद मुझे आती है; तब-तब मैं उनका यह छंद अवश्य गुनगुनाता हूँ । क्या ? –

दिन को होली
रात दिवाली –
रोज मनाती मधुशाला ।

प्रणयगीतों के तो श्रेष्ठ गायकों में डॉ. बच्चन का नाम आता है । इसी के कारण हिंदी गेयकाव्य के फलक पर उनको काफी लोकप्रियता हासिल हुई । उनके सम्बन्ध में डॉ. अरविन्द पाण्डेय का कथन इस प्रकार है । क्या ?– "प्यार, जवानी एवं जीवन के जादू को पहचान कर, गीत के जादूगर बच्चन, हिंदी के श्रोता और पाठक के समक्ष आए । हिंदी गीतों को लोकप्रिय बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा है । हिंदी कवि सम्मेलन में सरताज बच्चन जी की एक परम्परा चल पड़ी । तत्कालीन तरूणकवि, खासकर गीतकार, बच्चन के नक्शेकदम पर तेजी से आगे बढ़ने लगे थे । कॉलेज,विश्वविद्यालय के युवक-युवतियाँ तो बच्चन के गीतों के दीवाने थे । उनकी 'मधुशाला' युवापीढ़ी की गीता बन गई थी । सीधे-सादे शब्दों में प्रणयानुभूति जब मधुर कण्ठ से मंचों पर सुनाई पड़ती थी ; तब युवावर्ग आत्मविभोर हो उठता था । जिस बात को कहने में युवावर्ग हिचक रहा था; उनकी उसी बात को बच्चन बेहिचक मंच से गाया करते थे । यही उनके गीतों का सबसे बड़ा आकर्षण था । युवामन दर्शन तथा सूक्ष्मता की गलियों में भटकना पसन्द नहीं करता । उसे स्थूल और यथार्थ के धरातल पर कही गई बातें रूचिकर लगती हैं । बच्चन ने मांसल प्रणय के मिलन, अवसाद, उल्लास को स्वर दिया जो युवावर्ग के लिए रूचिकर साबित हुआ ।"[5] हालावादी गीतकार यह मानकर चलता है कि मानवजीवन में व्यथा और अवसाद की प्रधानता सृष्टि के आदिकाल से ही रही है । क्यों न हम इन्हें भूलने का प्रयास करें । डॉ. बच्चन एकाएक गा उठते हैं । क्या ?–

आ भूलें हास–रूदन दोनों
मधुमय होकर दो चार पहर ।
है आज भरा जीवन मुझमें
है आज भरी मेरी गागर ।

*राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी, पो. जामगोड़िया, भाया-जोधासिंह मोड़, चास, जिला-बोकारो-827013

डॉ. हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर, 1907 को प्रयाग में हुआ था। उनकी चर्चा करते हुए डॉ. तुमन सिंह ने लिखा है। क्या ?– "हरिवंशराय बच्चन की पहचान उनके कवि रूप से है। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ 'तेरासा हारा' शीर्षक से 1932 में प्रकाशित हुई; लेकिन कवि के रूप में उनको ख्याति मिली, मधुशाला–1935, मधुबाला–1936, मधुकलश–1937, निशानिमंत्रण–1938 और एकान्तसंगीत–1939 के प्रकाशित होने के बाद। 'मधुशाला' को इतनी अधिक प्रसिद्ध मिली की यह बच्चन का पर्याय ही बन गई। जो लोग बच्चन के रचनासंसार से परिचित नहीं; वे उन्हें केवल कवि के रूप में ही जानते हैं। बच्चन जी ने काव्य के अतिरिक्तगद्य की विविध विधाओं में भी ख्याति प्राप्त की।[6]" डॉ. बच्चन के सम्पूर्ण रचनासंसार से तो हिंदी जगत उस समय पूर्ण रूपेण परिचित हुआ; जब 'बच्चनरचनावली' नौ खण्डों में प्रकाशित की गई। बताया जाता है कि सन् 1941 से 1954 ई. तक डॉ. बच्चन प्रयाग विश्वविद्यालय में अँग्रेजी के व्याख्याता रहे और उसके पश्चात् सन् 1955 से 1966 तक याने नौ वर्ष, वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में 'विशेषकार्य अधिकारी (हिंदी)' के पद पर विराजमान रहे। मस्ती के लिए मस्ती चाहिए; यह डॉ. बच्चन के जीवन का मूल मंत्र रहा है। वे कहते हैं। क्या ?

पीकर मदिरा
मस्त हुआ तो–
प्यार किया क्या मदिरा से ?
मैं तो पागल
हो उठता हूँ–
सुन लेता यदि मधुशाला।

अपने हालावादी काव्यों के लिए हरिवंशराय बच्चन को अच्छा सम्मान मिला, अच्छी इज्जत मिली। किन्तु अपवाद के कटु गरल का पान भी उन्हें अवश्य करना पड़ा। इसकी पुष्टि हेतु डॉ. नगेन्द्र की विचारधारा प्रस्तुत है। क्या ?– "बच्चन की कविता की सबसे बड़ी पूँजी है– अनुभूति वे मूल अनुभूतियों के ही आश्रित रहते हैं। परिणाम यह होता है कि जहाँ उनकी अनुभूति साथ नहीं देती; वहाँ कविता सर्वथा गद्यमयहो जाती है। छायावाद का कवि तो अनुभूति की रिक्तता को कल्पना के फलों या चिन्तन के धूपछांही आवरण अथवा कला की रेशमी जाल से ढक लेता था; परन्तु बच्चन इस कला से अनभिज्ञ हैं। अनुभूति के क्षीण होते ही उनकी कविता नंगी हो जाती है। और चूँकि, अनुभूति के प्रबल क्षण अत्यन्त विरल होते हैं; और वैसे भी वाह्य जीवन की सफलता के साथ-साथ उनकी शक्ति भी क्षीण होती चली जाती है; इसलिए बच्चन की रचनाओं में महान् कविताओं की संख्या बहुत कम है और ऐसी कविताएँ अनुपात से बहुत अधिक हैं जो प्रणयरस से वंचित, मुखर और वाचाल हैं। परन्तु किसी कवि का मूल्यांकन उसकी सर्वश्रेष्ठ कविताओं के आधार ही किया जाना चाहिए और इस दृष्टि से बच्चन का स्थान हमारी पीढ़ी के कवियों में बहुत ऊँचा है।यद्यपि इसमें भी संदेह नहीं है कि गुण और परिणाम दोनों में बच्चन से अधिक खोखली कविताएँ आज के किसी समर्थ कवि ने नहीं लिखीं।"[7]

नगेन्द्र जी की इस विचारधारा का स्वागत हम नहीं कर सकते। यह सही है कि हिंदी साहित्य के मैदान में वे एक बहुत बड़े आलोचक माने जाते हैं; पर उनकी ईमानदारी का पता चल जाता है कि कहाँ तक वे ईमानदार हैं। डॉ. बच्चन की कविताएँ खोखली नहीं; गम्भीर हैं; उनमें ऊँचे-ऊँचे भाव सर्वत्र पाए जाते हैं। दरअसल यहाँ उनके संबंध में डॉ. नगेन्द्र के विचार ही खोखले दीखते हैं। महाकवि सुमित्रा नन्दन पंत के अनुसार– "मधुशाला अमृत संजीवनी है, जिसका पान कर मृत्यु भी जीवित हो उठती है।" उर्दू फारसी शैली में जितनी इश्कमिजाजी तथा साकी और शराब के प्यालों की खुमारी बच्चन की कविताओं में मिलती है; उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी मधुशाला इस युग की गीता है। मृदुभावों के अंगूरों की हाला है। पर कैसे ? अभी देखिए –

प्रियतम ! तू मेरी हाला है
मैं तेरा प्यासा प्याला।
अपने में मुझको भरकर
तू बनता है पीने वाला॥
मृदुभावों के अंगूरों की
आज बना लाया हाला।
प्रियतम ! अपने हाथों से
आज पिलाऊँगा प्याला॥

हिंदी कविता के इलाके में डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने जो नए-नए प्रयोग किए; उन्हें आदर की दृष्टि से तब तक देखा जाएगा; जब तक हिंदी साहित्य की दुनियाँ रहेगी।

प्रयोगवादी काव्य का आविर्भाव वस्तुत: सन् 1940 ई. के आसपास हुआ; जिसे हिंदी के कुछ समीक्षक 'नई कविता' के नाम से भी अलंकृत किए हैं। प्रयोगवाद प्रयोगों को विशेष रूप से महत्व देता है। प्रयोगवादी कवियों में डॉ. बच्चन का नाम सर्वोपरि है। अपने गीतिकाव्य में सर्वत्र वे एक महान् दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं। उनकी कल्पनाएँ खुले आकाश में केवल उड़ाने नहीं भरती बल्कि धरती का भी साथ नहीं छोड़ती। यह सर्वविदित है कि हमारे यहाँ दो प्रकार के संसार के स्वरूप की कल्पना की गई है ; और जब दो प्रकार के संसार हैं तो निश्चित रूप से इन दोनों संसारों के बीच एक विशाल विषवत रेखा है। इसी रेखा को अपनी कविता की भाषा में डॉ. बच्चन ने एक 'विशालतममयसागर' के नाम से संबोधित किया है। उनका मानना है कि इस 'विशालतममयसागर' के इस पार क्या है ; क्या नहीं है ; सब कुछ हम लोग देख रहें हैं ; समझ रहें हैं ; परन्तु इसके उस पार क्या है ; क्या नहीं है ; कुछ पता नहीं चलता। सिर्फ तरह-तरह के अनुमान लगाए जाते हैं। इन सभी प्रश्नों को लेकर उनके दिल व दिमाग में बराबर बेचैनी रही। अपने इन भावों को मधुर शब्दों की चाशनी में भिंगोकर उन्होंने अभिव्यक्त किया है। क्या ?–

इस पार प्रिये !
मधु है तुम हो,
उस पार न जाने क्या होगा ?
* * * * * * * *

दृग देख जहाँ तक पाते हैं
तम का सागर लहराता है,
फिर भी उसपार खड़ा कोई
हम सबको खींच बुलाता है।
मेरा तो होता मन डगमग
तट पर के ही हलकोरों से
जब मैं एकाकी पहुँचूँगा
मझधार न जाने क्या होगा ?
* * * * * * * *

इस पार प्रिये !
मधु है तुम हो,
उसपार न जाने क्या होगा ?

कुछ लोग कहते हैं कि जिस हालावाद की नींव डॉ. बच्चन ने डाली; वह अब ढह चुकी है। लेकिन ऐसा कहना वाजिब नहीं ठहरता; क्योंकि हालावादी काव्य सृजन के पथ पर चलने वाले कवियों की आज भी एक लम्बी कतार है। हालावाद गम से घबड़ा कर खुदकुशी करने की बात नहीं कहता; बल्कि वह गम को खोने की बात कहता है; गम को पीने की बात कहता है। डॉ. बच्चन के बारे में प्राय: एक प्रश्न उठा करता है कि केवल उन्हीं को हालावादी कवि क्यों कहा गया ? जबकि भगवती चरण वर्मा, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि के काव्य में भी कहीं-कहीं हाला-प्याला शब्द मिल जाते हैं; किन्तु इन लोगों को कोई हालावादी नहीं कहता। कारण क्या है ? हमें ज्ञात है कि महत्व शब्दों के प्रयोग का नहीं; भावनाओं के प्रसार का होता है और इस ख्याल से महाकवि बच्चन इन सबों से बहुत आगे हैं। और यदि शब्दों के प्रयोग को ही देखा जाए तो मधुशाला, मधुबाला तथा मधुकलश में शायद ही कोई ऐसा बन्ध मिले; जिसमें हाला-प्याला का प्रयोग न हो। अपने काव्य में हाला-प्याला का प्रयोग जितना डॉ. बच्चन ने किया है; उतना किसी अन्य कवि ने नहीं। हाला दु:ख दर्दों के विस्मरण का साधन है। हालावादी कवि संसार की विषम परिस्थितियों से संघर्ष नहीं करता; वह तो अपनी पीड़ा को मदिरा की बोतल में ढालता है। किसी चीज को वह तोड़ता नही; टूटे हुए दिलों को जोड़ता है। डॉ. बच्चन की व्यक्तिवादी कविता के मूल स्वर यही हैं। इन्हीं कारणों के चलते उनको हालावादी कवि कहा गया; किसी अन्य को नहीं। प्रस्तुत है यहाँ डॉ. बच्चन का एक हालावादी छंद। क्या ?–

पीने वालों ने
मदिरा का मूल्य
हाय ! कब पहचाना,
फूट चुका जब मधु का प्याला,
टूट चुकी जब मधुशाला।

अपनी जिन्दगी के अंतिम पड़ाव में सभी प्रकार के मिलने वालों से वे नहीं मिलते थे। परन्तु जिन लोगों से मिलना वे उचित समझते थे; वैसे मिलने वालों से वे जरूर मिला करते थे। वस्तुत: निरर्थक समय बिताने के वे पक्षधर नहीं थे। खैर, अपनी मधुशाला को दुनिया के जिम्मे सौंप कर हिंदी साहित्य के युगपुरुष डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने 18 जनवरी, 2003 को मुम्बई में अपने जीवन की अंतिम साँस ली। उनका पार्थिव 19 जनवरी, 2003 को पंचतत्व में विलीन हो गया। उनकी मौत पर मृणाल पाण्डेय ने 'स्मृतिदर्पण'

में लिखा है। क्या ?– "बच्चन जी ने बहुत कष्ट देखे थे। बहुत संघर्ष किया था। और महाकवि निराला की ही तरह आँसुओं को भीतर ही भीतर पीकर, उनकी ऊर्जा और सौंदर्य में, अपनी कविता को सोना बनाया था।"[8] विष्णु प्रभाकर ने क्या कहा था ? जरा गौर कीजिए – "बच्चन जी ज्ञानी कवि थे। उमर खैयाम की रूबाइयों पर आधारित मधुशाला को अपना कर हिंदी साहित्य को इस प्रकार उन्होंने प्रस्तुत किया कि मधुशाला हिंदी जगत की हो गई। जब वे गाकर मधुशाला सुनाते थे तो एक अद्‌भुत वातावरण पैदा हो जाता था।"[9] डॉ. बच्चन कभी किसी वाद या खेमे से नहीं जुड़े। जब तक वे जिन्दा रहें, मौन साधक के रूप में, हिंदी संसार की सेवा करते रहे। वे मरकर भी अमर हैं और अमर रहेंगे भी। इसी विषयानुक्रम में, मैं कहना चाहूँगा कि मानव जीवन सहज ही पराजय स्वीकार नहीं करता। डॉ. बच्चन कहते हैं। क्या ?–

है अँधेरी रात
पर दीवा जलाना–
कब मना है ?

संदर्भ सूची :

1. इस्पातभाषा भारती, नवम्बर 2006, पृष्ठ–5
2. घूरन = घूरा, घूर।
3. कनातन = कनात, खेमे पर खड़ी कपड़े की दीवार।
4. ब्योत = गाँठ, कपड़े की काट।
5. हिन्दी के प्रमुख कवि : रचना और शिल्प, पृष्ठ – 75
6. अनुवाद पारखी डॉ. हरिवंशराय बच्चन, निबन्ध।
7. आस्था के चरण, डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ–477
8. पृष्ठ–एक, हिन्दुस्तान, 20 जनवरी, 2003
9. हिन्दुस्तान, 20 जनवरी, 2003, पृष्ठ–16

■

"अब जबकि हिंदी को राष्ट्रभाषा की पदवी मिल गई है, हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रभाषा की उन्नति बढ़ाएं और उसकी सेवा करें, जिससे कि सारे भारत में वह बिना किसी संकोच या संदेह को स्वीकृत हो। हिंदी का पाट महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषाएं अपना बहुमूल्य भाग ले सकें। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की और न किसी जाति की है। वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें।"

–सरदार बल्लभभाई पटेल

विश्व पटल पर हिंदी की दशा एवं दिशा

—डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव*

भारत की आत्मा हिंदी है । हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति, अध्यात्मिकता, नैतिक चिन्तन, सार्वभौमिक दर्शन, ज्ञान-विज्ञान का अन्वेषी मंथन किया जाता रहा है । भाषा की इस परम्परा ने हजारों वर्षों से भारत के विभिन्न प्रान्तों, धर्मों, सम्प्रदायों एवं भाषाई प्रयोगों की बहुरूपता को एकताबद्ध किया है । भावाभिव्यंजन क्षमता, निरंतर परिवर्तन और विकास ने भाषा की जीवन शैली को तय किया है । जिस तरह से नीर की निर्मलता, स्वच्छता और जीवन दात्री शक्ति उसके सतत/अनवरत प्रवाहमान बने रहने में है अवरुद्ध, नीर अस्वस्थ होकर अपेय की स्थिति में हो जाता है उसी तरह से परिस्थितियों और सामाजिक आवश्यकताओं के वातावरण से प्रभाव ग्रहण कर, परिवर्तन को स्वीकार न करने वाली भाषा अक्षम, अव्यवहार्य होकर मृतक-सी हो जाती है ।

भारत के भाल की बिंदी 'हिंदी' सभी हिंदुस्तानियों द्वारा अध्ययन करने योग्य है क्योंकि हिंदी, हिंद वालों की मातृभाषा है । यह भारत एवं विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक बोली, पढ़ी-लिखी तथा समझी जाती है । राष्ट्रभाषा हिंदी, चीनी एवं अंग्रेजी के उपरान्त विश्व की तीसरी ऐसी भाषा है, (नये आंकड़ों के अनुसार हिंदी बोलने वाले विश्व में प्रथम स्थान पर हो गए हैं) जो सर्वाधिक जनता द्वारा बोली जाती है । इसे बोलने वालों की संख्या 50 करोड़ से अधिक है । ये पचास करोड़ से अधिक आम जन स्वेच्छा से हिंदी बोलते हैं । लेशमात्र कोई विवशता, दबाव अथवा लादने वाली बात हिंदी भाषियों के सन्दर्भ में न है, न रही है । हिंदी भाषा का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है । राष्ट्रीय एकता और चिंतन को इसने अति सुदृढ़ता प्रदान की है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर प्रतीत होती है । अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन सतत् जारी है । विश्व में ऐसी जगह हैं जहां भारतीय मूल के लोग नहीं हैं तब भी वहां पर हिंदी बोली जाती है । यहां शोध का विषय यह है कि पचास करोड़ से अधिक आमजनों द्वारा बोली जाने वाली हमारी हिंदी भाषा संयुक्त राष्ट्र में स्थापित नहीं हो पाई हैं। इसके विपरीत, लगभग चालीस करोड़ लोगों द्वारा बोला जाने वाली स्पेनिश, क्रमशः बीस तथा इक्कीस करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली रूसी व अरबी भाषाओं का वहां स्थापित होना निश्चित रूप से हिंदी के समक्ष चुनौती है साथ ही लज्जा का विषय भी है । हालांकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थितियों में सुधार हो रहा है क्योंकि हिंदी भाषा की जड़ें विश्व के कई देशों में काफी गहरी हैं। अतीत का अवलोकन करें तो विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में तात्कालिक स्थितियों का विशेष महत्व है, क्योंकि यहां के प्रवासी भारतीय (पुरखों) द्वारा हिंदी अन्य देशों में ले जाई गई है । फिजी, मॉरीशस, ट्रिनीदाद, सूरीनाम, गियाना उस श्रेणी के देश हैं जहां हिंदी का प्रयोग प्रवासी भारतीयों के द्वारा किया जाता रहा है/किया जा रहा है । इसका प्रमुख कारण धर्म एवं संस्कृति है क्योंकि भाषा ही इसकी वास्तविक संवाहिका होती है । यदि व्यक्ति धर्म से जुड़ेगा तो उसका भाषा से जुड़ना लाजिमी हो जाता है। इन देशों में बसे प्रवासी भारतीयों ने अपनी भाषा को धर्म के साथ तादात्म्य बनाए रखा है । विश्व में शायद ही कोई देश हो जहां पर प्रवासी (अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर सूरीनाम, रूस, मॉरीशस, अफ्रीका, गियाना, फ्रांस इत्यादि) भारतीय न हों और यहां हिंदी भाषा विद्यमान न हो ।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों ने हिंदी भाषा के प्रति निरंतर सहयोग एवं भारतीयता के प्रति अनुराग

-प्रवक्ता, हिंदी विभाग, डी.वी. (पी.जी.), महाविद्यालय, उरई (जालौन)-285001

का परिचय दिया । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने संघर्ष की शुरुआत ही प्रवासी अफ्रीका लोगों के बीच शुरू की । हमारे देश के युवा शक्ति के प्रतीक सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज तथा आजाद हिंद सरकार की स्थापना दक्षिण-पूर्व एशिया में की थी । इन दोनों महापुरुषों का माध्यम भाषा के रूप में हिंदी ही था । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो आज जो भी प्रवासी हैं विदेशों में जब भारतीयों से आपस में मिलते जुलते हैं तो टूटी-फूटी हिंदी में ही बात करते हैं।इसके लिए जरूरी नहीं कि उनकी हिंदी परिनिष्ठित ही हो । कनाडा, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन या अन्य स्थानों में ऐसे भारतीय जिनकी भाषा हिंदी नहीं है वे पहले स्थानीय भाषा या कॉमन भाषा में परिचय करके बाद में हिंदी को ही आधार बनाकर बात-चीत करना पसन्द करते हैं ।

यदि हम त्रिनीदाद की बात करें तो वहां भारतीय सन् 1845-1917 में पहुंचे तब इनकी संख्या लगभग एक डेढ़ लाख की रही होगी । ये भारतीय पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार (पश्चिमी) के निवासी थे और इनकी मूल भाषा भोजपुरी/मैथिली थीं । इनमें कुछ प्रवासी मध्य प्रदेश, बृज क्षेत्र तथा पंजाब के पिछड़े क्षेत्रों के निवासी थे । ये लोग आपस में बोलचाल के रूप में 'पवड़ा' जिसे पुरानी हिंदी कहा जाता था, उसी का प्रयोग करते थे । आज भी प्रवासी लोगों के लिए यहां स्कूलों में स्नातन धर्म एसोसियेशन के प्रयास से हिंदी भाषा के अध्ययन/अध्यापन की व्यवस्था की जाती है । शिव, नारायण एवं कबीर पंथ के द्वारा भी इस दिशा में कार्य किए जा रहे हैं ।

जापान सहित अन्य एशियाई देशों में हिंदी का प्रयोग 1911 के लगभग शुरु हुआ । यहां पर इसी वर्ष तोक्यो स्कूल ऑफ फारेन लैंग्वेज की स्थापना की गई । वर्तमान में यह 'तोक्यो यूनीवर्सटी ऑफ फारेन लैंग्वेज' के नाम से जानी जाती है । इलाहाबाद विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग अप्रत्यक्ष रूप से जापान में हिंदी के अध्ययन की सुदृढ़ स्थिति करने के लिए सराहनीय कार्य करता रहा है क्योंकि जापान में छात्रों एवं प्रोफेसरों का यहां आना-जाना लगा रहता है । प्रो. दोई ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सन् 1953-55 ई. में आकर अध्ययन किया था । आपका सबसे महत्वपूर्ण कार्य जापानी-हिंदी तथा हिंदी-जापानी कोर्स तैयार करने का श्रेय है । राष्ट्रभाषा प्रयास समिति वर्धा की परीक्षाओं में बहुत से जापानी विद्यार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित होते रहते हैं । गांधी संस्थान एवं क्योटा नगर भी प्रचार प्रसार में कार्य कर रहा है । जापान में 'ओसाका यूनीवर्सटी ऑफ फारेन स्टडीज' में हिंदी अध्यापन की उचित व्यवस्था की गई है ।

फ्रांस, चीन, हांगकांग, सूडान, आस्ट्रेलिया, इजराइल आदि राष्ट्रों में हिंदी के शिक्षण/अध्ययन की समुचित व्यवस्था है । यूरोपीय देशों में कुछ ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अति महत्वपूर्ण कार्य किया है । इनमें से फ्रांस का नाम आते ही गार्सा-द-तासी सामने दिखाई पड़ने लगते हैं । फ्रांस की राजधानी पेरिस में आपने हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास फ्रेंच भाषा में लिखा । फ्रांस में ही आधुनिक विश्व-पूर्वी भाषाओं का संस्थान सन् 1975 ई. में स्थापित किया गया था। इस संस्थान में शिक्षण का कार्य गार्सा-द-तासी एवं ज्युलब्लाक ने किया है । अनुसंधान/अध्यापन के क्षेत्र में श्रीमती डॉ. वौदवील का योगदान भी महत्वपूर्ण माना जाता है । इस संस्थान में इस समय हिंदी की स्थिति सर्वाधिक सुदृढ़ मानी जाती है क्योंकि यह संस्थान हिंदी के साथ बंगला, तमिल एवं उर्दू पढ़ाने की व्यवस्था भी कर रहा है ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1975 ई. में हिंदी -भाषा का व्याकरण अमेरिकी निवासी सैमुल कैलाग ने हिंदी का अनुशीलन करके तैयार किया । हिंदी व्याकरण की दृष्टि से यह एक महत्वूपर्ण ग्रन्थ माना जाता है । भारत को स्वतंत्रता जब मिली तब अमेरिका के विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन/अध्यापन की समुचित व्यवस्था की गई । वर्तमान की बात करेंगे तो अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों में भारतीयों (प्राध्यापकों) को आमंत्रित किया जाता है । साथ ही अमेरिका छात्रों को छात्र वृत्तियां प्रदान करके भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी की शिक्षा हेतु भेजा जाता है । स. रा.संघ के देशों में भारतीय पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की मांग अधिक रहती है और जहां के पुस्तकालयों में इन्हें मंगाया जाता है ।

सोवियत रूस और भारत की दोस्ती जगजाहिर है क्योंकि इस मैत्री का आधार सांस्कृतिक आधार रहा है । भारतीय लेखकों की रचनाओं के प्रति यहां शुरू से लगाव रहा है । यहां के सुधीजन संपूर्ण साहित्य (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल) क प्रति रुचि एवं सम्यक ज्ञान रखते हैं । महाकवि तुलसीदास के रामचरित मानस का सफल रूसी अनुवाद वेरन्निकोव ने किया है । अन्य महत्वपूर्ण रूसी हिंदी के विद्वान वी. चेरनीगोव, वी. क्रेस कोविन एवं बाबालिन हैं। इन लोगों के द्वारा गद्य एवं पद्य रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया जाना एक सराहनीय प्रयास है। पिछले कई दशकों से रूस में हिंदी भाषा में विविध विषयों (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक) पर पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं । इसके साथ ही

समसामयिक पत्रिकाओं का प्रकाशन/वितरण भी होता रहा है । प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी पढ़ाने की उत्तम व्यवस्था रूस में विघटन के बावजूद आज भी सतत है ।

ब्रिटेन के परिप्रेक्ष्य में जब हम देखते हैं तो वहां सन् 1921 में 'इन्स्टीट्यूट ऑफ ओरियन्टल स्टडीज' की स्थापना के साथ भारतीय भाषाओं और हिंदी साहित्य का अध्ययन आरम्भ हुआ । आगे चलकर इसका नाम बदलकर 'लन्दन स्कूल ऑफ ओरियन्टल स्कूल ऑफ स्टडीज' रखा गया । कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन की वास्तविक शुरुआत मानी जाती है । यहां शोध हेतु छात्रों को पर्याप्त सुविधाएं दी जाती हैं । हिंदी साहित्य की बहुत सी पाण्डुलिपियां ब्रिटिश म्यूजियम तथा इण्डिया आफिस लाईब्रेरी में सुरक्षित रखी हुई हैं । ब्रिटेन में हिंदी प्रचार-प्रसार का कार्य 'हिंदी प्रसार परिषद्' के तत्वाधान में हो रहा है । साथ ही इस परिषद् के द्वारा 'प्रवासिनी' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन भी होता है ।

मॉरीशस द्वीप ने हिंदी साहित्य के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है । इस द्वीप में साहित्य की लगभग सभी विधाओं काव्य, उपन्यास, कहानी तथा नाटक आदि का साहित्यिक सृजन हुआ है । यहां के प्रमुख साहित्यकार जिन्होंने प्रारम्भ में यहां पर हिंदी साहित्य की गरिमा को स्थापित किया वह हैं प्रो. वासुदेव विष्णु दयाल, ब्रजेन्द्र भगत मधुकर एवं जयनारायण राय का नाम प्रमुख है । 1962 में ठाकुर प्रसाद मिश्र ने 'दीपावली' शीर्षक कविता का प्रकाशन किया । आपके 'मधुपर्क' कविताओं का संग्रह ने विशेष ख्याति अर्जित किया है, जिसका प्रकाशन कवि मधुकर जी ने किया। यहां पर मुक्त छंद की कविता का सृजन मुनीश्वर लाल चिंतामणि के द्वारा शुरु किया गया । 'शांति निकेतन की ओर' कविता 1961 में इनकी प्रमुख रचना है । प्रमुख कवियों में गिरिजादत्त रंग, रविशंकर कौलेसर, पूजानंद नेमा, हरिनारायण सीता, सूर्यदेव सिवरत का नाम महत्वपूर्ण है । यहां पर अनेक हिंदी उपन्यासों का प्रकाशन हो चुका है हीरालाल रचित 'सगाई', कृष्ण बिहारी रचित 'पहला कदम' एवं विष्णुदत्त मधुचंद रचित 'फट गयी धरती' महत्वपूर्ण औपन्यासिक कृतियां हैं । यहां के सबसे महान उपन्यासकार अभिमन्यु अंतत हैं । आपकी ग्यारह से अधिक कृतियां अकेले भारत में ही प्रकाशित हो चुकी हैं । इनका सबसे प्रमुख उपन्यास 'लाल पसीना' है । पत्रों के माध्यम से यहां की साहित्य परम्परा में पर्याप्त वृद्धि हुई है । 'बसंत' तथा 'अनुराग' पत्रों में कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है । कहानियों का प्रमुख संग्रह 'नए अंकुर' प्रमुख है। नाटकों में 'जीवन संगिनी' 1941 का जयनारायण राय द्वारा रचित माना जाता है । एकांकियों में 1951 में ब्रजेंद्र भगत के 'आदर्श बेटी' का प्रकाशन किया गया । निबंधों का प्रकाशन भी मॉरीशस में होता है और इनका प्रमुख विषय धार्मिक होता है । यहां से प्रकाशित होने वाली प्रमुख पत्रिकाओं के नाम जनता, आर्योदय, बसंत प्रमुख हैं ।

जब हम बर्मा की बात करते हैं तो हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में इसका विशेष महत्व है । यहां के प्रत्येक जिले में हिंदी के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की गई है । यहां बसे प्रमुख प्रवासियों में गुजराती, सिक्ख एवं मारवाड़ी हैं, ये आपसी व्यवहार में हिंदी का प्रयोग करते हैं। बर्मा में हिंदी के प्रचार-प्रसार में जिन लोगों ने प्रमुख योगदान दिया है वह हैं—पण्डित हरिदत्त शर्मा, सत्यनारायण गोयनका एवं डॉ. ओमप्रकाश इत्यादि वर्तमान में यहां नवोदित लेखकों ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में जर्मनी (पूर्वी तथा पश्चिमी), यूगोस्लॉविया आदि देशों में भी हिंदी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है ।

इस तरह विश्व परिदृश्य में हिंदी के प्रचार-प्रसार को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब वह समय दूर नहीं है जब इसे राष्ट्रसंघ की भाषा न बनाया जा सके । क्योंकि हिंदी भाषा आज साहित्य लेखन, वाचन तथा गायन आदि के रिवाज से हटकर अब दैनंदिन जीवन से लेकर विज्ञान प्रोद्योगिकी तथा व्यापार-प्रबंधन आदि प्रत्येक क्षेत्र में यह अपनी उपस्थित दे चुकी है । 'भाषा के इस नव्यतम रूप का युगानुकूल परिवर्तन एवं नवसृजन अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है, क्योंकि विश्व स्तर पर बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अन्त: संबंधों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है जिससे समूचे विश्व में हिंदी भाषा को एक नई दृष्टि मिल रही है और अंतर्राष्ट्रीय विचारधाराओं का परिप्रेक्ष्य वर्तमान हिंदी साहित्य में पूर्णत: परिलक्षित हो रहा है बस आवश्यकता एवं अपेक्षा इतनी भर ही है कि विदेश में रह रहे प्रवासी हिंदी के प्रचार-प्रसार में बढ़-चढ़कर भाग लेने के साथ-साथ अपने व्यवहार एवं व्यवसाय में हिंदी भाषा का प्रयोग करते रहें । (प्रस्तुत लेख को राष्ट्र भाषा महासंघ, मुम्बई की ओर से विशेष स्थान प्राप्त हुआ है । लेखक महाविद्यालय में हिंदी साहित्य के प्रवक्ता हैं) । ■

पर्यावरण

शहरों में बढ़ता यातायात-जनित प्रदूषण

—संजय चौधरी*

दुनिया भर में बढ़ते शहरीकरण की समस्या ने मानव के समक्ष कई चुनौतियां उत्पन्न कर दी हैं । विकास की अनियोजित गतिविधियों तथा दैनिक उपयोग में आने वाले भौतिक यंत्रों एवं साधनों की बड़ी संख्या के कारण अधिकांश बड़े शहरों पर प्रदूषण का शिकंजा कसता जा रहा है । यहां एक ओर प्रदूषण की समस्या है तो दूसरी और उद्योग धंधों तथा परिवहन तंत्र का निरंतर विस्तार हो रहा है । लगातर बढ़ती आबादी की दैनिक जरूरतों को पूरा करने की आपाधापी में अधिकांश शहरों की सार्वजनिक सेवाएं बुरी तरह से चरमरा गई हैं । यातायात और परिवहन का क्षेत्र एक ऐसा ही क्षेत्र है जहां व्याप्त अव्यवस्था और निजी वाहनों की बढ़ती संख्या ने इसे मानव के जीवन और उसके स्वास्थ्य के लिए अत्यंत असुरक्षित बना दिया है । वास्तव में, परिवहन के विभिन्न साधनोंद्वाराफैलाए जा रहे प्रदूषण के कारण ही अधिकांश शहरों का सड़क यातायात दिनों-दिन अधिक से अधिक असुरक्षित होता जा रहा है ।

शहर और सड़क यातायात

अधिकांश शहर वाणिज्य और व्यापार के केंद्र हैं तथा अधिकतर उद्योग-धंधे भी इन्ही शहरों में स्थित हैं । इसके कारण ग्रामीण क्षेत्र के लोग कोई न कोई रोजगार मिलने की उम्मीद में बड़ी संख्या में शहर आते हैं जिससे यहां के जनसंख्या-घनत्व में असामान्य वृद्धि होती है । लोगों की यही भीड़-भाड़, उद्योग-धंधों का समूह तथा यातायात एवं परिवहन के अनगिनत साधन, ये सब मिल-जुल कर शहर के पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं । साधारणत: यही समझा जाता है कि उद्योगों के कारण शहरों में सबसे अधिक प्रदूषण होता है । दूसरी ओर, आम जिंदगी का हिस्सा बन चुके सड़क यातायात के साधनों द्वारा फैलाए गए प्रदूषण को सामान्यत: खतरनाक नहीं माना जाता । जबकि वास्तविकता यह है कि यातायात के विभिन्न साधनों केद्वाराफैलाया गया प्रदूषण मानव के लिए अधिक खतरनाक है क्योंकि कल-कारखानों की तुलना में यातायात जनित प्रदूषण धरातल के अधिक पास होता है तथा मानव के शरीर और उसके स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालता है ।

भारी जनसंख्या-घनत्व के कारण अधिकांश भारतीय शहरों में एक कारगर परिवहन सेवा उपलब्ध कराना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई है । दिसंबर 2005 में दिल्ली की तीसरी मेट्रो लाइन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इसी चिंता को सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया । हमारे देश की सड़कों पर चलने वाला यातायात अत्यंत अव्यवस्थित है । अधिकतर शहरों में लगने वाले यातायात जाम तथा इनके कारण होने वाली समय और धन की भारी बर्बादी से देश में कोई भी अनभिज्ञ नहीं है । एक भरोसेमंद एवं सुव्यवस्थित सार्वजनिक परिवहन सेवा के अभाव में हर जगह निजी वाहनों की भीड़ बढ़ गई है जिसके कारण सड़कों पर यात्रा करना जानलेवा और त्रासदीपूर्ण हो गया है। प्रदूषण झेलते हुए सफर करना अधिकांश शहरवासियों की मजबूरी बन गई है । इसके कारण उन्हें अपने जीवन का अच्छा-खासा समय ही नहीं बल्कि अपने मेहनत की कमाई और जतन से जोड़ी गई स्वास्थ्य की संपत्ति, यह सब कुछ गंवाना पड़ता है ।

यातायात प्रदूषण की स्थिति

पिछले कुछ दशकों के दौरान भारत के अधिकांश शहरों में वाहनों तथा सड़क-उपयोगकर्ताओं की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है । लेकिन इसके लिए आधारभूत संरचना का विकास करने और यथावश्यक निर्माण कार्य

*जे एंड के-16बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

कराने की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है । आज भी अधिकांश शहरों में वाहनों के आने और जाने के लिए अर्थात् दोनों दिशाओं के यातायात के लिए एक ही अविभाजित सड़क का उपयोग होता है । अधिकतर मामलों में ऐसी सड़कों का निर्माण 30 से 40 साल पहले की यातायात की मात्रा तथा इनकी आवश्यकताओं के आधार पर किया गया था । इस प्रकार, सामान्यत: सभी शहरों में सड़क-उपयोगकर्ताओं की बढ़ी हुई जरूरतों तथा कई गुना बढ़ चुके यातायात के लिए आज भी उन्हीं पुरानी सड़कों का उपयोग होता है । इसके कारण अधिकांश शहरों में यातायात और सड़क अवसंरचना के बीच एक भारी असंतुलन देखा जा रहा है । इस असंतुलन के परिणामस्वरूप यातायात अव्यवस्थित हुआ है और यातायात-जनित प्रदूषण में असामान्य वृद्धि हुई है ।

शहरों में जनसंख्या के अनुपात में स्थान कम होने के कारण सड़कों के दुरुपयोग को बढ़ावा मिला है । हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में सड़कों पर अतिक्रमण एक आम बात है । अधिकांश शहरों में लोग अपने वाहनों को सड़कों पर तथा सड़कों के किनारे इधर-उधर खड़ा कर देते हैं । इतना ही नहीं, शहरी जनसंख्या द्वारा की जाने वाली यात्रा और इसके लिए अपनाए जाने वाले यातायात के साधन भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं । सड़कों पर बस, कार, ट्रक जैसे तेज गति वाले वाहनों के साथ-साथ रिक्शा, तांगा, साइकिल जैसे धीमी गति के वाहनों की भी अच्छी-खासी संख्या होती है जिनके बीच आगे निकलने की होड़ लगी रहती है । अधिकांशत: छोटे शहरों में मोटर-रहित वाहनों की अधिकता होती है जबकि बड़े शहरों के सड़क यातायात में निजी वाहनों का प्रतिशत अधिक होता है । दोनों ही स्थितियों में सड़क यातायात की सामान्य गति प्रभावित होती है और सड़क यातायात से संबंधित समस्याओं में वृद्धि होती है ।

आधुनिक जीवन में सड़क-यात्रा जरूरी होने के बावजूद अधिकांश लोग यह मानने लगे हैं कि सड़कों पर यात्रा करना समय और पैसे की बर्बादी करने वाला होता जा रहा है । शहरों की अस्त-व्यस्त यातायात व्यवस्था इसका प्रमुख कारण है । पिछले कुछ वर्षों के दौरान सरकार ने विभिन्न दूरवर्ती स्थानों को सड़कों के द्वारा परस्पर जोड़ने की ओर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किया हुआ है । ग्रामीण इलाकों को शहरों से जोड़ने के उद्देश्य से महामार्गों (हाइवे) एवं द्रुतमार्गों (एक्सप्रेसवे) के निर्माण से संबंधित योजनाओं के कार्यान्वयन पर सरकार अधिक जोर दे रही है । जबकि शहरों के प्रमुख मार्गों के विस्तार की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है । दूसरी ओर शहरी जनसंख्या और वाहनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है । इसके कारण सड़कों पर यातायात जाम होना एक सामान्य बात हो गई है तथा मध्यम आय वर्ग एवं निर्धन वर्ग के सड़क उपभोक्ताओं को अन्य अनेक समस्याओं के साथ-साथ प्रदूषण-जनित बीमारियों का सबसे अधिक सामना करना पड़ रहा है ।

यातायात के बढ़ते साधनों, वाहनों एवं सड़कों की खराब अवस्था तथा परिवहन तंत्र में व्याप्त कमियों आदि कई कारणों से सभी बड़े शहरों में यातायात जनित प्रदूषण चिंताजनक स्तर तक पहुंच चुका है । पिछले दो दशकों के दौरान हमारे देश में वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण में चार गुना वृद्धि हुई है । अगर यही हाल रहा तो भारत को दुनिया का सबसे प्रदूषित देश बनने में देर नहीं लगेगी । कारण है- देश में जनसंख्या वृद्धि की दर से भी अधिक तेज गति से हो रही वाहनों की संख्या में वृद्धि । सड़कों पर बढ़ती भीड़ के कारण यातायात की गति धीमी हो गई है तथा सड़क अवसंरचना पर अनावश्यक दबाव पड़ रहा है । इतना ही नहीं, सवारियों को चढ़ाने-उतारने के लिए बीच सड़क पर रुकने वाले वाहनों के कारण भी यातायात के लिए बाधाएं उत्पन्न होती हैं । इस अस्त-व्यस्त यातायात के कारण आज स्थिति यह हो गई है कि अधिकांश शहरों में वहां की सड़कों को सबसे अधिक असुरक्षित और प्रदूषित स्थानों में गिना जाने लगा है ।

यातायात प्रदूषण का दुष्प्रभाव

भारतीय सड़कों पर यातायात की बढ़ती मात्रा ने एक साथ कई स्तरों पर समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं । जिस गति से यातायात बढ़ रहा है उसी गति से यातायात जनित प्रदूषण और प्रदूषण जनित दुष्प्रभाव भी बढ़ रहा है । यह दुष्प्रभाव मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, प्राकृतिक संतुलन, ऐतिहासिक इमारतों जैसे विभिन्न घटकों पर पड़ता है । वाहनों से उत्पन्न होने वाले इस दुष्प्रभाव को देख कर यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकतम वाहन-घनत्व वाले शहरों को वहां के सड़क-यातायात ने किस शोचनीय अवस्था में पहुंचा दिया है। अगले अनुच्छेदों में हम प्रकृति और पर्यावरण के विभिन्न घटकों पर पड़ने वाले यातायात जनित प्रदूषण के दुष्प्रभाव की चर्चा करेंगे ।

1. **जल एवं वायु की गुणवत्ता का ह्रास**–यातायात द्वारा फैलाए जा रहे प्रदूषण के कारण जल एवं वायु की गुणवत्ता लगातार गिर रही है । सड़क पर चलने वाले वाहनों के इंजन हवा में धुएं के साथ-साथ कालिख और गर्द के महीन कण, एयरोसोल आदि की मात्रा बढ़ा देते हैं । ईंधन के दहन से हवा में कार्बन मोनोआक्साइड, हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजन के आक्साइड आदि गैसों की उपस्थिति बढ़ जाती है। इसी प्रकार, वाहनों की धुलाई से निकलने वाले एवं पुराने वाहनों से बिखरने वाले ग्रीज, ईंधन के अवशेष, पुर्जों एवं टायर आदि के घिसे हुए कण, स्नेहक तेल आदि विजातीय तत्व जल में मिल कर इसकी गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं ।

2. **जलवायु परिवर्तन**–सड़क यातायात के कारण उत्पन्न प्रदूषण की बदौलत वातावरण में हानिकारक तत्वों की मात्रा बढ़ रही है । इसके साथ-साथ यातायात के विभिन्न साधनों द्वारा हवा में छोड़ी जाने वाली जहरीली गैसों के कारण हवा में आक्सीजन एवं नाइट्रोजन के अनुपात में बदलाव आ रहा है । साथ ही, धुंध और कोहरे जैसी समस्याओं में वृदिध होने के कारण सूर्य का प्रकाश धरती तक नहीं पहुंच पा रहा है । पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश न मिल पाने के कारण पौधों की प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है । इन सबके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन की समस्या गंभीर होती जा रही है ।

3. **मानवीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव**–सड़क यातायात ने भारतीय शहरों के पर्यावरण को इतना प्रदूषित कर दिया है कि सामान्य लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है । शहरों में बढ़ती हृदय की बीमारियों तथा कैंसर और साँस संबंधी समस्याओं का मुख्य कारण यातायात जनित प्रदूषण ही पाया गया है । इस प्रदूषण के कारण बहरापन बढ़ने तथा तेज आवाज में बोलने जैसी समस्याएं भी बढ़ रही हैं । अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया है कि सड़क के किनारे रहने वाले तथा यातायात नियंत्रण के कार्य से जुड़े यातायात-कर्मियों के स्वास्थ्य पर इस प्रदूषण का सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है।

4. **सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा में कमी**–यातायात की बढ़ती मात्रा के साथ बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण सड़कों पर अनुशासनहीनता जन्म लेती है जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटनाएं होती हैं । सड़क दुर्घटनाओं के साथ-साथ दिल्ली जैसे महानगरों में दिखाई पड़ने वाली सड़क आक्रामकता (रोडरेज) की समस्या ने भी सड़क यातायात को असुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । भारी यातायात के बीच वाहन-चालाकोंद्वारा बार-बार बजाए जाने वाले हॉर्न से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण के कारण अन्य वाहन चालकों में उत्तेजना एवं क्रोध के भाव पैदा होते हैं जिससे वह आक्रामक होंकर हिंसा पर उतारू हो जाता है । इस प्रकार, रोड रेज की समस्या भी वायु एवं ध्वनि प्रदूषण के कारण उत्पन्न खीझ एवं चिड़चिड़ेपन के माहौल में जन्म लेती है ।

5. **ऐतिहासिक इमारतों की क्षति**–वाहनों के धुएं में उपस्थित हानिकारक गैसों का दुष्प्रभाव ऐतिहासिक महत्व के भवनों पर पड़ रहा है । यही कारण है कि ताजमहल की चारदीवारी से 500 मीटर के क्षेत्र में वाहनों के आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसी प्रकार, अन्य कई ऐतिहासिक इमारतों के आसपास के क्षेत्र को भी सड़क यातायात के लिए बंद कर दिया गया है क्योंकि वाहनों केद्वाराउत्पन्न वायु एवं ध्वनि प्रदूषण तथा यातायात जनित कंपन इन इमारतों को व्यापक रूप से क्षतिग्रस्त करने की क्षमता रखते हैं ।

कैसे रुकेगा यातायात जनित प्रदूषण ?

यातायात जनित प्रदूषण की भयावहता तथा परिवहन से संबंधित कठिनाइयों को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि सड़क यातायात को प्रदूषण-रहित एवं सुविधापूर्ण बनाने की ओर ध्यान दिया जाए । अधिकांश भारतीय शहरों में सड़कों का और अधिक निर्माण और विस्तार करने की तात्कालिक आवश्यकता है । शहरों की आबादी में कई गुना वृद्धि तथा वाहनों की संख्या में भारी बढ़ोतरी के विपरीत सड़कों की अवसंचनात्मक सुविधा को बढ़ाने की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है । इसलिए सड़क अवसंरचना को सुदृढ़ करना समस्या के समाधान की ओर पहला कदम माना जा सकता है । यातायात जनित प्रदूषण की रोकथाम करने के लिए जरूरी है कि यातायात के सुगम एवं निर्बाध

1752 HA/08—4A

आवागमन के लिए सड़कों के अंतर्गत पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो।

सड़कों के निर्माण के दौरान प्रयुक्त सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी बहुत जरूरी है क्योंकि निम्न श्रेणी की निर्माण सामग्री से बनी खराब सड़कों के कारण वाहन अधिक प्रदूषण फैलाते हैं। अच्छी सड़कों का निर्माण करके शहरों में सुगम एवं प्रदूषण-रहित यातायात सुनिश्चित किया जा सकता है। इसी प्रकार, सड़कों के उचित रखरखाव केद्वारायातायात समय में कटौती लाना तथा ईंधन की बचत करना, इन दोनों बातों को संभव बनाया जा सकता है। ईंधन की बचत की दृष्टि से वाहन-चालकों द्वारा लालबत्ती पर वाहन का इंजन बंद रखना भी जरूरी है। रुके हुए वाहनों के चालू इंजन से न केवल ईंधन की बर्बादी होती है बल्कि वाहनों से निकलने वाले धुएं के कारण चारों ओर प्रदूषण भी फैलता है।

शहरों की व्यस्त सड़कों पर सुचारू यातायात के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। यदि मुख्य मार्गों को यातायात-संकेतों से रहित बनाया जा सके तो इससे प्रदूषण को फैलने से भी रोका जा सकेगा। यही कारण है कि सघन यातायात वाले शहरों में यथावश्यक सबवे, फ्लाइओवर तथा उपरिपुल (ओवरब्रिज) का निर्माण आवश्यक माना जाता है। दिल्ली में वाहनों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि तथा यातायात अवरोध को देखते हुए 'दिल्ली विजन 2010' के अंतर्गत योजनाएं बनाई गई हैं। सड़क यातायात को सुगम बनाने के लिए यहां की सड़कों पर 25 नए फ्लाइओवर तथा 5 उपरिपुल को दिसंबर 2008 तक पूरा कर लेने का लक्ष्य रखा गया है। यातायात जनित प्रदूषण को कम करने के लिए अन्य शहरों में भी सबवे, फ्लाइओवर तथा उपरिपुल के निर्माण पर ध्यान देने की तात्कालिक आवश्यकता है।

सड़कों से संबंधित अवसंरचना को सुदृढ़ करने के साथ-साथ वाहनों में प्रयुक्त होने वाले ईंधन की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। दिल्ली एवं मुंबई में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था के लिए सीएनजी के सफलतापूर्वक प्रयोग से इसे अन्य शहरों में अपनाने की मुहिम को बढ़ावा मिला है। आज अधिक से अधिक लोग यह समझने लगे हैं कि ईंधन की गुणवत्ता सुनिश्चित करके वायु प्रदूषण के स्तर को कम किया जा सकता है। डीजल की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए इसमें उपस्थित सल्फर की मात्रा घटाकर 0.05 प्रतिशत कर दी गई है। इसी प्रकार, ग्रीन हाउस गैस में कमी लाने के लिए पेट्रोल में ओलिफिन, बेंजीन, ऐरोमेटिक तथा सल्फर आदि की मात्रा में भारी कटौती की गई है। आजकल अन्य वैकल्पिक ईंधनों की खोज के लिए भी सरकार द्वारा बड़े स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं ताकि यातायात-जनित प्रदूषण में कमी लाई जा सके।

वाहनों के इंजन की कार्यक्षमता में सुधार लाकर भी यातायात-प्रदूषण को कम किया जा सकता है। वाहनों के इंजन यदि ईंधन का पूर्ण उपयोग करें तो धुंए के साथ निकलने वाले हानिकारक गैसों की मात्रा स्वत: कम हो जाएगी। ईंधन का संपूर्ण दहन सुनिश्चित करने वाले तथा दहन के दौरान हवा और ईंधन का उचित अनुपात सुनिश्चित करने वाले वाहनों के अधिक दक्ष इंजन के विकास से वायु प्रदूषण को रोकना संभव हो सकेगा। इसके लिए आधुनिकतम तकनीक के प्रयोग से इंजन के नए मॉडल का विकास करना जरूरी है। कम प्रदूषण फैलाने वाले इंजन के नवीनतम मॉडलों का आयात करके तथा स्वदेशी तकनीक की मद्द से देश में ही इनके निर्माण को बढ़ावा देकर सरकार यातायात-प्रदूषण के नियंत्रण की दिशा में क्रांतिकारी पहल कर सकती है। सभी वाहनों के लिए प्रदूषण उत्सर्जन की आवधिक जांच करवाने तथा प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र साथ रखने की अनिवार्यता का कड़ाई से पालन भी अनवार्य बनाया जाना चाहिए।

सड़क यातायात से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है कि शहरों में सार्वजनिक परिवहन सेवा तथा तेज गति वाली जन परिवहन प्रणाली (एमआरटीएस) के विकास पर ध्यान दिया जाए। अधिकांश भारतीय शहरों में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था अत्यंत कमजोर स्थिति में है तथा अधिकतर लोग आवागमन के लिए निजी वाहनों पर निर्भर करते हैं। इसके कारण यातायात की मात्रा में अनपेक्षित वृद्धि हुई है तथा परिणामत: यातायात जनित प्रदूषण को भी बढ़ावा मिला है। ऐसे में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था के कुशल प्रबंधन तथा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप इसके प्रचालन के द्वारा सड़क यातायात को अधिक व्यवस्थित रूप दिया जा सकता है। शहरों में प्रति व्यक्ति यात्रा भी औसतन अधिक दर्ज की गई है। इसलिए शहरों के लिए समय और लागत की दृष्टि से सुविधाजनक सार्वजनिक

1752 HA/08—4B

परिवहन सेवा की व्यवस्था करना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है ।

दिल्ली जैसे भारी यातायात घनत्व वाले शहर में उच्च क्षमता वाली बस तथा मेट्रो रेल जैसे प्रयोग भी यातायात जनित प्रदूषण तथा अन्य संबंधित समस्याओं का कारगर समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं । मेट्रो रेल की सफलता से उत्साहित होकर सरकार दिल्ली के लिए समेकित मल्टी-मोडल परिवहन प्रणाली (डीआरएमटीएस) के विकास हेतु एक प्राधिकरण का गठन कर रही है । यह प्राधिकरण दिल्ली में मोनोरेल, उच्च क्षमता बस प्रणाली (एचसीबीएस) तथा लाइट-रेल परिवहन प्रणाली जैसी परियोजनाओं का कार्यान्वयन सुनिश्चित करेगा । सड़क यातायात के क्षेत्र में नवीन योजनाओं को लागू करने के साथ-साथ सड़कों के निर्माण और विस्तार पर भी यह प्राधिकरण ध्यान देगा । इस प्रकार, जन-परिवहन के अनेक सुविधाजनक विकल्पों का विकास हो जाने के बाद आशा की जा रही है कि देश की राजधानी में सड़क यातायात अधिक सुरक्षित हो जाएगा तथा इसके साथ ही यातायात जनित प्रदूषण में भी कमी आएगी ।

उपसंहार

भारतीय शहरों में सड़क-यातायात को यदि प्रदूषण-रहित बनाना है तो सबसे पहले यातायात के स्वरूप को व्यवस्थित करना होगा । शहरों में निरंतर बढ़ रहे प्रदूषण की समस्या तथा परिवहन से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने के लिए जरूरी है कि अच्छी एवं चौड़ी सड़कों के निर्माण के साथ-साथ तेज गति वाली जन परिवहन प्रणाली (एमआरटीएस) अथवा सार्वजनिक परिवहन सेवा के विकास को प्राथमिकता दी जाए । अधिकांश शहरों की आबादी में कई गुना वृद्धि होने के कारण परिवहन संबंधी मांग में जो वृद्धि हुई है उसको देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि सड़क यातायात के वैज्ञानिक प्रबंधन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए । उपलबध परिवहन व्यवस्था के उचित प्रबंधन से न केवल प्रदूषण को रोकना संभव हो सकेगा बल्कि आम जनता की आवागमन संबंधी सभी समस्याओं का समाधान भी निकाला जा सकेगा ।

अधिक जनसंख्या घनत्व वाले बड़े शहरों में मोनोरेल, मेट्रोरेल, उच्च क्षमता बस प्रणाली तथा लाइट-रेल परिवहन प्रणाली जैसी योजनाओं की उपयुक्तता के संबंध में अध्ययन करने की तात्कालिक आवश्यकता है । सड़क यातायात एवं परिवहन को अधिक से अधिक पर्यावरण-हितैषी स्वरूप देने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि यातायात-प्रबंधन तथा प्रदूषण-नियंत्रण जैसे विषयों की जिम्मेदारी अलग-अलग एजेंसियों तथा प्राधिकरणों को देने की बजाय प्रत्येक शहर के लिए एक समेकित सड़क यातायात प्रबंधन प्राधिकरण का निर्माण किया जाए । उपभोक्ताओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रदूषण-रहित सड़क परिवहन की व्यवस्था करवाने के लिए इस प्राधिकरण के पास उच्च अधिकार होना भी जरूरी है । अधिकांश शहरों में बढ़ रहे यातायात जनित प्रदूषण पर नियंत्रण करना तभी संभव हो सकेगा । ■

"प्रांतीय ईर्ष्या द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीजों से नहीं ।"

–नेता जी सुभाष चंद्र बोस

विविध

सतर्कता जागरूकता का प्रसार-भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम

-प्रेम कुमार*

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' जब से इस सृष्टि में मानव संरचना का उद्भव हुआ है तब से मनुष्य हमेशा नि:स्वार्थ भाव से अपना कर्म करता आया है। उसने कभी परिणाम या फल की इच्छा व्यक्त नहीं की। श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक महाभारत काल से मनुष्य को यह प्रेरणा देता आया है कि हे मनुष्य! तू सदैव अच्छे कर्म करता रह, फल की इच्छा मत कर जिससे अच्छे कर्म का निश्चित ही अच्छा परिणाम मिलेगा। पिछली कई शताब्दियों से भ्रष्टाचार इस संसार में पांव पसारे हुए है। यह कोई नई वस्तु नहीं है अथवा एक या दो दशक पूर्व का प्रादुर्भाव नहीं हैं। यह तो सदियों से चला आ रहा मानव सभ्यता पर बुराई का एक साया है।

भ्रष्टाचार क्या है ? भ्रष्टाचार भ्रष्ट+आचरण का सन्धि है जिसमें भ्रष्ट बुराई को इंगित करता है और आचार मनुष्य के दिन प्रतिदिन के कार्यकलाप और व्यवहार को दर्शाता है। अत: जीवन में बुरे आचरण को अपनाना ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार किसी भी रूप में किया जा सकता है चाहे अनैतिक रूप से कमाया हुआ धन, अनैतिक रूप से किया हुआ शारीरिक मानसिक और सामाजिक शोषण, ये सभी भ्रष्टाचार की परिभाषा प्रदर्शित करते हैं। एक बुरे आचरण से भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है जो कि व्यक्ति को निरन्तर इस ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

भ्रष्टाचार का उद्भव :

जैसा कि आप और हम सभी जानते हैं कि भ्रष्टाचार का उद्भव आज से नहीं वरन् सैकड़ों वर्षों पूर्व से हो चुका हैं। भारत में भी भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत पुरानी हैं। मुगलकालीन चाणक्य, कोटिल्य और अनेकों राजा-महाराजाओं के युगों में भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिलता है। यहां तक कि रामायण और महाभारत काल में भी भ्रष्टाचार के अनेकों उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। महाभारत युग में गुरु द्रोणाचार्य द्वारा गुरुदक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा मांगना ही भ्रष्टाचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारत में जब ब्रिटिश राज के समय भी भ्रष्टाचार का जबरदस्त प्रचलन था। अनेकों कुलीनों, राजाओं, जमींदारों और प्रभुत्व संपन्न लोगों ने अपने निजी स्वार्थ के लिये भ्रष्टाचार को अपनी प्रगति और विकास के साथ-साथ उसे धन संचय और समृद्धि का मार्ग बनाया जिसकेद्वारा अनेकों लोगों का शोषण किया गया और उनको अन्यायपूर्वक यातनाएँ भी दी गई। लेकिन इन युगान्तों में भ्रष्टाचार इतनी मात्रा, जगह और व्यवस्थाओं में व्याप्त नहीं था जितना कि वर्तमान में देखने को मिलता है। भ्रष्टाचार का उद्भव मुख्यत: अति महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही हुआ है। जिस दिन से भ्रष्टाचार का उद्भव हुआ है उस दिन से आज तक सदैव इसके प्रादुर्भाव में दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रगति हुई है और भ्रष्टाचार रूपी बाग हमेशा फलता-फूलता आया है। अनेकों महापुरूषों और समाज सेवियों ने इसकी रोकथाम के लिये भरसक प्रयत्न और प्रयास किये परन्तु सभी निरर्थक साबित हुए हैं। परिणामस्वरूप आज भ्रष्टाचार दीमक की भांति हमारी तमाम व्यवस्थाओं को चाट कर सफा कर रहा है। आज भ्रष्टाचार एक सर्वव्यापी रोग बन गया है जो जीवन के सभी क्षेत्रों-धर्म, राजनीति, शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, न्यायतन्त्र, शासनतन्त्र अर्थव्यवस्था आदि हर जगह पर दिखाई देता है।

भ्रष्टाचार-आवश्यकता और कारण :-

कहते हैं कि 'आवश्यंकता आविष्कार की जननी होती है' परन्तु भ्रष्टाचार के मामले में यह बात बिल्कुल बेमानी साबित होती है क्योंकि यह एक बुराई और दु:ख का मार्ग है जिससे व्यक्ति आवश्यकता और जरूरत में कभी भी नहीं अपनाएगा। चूंकि लालच और लोभ में व्यक्ति अंधा होकर

राजस्थान परमाणु बिजलीघर रावतभाटा (राजस्थान)

अपनी अत्यधिक आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए भ्रष्टाचार रूपी कांटों भरा मार्ग अपनाता है। यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम पाएंगे कि आज व्यक्ति को अपनी तमाम आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भ्रष्टाचार ही सबसे सरल और अच्छा माध्यम नजर आता है जिसके दवारा वह जल्दी से जल्दी अपनी मंजिल प्राप्त करने के लिए स्वप्न देखता है फलस्वरूप वह भ्रष्टाचार के दलदल में फँसता ही जाता है ।

आज नौकरशाही और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं । राजनीतिज्ञों के लिए भ्रष्टाचार एक सेवा कर अथवा धंधा बन गया है और पूंजीपतियों के लिए वह व्यापार का एक अभिन्न अंग बन गया है । सद्गुण आदर्श और ईमानदारी जैसे शब्दों का इन लोगों के लिए कोई महत्व नहीं रह गया है और इन सब का उद्देश्य केवल धन और साधन का संचय मात्र रह गया है ।

आज भ्रष्टाचार के मुख्यत: निम्नलिखित कारण हैं जो कि इसे न केवल बढ़ावा देते हैं बल्कि इसको प्रोत्साहित भी करते हैं :–

1. परिवार की आर्थिक जरूरतों की पूर्ति ।
2. उच्च जीवन श्रेणी की चाह ।
3. भोग और विलास की महत्वाकांक्षा ।
4. समय पर न्याय और दोषियों को सजा न मिलना ।
5. शासकीय कार्यों में पारदर्शिता की कमी ।
6. भ्रष्ट व्यक्तियों की समाज एवं व्यवस्थाओं पर अच्छी पहुंच होना । आदि । आदि ।

उपरोक्त कारण लोगों को भ्रष्टाचार करने एवं दैनिक कार्यों में इसे अपनाने की प्रेरणा देते हैं जो कि हमारे विशुद्ध समाज के लिए एक कलंक की तरह है जिसको जड़ से मिटाने की महती आवश्यकता है ।

भ्रष्टाचार निवारण के उपाय :

चिकित्सा विज्ञान में जिस तरह अनेकों बीमारियां मानव शरीर के लिए घातक सिद्ध हुई हैं, ठीक उसी तरह से अनेकों सामाजिक बुराईयों के सम्मिश्रण के रूप में भ्रष्टाचार हमारी तमाम सामाजिक व्यवस्थाओं को पंगु बना रहा है और वह कैंसर, एड्स, क्षय एवं अन्य संक्रमित रोगों की तरह हमारी मानसिक स्थिति को विकृत कर रहा है । इसको तुरन्त उखाड़ फेंकना आज की नितांत आवश्यकता बन गया है अन्यथा यह हमारी व्यवस्थाओं को खोखला कर देगा । भ्रष्टाचार आज वह माध्यम बन गया है जो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्थाओं को लालच के भ्रमजाल में फँसाकर मानव को जीवन के मूल उद्देश्य से विमुख कर देगा और जिसकेद्वाराव्यक्ति सांसारिक मोह-माया में फँसकर अपने कर्तव्यों को भूल जाता है । एक पुरानी कथा है कि एक बार नारद और कृष्ण कहीं जा रहे थे तो नारद ने कृष्ण से पूछा कि हे प्रभु ! आपकी माया अपरम्पार है और कृपया एक बार मुझे उसके दर्शन करा दीजिए । इससे मैं धन्य हो जाऊँगा । कृष्ण ने कहा कि ठीक है आज मैं तुम्हें माया के दर्शन करा देता हूं । दोनों बहुत दूर चलते गए । इस बीच कृष्ण ने कहा कि नारद मुझे बहुत प्यास लगी है और कहीं से पानी लाकर पिला दो । नारद पानी की तलाश में दूर-दूर तक गया परन्तु कहीं भी पानी दिखाई नहीं दिया । फिर नारद को दूर एक घर दिखाई दिया । नारद ने जाकर घर का दरवाजा खटखटाया तो एक सुन्दर युवती ने घर का दरवाजा खोला । नारद एकटक उसे देखता रहा और उस पर मोहित हो गया । वह युवती भी नारद को देखकर उस पर मंत्रमुग्ध हो गई । नारद ने युवती के पिता की सहमति से युवती से विवाह कर लिया और वहीं पर रहने लगे । कुछ समय बाद उनके बच्चे हुए और वे सुखपूर्वक रह रहे थे । बारह वर्ष के बाद वहां पर भयंकर बाढ़ आई जिसमें नारद की पत्नी और उसके बच्चे बह गए । नारद जब शोक में डूबे हुए थे तब कृष्ण प्रकट हुए और नारद से कहा कि नारद, तुम अब जल लेकर आए हो और मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा था । नारद को जब समझ में आया तो उसने कृष्ण से बहुत क्षमायाचना की । चूंकि नारद मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़ गया था और जो उद्देश्य उन्हें दिया गया था उससे नारद विमुख हो गए थे ।

अत: स्पष्ट है कि धन लालच, मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़कर हम अपने आदर्शों, सद्गुणों, जीवन के मूल उद्देश्यों और कर्तव्यों से विमुख होकर भ्रष्टाचाररूपी दलदल में धंस जाते हैं । भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा प्रायोजन धन सम्पदा अर्जित करना है लेकिन हम सब यह जानते हुए भी अज्ञान में हैं कि यह धन कब तक हमारे साथ रहेगा और कब तक यह हमें सुख की प्राप्ति देगा । "धन से किसी को वह सुख नहीं मिल सकता जो शायद दूसरों को आनन्दित करने पर मिलता है ।" हम अपने आदर्शों, सद्गुणों और सुन्दर संस्कारों के माध्यम से भ्रष्टाचार रूपी दानव का खात्मा कर सकते हैं । इसके लिए हमें हमारे दैनिक जीवन में वैचारिक दृढ़ता को अपनाना होगा जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ेगा, हमारी मनोवृत्ति बदलेगी और हमारे कदम भ्रष्ट आचरण और बुराई की तरफ डगमगाएंगे नहीं ।

भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में अगर हम सोचें तो सर्वप्रथम हमें अपने विचारों और धारणाओं को बदलना होगा और साथ ही साथ भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए निम्नलिखित कदम उठाने होंगे :–

1. हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ इस तरह की अध्ययन सामग्री का समावेश करना होगा जो कि भ्रष्टाचार को एक अपमान और घृणित कार्य इंगित करती हो जिससे हमारी आने वाली भावी पीढ़ी सतर्क होकर इससे दूर रह सके ।
2. युवा वर्ग को समुचित रोजगार उपलब्ध कराना होगा जिससे वे आर्थिक रूप से सक्षम हो सकें ।
3. सरकारी एवं न्यायिक कर्मचारियों और अधिकारियों तथा कानून और व्यवस्था में लगे कर्मियों आदि की वेतन एवं सुविधाऐं समुचित होनी चाहिए ताकि वे संतुष्ट होकर कार्य कर सकें, परिवार का गुजारा अच्छी प्रकार से कर सकें और अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दिला सकें जिसकी पूर्ति के लिए उन्हें अनैतिक रूप से धन अर्जित करने के लिए बाध्य न होना पड़े ।
4. भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सख्त से सख्त कानून बनाया जाना चाहिए जिससे भ्रष्टाचारियों को कड़ी सजा मिल सके और लोग भ्रष्ट तरीकों को अपनाने के बारे में सोच भी न सकें ।
5. राजनीतिक स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भ्रष्ट जन प्रतिनिधियों को चुनाव में प्रत्याशी बनाने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और उन्हें शीघ्र और उचित दण्ड दिया जाना चाहिए ।
6. आजकल धार्मिक स्थलों पर भ्रष्टाचार की बाढ़ सी आ गई है और जनता की जेब का दान में चढ़ाया हुआ लाखों करोड़ों रुपया चंद लोगों की पॉकेट मनी बन कर रह गई है और वहां का सारा धन गलत कार्यों एवं गलत जगहों पर खर्च किया जा रहा है जिसकी तुरन्त रोकथाम आज की अहम आवश्यकता बन गई है ।
7. शासकीय कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता अपनानी होगी ताकि लोगों को तथ्य छुपाने का मौका न मिल सके और साथ ही सूचना के अधिकार को शासकीय कार्यों में प्रभावी और निष्पक्ष रूप से लागू किया जावे जिससे आम आदमी को सही और समयपूर्वक सूचना मिल सके और भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों का जनता के सामने खुलासा हो सके ।
8. जनता को जागरुक और सतर्क होना होगा, उन्हें भ्रष्टाचार का बहिष्कार करना होगा और काले बाजार की वस्तुएं न खरीदी जाएं तो भ्रष्टाचार की रोकथाम में यह एक अहम कदम होगा ।
9. अनुशासन और नियमों का सख्ती से पालन करना हेगा ।

सतर्कता जागरूकता–प्रसार और माध्यम :

संचार क्रांति ने मानव को आज इतना प्रभावित कर दिया कि वो दुनियां के किसी भी कोने की किसी भी जगह की कोई भी छोटी से छोटी खबर पल भर में प्राप्त कर सकता है । पुराने जमाने में संचार साधनों का अत्यन्त अभाव था और बड़ी से बड़ी घटनाओं की सूचना और खबरों के प्रसार में महीनों लग जाते थे और ढोल, नगारों, गुप्तचरों और हाकमों के द्वारा संदेशों और समाचारों को आवश्यक स्थानों और जनता तक पहुंचाया जाता था । ज्यों-ज्यों मानव ने विकास किया संचार माध्यमों का भी तेजी से विकास हुआ । आज विज्ञापनों के माध्यम से हर अच्छी बुरी चीज को बढ़ा चढ़ा कर बाजार में उतार दिया जाता है और वह बिक कर निर्माता को लाभ भी देती है ।

इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि भ्रष्टाचार की रोकथाम में सतर्कता जागरुकता के प्रचार प्रसार पर हमारा ध्यान अब तक गया ही नहीं न ही इस ओर हमारी सरकारों ने कोई ठोस कदम उठाए । आप देखते होंगे कि हर छोटी बड़ी कम्पनियां अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिए लाखों करोड़ों रुपया विज्ञापनों पर फूंक देती है । सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा पोलियो, एड्स, मलेरिया आदि से बचाव के लिए टेलीविजन चैनल्स, अखबारों, रेडियो, बैनर और होर्डिंग्स के द्वारा विज्ञापन में लाखों रुपए खर्च करके जनता का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है । आय कर, सेवा कर और अन्य करों को समय पर जमा करने के लिए कितने ही विज्ञापन दिए जाते हैं परन्तु भ्रष्टाचार उन्मूलन और रोकथाम के लिए बहुत कम विज्ञापन और प्रचार प्रसार देखने को मिलता है यदि कुल विज्ञापनों की संख्या का दो-चार प्रतिशत विज्ञापन भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए आते तो भ्रष्टाचार को काफी हद तक कम किया जा सकता था । चूंकि आप देखते हैं कि विज्ञापनों का हमारे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है और इस दिशा में

ध्यान दिया जाता तो सतर्कता जागरुकता का जबरदस्त प्रसार हो सकता । सतर्कता जागरूकता के लिए सही तथ्यों का प्रचार-प्रसार ही सबसे सशक्त माध्यम है जो हमें भ्रष्टाचार के विरुद्ध हर प्रकार से सतर्क बनाता है । सतर्कता के प्रति जब हमारी जागरूकता और जवाबदेही बढ़ेगी तो निश्चित रूप से हमारे मन में भ्रष्टाचार के प्रति अपमान और घृणा भर जाएगी और हम ऐसे घृणित और अपमान भरे कार्य को करने की सोचेंगे तक नहीं । अत: सतर्कता जागरूकता के प्रसार में आज हर व्यक्ति, हर संस्था और सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों को निस्वार्थ भाव से आगे आने की आवश्यकता है । सतर्कता जागरूकता के प्रयास को अब टेलिविजन, समाचार-पत्रों, पोस्टर, बैनर और होर्डिंग्स के द्वाराहम जन-जन तक पहुंचा सकते हैं, फलस्वरूप लोग भ्रष्टाचार के बुरे परिणामों के बारे में जागररूक हो सकेंगे तथा उनमें एक नये प्रकाश का देदिप्यमान होगा जो उन्हें भ्रष्टाचाररूपी अंधकार से रोशनी की ओर ले जाएगा ।

सतर्कता जागरूकता का प्रसार-भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम :

हर एक बुरे कार्य की रोकथाम अथवा अच्छे कार्य की शुरूआत के लिए कोई न कोई ऐसा माध्यम चाहिए जो उसे सही दिशा प्रदान करता हो । भ्रष्टाचार की दिशा में सतर्कता जागरूकता का प्रसार एक आवश्यक और सही कदम है जिसके माध्यम से हम जनता को भ्रष्टाचार के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक कर सकते हैं । जनता में जब भ्रष्टाचार के बारे में जागरुकता बढ़ेगी, उन्हें उसके दुष्परिणामों के बारे में सोचने पर विवश होना होगा तब जनता स्वत: ही भ्रष्टाचार के विमुक्त हो जाएगी ।

जब सतर्कता जागरूकता के प्रसार से लोगों में ये धारणाएं कायम की जा सकती हैं कि भ्रष्टाचार ने सदैव मानव सभ्यताओं को विनाश की ओर धकेला है । उसने लोगों को यातना, प्रताड़ना, कष्टों और दुखों के अलावा कुछ नहीं दिया है तो निश्चित ही लोग इससे दूर रहने की चेष्टा करेंगे । भ्रष्टाचार ने लोगों को सदैव सन्मार्ग और सद्गुणों से विमुख कर शोषण, अत्याचार, वासना, कुकर्म और अनैतिकता की ओर धकेला है । सतर्कता जागरूकता के प्रसार से जब मनुष्य को इन बातों का आभास होगा तब उसके विचार, उसकी भावनाएं और उसकी कार्यशैली बदल जाएगी और वह इस निर्णय की ओर अग्रेषित होगा कि वह जीवन में भ्रष्ट आचरण करने के बारे में सोच भी नहीं पाएगा ।

मैं यह निश्चित रूप से कहना चाहूंगा कि भ्रष्टाचार निवारण और उन्मूलन की दिशा में सतर्कता जागरूकता का प्रसार एकदम सही और ठोस कदम साबित हो सकता है । इस ओर निश्चय ही हमारा ध्यान अब जाना चाहिए क्योंकि अब तक प्रचार माध्यमों को हमने भ्रष्टाचार निवारण का जरिया नहीं बनाया है और अगर बनाया होता तो भ्रष्टाचार निवारण में हम काफी हद तक सफल हो गये होते । अत: सतर्कता जागरूकता का प्रसार भ्रष्टाचार निवारण और उसे उखाड़ फेंकने की दिशा में एक अंधेरे में उजाले की किरण साबित हो सकता है । आवश्यकता है इसे तुरन्त प्रभावी रूप से अमल में लाए जाने की ।

कहते हैं दृष्टि से इन्सान की फितरत बनती है । जैसी हमारी दृष्टि या सोच होगी वैसी ही हमारी करनी अर्थात् कर्म होंगें । हमारी सोच ही हमें आशावादी और निराशावादी बनाती है । अगर भ्रष्टाचार को सही कार्य मानेंगे तो हम भ्रष्टाचार करने में नहीं हिचकिचाएंगे और अगर भ्रष्टाचार को एक बुराई के रूप से देखेंगे तो उससे घृणा करेंगे और कभी उस ओर अपना कदम नहीं बढ़ाएंगे । उसके लिए हमें आवश्यकंता होगी वैचारिक दृढ़ता और आत्म विश्वास की, जिसके सहारे हम भ्रष्टाचार को कभी हमारे स्वभाव, व्यवहार और आचरण में नहीं आने देंगे । जैसा कि भ्रष्टाचार का मूल कारण-व्यक्ति की आवश्यकता और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना है । शेक्सपीयर ने बहुत अच्छा संदेश हमारे जीवन के लिए दिया है-"महत्वाकांक्षा वह पाप है जिसने देवदूतों को भी पतित कर दिया"। अत: हमें सदैव अपनी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को सीमित रखना चाहिए ताकि उनकी पूर्ति के लिये भ्रष्टाचार का सहारा न लेना पड़े ।

आज भ्रष्टाचार भविष्य के लिये धन संचय का एक पर्याय बन गया है पर वह धन कब तक सुरक्षित होगा यह मनुष्य को खुद को नहीं पता, पर फिर भी मनुष्य अनावश्यक धन का संचय क्यों करता है जो आगे चल कर उसी के लिए संकट, दुख:, कष्ट और डर का एक मुख्य कारण बन सकता है ।

धन बल सींचे मानवा, कु कबहु सुखी ना होय ।
जो सींचे तु आत्म-बल, अति-उपयोगी होय ।।

अर्थात् हे मनुष्य तू धन का अनावश्यक संचय क्यों करता है जो कतई सुरक्षित नहीं है । तुझे आत्मबल और आत्म-विश्वास का संचय करना चाहिए जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है अत: मनुष्य को सदैव भ्रष्टाचार की अपेक्षा ईमानदारी और सच्चाई का मार्ग अपनाना चाहिए ।

जय भारत

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

सीमाशुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, आइस हाउस, इ.डी.सी. कॉम्प्लैक्स, पाटो, पणजी-गोवा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 96वीं तिमाही बैठक (जुलाई से सितंबर, 2007 तक) दिनांक 15-11-2007 को अपरान्ह 16.00 बजे श्री चन्द्रहास माथुर, आयुक्त, सीमा शुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, गोवा की अध्यक्षता में पणजी स्थित मुख्यालय कार्यालय में आयोजित की गई ।

प्रारंभ में पिछली तिमाही बैठक के कार्यवृत की पृष्ठी की गई ।

आयुक्तालय के कुल 22 अनुभागों से प्राप्त हिंदी पत्राचार रिपोर्ट के अनुसार हर अनुभाग का पत्राचार प्रतिशत-विवरण समिति के सामने प्रस्तुत किया गया । प्रस्तावित विवरण के अनुसार जिस अनुभाग का पत्राचार घट गया है, उन्हें हिंदी में पत्राचार बढाने के लिए निर्देश दिया गया । अध्यक्ष महोदय ने बताया कि न्याय निर्णय/कर अपवंचन आदि अनुभाग में कुछ तकनीकी/विधिक कामकाज के अलावा जहाँ संभव हो सके वहां हिंदी अग्रेषण पत्र, अनुस्मारक हिंदी में भेजे जाए, जिससे हिंदी पत्राचार में बढोत्तरी हो सकती है ।

संग्रणक में हिंदी सॉफ्टवेयर प्रतिष्ठापन संबंधी आयुक्तालय में जिन कॉम्प्यूटर में हिंदी सॉफ्टवेयर उपलब्ध नहीं थे उनपर आयुक्त महोदया के अनुमति से अक्षर नवीन हिंदी इस्टालेशन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्यालय के संबंधित अत्याआवश्यक कुल 33 अनुभाग के (संग्रणक) सॉफ्टवेयर लगाये गए और दिनांक 01-11-2007 को प्रशिक्षण दिया गया । जिससे हर अनुभाग में सुचारू रूप से हिंदी कॉम्प्यूटर टाईपिंग काम-काज हो सके । इस तिमाही में 8 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया और इस कार्यशाला में कुल 61 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया और आवश्यकता के अनुसार लिखित रूप में संबंधित अनुभाग के सुलभता के लिए टिप्पणी भी जारी की गई ताकि काम-काज सुचारू रूप में हो सके ।

मुख्य आयकर आयुक्त, लुधियाना प्रभार

मुख्य आयकर आयुक्त, लुधियाना प्रभार की 19वीं बैठक दिनांक 26-11-2007 को सायं 4.00 बजे मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालंय, लुधियाना के सभागार में आयोजित की गई ।

श्री आर.के. राय, आयकर आयुक्त-II, लुधियाना एवं राजभाषा अधिकारी, आयकर विभाग, लुधियाना ने इस बैठक की अध्यक्षता की । सर्व-सम्मति से पिछली बैठक के कार्यवृत्त को पारित कर दिया गया । बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को मुख्य आयकर आयुक्त, लुधियाना प्रभार, आयकर आयुक्त (केन्द्रीय), लुधियाना प्रभार तथ आयकर निदेशक (अन्वे.), लुधियाना प्रभारों की दिनांक 30-09-2007 को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट के आंकड़े उपलब्ध करवाए गए । हिंदी पत्राचार से संबंधित आंकड़ों की समीक्षा करने पर यह पाया गया कि पिछली तिमाही की अपेक्षा इस तिमाही में हिंदी पत्राचार में 3 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है ।

अध्यक्ष महोदय ने इस पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि यद्पि यह एक शुभ संकेत है परन्तु राजभाषा विभाग, गृह मत्रालय, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित 90 प्रतिशत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अभी भी सघन प्रयास किए जाने अपेक्षित हैं ।

लुधियाना में हिंदी समारोह नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया जाता है । इसमें न.रा.का.स., लुधियाना के उन सदस्य कार्यालयों को भी पुरस्कृत किया जाता है जिन्होंने वर्ष के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादित किया है । इस प्रयोजन से इन कार्यालयों का निरीक्षण कार्य अभी पूरा नहीं हो पाया है । निरीक्षण कार्य पूरा करने के बाद मूल्यांकन समिति अध्यक्ष महोदय को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी ।

चित्र समाचार

राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14-15 फरवरी, 2008 को गोवा में आयोजित पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां –

समारोह का उद्घाटन करते हुए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सचिव श्री रंजीत ईस्सर, संयुक्त सचिव श्रीमती पी. वी. वल्सला जी कुट्टी तथा निदेशक (कार्यान्वयन) श्री बी. आर. शर्मा जी ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण गोवा को प्रथम परस्कार प्रदान करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ।

नराकास देवास को पुरस्कृत करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ।

समारोह में पुरस्कार प्रदान करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यपालकों के लिए राजभाषा संगोष्ठी की एक झलक ।

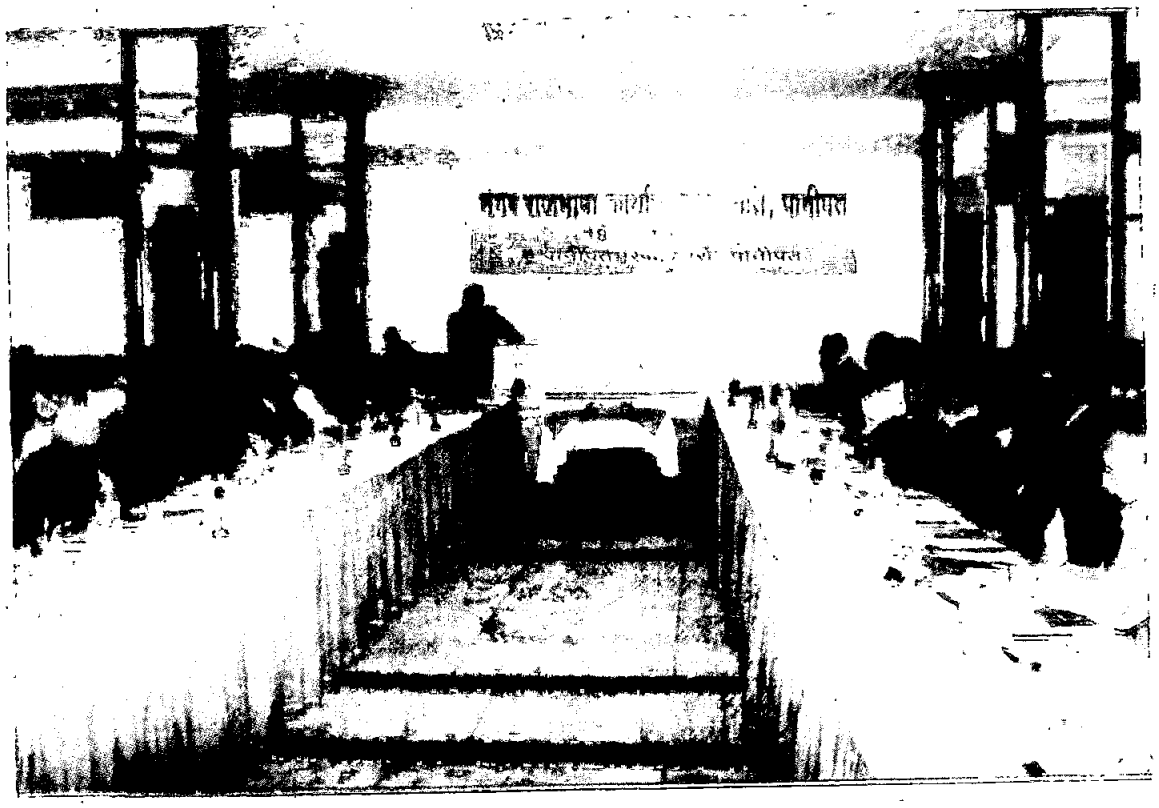

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पानीपत की बैठक में उपस्थित सदस्यगण ।

केनरा बैंक, लखनऊ द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता समारोह में अधिकारीगण ।

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग, बैंगलूरू में आयोजित 'विश्व हिंदी दिवस समारोह की एक झलक' ।

नराकास पानीपत द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'स्नेहधारा' अंक षष्ठम का विमोचन करते हुए नराकास अध्यक्ष श्री सी. मनोहरण (मध्य) साथ में हैं श्री जसवंत सिंह, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग तथा कैप्टन शक्ति सिंह, एस. डी. एम. पानीपत ।

नैशनल हाईड्रोइलैक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन लि. बनीखेत, चम्बा (हि. प्र.) में हिंदी पखवाड़ा समारोह में व्याख्यान देते हुए एक अधिकारी ।

दिनांक 17-1-2008 को मंगलूर में कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय में आयोजित 'ग' क्षेत्र नराकास के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों की संगोष्ठी का उद्घाटन भाषण करते हुए श्री रंजीत ईस्सर, सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ।

नराकास नागपुर द्वारा आयोजित पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य आयकर आयुक्त ।

नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी की 30वीं बैठक में उपस्थित सदस्यगण ।

क्षेत्रीय मूगा अनुसंधान केंद्र बोको (असम) में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन भाषण देते हुए मुख्य अतिथि श्री तारिणी कलिता, प्राध्यापक, छयगांव महाविद्यालय ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित 'हिंदी कार्यशाला' में अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. एस. के. माथुर ।

महानिदेशालय, भारत तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला के 'प्रमाण-पत्र वितरण समारोह' में मुख्य अतिथि श्री आर. के. सैनी, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन), प्रमाण-पत्र एवं सहायक साहित्य प्रदान करते हुए ।

अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि मूल्यांकन समिति द्वारा रिपोर्ट सौंपने के उपरांत पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी समारोह आयोजित किया जाए ।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सूचित किया कि कैलेण्डर वर्ष 2007 के दौरान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, लुधियाना तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना को निम्नलिखित 4 महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त हुए हैं :-

(i) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना को वर्ष 2005-06 के लिए बनारस में दिनांक 23-24 फरवरी, 2007 को आयोजित समारोह के दौरान प्रथम पुरस्कार दिया गया ।

(ii) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना को वर्ष 2005-06 के लिए "ख" क्षेत्र के अंतर्गत नई दिल्ली के सिरीफोर्ट स्टेडियम के सभागार में दिनांक 14-09-2007 को आयोजित समारोह में माननीय गृह मंत्री द्वारा इन्दिरा गांधी शील्ड पुरस्कार प्रदान किया गया ।

(iii) मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, लुधियाना को केंद्रीय कार्यालयों के अंतर्गत वर्ष 2006-07 के लिए द्वितीय पुरस्कार दिनांक 13-14 दिसंबर, 2007 को हरिद्वार में प्रदान किया जाना है ।

(iv) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना को वर्ष 2006-07 के लिए द्वितीय पुरस्कार दिनांक 13-14 दिसंबर, 2007 को हरिद्वार में प्रदान किया जाना है ।

अध्यक्ष महोदय ने इस पर असीम प्रसन्नता प्रकट करते हुए सभी उपस्थित सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई दी और उनसे अनुरोध किया कि वे इस दिशा में अपनी स्फूर्ति को बरकरार रखें ताकि इससे भी बेहतर परिणाम हासिल हो सकें ।

मुख्य आयकर आयुक्त अमृतसर क्षेत्र

मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर क्षेत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 14 फरवरी, 2008 को 3:30 बजे बाद दोपहर मुख्य आयुक्त श्री सुनील चोपड़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । वार्षिक कार्यक्रम की प्रत्येक मद पर विस्तृत चर्चा की गई तथा तदनुसार निर्णय किए गए।

प्रत्यक्ष कर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नई दिल्ली की 64वीं बैठक में किए गए निर्णयों तथा उनके अनुपालन हेतु की जाने वाली कार्यवाही पर विचार किया गया । विशेष रूप से अमृतसर क्षेत्र में हिंदी पत्राचार को बढ़ावा देने पर विचार विमर्श किया गया ।

31-12-2007 को समाप्त तिमाही के बारे में अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त राजभाषा संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा के दौरान पाई गई कमियों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया गया, तथा इन्हें दूर किए जाने हेतु की जाने वाली कार्यवाही पर विचार किया गया ।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के राजभाषा प्रभागद्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार, राजभाषा हिंदी की प्रगति की तिमाही रिपोर्टें, तिमाही की समाप्ति के 08 दिन के भीतर आयकर निदेशक (ज.स.मु.प्र.र.भ.) नई दिल्ली/मुख्य आयकर आयुक्त, उत्तर पश्चिम क्षेत्र चण्डीगढ़ को प्रेषित की जानी होती है । सभी सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे 31-03-08 को समाप्त हो रही तिमाही के बारे प्रगति रिपोर्टें 6-4-2008 को मुख्यालय भिजवा दें तथा भविष्य में ये तिमाही रिपोर्टें तिमाही की समाप्ति के 6 दिन के भीतर मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग में भिजवा दी जाएं ।

सभी आयकर आयुक्त राजभाषा हिंदी से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्टें अपने हस्ताक्षरों से ही भिजवाएं । हस्ताक्षर करने से पहले यह जांच लिया जाए कि इन में दिए गए आंकड़े सही हैं तथा कोई कॉलम खाली न छोड़ा जाए।

उच्च अधिकारियों/अधीनस्थ अधिकारियों को प्रेषित की जाने वाली सभी रिपोर्टों/अनुदेशों के अग्रेषण पत्र केवल हिंदी में जारी किए जाएं । बैठक के दौरान आयकर निदेशक (सिस्टम)द्वारा जारी ऐसे पत्रों का एक नमूना भी प्रस्तुत किया गया । प्रशासन संबंधी सभी आदेश (जैसे छुट्टी की स्वीकृति, जी.पी.एफ. की स्वीकृति, मैडीकल प्रतिपूर्ति, वित्तीय स्वीकृतियां) केवल हिंदी में या द्विभाषी जारी किए जाएं । स्थानांतरण/तैनाती के सभी आदेश हिंदी में या द्विभाषी जारी किए जाएं । सभी कंप्यूटरों पर हिंदी साफ्टवेयर (लीप) लोड किया जाना सुनिश्चित किया जाए । सभी अधिकारी छोटी-छोटी टिप्पणियां जैसे 'अनुमोदित', 'स्वीकृत', 'चर्चा करें' आदि हिंदी में लिखा करें । ये टिप्पणियां मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय द्वारा मुद्रित फाइल कवरों के अन्दर के भाग में उपलब्ध हैं । आयकर आयुक्त जम्मू तथा भटिंडा को इनके नमूने प्रस्तुत किए गए ।

समिति को सूचित किया गया कि इस वित्तीय वर्ष में 8000 रु. की हिंदी की पुस्तकें खरीदी जा चुकी हैं । हिंदी पुस्तकालय में 4 समाचार पत्र हिंदी के तथाएकपंजाबी का मंगवाया जाता है ।

आयकर आयुक्त ने कहा कि अपने कार्यालयों का सामान्य निरीक्षण करते समय राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की स्थिति का भी निरीक्षण किया करें । निरीक्षण रिपोर्ट में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन की मद को शामिल किए जाए ।

सभी आयकर आयुक्त अपने-अपने स्तर पर तिमाही में एक बार राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अवश्य आयोजित किया करें, जिसमें राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की जाए ।

बैठक के अन्त में मुख्य आयकर आयुक्त महोदय ने अमृतसर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में पत्राचार में आई गिरावट पर चिन्ता व्यक्त की । बैठक के दौरान दिए गए सुझावों को कार्यान्वित करने के साथ-साथ उन्होंने सभी अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने स्तर पर हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा देने हेतु प्रयास करें ।

दक्षिण पूर्व रेलवे कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) गार्डनरीच, कोलकाता-43

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 85वीं बैठक दिनांक 21-12-2007 को अपर महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, श्री एन.एस. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । अपर महाप्रबंधक ने सभी विभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि संसदीय राजभाषा समिति को दिए गए आश्वासनों को गंभीरता से लें तथा उन पर कार्रवाई रपट प्रत्येक माह उप मुख्य राजभाषा अधिकारी के पास भेजें । यह रपट आंकड़ों के रूप में दर्शाई जाए तथा प्रत्येक माह क्रमिक रूप से प्रगति अवश्य होनी चाहिए । उन्होंने दौरा कार्यक्रम, छुट्टी का आवेदन पत्र हिंदी में प्रस्तुत न करने पर लौटाने का निर्देश दिया । उन्होंने सभी अधिकारियों से आग्रह किया कि यथासंभव सरल हिंदी का एवं मिली-जुली भाषा का प्रयोग करें । अधिकारी जब भी निरीक्षण पर जाएं, हिंदी की स्थिति का जायजा अवश्य लें । उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि प्रत्येक विभागाध्यक्ष अपने विभाग की राजभाषा बैठक प्रत्येक तिमाही में करें तथा अधिकारियों का मार्गदर्शन करें । उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि हम सबके सामूहिक प्रयास से ही हिंदी का प्रयोग-प्रसार बढ़ेगा और इसमें आप सबका सहयोग जरूरी है ।

रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य एवं साहित्यकार, श्री प्रेम कुमार मणि ने हिंदी की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि रेलवे व्यापारिक संस्थान होने के कारण जनता जनार्दन के साथ हिंदी का व्यवहार एवं पत्राचार और अधिक होना चाहिए । उन्होंने विभिन्न विभागों की हिंदी की प्रगति पर तथा मंडलों के अपर मुख्य राजभाषा अधिकारियों द्वारा बताई गई हिंदी की प्रगति में आई सक्रियता पर प्रसन्नता व्यक्त की । मुख्य राजभाषा अधिकारी, डॉ. जी. नारायणन ने हिंदी में प्रशिक्षित स्टाफ (भाषा, टंकण, आशुलिपि की दृष्टि से) की सेवाओं का और ज्यादा उपयोग करने की आवश्यकता पर बल दिया । सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष हिंदी के विकास के लिए अपने अधिकारियों को कृपया उचित निर्देश दें । उन्होंने सेवापंजियों में प्रविष्टियों, रजिस्टरों में प्रविष्टियों की कमी का भी उल्लेख किया तथा इसे बढ़ाने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करने वाले अधिकारियों का प्रतिशत कम है, इसे नोटिंग, ड्राफ्टिंग द्वारा बढ़ाया जाए । उन्होंने प्रेषण अनुभाग को और अधिक प्रभावशाली एवं सुदृढ़ करने पर जोर दिया । वाणिज्य विभाग के कर्मचारियों को भाषा प्रशिक्षण के लिए कार्यमुक्त करने पर भी उन्होंने बल दिया ।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं सदस्य सचिव ने अपर महाप्रबंधक, सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारियों का स्वागत करते हुए समिति के समक्ष दिनांक 28-9-07 को हुई 84वीं बैठक में लिए गए निर्णयों/सुझावों पर अनुवर्ती कार्रवाई संबंधी रपट प्रस्तुत की।

जुलाई-सितम्बर 2007 तिमाही में कुल 54 विभागीय परीक्षाएं आयोजित हुईं सभी परीक्षाओं में द्विभाषी प्रश्न-पत्र दिए गए और हिंदी में उत्तर देने का विकल्प भी दिया गया । इन परीक्षाओं में 1023 कर्मचारियों ने भाग लिया, जिनमें से 108 कर्मचारियों ने हिंदी माध्यम से परीक्षा दी तथा 915 ने अंग्रेजी माध्यम से । इस प्रकार से 1055% कर्मचारियों ने हिंदी माध्यम का प्रयोग किया ।

पूर्व मध्य रेल कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा), हाजीपुर

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 20वीं बैठक दि. 27-12-2007 को महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर श्री गिरीश भटनागर की अध्यक्षता में महाप्रबंधक सम्मेलन कक्ष, हाजीपुर में संपन्न हुई ।

मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य विद्युत इंजीनियर, श्री नरेश कुमार सिंहल ने उक्त अवसर पर बैठक में उपस्थित माननीय प्रेक्षक सदस्य, सर्वश्री माधव सिन्हा तथा जहीर शेख हाजी मुशीर एवं अध्यक्ष महोदय और उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि इस रेल पर राजभाषा का प्रयोग-प्रसार निरंतर बढ़ता जा रहा है । उन्होंने सितंबर माह में इस रेल के मुख्यालय/मंडलों तथा कारखानों में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे बैठकें, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण आलेखन, वाक, प्रश्नोत्तरी, कवि सम्मेलन, नाटक, राजभाषा प्रदर्शनी आदि के बारे में जानकारी दी । उन्होंने बताया कि दि. 29-10-2007 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दानापुर मंडल के पटना जंक्शन का निरीक्षण किया गया तथा निरीक्षण बैठक में उन्होंने भी भाग लिया जिसमें संसदीय राजभाषा समिति ने सरकारी कामकाज में हिंदी का ही प्रयोग करने पर बल दिया। हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, नियम पुस्तकों क द्विभाषीजारी करने, पास/पीटीओ को हिंदी में जारी करने का आश्वासन संसदीय समिति को दी गई है । उन्होंने यह भी बताया कि हाजीपुर मुख्यालय में दि. 14-12-2007 को रेलवे बोर्ड के अधिकारी की उपस्थिति में आयोजित विभागीय सामूहिक पुरस्कार योजना बैठक में विद्युत, परिचालन तथा सुरक्षा विभाग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर चयन किया गया । उन्होंने पटना जं. स्थित रेल कार्यालयों में हो रहे हिंदी कार्यों तथा वहां के फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी पुस्तकालय के उत्तम रख-रखाव पर संतोष व्यक्त किया तथा पुरानी सामग्रियों के निराकरण के लिए दिए गए निर्देशों की चर्चा की । बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक, श्री गिरीश भटनागर ने दोनों माननीय प्रेक्षक सदस्यों सहित उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि पूर्व मध्य रेल के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान है तथा हिंदी में काम करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं है । उन्होंने बताया कि 14 सितंबर, 1949 को संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था । इसी को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार के अन्य कार्यालयों की तरह इस रेल मुख्यालय में भी 14 से 21 सितंबर तक मनाए गए हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में उन्होंने स्वयं भाग लिया । यहां के अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह देखकर वे काफी प्रभावित हुए । सप्ताह में अन्य कार्यक्रमों के अलावा क्षेत्रीय रेल पर चल रहे हिंदी पुस्तकालयों, प्रकाशित पत्रिकाओं और राजभाषा कार्यान्वयन समितियों पर विशेष ध्यान देते हुए उत्कृष्ट हिंदी पुस्तकालय, उत्कृष्ट पत्रिका और उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का चयन कर उन्हें पुरस्कृत किया गया । उन्होंने दि. 29-10-2007 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पटना जं. का निरीक्षण की चर्चा करते हुए यह निर्देश किया कि धारा 3(3) के अन्तर्गत आने वाले सभी दस्तावेजों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी करें तथा संबंधित विभागाध्यक्ष इस पर नजर रखें कि उनके विभाग से कोई ऐसे कागजात केवल अंग्रेजी में जारी न हों । उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि कंप्यूटरों के माध्यम से अधिकाधिक काम हिंदी में किया जाए तथा राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुरूप शत-प्रतिशत पत्राचार हिंदी में ही किया जाए । भाषा के विकास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसे सरल बनाने तथा दूसरी भाषाओं के आम प्रचलन के शब्दों का ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में प्रयोग करते हुए हिंदी को और प्रयोग करने और बढ़ाने पर बल दिया ।

मुख्यालय स्थित विभिन्न विभागों के बीच हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए दी जाने वाली पुरस्कार योजना के अंतर्गत सितंबर, 2007 को समाप्त तिमाही की अंतर्विभागीय राजभाषा चल शील्ड श्री माधव सिन्हा, प्रेक्षक सदस्य व सदस्य रेल हिंदी सलाहकार समिति द्वारा विद्युत विभाग को प्रदान की गई । मुख्य विद्युत इंजीनियर/योजना, श्री दयानन्द झा ने यह शील्ड माननीय प्रेक्षक सदस्य से ग्रहण की ।

माननीय प्रेक्षक सदस्य श्री माधव सिन्हा ने बताया कि महाप्रबंधक महोदयद्वाराउद्घाटन संबोधन के दौरान की गई भाषा विकास की चर्चा की सराहना करते हुए बताया कि हिंदी के विकास के लिए मनोवृत्ति का परिवर्तन आवश्यक है । बोलचाल की भाषा को ही देवनागरी में लिखने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी को सरल बनाना ही हिंदी की सेवा है । उन्होंने स्टेशनों पर जनसंपर्क से संबंधित सूचना पट्ट को आकर्षित बनाने तथा साफ-साफ लिखा होने पर बल दिया । साथ ही जनसंपर्क से संबंधित सूचना तंत्र को और अधिक सुदृढ़ बनाने को कहा । प्रेक्षक सदस्य श्री सिन्हा ने यह अपेक्षा की कि प्रेक्षक सदस्य के सरकारी अथवा गैर-सरकारी दौरे के समय एक समान व्यवहार किया जाना चाहिए तथा उन्हें ठहरने आदि की सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए । उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि राजभाषा

विभाग में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को अन्य विभागों में दूसरे पदों पर भी जाने का मार्ग खुला होना चाहिए। इस पर अध्यक्ष महोदय ने उन्हें आश्वस्त किया कि इसके लिए रेलवे बोर्ड को पत्र लिखा जाएगा।

माननीय प्रेक्षक सदस्य श्री जहीर शेख हाजी मुशीर ने कहा कि पूर्व मध्य रेल के क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में वह प्रथम बार आए हैं। उन्हें यह जानकर काफी प्रसन्नता हुई है कि इस रेल पर सभी मदों में हिंदी में काम हो रहा है। इसके लिए उन्होंने महाप्रबंधक महोदय के कुशल मार्गदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि रेल उपयोगकर्त्ताओं से हिंदी में संपर्क करना रेल के लिए अत्यंत लाभदायक होगा। उन्होंने अनुरोध किया कि अधिकारीगण जब कभी स्टेशनों पर निरीक्षण के लिए जाएं तो हिंदी संबंधी निरीक्षण भी करें। उन्होंने आह्वान किया कि "आप हिंदी में काम करना शुरू तो करें और यदि कहीं कठिनाई हो तो अंग्रेजी के शब्दों को हू-ब-हू देवनागरी में लिखें।" हिंदी देश के विभिन्न प्रांतों को जोड़ने वाली भाषा है। अत: इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए।

कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-9-2007 को समाप्त तिमाही की बैठक दिनांक 20-12-2007 को मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य परिचालन प्रबंधक, श्री वी.के. जायसवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री रण विजय सिंह ने बैठक में उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि पूर्वोत्तर रेलवे आज हिंदी योग के क्षेत्र में अपना अग्रणी स्थान रखने में यदि सफल रहा है तो इसके पीछे मुख्यालय के गैर-तकनीकी विभागोंद्वारालगभग शत-प्रतिशत तथा तकनीकी विभागों से संबंधित आधिकारियों एवं कर्मचारियोंद्वारातकनीकी कार्यों में हिंदी का अत्यंत सराहनीय प्रयोग सुनिश्चित किया जाना है।

बैठक में अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री वी. के. जायसवाल ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और उसमें काम-काज करना हम सबका कर्तव्य है। अपनी भाषा का प्रयोग किये बिना कोई भी देश सही मायनों में प्रगति नहीं कर सकता, भाषा किसी भी देश-समाज के गौरव की प्रतीक और उसकी पहचान होती है। उन्होंने राजभाषा संगठन दवारा बैठकें, गोष्ठियां, प्रतियोगिताएं आदि आयोजित करने पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने पूर्वोत्तर रेलवे के विभिन्न विभागों, मण्डलों व स्टेशन कार्यालयों में हिंदी में किए जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त किया। पी.आर.एस. के माध्यम सेद्विभाषी आरक्षण चार्ट जारी होना सुखद उपलब्धि बताया। कंप्यूटर क्रांति के युग में एम.एम.आई.एस., प्राईम, ए.एफ.आर.ई.एस. तथा एफ.ओ.आई.एस. जैसे सिस्टम साफ्टवेयर में हिंदी की व्यवस्था करने की चुनौती के लिए विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श किए जाने पर बल दिया, ताकि इन क्षेत्रों में हिंदी का क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हुए हमारा पूर्वोत्तर रेल भारतीय रेल में पथ प्रदर्शक बन सके।

श्री जायसवाल ने रेलवे मुख्यालय के सभी अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे हिंदी के शत-प्रतिशत प्रयोग हेतु अनुभागों को नामित करने, रोमन टाइपराइटरों को सरेण्डर किए जाने तथा कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी प्रयोग के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों के निराकरण के कार्य को उच्च प्राथमिकता दें।

समितिद्वारा28 सितंबर, 2007 को संपन्न गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि के पश्चात् राजभाषा अधिकारी ने गत बैठक में लिए गए निर्णयों की अनुपालन की स्थिति समिति के समक्ष प्रस्तुत की।

आकाशवाणी, कडपा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 18-1-2008 को आकाशवाणी, कडपा केंद्र में श्री ए. मल्लेश्वर राव, कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

पहले पहल हिंदी अनुवादक ने पिछली बैठक का कार्यवृत्त पढ़ा और सभी उपस्थित सदस्यों को पिछली बैठक में उठाये गये सभी मुद्दों पर अब तक की गयी कार्यवाही की स्थिति से अवगत कराया गया।

अध्यक्ष जी ने यह बताया कि हिंदी पाक्षिक पत्रिका 'इंडिया टुडे' और 'मिलाप राजभाषा पत्रिका' आदि पुस्तकालय में पढ़ने के लिये उपलब्ध है। जिससे कार्यरत सभी कर्मचारी पढ़ कर हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान बढ़ाने में बहुत उपयोगी होगा। इस संबंध में एक परिपत्र भी जारी किया गया। सभी हिंदी पुस्तक पत्रिकाएं ट्रांसमीटर को श्री ए.टी.अरसु., अभियंता

सहायक को दे दिया जाये ताकि उसका उपयोग ठीक तरह से हो सके ।

सदस्य सचिव ने यह बताया कि अब कार्यालय में प्राज्ञा परीक्षा लिखने के लिए कोई उम्मीदवार उपलब्ध नहीं । सारे कार्यरत कर्मचारी उत्तीर्ण हो चुके हैं और हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में न पढ़ने वाले दो उम्मीदवारों को प्रवीण परीक्षा के लिए नामांकन करना है । इस विषय पर अध्यक्ष जी ने यह बताया कि जब भी हिंदी शिक्षण योजना द्वारा परीक्षा केंद्र कडपा को चुनेगा, तब इन दो उम्मीदवारों का नामांकन कर दिया जाये ।

आकाशवाणी, अहमदाबाद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संयुक्त रूप से दिनांक 13-12-2007 को अपराह्न 3.00 बजे श्री भगीरथ पंड्या, केंद्र निदेशक आकाशवाणी, अहमदाबाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया फिर बैठक शुरू हुई । पहले पिछली बैठक के मुद्दों पर समीक्षा एवं सर्वानुमति से पुष्टि के बाद इस बैठक में निम्न मुद्दों पर चर्चा की गई । अध्यक्ष महोदय ने जानना चाहा कि क्या हमारे कार्यालय के सभी कर्मचारी को हिंदी टंकण/आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त है? बताया गया कि पिछले सत्र में ही दो टंककों को श्री हसमुख वसाणी एवं परवेज कड़ीवाला को हिंदी कंप्यूटर टंकण का प्रशिक्षण दिलवाया गया है । उन दोनों की वेतनवृद्धि भी शुरू हो चुकी है । उन्हें विशेष नकद पुरस्कार भी दिया गया है । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यदि कोई प्रशिक्षण के लिए शेष रह गया है तो उसे आगामी सत्र में प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए एवं सभी प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों से हिंदी कंप्यूटर टंकण का कार्य करवाया जाए ताकि उनका अभ्यास बना रहे ।

महानिदेशालय राजभाषा विभागद्वाराइन्टरनेट पर हिंदी पुस्तकों की सूची रखी गई थी, उसमें से कुछ उपयोगी हिंदी पुस्तकें कार्यालय में मंगवाई गई हैं । अध्यक्ष महोदय ने कहा कार्यक्रम संबंधी कुछ हिंदी की पुस्तकें अगले वर्ष मंगवाई जाएं ।

वार्षिक कार्यक्रम अनुसार कार्यालय के कुल अनुभागों में से 20 प्रतिशत अनुभागोंद्वारा केवल हिंदी में कार्य किया जाना अपेक्षित है । अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से अपील की कि वे अपने अनुभागों में पूरा कार्य हिंदी में होना तय करें। कार्यक्रम अनुभाग की श्रीमती हेमलता सोलंकी, कार्यक्रम निष्पादक ने बताया कि उनका गुजराती उच्चरित शब्द संबंधी सारा कार्य हिंदी में होता है । मौलिन मुनशी कार्यक्रम निष्पादक, जयकृष्ण राठोड कार्यक्रम निष्पादक, दिनेश सोलंकी कार्यक्रम निष्पादक का सारा कार्य भी हिंदी में होता है। सिंधी अनुभाग का सारा कार्य हिंदी में होता है । इस तरह देखा जाए तो काफी कार्य हिंदी में होता है । अध्यक्ष महोदय ने कहा इसी तरह अन्य सभी अधिकारी भी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें । अध्यक्ष महोदय ने एक बार पुन: उपस्थित सभी सदस्यों से अपील करते हुए कहा कि सभी अपने अनुभाग का हिंदी पत्राचार का प्रतिशत बढ़ाने के प्रयास करें । श्रीमती मीरा सौरभ कार्यक्रम निष्पादक ने बताया कि वे अपना सारा नोटिंग का कार्य एवं पत्राचार हिंदी में करती हैं । जगदीश परमार कार्यक्रम निष्पादक ने बताया कि वे अपना अधिकांश कार्य हिंदी में करते हैं ।

आगे अध्यक्ष महोदय ने कहा प्रेषण अनुभाग को जांच बिंदु बनाया गया है लेकिन हर महीने हिंदी अनुभाग प्रेषण अनुभाग में जा कर जांच करें कि कार्य ठीक ठाक हो रहा है यदि नहीं तो उन्हें पुन: बताया जाए ।

इस संबंध में श्रीमती साधना भट्ट, केंद्र निदेशक विप्रसे ने बताया कि एएमटीएस बस में विविध भारती चैनल शुरू करने के प्रयास जारी हैं । इसी तरह ओडा गार्डन एवं रेलवे स्टेशन पर भी स्पीकर लगवाए जा सकते हैं । विविध भारती की क्वालिटी बहुत अच्छी हो गई है। विज्ञापन प्रसारण सेवा की क्यूशीट हिंदी में प्रिंट करवाई गई है । आगे उन्होंने बताया कि आल इंडिया रेडियो का जो चार्टर प्राप्त हुआ है इसे अभियांत्रिकी अनुभाग द्वारा बनवाया जाना है । इसे प्रवेश द्वार पर लगवाया जाएगा ।

श्रीमती हेमलता सोलंकी, कार्यक्रम निष्पादक ने बताया उनके अनुभाग का कंप्यूटर बिगड़ा हुआ है, जिससे हिंदी में कार्य करने में असुविधा हो रही है । अध्यक्ष महोदय ने कहा उनके अनुभाग में तुरंत एक कंप्यूटर उपलब्ध करवाया जाए। आगे हिंदी अनुभाग के कंप्यूटर को अपग्रेड करवाना है । हिंदी का नया लाइसेंस वर्सन ले कर कंप्यूटर में हिंदी में अपग्रेड करवाया जा सकता है । अध्यक्ष महोदय ने कहा नए सोफ्टवेयर के खर्च इत्यादि के बारे में पता किया जाए फिर आगे कार्रवाई सम्भव होगी । ■

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

गान्तोक, सिक्किम

दिनांक 4 दिसंबर 2007 को दोपहर 12.00 बजे भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण विभाग के सम्मेलन कक्ष में गान्तोक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2007 की द्वितीय बैठक श्री अमर पटनायक, महालेखाकार, सिक्किम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में श्री आर.सी. रांगरे, सचिव नराकास एवं कार्यपालक अभियन्ता, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने बैठक के बारे में जानकारी दी ।

पिछली बैठक से इस बैठक में उपस्थित सदस्यों की संख्या दो गुना होने से अध्यक्ष महोदय ने संतोष प्रकट किया । इसके साथ अधिकतर सरकारी बैंक प्रबंधकों की अनुपस्थिति को अध्यक्ष जी ने गंभीरता से लिया और अगली बैठक में अनिवार्य रूप से उपस्थित होने के लिए आदेश देने के लिए सुझाव दिया । श्री बनर्जी, प्रबंधक , आन्ध्रा बैंक ने आश्वासन दिया कि वह अगली बैठक में बैंक प्रबंधकों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय ने गत बैठक के कार्यवृत के साथ राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के बारे में भी चर्चा की । इसके साथ ही वार्षिक अंशदान जिन कार्यालयों ने अभी तक नहीं दिया उनको अंशदान तत्काल देने के लिए निर्देश जारी किए। इसके बाद अध्यक्ष महोदय ने सितम्बर 2007 में समाप्त तिमाही रिपोर्ट के बारे में चर्चा की । जिसमें एन.एच.पी.सी. 82%, जनगणना निदेशालय 73%, केन्द्रीय जल आयोग 72%, महालेखाकार 71%, होम्योपैथी 64%, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग 62%, डाक विभाग 54% के लिए संतोष प्रकट किया ।

श्रीमती शशि शालिनि कुजूर, सर्वकार्यभारी अधिकारी एवं निदेशक डाक सेवाएं ने हिंदी शिक्षण योजना के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि जुलाई-नवंबर 2007 में कुल 94 प्रशिक्षार्थी नामित किए गए जिनमें 62 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठे, उन्होंने परीक्षा में बैठने वालों के प्रतिशत को और बढ़ाने का आग्रह किया । पिछले सत्र के परीक्षा परिणाम के शत-प्रतिशत रहने पर हिंदी प्राध्यापक एवं प्रशिक्षार्थियों को बधाई दी ।

सचिव महोदय ने राजभाषा के प्रयोग के लिए एक कार्यालय को आदर्श कार्यालय के रूप में परिणित करने हेतु निम्न बिंदओं पर चर्चा के साथ इनके पालन के लिए निम्न सुझाव दिए--

(क) प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन होना चाहिए एवं हर तिमाही में बैठक का आयोजन किया जाना चाहिए ।

(ख) तिमाही प्रगति रिपोर्ट की प्रति संबंधित कार्यालय के मुख्यालय, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को प्रेषित किया जाना चाहिए ।

(ग) कार्यालयद्वाराप्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजिन किया जाना चाहिए ।

(घ) जांच बिन्दु :-तीसरी भाषा समिति के आधार पर ।

(ङ) नियम 8(4) के तहत प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी को शत-प्रतिशत कार्य राजभाषा में करने के लिए व्यक्तिगत आदेश जारी किये जाने चाहिए ।

(च) राजभाषा विभागद्वाराजारी वार्षिक कार्यक्रम जो 'ग' क्षेत्र के लिए प्रयोग होना है, उसका शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए ।

(छ) हिंदी अधिकारी के पास अपेक्षित संसाधन जैसे फोन, फैक्स एवं कम्प्यूटर होने चाहिए ।

(ज) राजभाषा अधिनियम 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले दस्तावेजों में संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक रिपोर्ट, विज्ञापन, प्रेस विज्ञप्ति, संविदा, करार, सूचनाएं, लाइसेंस, परमिट आदि को अनिवार्य रूप से द्विवार्षिक रूप में जारी करने का प्रयास करना ।

शिलचर

36वीं बैठक संयोजक कार्यालय-हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड, कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के अतिथि

गृह में 28 नवंबर, 2007 को अपराह्न 3.00 बजे मिल के अधिशासी निदेशक एवं समिति के अध्यक्ष श्री कल्लोल आचार्य की अध्यक्षता में संपन्न हुई । इस अवसर पर श्री आचार्य ने कहा कि इस समिति के प्रयास से, हिंदी से संबंधित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिंदी से संबंधित तिमाही प्रगति प्रतिवेदन नियमित तैयार किए जाने लगे। संयुक्त हिंदी प्रतियोगिताओं तथा संयुक्त राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जाने लगा । शिलचर जैसे शहर में हिंदी प्रशिक्षण योजना का अंशकालिक कार्यालय वरिष्ठ डाकघर अधीक्षक, कछाड़ क्षेत्र, शिलचर के संरक्षण में खुला । असम विश्वविद्याल, शिलचर में हिंदी विभाग को खुलवाने में भी इस समिति की सराहनीय भूमिका रही है ।

आगे उन्होंने कहा कि इसके बावजूद उतना सारा काम नहीं हो सका, जितने कि अपेक्षा की जा रही थी । कारण, कहीं उदासीनता, तो कहीं हिंदी कर्मचारियों की कमी का होना भी रहा है । फिर भी बराक घाटी क्षेत्र में इस समिति ने राजभाषा हिंदी से संबंधित एक अनुकूल माहौल तैयार किया है, जो महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

उक्त बैठक में राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, शिलचर के प्राचार्य एवं सचिव, वयोवृद्ध हिंदीसेवी आचार्य श्री दत्तात्रेय मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । उन्होंने कहा कि बातें तो बहुत हो चुकी मगर अब आवश्यकता इस बात की है कि उन कथनों को कार्यान्वयन की दिशा में ले जाएं ।

समिति के अध्यक्ष श्री कल्लोल आचार्य ने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि :

1. भारत सरकार द्वारा वर्ष 2007-08 के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कृपया राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन शत-प्रतिशत करें ।

2. यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के सात खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए ।

3. कंप्यूटर, ई-मेल, बेवसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रोद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए ।

4. सभी कार्यालय वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें ।

5. हिंदी, हिंदी टंकण/आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं, ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय सीमा में प्राप्त किया जा सके ।

6. राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अधिक अच्छी तरह निभा पाएं।

7. सभी कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें ।

8. संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए । जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए विभाग/कार्यालय अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं ।

9. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, टेंडर नोटिस तथा टेंडर फार्म आदि द्विभाषी रूप में ही जारी की जाए । किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताखर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा ।

10. शीर्षस्थ प्रशासनिक बैठकों में विचार-विमर्श और कार्यवाही हिंदी में करने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न किये जाएं ।

11. अपने-अपने कार्यालयों में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करें, ताकि कार्यालयों में हिंदी का अच्छा वातावरण बन सके ।

12. कृपया अपने कार्यालय के सभी विभाग/अनुभाग अधिकारियों को निर्देश दें कि वे फाइलों पर छोटी टिप्पणियां हिंदी में ही करें ।

गुवाहाटी रिफाइनरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 30वीं बैठक गत 31 जनवरी, 2008 को गुवाहाटी रिफाइनरी के प्रशिक्षण केंद्र में संपन्न हुई । बैठक की अध्यक्षता गुवाहाटी रिफाइनरी के कार्यपालक निदेशक श्री जी भानुमूर्ति

ने की । राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री अशोक कुमार मिश्र तथा हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशक (पूर्वोत्तर) श्री राम नारायण सरोज एवं सहायक निदेशक श्री राधेश्याम उपाध्याय केंद्रीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में इस बैठक में उपस्थित रहें ।

इस बैठक में 27 सदस्य कार्यालय जैसे नगांव पेपर मिल, ऑयल इंडिया लिमिटेड, केंद्रीय रेशम बोर्ड,--क्षेत्रीय विकास कार्यालय तथा मुगा रेशमकीट बीज निगम, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, आवास तथा नगर विकास निगम, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नीपको, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लि., नेशनल इंश्योरेंस कं. लि., राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, ब्रह्मपुत्र बोर्ड, कोल इंडिया लिमिटेड, नेरामेक, नीपसिड, दि जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., एन.आर.एल., स्टील अथोरिटी ऑफ इंडिया, नेरामेक, दूरदर्शन, भारतीय खाद्य निगम (आंचलिक), जी एस पी एल, आइ ओ सी मार्केटिंग इंस्टालेशन, भारतीय जीवन बीमा निगम, एन सी डी सी, आदि कई संस्थानों के अलावा नराकास (बैंक) के प्रतिनिधि उपस्थित रहे । कार्यक्रम के प्रारंभ में गुवाहाटी रिफाइनरी के वरिष्ठ प्रबंधक (मा. सं.) श्री ए.सी. शेखर ने अन्य सदस्य कार्यालयों से पधारे विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित अधिकारियों का स्वागत संबोधन किया । बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों में हो रहे राजभाषा के प्रगामी प्रयोग संबंधी विभिन्न पहलुओं पर चर्चा एवं विचार-विमर्श किया गया ।

राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री अशोक कुमार मिश्र ने नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी को वर्ष 2006-07 के लिए राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने पर सभी सदस्य कार्यालयों को बधाई दी तथा इसी तरह संयुक्त प्रयास के द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने पर जोर दिया । श्री मिश्र जी ने कहा कि हिंदी जनभाषा तो है ही, अब बाजारवाद-वैश्वीकरण में भी दिन-व-दिन लोकप्रिय भाषा बनते जा रहे है । **हिंदी रूपी पौधे को अपने घर में पल्लवित करें** महादेवी वमा की इस पंक्ति का उल्लेख करते हुए श्री मिश्र जी ने कहा कि राष्ट्र की राजभाषा-- हिंदी को बिना हिचकिचाहट अपनाने की मानसिकता सभी का रखनी चाहिए । हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशक (पूर्वोत्तर) श्री राम नारायण सरोज ने हिंदी प्रशिक्षण के संबंध में उपस्थित सभी को विस्तृत जानकारी दी और सरकार द्वारा निर्धारित समय सीमा तक सभी कार्यालयों के कर्मचारियों को प्रशिक्षित कराने तथा इसकी सूचना हिंदी शिक्षण योजना कार्यालय में समय पर भेजने के लिए सभी से अनुरोध किया ।

नराकास (उ.) के अध्यक्ष श्री जी भानुमूर्ति ने अपने संबोधन में सभी नराकास सदस्य कार्यालयों से किसी भी परिणामपरख सुझाव का आह्वान करते हुए कहा कि हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम खुद को भी परख कर देखने का समय आ गया कि राजभाषा कार्यान्वयन में हम कहां तक सफल हुए हैं । नराकास बैठक को और अधिक महत्वपूर्ण और कारगर बनाने के लिए अध्यक्ष महोदय ने सभी से हिंदी प्रसार-प्रचार में संयुक्त रूप से प्रयास जारी रखने की अपेक्षा की ।

कोलकाता (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 44वीं बैठक दिनांक 31-01-08 को अपराह्न 3.00 बजे मर्चेंट चेंबर ऑफ कॉमर्स के सम्मेलन कक्ष, 15 बी, हेमंत बसु सरणी, कोलकाता में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष तथा संयोजक बैंक यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री पी. के. गुप्ता ने की । बैठक में संयोजक बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री टी. एम. भसीन, महाप्रबंधक (संसाधन प्रबंधन, बोर्ड एवं समन्वय) श्री ए एस भट्टाचार्य और उप महा-प्रबंधक (प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र) श्री आर. के. महान्ति उपस्थित थे । बैठक में विभिन्न सदस्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य, अनुसंधान अधिकारी ने बताया कि सभी सदस्य कार्यालय जिस प्रकार नराकास (बैंक), कोलकाता को नियमित रिपोर्ट भेजते हैं ठीक उसी प्रकार उप निदेशक (कार्यान्वयन) के कार्यालय में भी रिपोर्ट भेजना आवश्यक है । उन्होंने कहा कि जिन कार्यालयों से रिपोर्ट भेजी जाती है वे पारदर्शिता बनाए रखें ।

समिति द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के बारे में उन्होंने कहा कि मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता की आवश्यकता है । उप निदेशक (कार्यान्वयन) से प्राप्त नए प्रोफार्मा पर आप चर्चा करें तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) के बताए गए अनुसार इसे अंतिम रूप दें । उन्होंने यह भी कहा कि मूल्यांकन के लिए आंकड़े भेजते समय अग्रेषण पत्र में पृष्ठांकन होना चाहिए और अंतिम निर्णय में पारदर्शिता होनी चाहिए ।

राजभाषा शील्ड से संबंधित प्राप्त प्रोफार्मा के बारे में विचार करने के लिए समिति में उपस्थित सभी सदस्यों की सहमति से अध्यक्ष महोदय ने निर्णय दिया कि युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, यूको बैंक, इलाहाबाद बैंक, नाबार्ड, इंडियन ओवरसीज़ बैंक और पंजाब नैशनल बैंक के राजभाषा अधिकारियों की एक उप समिति बनाई जाए। उक्त उप समिति एक सप्ताह के अंदर इसकी बैठक करके, प्रोफार्मा के बारे में विचार करके, राजभाषा शील्ड के प्रोफार्मा को अंतिम रूप दे कर उक्त गठित समिति के सभी सदस्यों के हस्ताक्षर से प्रस्ताव लें और उक्त प्रस्ताव अनुमोदन हेतु अध्यक्ष महोदय को प्रस्तुत करेंगे। अनुमोदित हो जाने पर उसे परिपत्रित किया जाएगा और अब से आगे उसी अनुमोदित प्रोफार्मा में राजभाषा शील्ड की रिपोर्ट सदस्य कार्यालय प्रस्तुत करेंगे जोकि पूर्व निर्णीत तीन निर्णायकों के पास मूल्यांकन हेतु भेजी जाएगी। सर्व सम्मति होने पर समिति के अध्यक्ष ने इस बात को अनुमोदित किया।

डॉ. बी. एन. पांडेय, सहायक निदेशक (पूर्व), हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, कोलकाता ने बताया कि बैंकों में हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरी निष्ठा के साथ किया जाना चाहिए, प्रशिक्षण में तेजी लाई जानी चाहिए और निर्धारित अवधि तक हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरा हो जाना चाहिए।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता के प्रभारी डॉ. राम विनोद सिंह ने सूचित किया कि उनके कार्यालय द्वाराउपलब्ध 21 दिवसीय अनुवाद एवं प्रशिक्षण की निःशुल्क सेवा का लाभ सभी कार्यालयोंद्वाराउठाया जाना चाहिए।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् के संयोजक श्री युमना प्रसाद राय ने समिति की गतिविधियों की सराहना की एवं इसकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना की।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 44वीं बैठक में **मार्गनिर्देश देते हुए समिति के अध्यक्ष** तथा युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कहा कि समिति को प्रस्तुत रिपोर्टों में गुणवत्ता बनी रहनी चाहिए तथा उसमें पारदर्शिता भी होनी चाहिए। उन्होंने भारत सरकार के कोलकाता स्थित राजभाषा विभाग, उप निदेशक (कार्यान्वयन) के कार्यालय से पधारी प्रतिनिधि अनुसंधान अधिकारी श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य द्वारा दिए गए सुझाव का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया कि सभी सदस्य कार्यालयों की तिमाही रिपोर्टें उप निदेशक (कार्यान्वयन) के कार्यालय में पहुंचना जरूरी है। इसके लिए उन्होंने सदस्य कार्यालयों के सभी राजभाषा अधिकारियों/राजभाषा प्रभारियों को समय पर रिपोर्ट भेजने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने उप निदेशक (पूर्व), हिंदी शिक्षण योजना के कार्यालय से पधारे सहायक निदेशक डॉ. बी एन पांडेयद्वारादिए गए हिंदी प्रशिक्षण में तेजी लाने के सुझाव की सराहना करते हुए कहा कि हिंदी प्रशिक्षण के संबंध में सभी बैंकों द्वारा कार्ययोजना तैयार करते हुए निर्धारित अवधि के भीतर हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरा करना चाहिए। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से पधारे डॉ. राम विनोद सिंह तथा केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् के संयोजक श्री यमुना प्रसाद राय के सुझावों का उन्होंने स्वागत किया।

भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), भुवनेश्वर की 23वीं बैठक का आयोजन 28-01-2008 को होटल ट्रम्फ रेसीडेंसी में किया गया। इस बैठक में 25 सदस्य बैंकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता भारतीय स्टेट बैंक के महाप्रबंधक श्री एस. के. माथुर ने की। इस बैठक के आयोजनकर्ता पंजाब नेशनल बैंक के अंचल प्रबंधक श्री बी.पी. शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे।

बैठक का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ किया गया। इसके पश्चात् श्री शर्मा ने सभी का स्वागत करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता व नराकास की भूमिका के संबंध में अपने विचार रखे। गत छमाही के दौरान नराकास (बैंक) के तत्वाधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

बैठक की कार्यवाही का संचालन करते हुए भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी श्री गुलशन कुमार कुकरेजा ने सदस्य सचिव, नराकास (बैंक) के रूप में अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया एवं विगत छमाही में सदस्य बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री एस.के. माथुर ने अपने ग्राहकों तक पहुंच बनाने के लिए हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर बल दिया।

वर्ष 2007 के दौरान राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, सेंट्रल बैंक ऑफ

1752 HA/08—5A

इंडिया व इलाहाबाद बैंक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय व प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में शील्ड तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए ।

अनगुल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अनगुल की बीसवीं छमाही बैठक दिनांक 30-11-2007 को पूर्वाह्न 11.00 बजे नालको नगर के प्रशिक्षण संस्थान स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गयी । बैठक की अध्यक्षता नालको के महाप्रबंधक (सीपीपी) श्री रमेश प्रसाद श्रीवास्तव ने की और राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय मल्लिक सरकारी प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे ।

अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में श्री श्रीवास्तव ने बताया कि हिंदी के कार्यान्वयन में समस्त कार्यालयों को भाग लेना चाहिए । देश की पहचान अपनी भाषा से होती है और भारत जैसा देश हिंदी के लिए सारे विश्व में जाना जाता हैं। अतः हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए समस्त भारतीय को काम करना चाहिए । भाषा के विकास होने पर देश की प्रगति जरूर होगी । आमंत्रित सदस्य श्री साहू ने कहा कि हिंदी के प्रचार के लिए सब को जागरूक होना चाहिए । उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे शादी में बाजे आदि की आवाज से सबको पता चल जाता है कि शादी हो रही है, उसी तरह हिंदी के कुछ कार्यक्रमों को इसी तरह आयोजित करना चाहिए, जैसे समस्त इलाके के लोगों को हिंदी की स्थिति के बारे में महसूस हो जाए । हिंदी केवल कई लोगों की भाषा नहीं है । सारे भारतवर्ष की सबसे अधिक बोली, पढ़ी-सीखी जानेवाली भाषा है । अतः समस्त कार्यालय में हिंदी में अधिक से अधिक काम होना जरूरी है, इसलिए कोई आदेश/अनुदेश की आवश्यकता नहीं है, केवल मानसिकता में परिवर्तन चाहिए ।

श्री अजय मल्लिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन) पूर्व क्षेत्र, कोलकाता ने उपस्थित समस्त सदस्य कार्यालय प्रमुखों को धन्यवाद देते हुए कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक साल में दो बार आयोजित की जाती है । इसमें सबको भाग लेना चाहिए क्योंकि यह भी हमारे सरकारी कामकाज का एक हिस्सा है, राष्ट्रपति के आदेश से हम सभी भारत संघ के कर्मचारी हैं और समय-समय पर सरकार द्वारा जारी नियमों, आदेशों, अधिनियमों का अनुपालन करना चाहिए । इसमें गैर सरकारी संस्था के बारे में हम कुछ नहीं कर सकते हैं । केवल सरकारी कार्यालय से नराकास का संबंध है । उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा प्रस्तुत किया गया वेबसाईट के बारे में बताया और कहा कि राजभाषा संबंधित सारी जानकारियां केवल एक मिनट में कम्प्यूटर के माध्यम से आपको उपलब्ध हो पायेंगी । अतः आप राजभाषा विभाग के वेबसाईट का नम्बर नोट कर लें और हिंदी के कार्यान्वयन में सहयोग करें । उन्होंने विभिन्न कायालयों में हिंदी की प्रगति पर चर्चा की और सबसे अनुरोध किया कि तिमाही रिपोर्ट की प्रति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को अवश्य भेजें ताकि चर्चा करने में सहूलियत होगी । सदस्य कार्यालयों से पधारे सदस्यों ने अपने कार्यालयों में हिंदी की प्रगति के बारे में बताया । सदस्य-सचिव ने विवरण प्रदान में कहा कि एक अन्तर कार्यालय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन नालको में किया गया और नालको की तरफ से हिंदी भाषी वर्ग और हिंदीत्तर भाषी वर्ग के विजयी प्रतिभागियों को रु. 1000/-, रु. 750/- और रु. 500/- यथाक्रम प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में बैठक में प्रदान किया गया । उन्होंने समस्त सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि नालको नगर परीक्षा केंद्र में संचालित होने वाली हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षा में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करने हेतु हिंदीत्तर भाषी कर्मचारियों को नामित कर प्रशिक्षण दिलवायें । अन्त में भारी पानी संयंत्र के हिंदी अनुवादक श्री धनेश परमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया और सभा समाप्ति की घोषणा की गयी ।

नाज़िरा

दिनांक 30 जनवरी, 2008 को सामुदायिक भवन, लक्ष्मी नगर, गेल, शिवसागर, में प्रातः 11.00 बजे से श्री जय गोपाल चतुर्वेदी, अध्यक्ष, नराकास-नाजिरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, नराकास नाज़िरा की 10वीं बैठक में अध्यक्ष महोदय के अतिरिक्त, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, गुवाहाटी से पधारे श्री अशोक मिश्र, प्रभारी, उप निदेशक (कार्या.)-पूर्वी क्षेत्र के अतिरिक्त श्री संजीव मैधी, उप महाप्रबंधक एवम् प्रभारी, गेल, एल.पी.जी. संयंत्र, लकवा भी उपस्थित थे।

दिनांक, 07 अगस्त, 2007 को ई.डी. कांफ्रेंस हॉल, ओएनजीसी कॉम्पलेक्स, नाज़िरा में सम्पन्न हुई बैठक का कार्यवृत्त सदस्य सचिव द्वारा पढ़ा गया और अध्यक्ष महोदय

1752 HA/08—5B

तथा सभी सदस्यों द्वारा करतल ध्वनि से उस की पुष्टि की गयी । बैठक में उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा, अध्यक्ष महोदय के सामने अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया । इस अवसर पर, समन्वयक कार्यालय-ओएनजीसी द्वारा, पिछली बैठक से इस बैठक के दौरान, किये गये कार्यों का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 7 अगस्त, 2007 को सम्पन्न हुई बैठक में, अध्यक्ष महोदय ने गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी, राजभाषा शील्ड जारी रखने का आदेश दिया था । तदनुसार, इस वर्ष भी इस योजना को जारी रखा गया तथा विभिन्न विजेता कार्यालयों को अध्यक्ष महोदय ने बैठक के दौरान, क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय राजभाषा शील्ड तथा प्रमाणपत्र प्रदान किये । विजेताओं को नराकास-नाज़िरा की हार्दिक शुभकामनाएं ।

अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर जोर दिया कि आगामी बैठक से पहले, कुछ ऐसे कार्यक्रम भी रखे जायें जिनमें सभी सदस्य कार्यालय परस्पर मिल सकें । अध्यक्ष महोदय ने समन्वय कार्यालय की ओर से इस संबंध में सभी संभव सहयोग का आश्वासन भी दिया ।

कोयंबत्तूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर की अर्द्ध वार्षिक बैठक दिनांक 26-10-2007 को भारत संचार निगम के सम्मेलन कक्ष में समिति के अध्यक्ष श्री के. श्रीनिवासन, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में श्री पी. विजय कुमार, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचिन ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व किया ।

श्री के. श्रीनिवासन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में मार्गदर्शन, समन्वय, आदान-प्रदान, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन में एक मंच के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और विगत एक वर्ष के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर की गतिविधियों में काफी प्रगति दर्ज हुई है । तदवसर पर श्री ए. शाजहान, महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने भी अपने वक्तव्य दिए ।

तदवसर पर अपने भाषण में श्री पी. विजय कुमार, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचिन ने कहा कि राजभाषा हिंदी में सबका अटूट विश्वास होना चाहिए तभी हिंदी से जुड़ पाना संभव है । केवल हिंदी दिवस के दिन हिंदी की पूजा-अर्चना करके बाद में उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए । हिंदी के विकास के लिए कोई मंत्र या तंत्र उपलब्ध नहीं है । हम निष्ठा के साथ इसका प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार करेंगे तभी जनता की भाषा को प्रतिष्ठित करने संबंधी गांधी जी की संकल्पना साकार हो पाएगी ।

बैठक के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं :-

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(iii) का अनुपालन सभी सदस्य कार्यालयों में सुनिश्चित किया जाए ।
2. सर्वकार्यभारी अधिकारी हिंदी प्राध्यापकों के कार्यों पर समुचित निगरानी रखेंगे ।
3. कोयंबत्तूर नगर में हिंदी शिक्षण योजना को प्रभावी बनाने हेतु अतिरिक्त हिंदी प्राध्यापकों की तैनाती हेतु प्रस्ताव राजभाषा विभाग को भेजे जाएं ।
4. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, बैंगलोर तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर के संयुक्त तत्वाधान में कोयंबत्तूर में पांच दिवसीय हिंदी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन करना ।
5. समिति की ओर से हिंदी पत्रिका का प्रकाशन जनवरी, 2008 में करना ।
6. समिति के वित्तीय लेखा-जोखा के संपरीक्षण हेतु लेखा-परीक्षक दल का गठन करना ।

अमृतसर

समिति की वर्ष 2007-08 की द्वितीय बैठक दिनांक 29 नवम्बर, 2007 गुरूवार 3.00 बजे बाद दोपहर, होटल कुमार इंटरनैशनल, अमृतसर में आयोजित की गई । इस बैठक की अध्यक्षता श्री पी.के. श्रीवास्तव, आयकर आयुक्त (अपील), अमृतसर ने की ।

केंद्रीय विद्यालय नं. 1, अमृतसर छावनी के स्टाफ तथा बच्चों ने स्वागत गान प्रस्तुत किया । बैठक के दौरान बच्चों ने एक समूह गान भी प्रस्तुत किया, जिसे सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा सराहा गया । समिति की 06 जून, 2007 को, आयोजित बैठक में किए गए निर्णयों तथा इनके अनुपालन हेतु की गई अनुवर्ती कार्रवाई की रिपोर्ट सदस्य

सचिव द्वारा प्रस्तुत की गई । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितिद्वारा02-08-2007 को आयोजित 'राजभाषा सेमिनार में की गई कार्यवाही/निर्णयों की संक्षिप्त रिपोर्ट, हिंदी विभागाध्यक्ष 'केंद्रीय' विद्यालय नं. 1, अमृतसर छावनी ने प्रस्तुत की । समिति के मार्गदर्शन में नगर स्तर पर हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा आदि संबंधी आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी, मंडल कार्यालय की हिंदी अनुवादक द्वारा प्रस्तुत की गई । सदस्य कार्यालयों से प्राप्त राजभाषा प्रगति रिपोर्टों की अध्यक्ष महोदय द्वारा की गई समीक्षा की संक्षिप्त रिपोर्ट सदस्य सचिव द्वारा प्रस्तुत की गई तथा इनमें पाई गई कमियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए । यह भी अनुरोध किया गया कि राजभाषा संबंधी प्रगति रिपोर्टें इस कार्यालय के पत्र की प्रतीक्षा के बिना ही बैठक की तिथि से कम से कम एक सप्ताह पहले भेज दी जाएं । कृपया रिपोर्ट में सही आंकड़े प्रस्तुत किए जाएं तथा कोई कालम खाली न छोड़ा जाए । सदस्यों को सूचित किया गया कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी अनुदेशों अनुसार समिति की आगामी बैठक अप्रैल 2008 में आयोजित की जानी है, अतः सभी सदस्य अपनी रिपोर्टें 15 अप्रैल 2008 तक अवश्य भेज दें ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अमृतसर द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक गृह पत्रिका 'अमृता' के आठवें अंक के प्रकाशन की सूचना तथा रूपरेखा भारतीय डाक विभाग की हिंदी सहायक द्वारा प्रस्तुत की गई ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालयं, भारत सरकार, नई दिल्ली से विशेष रूप से पधारे निदेशक (कार्यान्वयन) श्री शचीन्द्र शर्मा ने अपने अभिभाषण में राजभाषा विभाग द्वारा जारी नए कंप्यूटर साफ्टवेयरों लीला प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ-मंत्रा (कंप्यूटर द्वारा अनुवाद)--श्रुत लेखन (कंप्यूटर द्वारा डिक्टेशन) की संक्षिप्त जानकारी दी । उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में अन्य कार्यक्रमों की सूचना भी दी । समिति के कार्यकलापों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने समिति तथा इसके सदस्य कार्यालयों को राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत किए जाने पर बधाई दी । हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा दिए जाने के बारे उन्होंने सुझाव दिया कि अधिकारीगण हिंदी में हस्ताक्षर करने की आदत डालें, इससे स्टाफ को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है । उन्होंने यह भी कहा कि कर्मचारियों के कल्याण के कार्य जैसे छुट्टी, टी.ए., मैडीकल प्रतिपूर्ति आदि के आदेश हिंदी में किए जाने चाहिए ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पी. के. श्रीवास्तव, आयकर आयुक्त (अपील) ने सदस्यों को समिति की बैठक के दौरान दी गई जानकारियों/सूचनाओं को उपयोग में लाने का सुझाव दिया । उन्होंने निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा दिए गए सुझावों को अमल में लाने का अनुरोध किया । उन्होंने टिप्पणी की कि राजभाषा विभाग की वेबसाइट www. rajbhasha. gov. in पर सभी जानकारियां उपलब्ध हैं। लगभग सभी सदस्य कार्यालयों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, कृपया सभी सदस्य वेबसाइट अवश्य खोल कर देखें ।

पटियाला

पटियाला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 24-10-2007 को सांय 03.30 बजे आयकर भवन, पटियाला के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री जी.सी. नेगी, आयकर आयुक्त, पटियाला एवं अध्यक्ष, नराकास, पटियाला ने की । सबसे पहले पिछली बैठक की पुष्टि की गई तथा निम्नलिखित निर्णय लिए गए।

चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि :

1. सभी कार्यालय हिंदी के पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें ।
2. सभी कम्प्यूटरों पर हिंदी कार्य की सुविधा उपलब्ध करवाई जाए ।
3. हिंदी प्रशिक्षण के लिए रोस्टर बनाए जाएं ।
4. धारा 3(3) का उल्लंघन न किया जाए ।
5. हिंदी के रिक्त पदों को तुरंत भरने के लिए कार्रवाई की जाए ।
6. जो कार्यालय नियम 10(4) के अधीन अधिसूचित नहीं हैं, उन्हें अधिसूचित करने की कार्रवाई की जाए ।
7. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए आदेश दिए जाएं ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री जी.सी. नेगी ने उपस्थित सदस्यों का बैठक में आने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि आज बैठक में अच्छे निर्णय लिए गए हैं। इनके दूरगामी परिणाम होंगे और सदस्य कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढेगा। ■

(ग) कार्यशालाएं

परमाणु ऊर्जा विभाग
भारी पानी संयंत्र, तालचेर

राजभाषा नियमों का अनुपालन करते हुए भारी पानी संयंत्र, तालचेर में दिनांक 9 जनवरी, 2008 को 15वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन समारोह प्रातः 10:30 बजे प्रशिक्षण कक्ष में किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता श्री पी.आर. महान्ति, अध्यक्ष, राभाकास, भापासं, तालचेर ने की ।

अध्यक्ष, राभाकास, भापास, तालचेर ने 15वीं हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन किया तथा अपने उद्‌बोधन में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए अपने सरकारी कामकाज में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करने का तथा राजभाषा हिंदी को उनका यथोचित स्थान दिलाने में अपना योगदान देने का आह्‌वान किया । उन्होंने यह भी बताया कि पिछले माह संयंत्र में संपन्न भाषाबोर्ड एवं संयंत्रों की संयुक्त राभाकास और राजभाषा सम्मेलन से संयंत्र के अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति काफी रुचि बढ़ी है और कुछ अनुभागों में कुछ लोगों ने लॉग-बुक हिंदी में लिखना प्रारंभ कर दिया है ।

इस कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों से नामित 15 कार्मिकों ने भाग लिया ।

इस कार्यशाला में श्री सुदर्शन तराई, प्रबंधक (रा. भा.), नालको द्‌वारा "मानक वर्तनी", और "टिप्पण-आलेखन", सुश्री अन्विता त्रिपाठी, टी.जी.टी. (हिंदी), जवाहर नवोदय विद्यालय, विक्रमपुर द्‌वारा ''लिंग, वचन और कारक'' तथा श्री धनेश परमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्‌वारा ''संघ की राजभाषा नीति'', और ''पऊवि की प्रोत्साहन योजनाएं'' पर विद्‌वतापूर्ण व्याख्यान दिए गए। कार्यशाला के अंतिम चरण में सभी प्रतिभागियों को लिखने का अभ्यास कराया गया ।

समापन समारोह में इस कार्यशाला के प्रतिभागियों को श्री पी. आर. महान्ति, महाप्रबंधक के करकमलों से अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए । सभी को संबोधित करते हुए अध्यक्ष, राभाकास, भापासं, तालचेर ने इस कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को अपने दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग करने तथा अपने सहकर्मियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने का आह्‌वान किया । महाप्रबंधक महोदय ने इस अवसर पर यह बताया कि संयंत्र के सभी अनुभागों के उपस्थिति रजिस्टर में ज्यादातर लोगों ने हिंदी में हस्ताक्षर करना प्रारंभ कर दिया है, यह बड़े गौरव की बात है ।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 31 जनवरी व 1 फरवरी 2008, को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में भारी पानी संयंत्र के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ साथ नराकास सदस्य कार्यालयों से भी नामांकन प्राप्त किए गए जिसमें जिरकोनियम कार्यालय, एम.एम.डी, सीएमएफआरआई, कोस्टगार्ड, सीआईएसएफ, बीएसएनएल इत्यादि कार्यालयों के प्रतिभागी उपस्थित थे ।

कार्यशाला का उद्‌घाटन भारी पानी संयंत्र के राभाकास अध्यक्ष श्री कल्याणनकृष्ण ने किया । उद्‌घाटन के अवसर पर श्री कल्याणकृषण ने कहा कि 'ग' क्षेत्र में हिंदी की प्रगति खासतौर से कार्यालयों में धीरे धीरे बढ़ रही है । हालांकि पेपर वर्क हिंदी में उतना नहीं हो रहा फिर भी संभावनाएं तलाशी जानी चाहिए । उन्होंने आह्‌वान किया कि केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में कार्य करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान अनिवार्य रूप से होना चाहिए क्योंकि केंद्रीय सेवा में स्थानांतरण देश में कहीं भी हो सकता है । यहां भी हिंदी में काम करने का मौका मिलने पर अपनी टिप्पणी हिंदी में अवश्य दें । इस अवसर पर प्रशासन

अधिकारी श्री रसूल ने कार्यालय में उनके योगदान एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की भूरी भूरी प्रशंसा की । श्री एस. जेड. खान ने भी राभाकास अध्यक्ष एवं उपमहाप्रबंधक के उनके योगदान एवं उनके व्यक्तित्व की सराहना करते हुए उनके कार्यकाल में उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया एवं उनकी नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दी ।

कार्यशाला में कुल 20 प्रतिभागी थे । कार्यशाला में हिंदी व्याकरण, पत्र लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों की जानकारी, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 के साथ साथ कुछ प्रशासनिक विषयों जैसे छुट्टी नियम एवं ज्ञान प्रबधन विषय पर भी व्याख्यान दिए गए । व्याख्याता श्री मनोज शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.), श्री यू.एम. रॉय, सुरक्षा अधिकारी, श्री नवीन कुमार, सहायक कार्मिक अधिकारी और श्रीमती श्याम लता, हिंदी अनुवादक, श्रीमती जी. भाग्यवती, प्रवर श्रेणी लिपिक थे । अंत में सचिव राभाकास ने अध्यक्ष, राभाकास का आभार प्रकट किया एवं उनकी नई जिम्मेवारी के लिए शुभकामनाएं दी ।

भारी पानी संयंत्र, फर्टिलाइजर नगर बड़ौदा

भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा में दिनांक 27-02-2008 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जो इस वित्त-वर्ष की चौथी कार्यशाला थी । यह कार्यशाला प्रशासनिक तथा अन्य वर्ग के लिए आयोजित की गई थी । कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए, संयंत्र के महाप्रबंधक श्री आदित्य भौमिक ने कहा कि स्वतंत्र राष्ट्र के संविधान के अनुसार हिंदी को सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के रूप में बढ़ावा दिया जाता है । जो कार्य हम हिंदी में कर सकते हैं, वह हमें हिंदी में करना चाहिए । सरकारी कामकाज में लिखा-पढ़ी के साथ-साथ आपसी बात-चीत भी हिंदी में किया जाना महत्वपूर्ण है । हिंदी में अच्छा काम करने के लिए हमें भारी पानी बोर्ड की राजभाषा शील्ड मिली है । इसके अलावा, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने निरीक्षण के बाद हमारे कामकाज की सराहना की है । इसे हमें जारी रखना चाहिए।

श्री प्रकाश चंद्र जैन, उप महाप्रबंधक ने दीप प्रज्जवलन के बाद कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि इस दीप के समान ही हिंदी-ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र विकीर्ण हो । जिस प्रकार से सूर्यास्त के बाद भी सूर्य का अस्तित्व बना रहता है, उसी प्रकार से ज्ञान का सूर्य का अस्तित्व सदैव कायम रहता है ।

संयंत्र मे अब तक आयोजित चारों कार्यशाला में संयंत्र की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार हिंदी जानने वाले अलग-अलग वर्ग के कर्मचारियों/ अधिकारियों को पुनश्चर्या कराई गई । सरकारी कामकाज करने में सुविधा की दृष्टि से सभी को भारी पानी शब्दावली की प्रतियां उपलब्ध कराई गई ।

श्री वी.डी. तलाटी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यशाला का संचालन डॉ. रश्मि वार्ष्णेय ने किया।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर बेस

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने तथा कार्यान्वयन में सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से दिनांक 5-2-2008 को "राजभाषा (हिंदी) कार्यान्वयन का महत्व (Importance of Official Language Implementation)" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन कार्यालय परिसर में किया गया । केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 के प्राचार्य श्री डी आर मीणा इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए । कार्यशाला के आरंभ में कार्यालय के अनुवादक श्री बी एल आंजना ने कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा संस्थान द्वारा कार्यान्वयन के क्षेत्र में कार्यालय स्तर पर किए जा रहे प्रयासों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया । उपस्थिति का स्वागत संस्थान के आरटीओ श्री एस. सुदेशणन ने किया । संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक श्री ए. एनरोज ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को अधिक से अधिक बढ़ाते राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में भरसक प्रयास करने का आग्रह किया ।

कार्यशाला में अपने वक्तव्य की शुरुआत करते हुए आमंत्रित वक्ता श्री डी आर मीणा ने बताया कि हिंदी में रचित हमारे देश के राष्ट्रगान जन गन मन अधिनायक को जिस आदर और सम्मान के साथ हम गाते हैं उसी प्रकार देश की राजभाषा-राष्ट्रभाषा हिंदी को संविधान की मर्यादा अनुरूप सम्मान देते हुए दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हमें हिंदी का प्रयोग करने में हिचक या शर्म महसूस नहीं करना चाहिए । श्री मीणा ने पूरे राष्ट्रगान में निहित अर्थ की व्याख्या भी की जिसे उपस्थिति ने काफी सराहा । उन्होंने हिंदी के सरलीकृत

रूप को ज्यादा महत्व देते हुए प्रयोग में लाने पर बल दिया। संस्थान के सहायक श्री ए के देवनाथ, मात्यिस्की वैज्ञानिक डॉ. एम के सिन्हा एवं वैज्ञानिक सहायक श्री सुजित कुमार पटनायक ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला में संस्थान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अतिरिक्त संस्थान के पांच मत्स्यहरण जलयानों के स्कीपर, मुख्य अभियंता, मेट, बोसन आदि सहित लगभग 50 कर्मचारियों ने कार्यशाला में सहभागिता की । कार्यशाला के अंत में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी जिज्ञासाएं आमंत्रित वक्ताओं के समक्ष रखी जिनका संतोषपूर्ण ढंग से समाधान किया गया ।

कार्यालय के सेवा अभियंता (यां.) श्री धर्मवीर सिंह ने अंत में उपस्थिति का आभार प्रकट किया ।

नराकास देवास

''नराकास देवास न केवल अपने सदस्य कार्यालयों से जीवंत संबंध रखती है, बल्कि देश की एकमात्र समिति है जो विशेष रूप से संयुक्त कार्यशालाओं का आयोजन कर राजभाषा कार्यान्वयन को गतिशील बनाती है जिसके परिणामस्वरूप देवास नराकास को अखिल भारतीय स्तर पर पहचान तथा मान सम्मान प्राप्त हुए हैं ।'' यह उद्गार नराकास देवास के अध्यक्ष तथा बैंक नोट मुद्रणालय के महाप्रबंधक श्री दिलीप वि. गोण्डनाले ने नराकास के तत्वाधान में आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला के शुभारम्भ के दौरान व्यक्त किए । इस कार्यशाला में नगर के केंद्रीय कार्यालयों, बैंक तथा बीमा समूहों एवं केन्द्र सरकार के उपक्रमों के विभागाध्यक्षों ने हिस्सा लिया ।

समारोह के संचालक तथा समिति के सचिव डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी ने संयुक्त हिंदी कार्यशाला के उद्देश्यों तथा उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह देश की एकमात्र समिति है जहां सदस्य कार्यालयों के लिए प्रतिवर्ष संयुक्त हिंदी कार्यशाला आयोजित कर राजभाषा नीति तथा उसके कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं को दूर करने तथा सदस्य कार्यालयों की राजभाषा विषयक शंकाओं का समाधान किया जाता है । इस कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों को राजभाषा नीति की जानकारी देते हुए कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं को दूर करने की युक्तियां समझाई गई।

इस अवसर पर समिति अध्यक्ष श्री दिलीप वि. गोण्डनाले ने संयुक्त हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से समिति को मिली पहचान तथा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्राप्त अखिल भारतीय इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार का उल्लेख करते हुए हाल ही में गोवा में सम्पन्न मध्य तथा पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावित द्वारा नराकास देवास को वर्ष 2006-07 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु दिए गए पुरस्कार के लिए सभी सदस्यों को बधाई देते हुए कार्यशाला के माध्यम से और अधिक सक्रियता हासिल करने का अनुरोध किया । कार्यक्रम का संचालन सदस्य सचिव डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी ने किया तथा केंद्रीय विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती जयश्री गुप्ता ने आभार माना ।

नराकास अमृतसर

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अमृतसर व मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर के मार्गदर्शन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अमृतसर द्वारा 22 जनवरी, 2008 को आयकर कार्यालय में कान्फ्रेंस हाल में संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इसमें भाग लेने हेतु समिति के सदस्य कार्यालयों में से ऐसे कार्यालयों को आमंत्रित किया गया जो स्वतंत्र रूप से अपने स्तर पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन नहीं कर पाते । इस कार्यशाला में अमृतसर नगर के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों-निगमों-उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों से काफी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन अपर आयकर आयुक्त श्रीमती आभा रानी सिंह ने किया । उनके अनुसार हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को होने के बावजूद अपेक्षित मात्रा में हिंदी का कार्य नहीं हो रहा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि इस कार्यशाला के आयोजन को सार्थक बनाते हुए, यहां मिल बैठकर अपनी राजभाषा संबंधी समस्याओं/कठिनाइयों को दूर करने पर चर्चा करें । मुख्य वक्ता के रूप में गुरू नानक देव विश्वविद्यालय के विभाग अध्यक्ष (हिंदी) श्री एच.एस. बेदी को आमंत्रित किया गया । उन्होंने हिंदी भाषा के प्रारंभ से लेकर आजतक के विकास की जानकारी दी तथा राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व को प्रतिपादित किया ।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति का संक्षिप्त परिचय दिया गया। उन्हें हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के सुझाव प्रस्तुत किए गए। देवनागरी लिपि में हिंदी की सामान्य आशुद्धियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए, लिपि के सरलीकरण की नीति पर प्रकाश डाला गया तथा अंग्रेजी-हिंदी शब्दों, वाक्यांशों का अभ्यास भी करवाया गया।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की सहायक निदेशक राजभाषा, डा. वीणा यादव तथा सहायक निदेशक (रा.भा.) और वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने संयुक्त हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण भाषण दिए।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, नागपुर

क्षेत्रीय निदेशालय, वडोदरा के सहयोग से केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर द्वारा सूरत में आयोजित राजभाषा हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 26-11-2007 से 29-11-2007 तक किया गया।

दिनांक 26-11-2007 को वड़ोदरा स्वरोजगार विकास संस्थान, सूरत में बोर्ड की महिला कर्मचारियों के लिए आयोजित चार-दिवसीय राजभाषा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए वड़ोदरा स्वरोजगार विकास संस्थान के निदेशक श्री डी.जी. वशी ने कहा कि 'सभी भाषाओं को आत्मसात करने की शक्ति हिंदी में है। हिंदी में कामकाज करने में गर्व महसूस करें।' श्री बी.वी. रमेश बाबू, सहायक निदेशक ने कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

श्री आर.आर. काकड़े, मुख्य जन सूचना अधिकारी, मुंबई ने दिनांक 26-11-2007 को सूचना का अधिकार अधिनियम विषय पर अतिथिवक्ता के रूप में अपना व्यख्यान दिया।

श्री टी.सी. दास, उप निदेशक (प्रशासन), केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर ने सूचना का अधिकार अधिनियम तथा राजभाषा नीति पर प्रकाश डाला।

प्रतिभागियों को कार्यशाला के दौरान दिनांक 26-11-2007 को सूचना का अधिकार विषय पर जानकारी दी गई तथा दिनांक 27-11-2007 को श्री अंतर्यामी परिडा, सहायक निदेशक (राजभाषा), सचिवालय, दमण ने अतिथिवक्ता के रूप में उपस्थित होकर राजभाषा नीति तथा हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन के बारे में जानकारी प्रदान की। इसके साथ-साथ वार्षिक कार्यक्रम, वर्तनी, सरल अनुवाद, प्रशासनिक शब्दावली, तिमाही प्रगति रिपोर्ट आदि विषयों पर जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला के अंतिम दिन दिनांक 29-11-2007 को प्रतिभागियों के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें श्रीमती के. मोहिनी, निम्न श्रेणी लिपिक, क्षेत्रीय निदेशालय, मंगलूर ने प्रथम, श्रीमती जयश्री चोडणकर, आशुलिपिक, आंचलिक निदेशालय, मुंबई ने द्वितीय तथा श्रीमती रंजूषा, निम्न श्रेणी लिपिक, मुख्यालय, नागपुर ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री डी.जी. वशी, श्री टी.सी. दास एवं श्री एम.जे. उपाध्याय दिनांक 29-11-2007 को आयोजित समापन कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यशाला के समापन दिवस पर प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। श्रीमती मीनल चिटनीस, शिक्षा अधिकारी (च.श्रे.) ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री अरविन्द यादव, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

श्रीमती मीनल चिटनीस, शिक्षा अधिकारी (च.श्रे.), उप क्षेत्रीय निदेशालय, सूरत ने कार्यशाला को सफल बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

परमाणु ऊर्जा विभाग, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, पखनि सम्मिश्र, प्रताप नगर, सेक्टर V, विस्तार बंबाला, सांगानेर, जयपुर-302030

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में दिनांक 27 व 28 दिसंबर, 2007 को हिंदी कार्यशाला एवं दिनांक 01व 02 जनवरी, 2008 को हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पखनि/प. क्षेत्र कार्यालय में दिनांक 27 दिसंबर 2007 से दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला एवं दो दिवसीय हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय निदेशक महोदय श्री ललित कुमार नंदा ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन राजभाषा से संबंधित कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि कार्यशालाओं द्वारा न केवल राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है बल्कि हिंदी के

प्रयोग में आने वाली व्यवहारिक समस्याओं का निराकरण भी होता है। इसके साथ ही उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामानएं भी दीं एवं आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी ।

तत्पश्चात् हिंदी कार्यशाला की शुरूआत की गई । हिंदी कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई । दिनांक 27 दिसंबर, 2007 को उद्घाटन भाषण के पश्चात् कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ । प्रथम सत्र में दो वक्ताओं ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए । प्रथम व्याख्यान नेशनल इंश्योरेंश से पधारे हुए श्री इस्लाम खान, सहायक प्रबंधक(राजभाषा) ने **हिंदी टिप्पण एवं आलेखन** विषय पर अपने व्याख्यान में हिंदी टिप्पण एवं आलेखन के विविध प्रकार,कार्यालयीन पत्राचार के विभिन्न स्वरूप एवं टिप्पण एवं आलेखन में होने वाली सामान्य त्रुटियों से उपस्थित प्रशिक्षुओं का परिचित कराया तथा उनकी संबंधित जिज्ञासाओं को समाधान प्रस्तुत किया ।

प्रथम सत्र का द्वितीय व्याख्यान न्यू इण्डिया इन्श्योरेंस के हिंदी अधिकारी श्री नसरुल्ला खान ने **हिंदी का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य की आशाएं एवं आशंकाएँ** विषय पर अपना व्याख्यान दिया । अपने व्याख्यान मे श्री नसरुल्ला खान ने हिंदी के बदलते हुए स्वरूप पर चर्चा की एवं उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष हिंदी के बदलते हुए स्वरूप के नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए ।

हिंदी कार्यशाला का द्विवितीय सत्र दिनांक 28 दिसंबर, 2007 को आयोजित किया गया । इस सत्र में भी दो अतिथि वक्ताओं ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए । प्रथम व्याख्यान भारतीय भू-सर्वेक्षण के, जयपुर के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री डालचन्द प्रजापत ने हिंदी के वर्तमान मानक स्वरूप पर प्रकाश डाला तथा वर्णमाला से संबंधित आम त्रुटियों की जानकारी दी ।

द्विवितीय सत्र में बैंक ऑफ बड़ौदा की सेवा निवृत हिंदी अधिकारी श्रीमती विजया श्रीवास्तव ने हिंदी के प्रयोग में होने वाली अशुद्धियों की तरफ उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों का ध्यान आकर्षित किया तथा अत्यंत रोचक ढंग से कार्मिकों की संबंधित जिज्ञासाओं एवं समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया ।

कार्यशाला आयोजन की इस श्रृंखला में दो दिवसीय हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन भी किया गया । प. ख. नि.प. क्षेत्र में हिंदी में कंप्यूटर के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 1 व 2 जनवरी, 2008 को पखनि, प. क्षेत्र कंप्यूटर प्रयोगशाला में दो दिवसीय हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु अनुभाग प्रभारियों की अनुशंसा के आधार पर कुल 16 कार्मिकों को कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री अभिषेक जैन ने हिंदी साफ्टवेयर ISM V5 के संचालन का प्रशिक्षण दिया ।

कार्यशाला दो सत्रों में संपन्न की गई । कार्यशाला का प्रथम सत्र दिनांक 1 जनवरी 2008 को आयोजित हुआ इसमें कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सभी प्रशिक्षुओं को हिंदी साफ्टवेयर ISM 2000 के संचालन का व्यावहारिक ज्ञान दिया । जिसमें हिंदी साफ्टवेयर को लोड करने,उसे प्रयोग में लाने तथा साफ्टवेयर की विशेष उपयोगिताओं से प्रशिक्षुओं को परिचित कराया गया । कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को ISM 2000 साफ्टवेयर के Phonetic Keyboard का प्रयोग करने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया । कंप्यूटर कार्यशाला का द्विवितीय सत्र दिनांक 2 जनवरी, 2008 को आयोजित किया गया । इस सत्र में साफ्टवेयर के संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया तथा Phonetic Keyboard पर टाईपिंग का अभ्यास कराया गया ।

महानिदेशालय, भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस, नई दिल्ली

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पुलिस ने भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम-काज हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल, तिगड़ी में बल की विभिन्न इकाइयों आदि से आए 54है.कां./सी.एम.के लिए 31-12-2007 से 03-01-2008 तक "चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला" आयोजित की ।

महानिदेशालय द्वारा आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में महानिदेशालय के दल संख्या 997040033 है. का./सी. एम. सुशील कुमार झा ने प्रथम एवं दल संख्या 880177462है. का./सी.एम.अनिल भारती, सातवीं वाहिनी ने द्विवितीय स्थान प्राप्त किया । उल्लेखनीय है कि महानिदेशालय द्वारा प्रत्येक कार्यशाला की समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों की एक

घंटे की वस्तुनिष्ठ किस्म की लिखित परीक्षा ली जाती है ताकि इसमें भाग लेने वाले कार्मिक कार्यशाला के प्रति पूर्ण गंभीरता अपनाएं । इस कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को महानिदेशालय में आयोजित एक सादे समारोह में मुख्य अतिथि श्री आर.के.सैनी, अपर उप महानिरीक्षक(प्रशासन) द्वारा "प्रमाणपत्र" एवं "सहायक साहित्य" भेंट किया गया ।

श्री श्याम लाल, सूबेदार मेजर (रा.भा.) ने अपने स्वागत संबोधन में हिंदी कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य से अवगत कराते हुए आशा प्रकट की कि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से हर स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा और कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाईयां एवं झिझक दूर होंगी । उन्होंने अवगत कराया कि इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़े विभिन्न विषयों की व्यावहारिक कक्षाओं को भी आयोजित किया गया और सभी प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें उत्साह और रूचि से भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया । उन्होंने परिणाम की घोषणा करते हुए समस्त प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी ।

मुख्य अतिथि श्री आर.के. सैनी, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन) ने सर्वप्रथम सभी प्रशिक्षणार्थियों को कार्यशाला में रूचिपूवर्क भाग लेने और इसके सफल आयोजन के लिए बधाई दी । उन्होंने कहा कि यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा अनुभाग द्वारा बल के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों की हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए महानिदेशालय स्तर पर प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा हैं । उन्होंने कहा कि हमारे बल में अन्य बलों की अपेक्षा हिंदी में काफी अच्छा कार्य हो रहा है और हमारा बल लगातार गृह मंत्रालयद्वारालागू "राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता" में प्रथम स्थान प्राप्त करता आ रहा है । इस कार्यशाला में आपको राजभाषा अधिनियम, नियम आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है । उन्होंने अनुरोध किया कि इस कार्यशाला में आपने जो कुछ सीखा है उसे वाहिनी में अपने साथियों में बांटे । अपने सहयोगियों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन की सफलता एवं सार्थकता सिद्ध हो ।

पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, इन्दौर

पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, इन्दौर में दिनांक 13-12-2007 को "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्य अतिथि सहायक निदेशक(अन्वेषण) श्री ए. के. तोमर तथा श्री एस.के. साहा द्वारा मां सरस्वती जी की फोटो पर माल्यार्पण से हुआ । मुख्य अतिथि श्री तोमर साहब ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है साथ ही यह हमारी मातृभाषा भी है, इसलिए इसे मां का दर्जा भी दिया गया है । उन्होंने सभी को कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाने का आग्रह भी किया । कार्यक्रम के विशेष अतिथि सहायक निदेशक (स्थापना), श्री एस. एम. पिगले ने अपने उदबोधन में कहा कि हिंदी बोलचाल की भाषा है। कार्यालयीन हिंदी व साहित्यिक हिंदी दोनों अलग-अलग होती है। कार्यालयीन शब्दों का प्रयोग ही कार्यालयीन हिंदी में होना चाहिए । इसी उददेश्य से आज इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के विशेष अतिथि पोस्टमास्टर जनरल के निजी सचिव श्री जी. पी. वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम आज ही संकल्प लें कि हम अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करेंगे ताकि कार्यशाला की सार्थकता सिद्ध हो सके ।

कार्यशाला के वक्ता श्री पी. आर. देशमुख, सहायक निदेशक (स्टाफ) का परिचय श्री एस. एन. पटेल, अनुभाग पर्यवेक्षक(अन्वे .) ने सभी को कराया । कार्यशाला की प्रस्तावना में हिंदी अनुवादक श्री पी. एस. कोटवाला ने कार्यशाला महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इसकी उपयोगिता सभी को बताई ।

सहायक अधीक्षक, डाकघर श्री एम.सी. आार.यादव ने अपने उद्बोधन में क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी कामकाज की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी सभी को दी । उन्होंने कहा कि परिमंडल कार्यालय, भोपाल ने भी हमारे कार्यालय में हो रहे हिंदी कामकाज को सराहा है । इसी अवसर पर अनुभाग पर्यवेक्षक (स्टाफ), श्री एस. दास ने भी क,ख,व ग क्षेत्रों की प्रदेशवार जानकारी सभी को दी । साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदी का प्रयोग सरकारी कामकाज में करना हमारे लिए सम्मान की बात है ।

इस कार्यशाला के वक्ता ने श्री पी. आर. देशमुख ने प्रारंभ में कार्यर्याला का उद्देश्य सभी को बताया तथा तद्उपरांत राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम तथा राजभाषा संबंधी विभिन्न उपबंधों से सभी कर्मचाारियों को अवगत कराया । इसके अलावा महानिदेशालयद्वाराजारी डाक शब्दावली पर भी कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया । साथ ही उन्होंने हिंदी प्रोत्साहन योजना की विस्तृत जानकारी भी सभी को दी तथा

इस योजना के अंतर्गत कर्मचारियों द्वारा हिंदी में किए गए सरकारी कामकाज का लेखाजोखा रखने का आग्रह किया। आपने इस कार्यशाला में कर्मचारियों की राजभाषा में काम करने में आने वाली कठिनाईयों का समाधान भी किया।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता,सेवक परियोजना पिन-931714 द्वारा 99 सेना डाकघर

मुख्यालय में दिनांक 29 नवंबर, 2007 से 1 दिसंबर, 2007 तक एक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अवधि प्रतिदिन 11.30 बजे से दोपहर 13.30 बजे तक दो घंटे की थी। हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन **परियोजना के हिंदी अधिकारी श्रीदलजीत कुमार कश्यप, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,** ने की।

इस कार्यशाला में परियोजना सेवक मुख्यालय तथा स्थानीय यूनिटों के 14 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में, कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्य, हिंदी लिपि, वर्तनी, पत्र, परिपत्र, नोटिंग, अन्तर-कार्यालय-टिप्पणी, आदि के अभ्यास के साथ पत्र व्यवहार तथा दैनिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों का अभ्यास कराया गया तथा हिंदी में प्रोत्साहन योजनाओं एवं राजभाषा नियम /अधिनियम/संकल्प आदि के बारे में भी कर्मचारियों को जानकारी दी गई।

कार्यशाला के समापन समारोह के अवसर पर बोलते हुए **परियोजना के हिंदी अधिकारी श्री दलजीत कुमार कश्यप, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,** ने कहा कि आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि आप लोग अपने दैनिक सरकारी कार्य में सरल हिंदी का प्रयोग करें जिससे कि आपकी बात दूसरों की समझ में आसानी से आ सके तथा इस कार्यशाला में बताई गयीं बातों का उपयोग अपने दैनिक सरकारी काम काज में करें और आप अपने अंदर हिंदी में कार्य करने की इच्छा जगाएं व अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करें ताकि हम अपने 55 प्रतिशत के निर्धारित लक्ष्य को समय पर पूरा कर सकें।

कार्यालय : क्षेत्रीय आयुक्त : कोयला खान भविष्य निधि: क्षेत्र-2 : स्टेशन रोड : रांची

रांची स्थित तीनों क्षेत्रीय कार्यालय में संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति,कोयला खान भविष्य निधि, रांची के तत्वाधान में दिनांक 20-02-2008 को क्षेत्रीय कार्यालय, क्षेत्र -2, स्टेशन रोड, रांची में एक "हिंदी-कार्यशाला" का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेषतौर पर तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों में स्थापना/कार्मिक शाखा में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया।

कार्यशाला के उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय आयुक्त श्री प्रवीर कृष्ण चौधरी ने कहा कि इस प्रकार के कार्यशालाओं के आयोजन से राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में काफी मदद मिलती है और कार्यालय में हिंदी में कार्य सम्पन्न करने में आने वाली परेशानियों के संबंध में चर्चा एवं समाधान निकालने में भी मदद मिलती है।

श्री पार्थ मल्लिक, क्षेत्रीय आयुक्त, क्षेत्र -3, रांची ने अपने उदगाार में कहा कि स्थापना अनुभाग में दिन प्रतिदिन के कार्यों में यद्यपि हिंदी का प्रयोग हो रहा है तथापि कुछ नियमित कार्यो में उपयोग में आने वाले प्रपत्रों का हिंदी रूपान्तर करा लिया जाए तो राजभाषा के प्रसार में काफी सुविधा होगी। उन्होने धारा 3.3 के अनुपालन पर भी जोर दिया और आश्वासन दिया कि स्थापना अनुभाग से निकलने वाले सारे कार्यालय आदेश आदि अब हिंदी में भी अवश्य रूप से निकाला जायेगा।

क्षेत्रीय कार्यालय क्षेत्र-3 के सहायक आयुक्त-I श्री दिलीप कुमार ने भी अपने उद्बोधन में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार एवं प्रयोग में पर्याप्त सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री राजेश कुमार सिन्हा, वरीय अनुवादक ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् उन्होंने स्थापना/कार्मिक शाखा के दैनंदिन कार्यों में उपयोग हेतु हिंदी में तैयार कई प्रपत्रों/प्रारूपों यथा-अस्थायी अग्रिम समायोजन, कार्य योगदान प्रतिवेदन, आगन्तुक पर्ची, वेतन निर्धारण संबंधी कार्यालय आदेश, वार्षिक वेतनवृद्धि स्वीकृति आदेश, प्रगति प्रतिवेदन/अभ्यावेदन के प्रेषण हेतु अग्रेषण पत्र आदि उपस्थित सभी अधिकारियों के बीच वितरीत करते हुए इनके उपयोग पर भी चर्चा किया। सभी ने हिंदी में तैयार उपर्युक्त प्रपत्रों के उपयोग सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

एन एच पी सी, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

दिनांक 28-12-2007 को विभिन्न विभागों में कार्यरत **जूनियर इंजीनियर, कार्यालय अधीक्षक व पर्यवेक्षक स्तर के कार्मिकों** के लिए एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

डॉ. सोना शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रतिबद्धता से योगदान दें। उन्होंने हिंदी कार्यशालाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि निगम में सभी स्तर के कार्मिकों के लिए समय-समय पर निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों से कहा कि उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें कार्यशाला में राजभाषा संबंधी जो भी जानकारी दी जाएगी वे उसे ध्यान पूर्वक ग्रहण करेंगे और अपने दैनिक कार्यालयीन काम-काज में इसका व्यवहारिक प्रयोग भी करेंगे। साथ ही उन्होंने बताया कि हमारे निगम में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निरंतर प्रगति हो रही है। उन्होंने कम्प्यूटरों पर भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करने पर जोर दिया ताकि निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सके और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में **श्री के. एल. वर्मा, पूर्व उप सचिव, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार** ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी।

कार्यशाला के **दूसरे सत्र में श्री श्याम सुन्दर कथूरिया, सहायक निदेशक (राजभाषा), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, फरीदाबाद ने** प्रतिभागियों को हिंदी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग का अभ्यास भी कराया।

कार्यशाला के **अंतिम सत्र में श्री विपुल रस्तोगी, प्रमुख, लिंग्वा सॉल्यूशन्स** ने उपस्थित प्रतिभागियों को **"कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग की सुविधाएं और संभावनाएं"** विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

एन. एच. पी. सी., क्षेत्र-IV, 74-75 सैक्टर -31ए दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़ -160030

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में 17 दिसंबर, 2007 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री स्वतंत्र कुमार, महाप्रबंधक ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। हमें अपनी इच्छा से ही हिंदी में काम करना चाहिए। हमें अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए और यह प्रयास तभी सफल होंगे जब हम अपनी भाषा को सहृदय से स्वीकार करेंगे और अपने सभी कार्य। हिंदी में निष्पादित करेंगे।

श्री ई तिर्की, प्रमुख (मानव संसाधन) ने कार्यशाला का उद्देश्य बताते हुए कहा कि कार्यशाला आयोजित करके हमारा प्रयास आपको हिंदी पढ़ाना नहीं है। हिंदी पढ़ने -पढ़ाने के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रखे हैं। हमारा उद्देश्य हमेशा यही रहता है कि जो अधिकारी व कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं और हिंदी में कार्य करने में झिझक महसूस करते हैं उन्हें कार्यशाला के माध्यम से अपना काम हिंदी में करने के लिए सक्षम बनाना है। उनकी झिझक को दूर कर उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करना है जिससे कि वे अपना कार्य हिंदी में कर सकें।

श्रीमती प्रीति सिंह, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, चंडीगढ़ ने प्रतिभागियों को हिंदी व्याकरण और वर्तनी पर व्याख्यान दिया जिससें प्रतिभागियों की कई शंकाओं का समाधान हुआ और उन्होंने इस व्याख्यान को महत्वपूर्ण बताया।

डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सहायक निदेशक(राजभाषा)एवं सचिव नराकास, चंडीगढ़ ने प्रतिभागियों को राजभाषा का महत्व एवं कार्यालयीन प्रयोग पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यालय में हिंदी में कार्य करने पर आने वाली कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए प्रतिभागियों को अभ्यास कराया और कई महत्वपूर्ण प्रेरक प्रसंग भी प्रस्तुत किए। जिसे प्रतिभागियों ने बहुत उपयोगी बताया और कहा कि निसंदेह हमारा अत्मविश्वास बढ़ा है।

श्री देश राज, सहायक राजभाषा अधिकारी ने कार्यालयीन पत्राचार पर व्याख्यान दिए। उन्होंने पत्र लेखन, नोटिंग प्रपत्र भरना, तिमाही प्रगति रिपोर्ट के प्रपत्र भरना, आवेदन करना आदि विषयों का अभ्यास कराया। इन विषयों को प्रतिभागियों ने गंभीरता से लिया और कहा कि ऐसी कार्यशाला के बाद अवश्य ही हमारे हिंदी कार्य में वृद्धि होगी।

एन टी पी सी लिमिटेड, कनिहा

उड़िसा राज्य में स्थित एनटीपीसी लिमिटेड, तालचेर-कनिहा परियोजना में समय -समय पर कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसी

श्रृंखला में, कनिहा परियोजना में कार्यरत कार्यपालकों के लिए दि.16-11-2007 को एक दिवसीस हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में कार्यपालकों के अलावा प्रशिक्षणाधीन कार्यपालक-प्रशिक्षु भी सम्मिलित हुए । हिंदी कार्यशाला के कुशल संचालन के लिए एनटीपीसी केंद्रीय कार्यालय से उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र पधारे थे । एक दिवसीय प्रशिक्षण के अधीन प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम से अवगत कराए जाने के साथ-साथ कार्यालयीन काम काज में हिंदी के प्रयोग का अभ्यासपरक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया । कुल 33 कार्यपालक इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभान्वित हुए ।

भारतीय खाद्य निगम जिला कार्यालय, अलीगढ़

एफ.सी.आई., अलीगढ़ द्वारा कृष्णा लॉज, रामघाट रोड, अलीगढ़ पर हिंदी कार्यशाला, काव्य गोष्ठी व राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया । कार्यक्रम के प्रथम सत्र में हिंदी कार्यशाला व संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें कार्यशाला व्याख्याता एवं अतिथि के रूप में डॉ. अशोक शर्मा, वरिष्ठ रीडर, हिंदी विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ ने बताया कि अंग्रेजी भाषा में कोई विशिष्टता नहीं है और उसका कोई व्याकरण भी निश्चित नहीं हैं, वहीं हिंदी भाषा विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा है और उसके व्याकरण और वर्तनी को कसौटी पर सिद्ध भी किया जा सकता है । उन्होंने राजभाषा को कार्यालयों में अधिक से अधिक अपनाने का आह्वान किया ।

अतिथि व्याख्याता के रूप में एफ.सी.आई.,क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के प्रबन्धक (हिंदी), श्री प्रेमचंद ने केंद्र सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी प्रगति निरीक्षण करने वाली उच्च अधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति के एफ.सी.आई., अलीगढ़ कार्यालय व अधीनस्थ डिपो कार्यालयों के संभावित निरीक्षण की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की । उन्होंने बताया कि संसदीय राजभाषा समिति की मुख्य/प्रधान समिति द्वारा ही अलीगढ़ कार्यालय का आगामी निरीक्षण किया जायेगा। क्योंकि इससे पूर्व संसदीय समिति की साक्ष्य एवं आलेख समिति द्वारा निरीक्षण वर्ष 2002 में किया जा चुका है। उन्होंने इस दृष्टि से कार्यालय का समस्त कार्य शत-प्रतिशत हिंदी में किये जाना अनिवार्य बताया।

कार्यक्रम के अन्य विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार व हास्य व्यंग्य कवि डॉ. नरेन्द्र तिवारी ने कहा कि हिंदी भाषा हमारी संस्कृति की संवाहिका है । हमें अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए । उन्होंने आगे बताया कि हिंदी भाषा अब बाजार की भाषा बन रही है। इसलिए उसका रूप बिगड़ रहा है । उन्होंने इसलिए इसके शुद्ध स्वरूप को अपनाने की ही जरूरत बताया । उन्होंने कहा भारत में जितने भी विदेशी चैनल दिखाए जा रहे हैं, वे बाजार की आवश्यकता के अनुसार ही हिंदी भाषा को तोड़-मरोड़ करके प्रस्तुत कर रहे हैं, जोकि उसका गौरवशाली स्वरूप नहीं है ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के. एस. श्रीवास्तव, सहायक महाप्रबन्धक (हिंदी) एफ.सी.आई. क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिला कार्यालय, अलीगढ़ के हिंदी पत्राचार के प्रतिशत में वृद्धि यह दर्शाती है कि यहां कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारी अब अपना अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिंदी में कर रहे हैं । उन्होंने यह प्रवृति बनाए रखने व शत-प्रतिशत पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभीष्ट प्रयत्न करने के लिए कहा, जिससे उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ कार्यालय शत-प्रतिशत हिंदी कार्यालय के रूप में जाना जा सके ।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में क्षेत्र प्रबंधक, श्री जे.पी. निगम ने कहा कि संवैधानिक दृष्टि से कार्यालय का हिंदी में कार्य करना आवश्यक है । और जब व्यक्ति अपने राष्ट्र से प्रेम, राष्ट्र ध्वज से प्रेम करता है तो यह हम सभी के लिए अनिवार्य है कि हमें राष्ट्र भाषा से भी प्रेम करना होगा । उन्होंने हिंदी में कार्यालय का काम करने में आने वाले कठिनाईयों के निराकरण हेतु इस प्रकार की हिंदी कार्यशालाओं को अत्यंत उपयोगी बताया ।

महानगर टेलीफान निगम लिमिटेड, नई दिल्ली-110050

महाप्रबंधक (उ.) महानगर टेलीफान निगम लि., संचार परिसर रोहणी सै. 3, रोहिणी दिनांक 6-12-07 को हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यालय में संघ की भाषा नीति पर व्याख्यान डॉ. आर. पी. सिंह, सहायक निदेशक (राभा) दूर संचार विभाग द्वारा किया गया । कार्यशाला में पचास अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया और संघ की राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं पर सारगर्भित व्याख्यान का लाभ उठाया । ■

(घ) हिंदी दिवस

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओड़िशा : भुवनेश्वर

प्रधान महालेखाकार (सी.ले.प), महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं महालेखाकार (सी.डब्ल्यू. आर.ए.)द्वारा सम्मिलित रूप से कार्यालय प्रागंण में दिनांक 14-9-2007 को बड़े धूम-धाम से मनाया गया । दिनांक 14-9-2007 अपराह्न 4.00 बजे हिंदी दिवस एवं पखवाड़े का उद्घाटन दिवस भी होने के कारण श्रीमती आत्रेई दास, महालेखाकार (सी.डब्ल्यू.आर.ए.) की अध्यक्षता में समारोह का शुभारंभ सम्मानीय अतिथि श्रीमती सुपर्णा देब, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के समक्ष मनाया गया । वरिष्ठ उप महालेखाकार प्रशासन श्री बिजय कुमार मंहान्ति अतिथियों एवं उपस्थित अधिकारियों का स्वागत करते हुए हिंदी के महत्व समझाते हुए पखवाडे के आयोजन पर होने वाले प्रतियोगिताओं के बारे में एक संक्षिप्त सूचना प्रदान किए एवं सभी कर्मचारी/अधिकारियों को भाग लेने को कहा उसके बाद लेखा एवं हकदारी कार्यालय के हिंदी अधिकारी श्री नूर अहम्मद द्वारा मान्यवर गृह मंत्री जी का हिंदी दिवस के अवसर पर देशवासियों के प्रति दिया गया संदेश को पढ़कर सुनाया गया । हिंदी दिवस के तात्पर्य को समझाते हुए वाणिज्य लेखा परीक्षा कार्यालय के उपमहालेखाकार श्री नाथ सहाय ने कहा कि हिंदी भारत वर्ष में अधिकांश लोगो द्वारा बोली और समझी जाती है एवं भारत जैसे एक स्वतंत्र सार्वभौमिक सत्ता संपन्न राष्ट्र को अपनी राष्ट्रभाषा का होना अति आवश्यक है । उन्होंने आगे कहा कि केंद्रीय सरकारी कर्मचारी अपना कार्य हिंदी में करने के लिए संकल्प ले चुके एवं हम सब मिलकर इस को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें । उन्होंने और भी कहा के हिंदी को बढ़ावा देने से क्षेत्रीय भाषाओं पर कोई आंच नहीं आती । धीरे-धीरे अभ्यास जारी रख कर लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है ।

समारोह के सम्मानीय अतिथि महालेखाकार लेखा एवं हकदारी श्रीमती सुपर्णा देब ने अपने सारगर्भित भाषण में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो चुका है केवल शासकीय कार्यों में हिंदी को अधिक प्रयोग में लाना है । उन्होंने कहा कि हमारा कर्तव्य बनता है कि हम हिंदी को उपर उठाऐं आगे चलकर उन्होंने कहा के भारत एक बहुभाषी देश हैं । वेशभूषा, परंपरा सब भिन्न होते हुए भी हम सब एक हैं । इसका कारण हमारे बीच पनप रही मजबूत कड़ी हिंदी है । उन्होंने और भी कहा कि हाल में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी को अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने का एक प्रयास है ।

अध्यक्ष श्रीमती आत्रेयी दास ने अपने संक्षिप्त अभिभाषण में कहा कि हिंदी दिवस हमें हिंदी के प्रति निष्ठा की याद दिलाता है । हिंदी हमारी पहचान और अस्मिता है । इसे ऊपर उठाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है ।

अंत में मुख्य अतिथि प्रधान महालेखाकार (सी.ए.) श्री सनत कुमार मिश्र ने तीनों कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि फिर एक बार तीनों कार्यालय द्वारा सम्मिलित रूप से हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा मनाए जाने पर अपनी हार्दिक शुभकामना देते हुए संतोष प्रकट किया । उन्होंने कहा कि हिंदी को बढ़ावा देना एवं कार्यालयों में अधिक से अधिक प्रयोग करने पर कर्मचारी अपनी रुचि देखाएं । हिंदी का सम्मान देश का सम्मान है । इसके प्रति निष्ठा बनाए रखने का आग्रह किया । तदुपरांत श्री के.सी. बेहेरा, उपमहालेखाकार के धन्यवाद प्रस्ताव से सभा समाप्त हुई ।

दिनांक 28-10-2007 को अपराह्न 2.30 बजे कार्यालय के मनोरंजन गृह में हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह तीनों कार्यालयों द्वारा धूम-धाम से मनाया गया । समारोह की अध्यक्षा श्रीमती नन्दना मुंशी ने अपने अभिभाषण में कहा कि शासन और भाषा का संबंध

बहुत गहरा है एवं किसी भी प्रशासनीय प्रणाली में भाषा की अहम भूमिका होती है । भाषा बिना राष्ट्र गूंगा कहा जाता है । उन्होंने और भी कहा कि हिंदी को तो राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा का दर्जा मिल चुका है इसका विकास करके एवं उपलब्ध तकनीकी सहायता से हिंदी को अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर लाना है । उन्होंने और भी कहा कि हिंदी पखवाड़े का तात्पर्य सरकारी काम काज में हिंदी के प्रति रूचि पैदा करना है अतः इसके प्रति निष्ठा एवं गौरव बनाए रखने का आग्रह किया ।

सम्मानीय अतिथि श्रीमती आत्रेइ दास ने अपने संबोधन में कहा की संतोष कि बात है कि तीनों कार्यालय मिलकर पखवाड़ा मना रहे हैं जिससे कार्यालय के वातावरण में एक नयापन प्रस्फुटित हुआ है । पखवाड़े के दौरान बहुत प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें अधिक कर्मचारी भाग लिए एक सम्मान का विषय है । उन्होंने कहा कि हिंदी का कोई विकल्प नहीं है ।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान महालेखाकार श्रीमान सनत कुमार मिश्र ने अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित कर्मचारीगण को देखकर संतोष प्रकट किया एवं अपने सारगर्भित भाषण में उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में एक व्यक्ति दो कारणों से उपर उठता है एक क्षमता दूसरी योग्यता । क्षमता तो किसी पद के ग्रहण से प्राप्त हो जाती है किंतु योग्यता पाने के लिये बहुत प्रयास करना पड़ता है । हिंदी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कर्मचारी इस बार बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिये इससे वे बहुत खुश हुए । अतः सभी कर्मचारियों को हिंदी में अपनी प्रतिभा बढ़ाने का सुझाव दिया । तदुपरांत आमंत्रित अतिथि कलाकारों श्री जर्ज तिआडि, सुश्री कीर्ती एवं युवा कालाकार पुपिन्दर ने अपने-अपने अनुभवों का उल्लेख करके सभी का मनोरंजन किया ।

तदुपरांत प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, सम्मानीय अतिथि एवं आमंत्रित कलाकारों के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया । उसके बाद बाल कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे ओडिशी नृत्य, फिल्मी आधुनिक नृत्य से सभा का मनोरंजन किया गया श्री के.सी. बेहेरा, वरिष्ठ उपमहालेखाकार के धन्यवाद ज्ञापन से समारोह का समापन हुआ ।

महालेखाकार (ले. प.) का कार्यालय मणिपुर, इम्फाल-795001

लेखा-परीक्षा तथा लेखा व हकदारी कार्यालयों ने संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा 14-9-2007 से 28-9-207 तक आयोति किया था। 14-9-2007 को उद्घाटन समारोह में श्री राजवीर सिंह, महालेखाकार (ले.प.) महोदय ने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी के प्रति हमारे कर्तव्यों पर जोर दिया व कार्यालय में हिंदी में कार्य करने को प्रोत्साहित किया । महालेखाकार महोदय ने हिंदी कार्य को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार के प्रतियोगिताओं में ज्यादा से ज्यादा उम्मीदवारों ने भाग लेकर पखवाड़ा को सफल बनाने की अपील की।

इस हिंदी पखवाड़े के दौरन – हिंदी पत्राचार, हिंदी भाषण, हिंदी टिप्पण, हिंदी गीत, हिंदी-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, गायन (कविता), हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतलेखन एवं हिंदी हस्त-लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था । इसमें अनेक प्रतिभागियों नें भाग लिया । जिन्होंने इस प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किए थे, उन सभी को मुख्य अतिथि महोदय के करकमलों से नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान की गई थी ।

कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) लेखा कार्यालय, गोलाबारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411003

लेखा कार्यालय, गोलाबारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में दिनांक 3-9-2007 से 14-9-2007 के दौरान हिंदी पखवाड़ा बड़े जोर-शोर से मनाया गया । संभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूर्ण उत्साह से इसमें भाग लिया । राजभाषा के प्रसार के उद्देश्य से इस दौरान (i) हिंदी निबंध प्रतियोगिता, (ii) हिंदी टिप्पण/प्रारूप लेखन तथा अनुवाद प्रतियोगिता और (iii) हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता, इन 3 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार रु. 1200, द्वितीय पुरस्कार रु. 1100 एवं तृतीय पुरस्कार रु. 1000 प्रदान किया गया ।

दिनांक 14-9-2007 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल 27 अधिकारियों/कर्मचारियों को नक़द पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए तथा साथ ही वर्ष 2006-07 के दौरान अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने वाले 10 कर्मचारियों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रशंसापत्रों का वितरण श्री बनवारी स्वरूप, भा.र.ले.से., वित्त एवं लेखा नियंत्रक, केजीएफ महोदय के कर कमलों द्वारा किया गया । इस अवसर पर श्रीमती एच. के. पन्नू, भा.र.ले.से., रक्षा लेखा महानियंत्रक, नई दिल्ली का हिंदी दिवस संदेश पढ़ा गया । नियंत्रक महोदय ने अपने भाषण में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की अपील की । उन्होंने कहा कि कार्यालय के सभी कंप्यूटरों परद्विभाषी सुविधा उपलब्ध कराई गई है और संबंधित अनुभाग के कंप्यूटर में हिंदी में अनुदित प्रोफार्मे लोड किए हैं । अत: कंप्यूटरों का पर्याप्त उपयोग करते हुए हिंदी पत्राचार को लक्ष्य तक पहुंचाया जाए । कार्यालय में वर्ष के दौरान हिंदी में सबसे अधिक कार्य करने वाले लागत-III अनुभाग को चल शील्ड, नियंत्रक (फै.) महोदय के द्वारा प्रदान की गई ।

परमाणु ऊर्जा विभाग, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, पखनि सम्मिश्र प्रताप नगर, सेक्टर-5 विस्तार बंबाला, सांगानेर, जयपुर-302032

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 4-1-2008 को आयोजित 58वीं बैठक में विश्व हिंदी दिवस आयोजन के संबंध में लिए निर्णय की अनुवर्ती कार्रवाई की अनुपालना में दिनांक 10 जनवरी, 2008 को पखनि/पक्षेत्र, जयपुर में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने अपने उद्घाटन भाषण में विश्व हिंदी दिवस के संबंध में अपने उद्गार प्रकट किए । विश्व हिंदी दिवस के बारे में बताते हुए उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति एवं इस संबंध में भविष्य की संवभावनाओं पर प्रकाश डाला साथ ही उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने विश्व हिंदी दिवस के महत्व से भी सभी को परिचित कराया । मुख्य अतिथि डा. रवि श्रीवास्तव ने **विश्व भाषा के रूप में हिंदी** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । डा. श्रीवास्तव ने अपनी ओजस्वी एवं धाराप्रवाह वाणी में विश्व हिंदी दिवस आयोजनों की सार्थकता के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए । उन्होंने आह्वान किया कि जब तक प्रत्येक भारतीय मन से विदेशी भाषा के प्रति अपने समर्पण को त्याग कर हिंदी को सम्मान नहीं देगा तब तक हिंदी को संयुक्त राज्य की भाषा का दर्जा दिलाना अत्यंत दुष्कर रहेगा । साथ ही उन्होंने अंग्रेजी के प्रति आम लोगों के आकर्षण के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश में बढ़ते हुए पूंजीवाद के कारण ही लोगों में विदेशी भाषा के प्रति ललक बढ़ती जा रही है । डा. रवि श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान में अखबारों में हिंदी के साथ अंग्रेजी के अनावश्यक प्रयोग को भी गलत बताया एवं इसे भाषाई प्रदूषण की संज्ञा देते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी को विश्व स्तर पर अपना मुकाम दिलाने में मीडिया का सर्वाधिक योगदान आवश्यक है परंतु ऐसे सार्थक प्रयासों की अभी कमी है ।

द्वितीय सत्र में पखनि/पक्षेत्र के श्री अजय कुमार पाढी, वैज्ञानिक अधिकारी-ई ने वैज्ञानिक विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । श्री अजय कुमार पाढी ने **यूरेनियम का सफर ; चट्टानों से रिएक्टर** तक विषय पर ऑडियो-विजुअल प्रस्तुतिकरण के साथ व्याख्यान प्रस्तुत किया । अपने प्रस्तुतिकरण उन्होंने यूरेनियम के सर्वेक्षण, अन्वेषण, खनन, शुद्धिकरण एवं रिएक्टर में उसके प्रयोग के संबंध में जानकारी दी । श्री अजय कुमार पाढी ने यूरेनियम से विद्धुत बनाने की प्रक्रिया से सभी को अवगत कराया । अपने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से उन्होंने परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय तथा परमाणु ऊर्जा विभाग की गतिविधियों से भी सभी को अवगत कराया ।

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा

भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा में दिनांक 10 जनवरी, 2008 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन (पारामारिबो, सूरीनाम) में पारित किए गए विभिन्न विषयों में से एक विषय था : विश्व हिंदी दिवस का आयोजन । चूंकि 10 जनवरी को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया

था, अतः इसी दिन विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाना निर्धारित किया गया है । इस संयंत्र में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन वर्ष 2006 से किया जा रहा है ।

विश्व हिंदी दिवस के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. रश्मि वार्ष्णेय, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस हमारे लिए गौरव और स्वाभिमान का दिवस है । इस दिवस का विचार 1975 में ही पहले विश्व हिंदी सम्मेलन के साथ-साथ पनप चुका था । लेकिन इस विचार ने 7वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान मूर्त रूप लिया, जब सूरीनाम में इस दिवस को कार्यसूची में शामिल कर के पारित किया गया । अब तो हिंदी संयुक्त राष्ट्र की राजभाषा बनने के लिए भी तैयार हो चुकी है और उसे राजभाषा बनाए जाने के पक्ष में अपेक्षित वातावरण भी है । इस दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र संघ में आयोजित 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन का अत्यंत महत्व है ।

महाप्रबंधक श्री भौमिक ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि असम-अरुणाचल प्रदेश में भी हिंदी में बात की जा सकती है और चैन्ने जैसी जगह में भी हिंदी के माध्यम से अपना काम किया जा सकता है क्योंकि देश के कोने-कोने में लोग इसे समझते हैं । हिंदी आपसी बात-चीत की भाषा है, इसलिए इसे हमें और आगे बढ़ाना है । इससे जिन लोगों को हिंदी कम आती है, वे भी इसमें पारंगत हो कर अपना काम हिंदी में कर सकें ।

इस अवसर पर डॉ. गवली ने संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्व हिंदी सम्मेलन का महत्व विषय पर अपनी वार्ता प्रस्तुत की । इसके बाद में लोक-कला कठपुतली-प्रस्तुति के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया गया ।

अन्तरिक्ष विभाग, बेंगलूर

दिनांक 10 जनवरी, 2008 को बेंगलूर स्थित अन्तरिक्ष विभाग में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । इस उपलक्ष्य में विभाग के बेंगलूर में स्थित सभी कार्यालयों के कार्मिकों के लिए हिंदी में अन्ताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । प्रतियोगिता के बाद आयोजित समापन समारोह में श्रीमती एस.एन. भाग्यलक्ष्मी, अंतरिक्ष विभाग की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने स्वागत भाषण दिया और समारोह की सफलता की आशा व्यक्त की । अंतरिक्ष विभाग के सचिव, श्री माधवन नायर ने समारोह की अध्यक्षता की । उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए और अपना संतोष व्यक्त करते हुए सभी को हिंदी के प्रति उनके कर्तव्य की याद दिलाई । उन्होंने कहा कि हिंदी केवल समारोह तक सीमित न रह जाए, इसका कार्यालय के दैनन्दिन कार्य में अधिकाधिक उपयोग किया जाए ।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना, पिन-931714, द्वारा 99 सेना डाकघर

मुख्यालय में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2007 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस/पखवाड़े का उद्घाटन परियोजना के मुख्य अभियंता महोदय, ब्रिगेडियर बी.डी. पाण्डे, सेना मेडल ने दिनांक 01 सितम्बर, 2007 को 11.30 बजे दीप जलाकर किया ।

इस दौरान तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला, हिंदी तथा हिंदीतर भाषी (अन्य भाषा भाषी) कर्मचारियों के लिए हिंदी से संबंधित हिंदी निबंध, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी टंकण, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग (सिर्फ हिंदीत्तर/अन्य भाषा भाषियों के लिए) तथा हिंदी में अधिक काम का अलग-अलग आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं के प्रत्येक ग्रुप में प्रथम,द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार के पात्र प्रतियोगियों को समापन समारोह के दौरान 14 सितम्बर, 2007 को ब्रिगेडियर बी.डी. पाण्डे, सेना मेडल, मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना ने नकद पुरस्कार/उपहार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए ।

इस अवसर पर मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि "हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करने का उद्देश्य हिंदी के काम को बढ़ावा देना है । हिंदी में सरकारी काम करने की लगन को पूरे साल बनाए रखें तथा अपना अधिक से अधिक दैनिक कार्य हिंदी में करने की पूरी कोशिश करें तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफल माना जा सकेगा ।"

1752 HA/08—6A

पूर्ति तथा निपटान महानिदेशालय, नई दिल्ली

पूर्ति तथा निपटान महानिदेशालय में दिनांक 1-9-2007 से 14-9-2007 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । सभी प्रतियोगिताओं में कुल 70 प्रतिभागिओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

अक्तूबर, 2007 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया । महानिदेशक (पूर्ति तथा निपटान) ने समारोह की अध्यक्षता की । उन्होंने अपने संबोधन भाषण में कहा कि शनैः शनैः हमें सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए । साथ ही उन्होंने अधिकतम सरकारी कामकाज हिंदी में करने की प्रेरणा देते हुए प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागिओं को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया ।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर तथा बोर्ड के सभी आंचलिक/क्षेत्रीय निदेशालयों में दिनांक 3-9-2007 से 14-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा तथा दिनांक 14-9-2007 को हिंदी दिवस मनाया गया ।

मुख्यालय, नागपुर में दिनांक 3-9-2007 को श्री वे. परमेश्वरन, निदेशक, केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड ने दीप प्रज्जवलित करके हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया ।

निदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में यह कहा कि "हमारे देश में जिस प्रकार त्यौहार आदि समय-समय पर मनाये जाते हैं, इसके पीछे एक आध्यात्मिक परंपरा है । हिंदी पखवाड़ा या दिवस मनाने के पीछे कोई आध्यात्मिक या सांस्कृतिक परंपरा नहीं है" हिंदी हमारे देश की भाषा है इसे विकसित एवं गौरवान्वित करना हमारा फर्ज है । यदि हम सभी लोग सही दिल से हिंदी को अपना लें तो भारत में हर वर्ष हिंदी दिवस/पखवाड़ा मनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

श्री एल.के. गौड़, उप निदेशक (शिक्षा) ने निदेशक महोदय का स्वागत किया तथा अपने स्वागत भाषण में कहा कि हमें हिंदी में कामकाज करने में अपने को गौरवान्वित महसूस करना चाहिए ताकि हिंदी को विश्व की भाषाओं में सही दर्जा मिल सके ।

इस अवसर पर मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी श्री एम. आरुमुगम, वित्तीय सलाहकार, श्री टी.सी. दास, उप निदेशक (प्रशासन), श्री एन.एच. भद्रे, उप निदेशक (मुख्यालय) तथा श्री बी.वी. रमेश बाबू, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अपने विचार व्यक्त किए ।

पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण-आलेखन, श्रुत-लेखन एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता में अधिकांश अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कमर्शियल चौक, दरभंगा

पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय दरभंगा का हिंदी दिवस समारोह, कार्यालय परिसर में धूमधाम से मनाया गया । अध्यक्षता, क्षेत्रीय कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस.के. मल्लिक द्वारा की गई । समारोह का उद्घाटन सी.एम. कॉलेज, दरभंगा के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ प्रभाकर पाठक ने किया जो मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिष्ठित थे । विशिष्ट अतिथि के रूप में, मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा के हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री दिनेश झा ने समारोह को सुशोभित किया था ।

अतिथियों ने राजभाषा के संबंध में उद्गार व्यक्त करते हुए राष्ट्र के वर्तमान माहौल में हिंदी की उपादेयता पर अपने विचार सशक्त ढ़ंग से व्यक्त किए ।

समारोह में पंजाब नेशनल बैंक, दरभंगा क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के बीच संपन्न प्रतियोगिता के पुरस्कार बांटे गए ।

दूरदर्शन केंद्र, मुंबई

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्र में 14 सितम्बर, 2007 से 29 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान निदेशक महोदय का कर्मचारी सदस्यों के नाम निदेश, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नियमों, वार्षिक कार्यक्रमों की जानकारी देना, सभी अनुभागों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपना कार्यालयीय कार्य हिंदी में करने के

1752 HA/08—6B

लिए आदेश जारी करना इत्यादि कार्यक्रम किये गये । कर्मचारी सदस्यों में हिंदी के प्रति अभिरुचि जागृत करने तथा उनके उत्साहवर्द्धन के लिए हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा :– हिंदी निबंध, टिप्पण–आलेखन, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, मौलिक हिंदी कविता एवं कहानी लेखन इत्यादि का आयोजन किया गया । पुरस्कार विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए दिनांक 15 नवम्बर, 2007 को अपराह्न 3.00 बजे केन्द्र के सभागार में एक समारोह का आयोजन किया गया । समारोह की अध्यक्षता माननीय निदेशक श्री लक्ष्मेंद्र चोपड़ा जी ने की ।

मुख्य अतिथि निदेशक महोदय एवं मुख्य वक्ता के कर कमलों द्वारा पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण–प्रत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किये गये । इस अवसर पर केंद्र के 50 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री शरद खासगीवाल साहब ने कहा कि हिंदी जोड़ने वाली भाषा है । यह हमारे आत्म सम्मान एवं आत्म गौरव की प्रतीक है । हमें अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करना चाहिए । मुख्य अतिथि श्री नंद किशोर नौटियाल जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमें अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए । अब हिंदी के बिना काम चलने वाला नहीं है । वह दिन दूर नहीं जब हिंदी वास्तविक अर्थों में अपनी प्रतिष्ठा और गौरव को प्राप्त कर सकेगी । निदेशक महोदय ने कहा हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो देश के कोने–कोने में बोली और समझी जाती है, हिंदी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और उसका भविष्य उज्जवल है ।

एमएसएमई–विकास संस्थान, शाखा, सिउड़ी

दिनांक 14–9–2007 को सुबह 10.30 बजे संस्थान के सभागृह में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता सहायक निदेशक प्रभारी श्री तापस साहा (काँ/मृ) ने की । श्री साहा ने हिंदी दिवस को देश में मनाए जाने का महत्व एवं उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को अवगत किया कि इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा । आप इस कार्यक्रम में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं ।

श्री सिंग, आधिकारिक, विश्वभारती जी ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी अपनी सरलता व सुगमता के कारण प्रसिद्ध है । और यह आसानी से पढ़ी व लिखी जाने वाली जनसाधारण की भाषा है । सन् 1949 सितम्बर में हिंदी को मान्यताप्राप्त हुई उन्होंने अधिकारियों/ कर्मचारियों का आधिकारिक कार्य हिंदी में करने के लिए अभिप्रेरित किया । हम अभी यह संकल्प करें कि, इसके बाद एक दूसरे से हिंदी में बात करेंगे । नोटिंग, ड्राफटिंग आदि हर मिसिल में हिंदी में लिखने की कोशिश करेंगे । तथा सभी को हिंदी दिवस की शुभकामना सहित अपना भाषण समाप्त किया ।

श्री तापस साहा ने इस कार्यालय को निम्न श्रेणी लिपिक श्री बासुदेव घोष को हिंदी टंकण परीक्षा में पास करने पर हार्दिक अभिनन्दन किया। उनका सार्टिफिकेट उनके हाथ में दिया गया ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून में हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14–9–2007 से 28–9–2007 तक मनाया गया । दिनांक 14–9–2007 को कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । इस अवसर पर दृष्टिबाधितार्थ राष्ट्रीय संस्थान के भूतपूर्व निदेशक श्री एस.पी. बहुगुणा मुख्य अतिथि ने कहा कि हम कितने ही अनुसंधान कार्य करें किन्तु उस अनुसंधान को किस व्यक्ति/स्तर तक जाना है । हमें इसका ध्यान रखना चाहिए । अनुसंधान में निष्कर्षों का लाभ तभी मिलेगा जब वह कृषक तक उसकी अपनी भाषा में पहुंचेगा । इतिहास बताता है कि 1650 तक इंग्लैंड में कार्यालय की भाषा फ्रेंच थी । उस समय अंग्रेजी किसानों/मजदूरों व गंवारों की भाषा समझी जाती थी । उसके बाद 1651 में फ्रेंच व लैटिन को मिलाकर अंग्रेजी बनाई गई । हमारे देश में संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव कोलकाता से आया । आज अंग्रेजी पूरे भारतवर्ष में घर कर गई है किन्तु हमारे मन में जो विचार आते हैं वे मातृभाषा में ही आते हैं । हमें हिंदी को रोजगार से जोड़ना होगा । कुछ सुविधा सम्पन्न लोगों ने हिंदी का उत्थान नहीं होने दिया क्योंकि हिंदी यदि अपने प्रतीक्षित पद पर पहुंच गई तो उनकी अंग्रेजी भाषा वाला प्रभाव समाप्त हो जाएगा । अंग्रेजी के मोह के कारण हमें भ्रम हो गया है कि यदि हम अंग्रेजी नहीं पढ़ेंगे तो पिछड़ जाएंगे । यदि हमें अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो हमें हिंदी को अपनाना होगा ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ. पी. एन. मिश्रा ने कहा कि किसी भी देश की राजभाषा उसकी पहचान होती है । भारतवर्ष की राजभाषा हिंदी बने हुए लगभग 58 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं किन्तु अभी तक विशेषरूप से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को उतना बढ़ावा नहीं मिल पाया है जितना अपेक्षित है । हालांकि विगत कुछ वर्षों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में तेजी आई है तथा सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में भी हिंदी को गति मिली है । हिंदी हमारी अस्मिता की प्रतीक है हम सबका प्रथम कर्तव्य होना चाहिए कि हम अपनी राजभाषा राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाते हुए इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाएं । उन्होंने केंद्र के वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि विज्ञान के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के माध्यम से अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुंचाने का कार्य करें तभी हमारे अनुसंधान अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे ।

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत कार्यालय में निबंध, टिप्पण-आलेखन, प्रश्नोत्तरी, काव्य पाठ, सुलेख एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

दिनांक 28-9-2007 को कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया । समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री गुरूनारायण दूबे ने मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया अपने संबोधन में उन्होंने हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को सभी को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि 1002 में महमूद गजनवी भारत में आया और मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना होने लगी तभी से हमारी भाषा पर एक प्रहार शुरू हो गया हमें जबरदस्ती उर्दू और फारसी में घसीटा जाने लगा । इस प्रहार से पार पाने के लिए मध्यकालीन भारत में तुलसीदास आदि ने हिंदी का प्रचार-प्रसार अवधी, बृज आदि में करना शुरू किया । 1817 में एक पादरी रैबरैण्ड एडम ने पूरे देश का भ्रमण किया तो उसने देखा कि यह देश एक जुट है, उसे बताया गया कि बनारस से हमारी संस्कृति का बीज भारतीयों के हृदय में बोया जाता है । वह बनारस पहुंचा उसने देखा कि बनारस में संस्कृत के कई विद्वान हैं । वह मैकाले के पास पहुंचा और उसने कहा कि यदि इस देश में संस्कृत बनी रहेगी तो भारत में हमारा साम्राज्य नहीं फैल सकता । 1817 में उसने बृजभाषा अवधी व खड़ी बोली को मिलाकर हिंदी भाषा नाम दिया । मैकाले ने जब अंग्रेजी शुरू की तो कहा कि सरकारी नौकरी उसे मिलेगी जिसे अंग्रेजी आती हो तो अंग्रेजी का चलन हो गया । उस समय मैकाले ने अपनी मां को एक पत्र लिखा था कि हम अंग्रेज 50 साल बाद देखेंगे कि भारतीय केवल रंग व रूप में भारतीय रहेंगे किन्तु वे रहन-सहन विचार से अंग्रेज होंगे । तभी से अंग्रेजी इस देश में सरकारी काम-काज में पूरी तरह रच बस गई । अंग्रेजों ने सोचा कि अगर उन्होंने अंग्रेजी को इस देश इस तरह थोपा तो विद्रोह हो जाएगा अतः उन्होंने दो विश्वविद्यालय एक फारसी का कलकत्ता व संस्कृत का बनारस में स्थापित किए । बनारस में देश के कोने-कोने से लोग आकर संस्कृत पढ़ने लगे तो अंग्रेजों को लगा कि संस्कृत भी बंद होनी चाहिए । उन्होंने इस देश में संस्कृत पर भी प्रहार प्रारम्भ कर दिया । सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ तो संविधान सभा ने यह महसूस किया कि इस देश की एक राजभाषा होनी चाहिए अतः 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को इस देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया । किसी भी राष्ट्र के प्राथमिकता के अनुसार पांच चाजें आवश्यक हैं – एक भाषा (2) एक प्रधान (3) एक निशान (4) एक विधान (5) एक स्थान । स्थान से तात्पर्य है कि न्यूजीलैण्ड, बेस्ट इंडीज इत्यादि देश छोटे-छोटे द्वीप समूहों में हैं किन्तु एक भाषा होने के कारण एक देश हैं तथा पाकिस्तान एक देश था किन्तु अलग-अलग भाषा होने के कारण दो भागों में विभक्त हो गया । कार्यक्रम में केन्द्र के प्रभारी डॉ. एम.एम. भट्ट ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो हम सबको कश्मीर से कन्याकुमारी व कच्छ से कामरूप तक एक सूत्र में पिरो रही है । हमें अपनी राष्ट्रभाषा/राजभाषा का सम्मान करना चाहिए इसके प्रचार-प्रसार के लिए समेकित प्रयास करने चाहिए । आज हिंदी जिस गति से आगे बढ़ रही है उससे प्रतीत होता है एक दिन अवश्य ही वह अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लेगी । उन्होंने कहा कि मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि इस कार्यालय में हिंदी में बहुत कार्य हो रहा है । हमें इस स्थिति को बनाए रखना है तथा उत्तरोत्तर प्रगति करनी है ।

इससे पूर्व कार्यालय में आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए ।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान केंद्रीय रेशम बोर्ड, रांची

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन दिनांक 14-09-2007 को किया गया । इस अवसर पर संस्थान के संयुक्त निदेशक (प्रशा.) श्री पी. कच्छप ने समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों व मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रांची विश्वविद्यालय रांची के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. रवि भूषण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इक्कीसवीं सदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों का यह महत्वपूर्ण दायित्व है कि वे अपनी उपलब्धियों को जनता की भाषा में जनता तक पहुंचाएं एवं सदियों से जनसामान्य में प्रचलित शब्दावलियों का संग्रह कर उन्हें वैज्ञानिक साहित्य में समुचित स्थान दें ताकि इससे जनसामान्य को लाभ हो सके। भाषा की महत्ता एवं उपादेयता पर उन्होंने विभिन्न दृष्टियों से प्रकाश डाला एवं कहा कि किसी भी स्थिति में अंग्रेजी जीवन की भाषा नहीं हो सकती है । जीवन की भाषा हिंदी ही है। अंग्रेजी सत्ता एवं साम्राज्य की भाषा है जबकि हिंदी जनसामान्य की भाषा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं संस्थान के संयुक्त निदेशक श्री एस.आर. विश्वकर्मा ने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों को रेशम उद्योग में अनुसंधान के अतिरिक्त जनसामान्य में प्रचलित आरंभिक शब्दावली की खोज करनी चाहिए। उन्होंने संस्थान में हो रहे हिंदी के कार्यों की भी प्रशंसा की। श्री बी.एम. के सिंह, उपनिदेशक ने अध्यक्ष, केंद्रीय रेशम बोर्ड के संदेश का वाचन किया। श्रीमती शोभा बेक श्रीमती सुष्मिता दास, श्रीमती कृष्णा पुरी आदि ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभायी। धन्यवाद ज्ञापन श्री.पी.आर.शर्मा, उपनिदेशक (लेखा व प्रशासन) ने किया।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 29-09-2007 को किया गया।

तदुपरांत संस्थान के निदेशक डॉ.एन.सूर्यनारायण द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया।

अधिकारियों एवं प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.एन.सूर्यनारायण ने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक कामकाज हिंदी में करें। इसके साथ ही समस्त भारतीय भाषाओं के विकास पर भी ध्यान दें। संस्थान के संयुक्त निदेशक श्री सीता राम विश्वकर्मा ने भी इस अवसर पर अपना विचारोत्तेजक वक्तव्य दिया। डॉ.एन.जी.ओझा, वैज्ञानिक-डी ने माननीय गृह मंत्री एवं वस्त्र मंत्री, भारत सरकार का संदेश वाचन किया। कार्यक्रम के अंत में श्री विश्व मोहन कुमार सिंह, वैज्ञानिक-डी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदुस्तान फोटो फिल्म्स मैन्युफेक्चरिंग कंपनी लि.

कंपनी के प्रधान कार्यालय उटकमण्ड में दिनांक 14 सितंबर, 2007 से हिंदी सप्ताह के सिलसिले में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी:

हिंदी निबंध, हिंदी टंकण, हिंदी प्रश्न मंच, हिंदी पोस्टर प्रतियोगिता, हिंदी भाषण प्रतियोगिता और हिंदी गीत प्रतियोगिता तथा केंद्रीय विद्यालय के छात्रों के लिए हिंदी क्विज प्रतियोगिता आदि।

दिनांक 25-01-2008 को श्री पी जगदीश्वरन, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष की अध्यक्षता में हिंदी भाषण प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता व पुरस्कार वितरण संपन्न हुआ।

एन.एच.पी.सी. बनीखेत, जिला चंबा

एन.एच.पी.सी.क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत में निगम मुख्यालय से प्राप्त निदेशों के अनुपालन में हिंदी पखवाड़ा/दिवस पूरे भाषायी सद्भाव एवं भव्यता के साथ संपन्न हुआ। 1सितंबर, 2007 को पखवाड़े का शुभारंभ हुआ। पखवाड़े का शुभारंभ माननीय कार्यपालक निदेशक क्षेत्र-II श्री नैन सिंह द्वारा दीप प्रज्जवलित करके हुआ। तदोपरांत केंद्रीय विश्वविद्यालय के नन्हें छात्रों द्वारा मनमोहक सरस्वती वंदना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सर्वप्रथम श्री नानक चंद, प्रबंधक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित कार्मिकों का स्वागत करते हुए हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री नैन सिंह ने कहा कि देश के बहुमुखी विकास के लिए हिंदी भाषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और इस भाषा की उपेक्षा करके हम विकास की कल्पना नही कर सकते। उन्होंने कहा कि क्षेत्र-II में हिंदी का विकास करने हेतु हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं और इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप क्षेत्र-II कार्यालय में राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य हो रहा है। उन्होंने आगे कहा कि सुधार की गुंजाइश अभी और है, और इसे सुधारने हेतु हमें मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया इस अवसर पर क्षेत्र-II अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'सरकारी कार्यालयों में राजभाषा की स्थिति' विषय से संबंधित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। पूरे पखवाड़े के दौरान कार्मिकों हेतु अनुवाद एवं शब्दावली, निबंध तथा नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त केंद्रीय विद्यालय, बनीखेत के स्कूली बच्चों हेतु अलग-अलग श्रेणी की कक्षाओं के बच्चों हेतु भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिनके विजेता प्रतिभागियों को हिंदी पखवाड़े के समापन पर क्षेत्र-II के कार्यपालक निदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पुरस्कार प्रदान किए।

भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड, बेंगलूर कॉम्प्लेक्स

बेंगलूर स्थित भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड के बेंगलूर इंजन प्रभाग में दिनांक 14-09-2007 को हिंदी दिवस प्रतिज्ञा के साथ हिंदी दिवस समारोह बडे उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ शुरू किया गया। श्री पी. मुरूगेसन, उपमुख्य महाप्रबंधक(मा.सं.) ने प्रभाग के अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिंदी दिवस प्रतिज्ञा दिलाया तथा सभी अधिकारी/कर्मचारी ने उसे दोहराया।

इस उपलक्ष्य में दि. 21-09-2007 को अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें बेमल बेंगलूर कॉम्प्लेक्स कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी, ने बड़े उत्साह से भाग लिया। श्री पी.मुरूगेसन, उपमुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने भाषण में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कर्मचारियों से जुड़े रहने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी का कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए सभी को व्यक्तिगत रूप से प्रयास करने होंगे। हिंदी सारे भारत में बोली एवं समझी जानेवाली भाषा है। इसे अवश्य सीखना चाहिए।

कार्यशाला में राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएँ, बेंगलूर के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ.पी.एस.आर. मूर्ति ने प्रतिभागियों को एल.सी.डी.पॉवर प्वाइंट प्रोजेक्टर के माध्यम से राजभाषा नियम, अधिनियम, सांवैधानिक उपबंधों के बारे में समझाया। कार्यशाला के सत्र के अंत में प्रतिभागियों के मन में हिंदी के प्रति हुई शंकाओं का समाधान कराया गया। कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिये सभी 25 प्रतिभागियों ने कार्यशाला का लाभ उठाया।

सामूहिक कार्यालय से पधारे राजभाषा अधिकारी श्री जे.आर.गोपालकृष्णन ने राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में बेमल द्वारा की जा रही उन्नत गतिविधियों तथा हिंदी से संबंधित विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के बारे में प्रतिभागियों कों अवगत कराया। सुश्री अनुसुया गौड़, हिंदी अनुवादक ने स्वागत भाषण दिया तथा सुश्री सस्मिता, सहायक प्रबंधक(मा.सं.) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

हिंदी दिवस के सिलसिले में अहिंदी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए तीन हिंदी प्रतियोगिताएं यथा निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी तथा अंत्याक्षरी, आयोजित की गयीं। इन सभी प्रतियोगिताओं में भी अधिक संख्या पर प्रतियोगीयों ने बड़े उत्साह से भाग लिये।

पारादीप पत्तन न्यास

14 सितम्बर, 2007 को पारादीप पत्तन न्यास के हिंदी प्रशिक्षण केंद्र में पत्तन न्यास के उपाध्यक्ष श्री सुब्रत त्रिपाठी ने हिंदी दिवस समारोह को दीप जलाकर उद्घाटन किया। अपने वक्तव्य में उपाध्यक्ष ने अपने अनुभव के बारे में बताते हुए कहा कि हिंदी ऐसी भाषा है जोकि सारे देश को एक सूत्र में जोड़ती है। हिंदी ही हमारी संपर्क भाषा है जो मातृभाषा के परे नहीं है और यह एकता का प्रतीक है। हिंदी दिवस समारोह

को पत्तन न्यास में हिंदी पखवाड़े के रूप में मानते हुए स्कूली बच्चों, अधिकारियों/कर्मचारियों, विभागाध्यक्षों, पत्तन तथा अन्य परिवार की महिलाओं, पत्रकारों तथा महिला क्लबो के बीच निबंध, टिप्पण तथा प्रारूप लेखन, भाषण, कहानी लेखन, हस्ताक्षर लेखन तथा संगीत प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

हिंदी दिवस का समापन समारोह 6 अक्तूबर, 2007 को आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पत्तन न्यास के अध्यक्ष श्री के. रघुरामप्या ने कार्यालयी कार्यों में हिंदी के अधिक व्यवहार के लिए सभी के सहयोग की कामना की। उन्होंने राजभाषा हिंदी के ठोस कार्यान्वयन के लिए अपना संपूर्ण योगदान हेतु आश्वासन दिया। उन्होंने हिंदी दिवस समारोह को सुचारू रूप से आयोजित करने के लिए हिंदी अधिकारी श्री एन.के.पटनायक तथा सचिव श्री पी.के. नन्द का ध न्यवाद किया। हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को अध्यक्ष श्री रघुरामप्या ने पुरस्कार से सम्मानित किया। अंत में स्कूली बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। हिंदी दिवस का अंतिम समारोह का आनंद लेने के लिए पत्तन न्यास के अधिकारी, कर्मचारियों के अलावा पत्तन व्यवहारकर्ताओं तथा पत्तन शहर में रहने वाले लोग बड़ी तादाद में उपस्थित थे।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, परवाणु

14 सितम्बर 2007 को क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, परवाणु में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय व शाखा कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस समारोह कि अध्यक्षता श्री पी. के.एन.नम्बूदरी, क्षेत्रीय निदेशक ने की। डा.एस.के.सतीजा, एस.एम.ओ. कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल,परवाणु, समारोह के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम का संचालन श्री चन्द्रशेखर, उच्च श्रेणी लिपिक ने किया।

क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने हिंदी दिवस की प्रासंगिकता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी पूरे देश की संपर्क भाषा तथा केंद्रीय सरकार और बहुत से राज्यों की राजभाषा है। हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करना संविधान मनीषियों का सोचा समझा निर्णय था। इसके प्रयोग से हमारे देश की एकता मजबूत होती है और साथ ही हिंदी में हम अपनी सहज अभिव्यक्ति करने में समर्थ होते हैं । हिंदी के प्रयोग में क्षेत्रीय कार्यालय में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने हिंदी के प्रयोग का महत्व देते हुए अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया। डा. सतीजा ने भी हिंदी के प्रयोग के बारे में विस्तृत रूप से विचार रखे।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय, गुवाहाटी

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, क्षेत्रीय मुख्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र) के कार्यालय में दिनांक 14 सितंबर, 2007 को "हिंदी दिवस" हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

श्री एम.एल.चक्रवर्ती, संयुक्त महाप्रबंधक (संचार, भंडार व सू.प्रौ) ने हिंदी भाषा की तकनीकी पक्ष को रेखांकित करते हुए इस भाषा की महत्ता का वर्णन किया। श्री ए.एन.विश्वनाथ, महाप्रबंधक (विमान क्षेत्र) ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी को उच्च कोटि की भाषा बताते हुए कहा कि इस भाषा के सर्वव्यापी होने का कारण है यह कि यह आम जनता की भाषा है। अपनी लचीली प्रकृति के कारण यह विश्व मंच पर आसीन होने की भी क्षमता रखती है।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में तत्कालीन कार्यपालक निदेशक (पूर्वोत्तर क्षेत्र) श्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि राजभाषा हिंदी को उसके अपने उचित स्थान पर प्रतिष्ठित करने/कराने के लिए, हमें हर प्रकार के पूर्वग्रहों से मुक्त होकर सच्चे हृदय से अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को अपनाना होगा।

अपने संभाषण में श्री ए.एन.विश्वनाथ, महाप्रबंधक (विमान क्षेत्र) ने कहा कि हिंदी को महज कार्यालयीन कामकाज तक सीमित न रखते हुए इसे अन्य क्षेत्रों में भी आगे ले जाने की जरूरत है तभी इसका प्रचार-प्रसार और अधिक संभव हो सकेगा।

महाप्रबंधक (संचार) श्री आर.के. सूद ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा कि इस बार हिंदी पखवाड़े

के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के समाचार तथा पुरस्कृत होने वाले प्रतियोगियों के नाम महत्वपूर्ण स्थानीय दैनिकों में छपना सुखद आश्चर्य है। मिडिया में पहली बार इस तरह की चीजें आयी हैं। आशा है भविष्य में भी यह परंपरा जारी रहेगी।

अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देने से पूर्व अध्यक्ष महोदय ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के सफल कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों को प्रमाणपत्र के साथ नकद पुरस्कार प्रदान किया। उनके निदेश पर श्री आर.के.सूद, महा-प्रबंधक (संचार) तथा श्री ए.एन. विश्वनाथ, महाप्रबंधक (विमान क्षेत्र) ने भी सफल कार्मिकों को नकद पुरस्कार व प्रमाणपत्र वितरित किया। इस प्रकार सफल प्रतियोगियों के बीच कुल 21,605रु. (इक्कीस हजार छह सौ पॉच रुपये मात्र) नकद पुरस्कार स्वरूप वितरित हुए।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कार्यपालक निदेशक (पूर्वोतर क्षेत्र) श्री सुभाष चन्द्र शर्मा ने कहा कि हिंदी की सरल प्रकृति को देखकर ही इसे संघ सरकार के सरकारी कामकाज की भाषा बनायी गई ताकि जनता यह जान सके कि संघ सरकार उनके लिए क्या-क्या कर रही है। संघ सरकार और जनता के बीच संवादहीनता से बचने के लिए हिंदी को सच्चे हदय से अपनाने की जरूरत है। उन्होंने अपने भाषण में आगे कहा कि सभी उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों व कर्मचारियों को मुझे यह वचन देना होगा कि आज से सभी अपने हस्ताक्षर हिंदी में करेंगे। हिंदी में हस्ताक्षर करने की प्रवृत्ति ही, हिंदी में अपना कार्यालयीन कामकाज करने के लिए किसी कार्मिक को प्रेरित करेगी।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद में शुक्रवार दिनांक 14-9-2007 को अपराह्न में हिंदी दिवस समारोह बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता निगम के क्षेत्रीय निदेशक श्री ए.चोक्कलिंगम ने की। समारोह के मुख्य अतिथि आचार्य रघुनाथ भट्ट, उपाध्यक्ष, गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति थे।

मुख्य अतिथि श्री भट्ट जी ने कहा कि आज हमारा सम्पूर्ण देश राष्ट्रभाषा का दिन मना रहा है। ऐसी स्थिति में एक स्वाभाविक प्रश्न खड़ा होता है कि हम यह दिन क्यों मना रहे है? एक वर्ष में आने वाला हिंदी दिवस किसी त्योहार से कम नही है। उन्होंने कहा कि कोई भी भाषा बुरी नहीं होती किन्तु मातृभाषा एवं अपने देश की भाषा सबसे श्रेष्ठ होती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति भावना जागृत करने की आवश्यकता है तथा भावनाओं का जितना रूपांतरण हिंदी भाषा में संभव है उतना शायद दूसरी अन्य भाषाओं में संभव नहीं है। इसलिए यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम हमारी भाषा को स्वीकार करें और उसे महत्व दें। प्रेम एवं भाईचारे को बढ़ावा देने में हिंदी का योगदान सर्वोपरि है। हिंदी जन-जन की भाषा है। विज्ञापन एवं प्रचार माध्यमों ने भी आज हिंदी को अपनाया है।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, थाने, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कर्मचारी राज्य बीमा योजना परिसर, वागले इस्टेंट, थाने-400604

उप क्षेत्रीय कार्यालय थाने में दिनांक 1 सितम्बर, 2007 से 15 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा 14 सितंबर, 2007 को ''हिंदी दिवस समारोह'' का आयोजन किया गया।

इस पखवाड़े के दौरान 4 प्रतियोगताएं आयोजित की गई।

दिनांक 14 सितंबर 2007 को ''हिंदी दिवस समारोह'' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुधांशु शेखर झा, अतिरिक्त आयुक्त, आयकर विभाग, कल्याण थे।

महानिदेशक श्री प्रभात चन्द्र चतुर्वेदी के संदेश का पठन उप निदेशक श्री ए.के.कान्त ने किया। इसके उपरान्त श्री ए.के.कान्त, उप निदेशक एवं श्री एस.व्ही. सालसकर, महा सचिव, एसिक यूनियन मुबंई ने हिंदी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए ।

श्री एस.व्ही.सालसकर ने अपने भाषण के दौरान कहा कि हिंदी दिवस सिर्फ मनाने के लिए नहीं है, उसे अपने रोजाना के कार्य में लाना आवश्यक है एवं हिंदी में हस्ताक्षर करने की भी सलाह दी, अन्यथा इसका ध्येय पूरा नहीं हो पाएगा । ■

हिंदी के बढ़ते चरण

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-द-गामा, गोवा

गोशिलि में हिंदी के बढ़ते चरण

हिंदी कार्यशाला

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड में भारत सरकार की राजभाषा नीति को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने के लिए समय-समय पर विभिन्न योजनाएं तैयार की जाती रही हैं इन योजनाओं की श्रृंखला में हिंदी कार्यशाला का आयोजन एक विशेष स्थान रखता है। जिस तरह यांत्रिक सुविधा के रूप मे हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि का कम्प्यूटर हिंदी का प्रशिक्षण आवश्यक है उसी तरह हिंदी टिप्पणियों तथा आलेखन का कार्य करने वाले अधिकारियों, पर्यवेक्षकों, लिपिक वर्गीय कर्मचारियों की सहायता के लिए विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिन्हें कार्यसाधक ज्ञान तो प्राप्त है लेकिन अंग्रेजी में लंबे समय तक काम करते रहने के कारण अधिकारी/कर्मचारी फाइल में हिंदी टिप्पण लिखने या हिंदी में मसौदा प्रस्तुत करने में संकोच या झिझक महसूस करते हैं। हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन जिसमें विभिन्न विषयों पर हिंदी में टिप्पणियां लिखने या हिंदी में मसौदा प्रस्तुत करने का अभ्यास करवाकर उनके इस संकोच को दूर करने का प्रयास किया जाता है । हिंदी राजभाषा तथा पत्राचार संबंधी सहायता कर्मचारियों के कार्य की प्रकृति के अनुसार कार्यशालाओं की अवधि पूर्णदिवसीय निश्चित की गई है। विश्वास है कि यह कार्यशाला गोशिलि के कर्मचारियों के दैनिक कार्य में वृद्धि हेतु काफी सहायक सिद्ध होगी जिससे प्रेरित होकर वे अपना पूरा कार्य यथाशीघ्र हिंदी में करने की ओर प्रेरित होंग । उक्त को ध्यान में रखते हुए दिनांक 26 सितम्बर से 03 अक्तूबर, 2007 तक के दौरान छह दिवसीय प्रयोजनमूलक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 26 सितंबर, 2007 को श्री पी.एम. जौहरी, महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) द्वारा उक्त कार्यशाला का पारंपरिक रूप से दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किया गया । इसी दिन लिपिक वर्गीय स्टाफ के लिए दिनांक 27 सितंबर, 2007 को वरिष्ठ पर्यवेक्षकों, पर्यवेक्षकों के लिए तथा दिनांक 28 सितंबर 2007 को सहायक सचिवों, सचिवों तथा वरिष्ठ सचिवों के लिए कार्याशाला का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालयीन कामकाज में प्रयुक्त की जाने वाली हिंदी के बारे में पर्याप्त जानकारी दी गई । दिनांक 29 सितंबर 2007 को कार्यलय के वरिष्ठ इंजिनियरों, वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला में हिंदी मसौदा के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की गई । इसके अतिरिक्त उक्त कार्यशाला में प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियमों के बारे में बताया गया। दिनांक 1 अक्तूबर 2007 को वरिष्ठ कर्मचारियों एवं वरिष्ठ सचिवों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप के संबंध में जानकारी देते हुए इसमें शामिल कर्मचारियों से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन पर अभ्यास कराया गया । दिनांक 03 अक्तूबर 2007 को सत्र नवंबर 2007 के प्राज्ञ प्रशिक्षण कक्षाओं में नामित अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी के अतिरिक्त हिंदी प्रबोध , प्रवीण, प्राज्ञ प्रशिक्षण की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया। इन कार्यशानाओं में कुल 8 अधिकारी तथा 86 कर्मचारियों ने भाग लिया । इन कार्यशालाओं का संचालन श्री डी.के.पणिक्कर, सेवानिवृत्त उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस समारोह

राजभाषा हिंदी को, कार्यालयीन कामकाज में प्रचारित करने के कार्यक्रम के रूप में गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (गोशिलि), रक्षा मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में, दिनांक 26 सितंबर से 4 अक्तूबर 2007 तक हिंदी सप्ताह अत्यधिक उत्साह से मनाया गया । गोशिलि परिसर में, 4 अक्तूबर को समापन समारोह

में भाग लेते हुए, मुख्य अतिथि श्री संजय गोयल, भारतीय प्रशासनिक सेवा प्रबंध निदेशक, कदंबा परिवहन मंडल लिमिटेड ने जोर दिया कि लोगों को हिंदी सीखने में अधिक रूचि दिखानी चाहिए। समारोह, गोशिलि के सेरेनिड समूह द्वारा तैयार एवं प्रस्तुत किए गए स्वागत गीत के बाद प्रारंभ हुआ । लेफिट कर्नल टी.एम. शर्मा उपमहाप्रबंधक (प्रशासन) ने स्वागत सबोधन दिया जबकि श्री एस बी प्रभुदेसाई उप प्रबंधक (राजभाषा) ने, गोशिलि द्वारा चलाई गई हिंदी गतिविधियों पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया । सम्माननीय अतिथि, श्री डी.के.पणिक्कर पूर्व उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने भी इस अवसर पर वक्तव्य दिया। गोशिलि ने इस हिंदी सप्ताह समारोह के एक भाग के रूप में कई गतिविधि यों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। हिंदी का प्रचार-प्रसार सभी स्तरों पर करने के उद्देश्य से हिंदी निबंध और अखिल गोवा स्तरीय वाद-विवाद, हिंदी आशुलिपि तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 20 प्रमाणपत्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों को वितरित किए गए, जबकि हिंदी प्राज्ञ परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने पर 5 कर्मचारियों को प्रोत्साहन दिया गया । इसी समय 3 प्रमाणपत्र जिनमें से प्रत्येक, गोशिलि के प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता, अखिल गोवा वाद-विवाद प्रतियोगिता, आशुलिपि प्रतियोगिता तथा अखिल गोवा हिंदी प्रश्नोत्तरी के लिए भी वितरित किए गए । समारोह की अध्यक्षता करते हुए गोशिलि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रिअर एडमिरल ए.के. हांडा, अविसेप विसेप ने विजेताओं को बधाई दी तथा कर्मचारियों को उनकी सक्रिय प्रतिभागिता के लिए धन्यवाद दिया । उन्होंने हिंदी सप्ताह के मनाए जाने के महत्व पर बल दिया । इस अवसर पर भाषण देते हुए महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री पी. एम.जौहरी ने, हिंदी भाषा की समद्धि पर प्रकाश डाला तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग में गर्व की भावना समाहित करने की आवश्यकता पर बल दिया । इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, माननीय रक्षा मंत्री तथ मंत्रिमंडल सचिव के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी किए गए प्रेरणादायक संदेश पढ़े गए तथा प्रदर्शनी और कंप्यूटर के द्वारा सभी गोशिलि कर्मचारियों को उपलब्ध कराए गए। श्री एस. अनंतशयनम (निदेशक वित्त), कमों राजीव बी. प्रभावलकर निदेशक (प्रचालन), गोशिलि के विभिन्न विभागध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, पर्यवेक्षक, कर्मचारी एवं राज्य के विभिन्न संस्थानों से आमंत्रितगण समापन समारोह में उपस्थित रहे। धन्यवाद-ज्ञापन, श्री प्रसन्नजित भट्टाचार्यजी, जनसंपर्क अधिकारी द्वारा दिया गया। यह समारोह राष्ट्रगान के गायन के साथ संपन्न हुआ ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं बैठक गोशिलि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रिअर एडमिरल ए. के. हांडा (निवृत्त) अविसेप विसेप की अध्यक्षता में दिनांक 29 सितंबर 2007 को संपन्न हुई जिसमें सलाहकार समिति के सदस्यों, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के सदस्यों एवं विशेष आमंत्रित के रूप में श्री डी. के. पणिक्कर, पूर्व उपनिदेशक(कार्यान्वयन) गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने भाग लिया ।

उल्लेखनीय उपलब्धियां

राजभाषा रोलिंग शील्ड

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड ने वर्ष 2006-07 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण गोवा के अधीन केंद्र सरकार के उपक्रमों के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ निष्पादन में । प्रथम स्थान प्राप्त करने पर "राजभाषा रोलिंग शील्ड" प्राप्त की। गोवा शिपयार्ड लिमिटेड की ओर से महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री पी. एम. जौहरी ने दिनांक 25-10-2007 को मुरगांव पत्तन न्यास के अतिथि गृह, कान्फ्रेंस हॉल में आयोजित नराकास बैठक में पुरस्कार ग्रहण किया। इस पुरस्कार की प्राप्ति से हमारा उत्साहवर्धन हुआ तथा और भी उत्कृष्ट ढंग से कार्य करने की प्रेरणा मिली ।

गोवा राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

गोशिलि में हिंदी सप्ताह समारोह मनाने के रूप में निम्नलिखित गतिविधियां एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :

(क) राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

दिनांक 27 सितंबर, 2007 को गोवा राज्य स्तरीय राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें गोवा राज्य में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों,

निगमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों के अनेक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया । उक्त प्रतियोगिता के आयोजन का प्रयोजन यह था कि हम हिंदी के राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त राजभाषा के रूप में हिंदी की महत्ता, संघ की राजभाषा नीति राजभाषा अधि नियम 1963 की मुख्य बातें राजभाषा नियम 1976, राजभाषा नीति संबंधी संकल्प, संसदीय राजभाषा समिति, हिंदी प्रशिक्षण की आवश्यकता 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र के लिए निधारित पत्राचार के लक्ष्यों, धारा 3(3) के तहत आने वाले पत्रादि के संबंध में पर्याप्त जानकारी हासिल कर सके ताकि हिंदी के प्रचार-प्रसार को एक विशिष्ट दिशा हासिल हो सके । उक्त प्रतियोगिता में कुल 18 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें डा. सुरेन्द्र कुमार तिवारी, केंद्रीय विद्यालय, फोंडा श्री ओमप्रकाश भालोटिया, पंजाब नैशनल बैंक, मडगांव तथा श्री सुधीर कुमार सिंह आईएनएस, मांडवी, वेरें, गोवा को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। उक्त प्रतियोगिता के निर्णायक दल के रूप में श्री डी. के. पणिक्कर, पूर्व उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्य किया ।

(ख) हिंदी निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 28 सितंबर, 2007 को गोवा शिपयार्ड लिमिटेड के प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षुओं के लिए 'हिंदी देश-विदेश में' विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें प्रशिक्षुओं ने बड़ी तादाद में शिरकत करते हुए यह साबित किया कि राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी के संबंध में आज की पीढी के नौजवान जागृत हैं तथा हिंदी के संबंध में वे अच्छी खासी जानकारी भी रखते है। प्रतिभागियों द्वारा लिखे पर्चों से स्पष्ट था कि हिंदी भाषा दिन दुगनी रात चौगुनी प्रगति करते हुए आज उसने देश की राजनीति संस्कृति, व्यापार, अर्थव्यवस्था तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों को विशेष रूप से प्रभावित किया है । हिंदी आज सीधे रोजी-रोटी से जुडने के कारण उसकी प्रासंगिकता तथा महत्ता में अच्छा-खासा इजाफा हुआ । देश-विदेश के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्यापन एवं ज्ञान अर्जन को उक्त पर्चों में उजागर किया गया है ।कु. पंकज कुमार श्रीवास्तव, कु.दर्शन चौहान तथा कु. रतीश सी. नाईक को क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। श्री डी.के.पणिक्कर, पूर्व उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने निर्णायक दल के रूप में कार्य कर आयोजन को सफल बनाया।

(ग) हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता

यद्यपि वर्तमान में हिंदी शिक्षण योजना की ओर से दक्षिण गोवा में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में कार्यरत आशुलिपिकों के हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं करवायी गयी है तथापि प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाकर तद्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित दृष्टि से गोशिलि ने अपने कर्मचारियों के भरपूर उत्साह के चलते अपना विभागीय आशुलिपि प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर जारी रखा है।

अपने आशुलिपिकों के साथ-साथ गोवा राज्य में स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के अन्य आशुलिपिकों को भी प्रेरित करने की दृष्टि से दिनांक 29 सितंबर, 2007 को गोवा राज्यस्तरीय हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें राज्य के 11 आशुलिपिकों ने भाग लिया। कुमारी वैशाली पाकर, कुमारी लिना परूलेकर तथा श्रीमती माया चोंपडेकर, गोशिलि को क्रमशः प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। इस प्रतियोगिता के निर्णायक दल में श्री करूण कुमार कनिष्क, कनिष्ठ हिंदी आशुलिपि अनुदेशक ने सहयोग दिया।

(घ) वाद-विवाद प्रतियोगिता

आज के छात्र कल के राष्ट्र निर्माता तथा मानव संसाधन होंगे एवं देश के विकास में अपना योगदान देंगे। आज भारत वर्ष के वैज्ञानिक, सूचना प्रोद्योगिकी से जुड़े अभियंता, चिकित्सक संपूर्ण विश्व में भारत का नाम रोशन का रहे हैं। वर्ष 2020 तक भारत विकसित देशों में शामिल हो इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी इन भावी प्रतिभाओं के व्यक्तित्व विकास में भागीदार हो। छात्रों में वाक् शक्ति अद्भुत होती है तथा उसका विकास होना आवश्यक है। बाल प्रतिभाओं को प्रकट करने के इसी उद्देश्य से दिनांक 01 अक्तूबर, 2007 को गोशिलि में गोवा राज्य की दसवीं, ग्यारहवीं एवं बारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए **'भारत संघ की राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा'** पक्ष-विपक्ष विषय

शेष पृष्ठ 94 पर

सम्मेलन/संगोष्ठी

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा गोवा में आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का "दो दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन", दिनांक 14 तथा 15 फरवरी, 2008 को राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, दोना पावला, पणजी, गोवा में आयोजित किया गया। सम्मलेन में महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्र दमण दीव तथा दादर व नगर हवेली में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को वर्ष 2006-07 के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति क़े उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव गावीत के करकमलों से राजभाषा शील्ड तथा प्रमाणपत्र आदि प्रदान किए गए।

गृह राज्य मंत्री ने कहा कि भाषा किसी भी राष्ट्र की पहचान होती है। राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता को गतिमान बनाए रखने में भाषा की अहम भूमिका होती है। भाषा का महत्व राजभाषा के रूप में और भी बढ़ जाता है क्योंकि तब यह देश की जनता और सरकार के बीच बातबीच का एक माध्यम बन जाती है। कार्यालयों में काम-काज सुचारू रूप से चलता रहे, इसके लिए राजभाषा का प्रयोग आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि हम विकास के पथ पर बढ़ रहे हैं। कम से कम समय में यह दूरी तय करनी है। इसलिए हम तकनीकी के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ें और इसका लाभ जन-जन तक पहुँचाएं। वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, डाक्टरों में प्रतिभा व निष्ठा की कोई कमी नहीं है। हर क्षेत्र में सूचना तक़नीकी का प्रयोग बढ़ रहा है। हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए जो नए-नए सॉफ्टवेयर आ रहे हैं, उनको अपनाना भी जरूरी है। कंप्यूटर आदि उपकरणों में प्रयोग आने वाले सॉफ्टवेयर द्विभाषी ही खरीदें जाएं और स्टाफ को हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण देकर कार्यालय का अधिक से अधिक काम हिंदी में कराया जाए।

इससे पहले दिनांक 14 फरवरी, 2008 को इस दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का भारत सरकार के सचिव श्री रंजीत ईस्सर की अध्यक्षता में दीप प्रदीपन से उद्घाटन हुआ। श्री ईस्सर ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अनेक सॉफ्टवेयर बनवाए हैं जिनसे हिंदी का प्रयोग बढ़ा सकते हैं। हिंदी में अपना सरकारी काम-काज करने के लिए अनेक योजनाएं लागू हैं, जिनका लाभ उठाया जा सकता है। प्रथम दिन के प्रथम सत्र में राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. शतीश आर.शेट्ये ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस दो दिवसीय सम्मेलन को मुख्य चार सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अनिरूद्ध सिंह गौर ने समुद्री पुरातत्व विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि साहित्य और पुरातत्व में गहरा संबंध रहा है। परिवर्तन के बारे में उन्होंने कहा कि जो पहले जमीन पर था अब वो समुद्र में परिवर्तित हो चुका है। इन्हीं खोजों को उन्होंने स्क्रीन के माध्यम से विस्तारपूर्वक चर्चा की। इसी संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजीव निगम ने भारतीय मानसून और अर्थव्यवस्था विषय पर चर्चा करते हुए मानसून की वर्षा में होने वाले परिवर्तन क्यों और कैसे तथा समुद्र में क्या-क्या मिल सकता है, नई जानकारी दी। उन्होंने आगे कहा कि समुद्री भूगोल शास्त्री समुद्र के भीतर शोध कर रहे हैं। जलवायु में परिवर्तन के बारे में बताया कि यह सब प्राचीन काल से परिवर्तन होता रहा है। आने वाले समय में यह अभी तक नही बताया जा सकता कि सूखा कब पड़ेगा। अर्थ व्यवस्था पर मानसून

का प्रभाव पर उन्होंने कहा कि देश का खाद्य मानसून पर ही निर्भर होता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर भी प्रभाव पड़ता है।

भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक डॉ. रमाकान्त शर्मा ने वित्तीय समावेशन विषय पर कहा कि इस पर सभी बैंको द्वारा खूब चर्चा हो रही है। भारतीय रिजर्व बैंक इसमें प्रमुख भूमिका निभा रहा है। देश का बहुत बड़ा वर्ग जो निर्धन तथा कमजोर है उसको कोई लाभ नहीं पहुंच रहा है। कुछ ही लोग इसका लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब तक देश के सभी नागरिकों को समान सुविधाजनक लाभ नहीं मिलता तब तक देश में विकास का कोई मतलब नही है। बैंकों के अंतर्गत आने वाली सेवाओं पर उन्होंने नई जानकारी दी।

स्वास्थ्य मंत्रालय के आयुष विभाग के रीडर डॉ. अनिल विनायक मनसे ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के अनुरूप आधुनिक जीवन शैली के लोगों में आयुर्वेद चिकित्सा की उपयोगिता पर रोचक ढंग से जानकारी दी। आयुर्वेद के स्वास्थ्य संबंधी सूत्र आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य पर विस्तार से चर्चा की । उन्होंने आगे कहा कि शोध से पता चलता है कि जहां पर व्यक्ति पैदा होता है वहां जो कुछ फसल होती है वही व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है। दूध और घी स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक हैं। उन्होंने वात, पित्त, कफ पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. शतीश आर. शेट्ये, निदेशक, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान ने कहा कि भारत की अधिकांश जनता अंग्रेजी नहीं जानती। वहां तक पहुंचना है तो उनकी अपनी भाषा में ही कार्य करना होगा। अपने संस्थान के बारे में उन्होंने विस्तार से जानकारी दी।

राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी. वी.वल्सला जी कुट्टी ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि गोवा की अपनी विशिष्ट संस्कृति है जिससे यहां की कला, संगीत, नृत्य, भाषा और त्योहारों का अपना विशेष स्थान है। कोंकणी यहां की राजभाषा है जिसकी लिपि देवनागरी है। हिंदी भाषा की लिपि भी देवनागरी है । इस दृष्टि से गोवा में यह सम्मेलन आयोजित करने से इसकी सार्थकता और भी बढ़ गई है।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में पुरस्कार वितरण के बाद, दूसरे सत्र में राजभाषा के क्षेत्र में आधुनिक प्रोद्योगिकी, सॉफ्टवेयर निर्माताओं द्वारा हिंदी सॉफ्टवेयरों की प्रस्तुति पर चर्चा की गई। गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-द-गामा के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, रियर ऐडमिरल (सेवानिवृत्त) अनिल कुमार हांडा, अविसेप, विसेप मुख्य अतिथि रहे। यह मुख्यत: तकनीकी सत्र था, जिसमें राजभाषा विभाग द्वारा विकसित हिंदी संबंधी विभिन्न सॉफ्टवेयरों की प्रदर्शनी की जानकारी एवं साक्षात् प्रदर्शन किया गया। इसमें विभिन्न सॉफ्टवेयर संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया और प्रस्तुतियां दी। सी-डैक पुणे की ओर से "मंत्र राजभाषा" लीला हिंदी प्रबोध, सी-डैक मुंबई का बॉस सॉफ्टवेयर, राजभाषा विकास परिषद् के सहभागी साइबर स्केप की ओर से आकृति विस्तार एवं यूनीकोड आधारित कम्प्यूटर प्रणाली, मोन्टेन कम्यूनि के, चेन्नई तथा इंडिका यूनीकोड आदि के बारे में प्रदर्शनी व जानकारी प्रदान की गई। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने राजभाषा के क्षेत्र में आधुनिक प्रोद्योगिकी पर विशेष व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर दोनों दिन कंप्यूटर तथा पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

मुख्य अतिथि रियर ऐडमिरल (सेवानिवृत्त) ए.के. हांडा, अध्यक्ष एवं निदेशक, गोवा शिपयार्ड ने अपने संबोधन में हिंदी को राजभाषा ही नहीं, राष्ट्र के गौरव का प्रतीक मानने का भी आग्रह किया। गोवा शिपयार्ड की हिंदी कार्यान्वयन में अग्रणी भूमिका के लिए पुणे स्थित सी-डैक सूचना प्रोद्योगिकी सॉफ्टवेयर लीप 2000 के गोवा शिपयार्ड के सभी कंप्यूटरों में स्थापित किए जाने की जानकारी दी ताकि कर्मचारियों में हिंदी टंकण प्रक्रिया तथा हिंदी भाषा के प्रति अभिरूचि जागृत हो। गोवा शिपयार्ड में डिजिटल सूचना कीऑस्क (Display) तथा डिसप्ले प्रदर्शनी के द्वारा शिपयार्ड की पूर्ण पारदर्शिता तथा अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी, मराठी,कोंकणी भाषा के प्रयोग द्वारा किस प्रकार महत्वपूर्ण सूचनाएं सभी कर्मचारियों तक पहुंचाई जाती है, इसका भी परिचय दिया। 31 दिसंबर, 2007 को समाप्त तिमाही के दौरान गोशिलि के 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र स्थित कार्यालयों के साथ हिंदी पत्राचार के लक्ष्य से कहीं आगे निकलने की बात कही। अतिथि

महोदय ने उपस्थित सभी सहभागियों को इस क्षेत्रीय सम्मेलन की प्रबल प्रेरणा से प्रेरित होकर हिंदी कार्यान्वयन को आगे सफल बनाने के लिए कहा। अंत में इस सम्मेलन की उपयोगिता बताते हुए रियर ऐडमिरल हांडा ने राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग सभी क्षेत्रों में करने का आह्वान किया। हिंदी के विद्वान, बुजुर्ग, हिंदी कार्य से जुड़े व्यक्तियों को गोवा जैसे ऐतिहासिक एवं मशहूर पर्यटन स्थल में सम्मेलन के माध्यम से एकत्रित कर पश्चिम और मध्य क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन हेतु उन्होंने भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग को भी धन्यवाद दिया ।

श्री एस.डी.पाण्डेय, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति कार्यालय, भोपाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन के प्रथम दिवसीय सत्र की समाप्ति हुई।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी-XIX का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति का व्यावहारिक कार्यान्वयन सुनिश्चित करवाने के उद्देश्य से भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं/राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन, देश के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान, स्तरीय हिंदी पत्रिका 'विकल्प' के प्रकाशन के समानांतर प्रत्येक तिमाही में आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियों का सतत आयोजन किया जाता है । इसी कड़ी में 19वीं 'आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन संस्थान के सर सी वी रमन व्याख्यान-कक्ष में संपन्न हुआ ।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कार्यकारी निदेशक, डॉ॰ ए दत्ता ने संगोष्ठी के सतत आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें अधिकांश बंगलाभाषी शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ता वैज्ञानिकों के हिंदी आलेख इस बात का प्रमाण है कि हिंदी संगोष्ठियों ने हिंदीतर भाषी वैज्ञानिकों को भी हिंदी में विज्ञान लेखन करने हेतु प्रेरित किया है । हिंदी के विकास में बंगाल का योगदान इतिहास में स्वयं सिद्ध है । अन्य प्रांतो के वैज्ञानिकों की इस क्षेत्र में पहल भी स्वागतयोग्य है । उन्होंने नगर स्तर पर राजभाषा के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार (शील्ड) मिलने पर राजभाषा अनुभाग को बधाई दी व इसी प्रकार के प्रेरक आयोजन की अपेक्षा व्यक्त की ।

संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ॰ दिनेश चमोला ने कहा कि विज्ञान की सेवा मानवता व राष्ट्र की सेवा है, किसी भी उन्नत व मेघासंपन्न राष्ट्र के लिए विज्ञान रीढ़ के समान है । इसकी मजबूती ही बौद्धिक संपन्नता का प्रतीक है । जन-जन तक विज्ञान व वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार के साथ ही हम इस प्रकार के आयोजनों से जन सामान्य में जीवनदायिनी वैज्ञानिक चेतना का विकास कर सकते है । इसमें भारतीय भाषाओं की भूमिका प्राण तत्व की है । अभी आयोजित संगोष्ठियां व 'विकल्प' के 'जैव-प्रोद्योगिकी' जैसे वैज्ञानिक विषयों पर प्रकाशित विशेषांक इसी श्रृखला की कड़ियां हैं ।

संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिकों यथा डॉ॰ डी. के. अधिकारी ने 'वैश्विक ताप तथा जैव-विविधता की प्रतिपालितता' विषयक शोधपत्र में स्थिर सुरक्षित भविष्य, अंतर-संबंध, पर्यावरणीय बदलाव, विकास की चुनौतियां, पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारण तथा निवारण; श्री आनंद सिंह ने 'सड़कों के निर्माण में बिटुमिन की उपयोगिता' में प्रस्तावना, सड़क विषयक शोधपरक जानकारी एंव सड़क निर्माण में भार्पेस का योगदान; श्री सुदीप कुमार गांगुली ने 'एमटीजीजी प्रकम विकास' में एनटीजीजी का रसायनशास्त्र, प्रचालन स्थितियां, प्रकम विवरण एवं प्रक्रम अनुभाग; डॉ॰ गौतम दास ने 'देशज एलपीजी मधुरण उत्प्रेरक का विकास' में उत्प्रेरक संश्लेषण, निष्पत्ति मूल्यांकन, अभिक्रिया, स्थायित्व परीक्षण, वाणिज्यक संयंत्र तथा डॉ॰ ए. के. भटनागर ने 'निम्न गंधक पेट्रो-ईधनों हेतु स्नेहकता को बढ़ाने वाले योज्य' विषयक आलेख में परिचय, सामग्री तथा विधियां परीक्षण तथा विचार-विमर्श जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर क्रमशः शोध-पत्रों की हिंदी में प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियां दीं ।

मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राष्ट्रीय स्तर की हिंदी संगोष्ठी

मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में ''ग'' क्षेत्र में गठित नगर राजभाषा

कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों हेतु 17-01-2008 को समिति के संयोजक कार्पोरेशन बैंक के प्रधान कार्यालय के सभाग्रह में राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी आयोजित की गई । इस संगोष्ठी में 247 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

संगोष्ठी का शुभारंभ आकाशवाणी कलाकार श्रीमती संगीता बालचंद्र की वंदना से हुआ । तत्पश्चात मुख्य अतिथि श्री रंजीत ईस्सर, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया ।

संगोष्ठी के के विशेष अतिथि श्रीमति पी.वी. वल्सला जी कुटि, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने सर्व प्रथम मंगलूर नराकास को इस संगोष्ठी के आयोजन पर बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठी का पहली बार आयोजन हो रहा है तथा उसका पूरा श्रेय उन्होंने कार्पोरेशन बैंक के शीर्ष प्रबंधन तंत्र एवं नराकास, मंगलूर को दिया । अपने भाषण में उन्होंने कहा कि ''ग'' क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार को लेकर काफी गलतफहमियां हैं । लेकिन उन्होनें बताया कि ''ग'' क्षेत्र में जितनी ईमानदारी के साथ राजभाषा का कार्यान्वयन हो रहा है, वह काबिले तारीफ है । उन्होनें कहा कि राजभाषा के कार्यान्वयन के संदर्भ में भाषाई क्षेत्रों का अंतर मिटता जा रहा है तथा आशा प्रकट की कि निकट भविष्य में ही सभी मिलकर एक ही क्षेत्र बन जाएगा ।

अपने वक्तव्य में उन्होंने यह भी कहा कि किसी भाषा के प्रयोग हेतु उस भाषा में पारंगत होना आवश्यक नहीं है । यदि कोई इस सोच में रहे कि उस भाषा में पारंगत होने के पश्चात ही भाषा का प्रयोग करेंगे तो शायद वे उस भाषा का प्रयोग नहीं कर पाएंगे । विदेशों के छोटे-छोटे राष्ट्रों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वे सभी अपनी भाषा का प्रयोग करने में गर्व महसूस करते हैं, भारतवासियों को भी हिंदी भाषा का प्रयोग करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए ।

राजभाषा विभाग की तरफ से उन्होंने आग्रह किया कि निर्धारित कैलेंडर महीने में नराकास की अर्ध वार्षिक बैठकें आयोजित की जानी चाहिएं । इस मामले में किए गए संशोधन का हवाला देते हुए उन्होंने सूचित किया कि सभी बैठकों का आयोजन वित्तीय वर्ष के दौरान जनवरी महीने के भीतर संपन्न हो जाए, इसको ध्यान में रखते हुए कैलेडर तैयार किया गया है । साथ ही बैठकों से संबंधित खर्चों की निर्धारित राशि की प्रतिपूर्ती का दावा शीघ्र (यथासमय) भेजने का भी उन्होने अनुरोध किया ।

श्री रंजीत ईस्सर, सचिव, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने मंगलूर नराकास के संयोजक कार्पोरेशन बैंक तथा अन्य सदस्य कार्यालयों की प्रंशसा की जिन्होंने संगोष्ठी हेतु समुचित व्यवस्था की । अपने भाषण में उन्होंने कहा कि यद्यपि सभी नराकास अपने-अपने स्तर पर सराहनीय कार्य करते आ रहे हैं, तथापि इस प्रकार की संगोष्ठियों के आयोजनों की अपनी विशेष उपयोगिता होती है जिनके दौरान आपस में अनुभवों का आदान-प्रदान का अवसर मिलता है । उन्होंने आगे कहा कि भाषा को तकनीकी से जोड़ना समय की मांग है । हिंदी को तकनीकी से जोड़ने के लिए राजभाषा विभाग पूरी तरह सजग है तथा समय समय पर उचित द्विभाषी सॉफ्टवेयर विकसित करता आ रहा है ।

संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री.बी. सांबमूर्ति, मंगलूर नराकास एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कार्पोरेशन बैंक ने सर्वप्रथम राजभाषा विभाग के प्रति कार्पोरेशन बैंक तथा मंगलूर नराकास की तरफ से आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस प्रकार की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने की जिम्मेदारी मंगलूर नराकास को सौंपी थी । इस संगोष्ठी के आयोजन हेतु राजभाषा विभाग के सचिव महोदय एवं संयुक्त सचिव महोदय तथा अन्य पदाधिकारियों से प्राप्त मार्गदर्शन एवं सहयोग हेतु उन्होंने तहे दिल से शुक्रिया अदा की । संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि उपस्थित प्रतिनिधियों के आपसी विचार विमर्श से ''ग'' क्षेत्र में स्थित नरकासों की गतिविधियों को नई दिशा मिलेगी । मंगलूर नरकास द्वारा सदस्य कार्यालयों के प्रयोजनार्थ चलाए जा रहे कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान की गतिविधियों की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां भविष्य में भी जारी रहेंगी ।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री रंजीत ईस्सर द्वारा ''राष्ट्रीय नराकास निर्देशिका'' का विमोचन किया गया जिसमें भारत भर में गठित समस्त नराकासों से संबंधित

सूचनाएं एक साथ प्रकाशित की गई हैं। दक्षिण स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के बैकों की राजभाषा समिति की हिंदी पत्रिका "भारत भारती" के प्रवेशांक का विमोचन संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री सांबमूर्ति द्वारा किया गया।

श्री विश्वनाथ झा, उप-निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूर ने नराकासों की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए कहा कि पहले पूरे भारत में गठित नराकासों हेतु संगोष्ठी करने का विचार था किंतु इस प्रकार का पहला प्रयास होने के कारण संयुक्त सचिव महोदया के निदेशानुसार केवल ग क्षेत्र के नराकासों हेतु यह संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया और इसका दायित्व सौंपने हेतु नराकास, मंगलूर को चुना गया। तत्पश्चात् श्री झा ने मंगलूर नराकास का परिचय देते हुए कहा कि सभी को यह जानकर प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य होगा कि नराकास, मंगलूर की 43 बैठकें हो चुकी हैं। और सभी बैठकों नराकास, मंगलूर के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित की गईं । नराकास, मंगलुर को राजभाषा के क्षेत्र उत्कृष्ट निष्पादन हेंतु तीन बार इंदिरा गांधी पुरस्कार तथा 16 बार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं । इन सब कारणों से ऐसा महसूस किया गया कि इस संगोष्ठी के आयोजन का दायित्व सौंपने हेतु नराकास, मंगलूर से बेहतर कोई और नराकास नहीं होगी ।

उन्होंने अपनी समीक्षा को जारी रखते हुए कहा कि प्रत्येक कार्यालय का दायित्व है कि राजभाषा अधिनियमों के आधार पर, संवैधानिक आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करें। नराकासों के मूल्यांकन का आधार बिंदु कैलेंडर के अनुसार अर्ध वार्षिक बैठकों का आयोजन है। बैठक में कार्यसूची मदों के अनुसार चर्चा होनी चाहिए। ये मदें राजभाषा विभाग के वेबसाइट में भी उपलब्ध हैं। उन्होंने नराकासों के सदस्य सचिवों से अनुरोध किया कि बैठक की समाप्ति के तुरंत बाद नराकास अध्यक्ष के हस्ताक्षर से व्यय संबंधी ब्यौरे प्रेषित करें ताकि भारत सरकार द्वारा इन बैठकों हेतु अनुमोदित राशि की प्रतिपूर्ति की जा सके। नराकासों को उनकी सदस्यता के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित करते हुए श्री विश्वनाथ झा ने कहा कि 1 से 50 तक की सदस्यता वाली नराकास छोटी नराकासों की श्रेणी में, 50 से 100 तक की सदस्यता वाली नराकास मध्यम श्रेणी की नराकास तथा 100 से 150 तक की सदस्यता वाली नराकास बड़ी नराकासों की श्रेणी में आएंगी । उन्होंने 150 से अधिक सदस्यता वाली नराकासों से आग्रह किया कि संबंधित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से संपर्क करे ताकि नराकास को विभाजित किया जा सके । उन्होंने सभी नराकासों से समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव में परिवर्तन संबंधी सूचना संबंधित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को देने का आग्रह किया । हिंदी के प्रयोग को बढ़ाते हुए नराकास की सार्थकता साबित करने का भी अनुरोध किया । श्री झा जी ने इतनी बड़ी संख्या में उपस्थिति हेतु कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपनी समीक्षा संपन्न की ।

पूर्वाह्न सत्र के अंतिम सत्र में राजभाषा विभाग द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर जैसे-मंत्र, श्रुतलेखा, लीला-प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ- आदि के बारे में राष्ट्रीय सूचना केंद्र के निदेशक श्री केवल कृष्ण द्वारा पावर पाइंट प्रस्तुति दी गई जिस की सभी प्रतिभाकगयों ने सराहना की । प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण भी किया गया।

संगोष्ठी के स्थान पर एक राजभाषा प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी जिसमें मंगलूर नराकास तथा संयोजक बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्राप्त पुरस्कारों/प्रमाण पत्रों का प्रदर्शन था। इस प्रदर्शनी की भी राजभाषा विभाग के सचिव, संयुक्त सचिव एवं अन्य पदधिकारियों तथा सभी प्रतिभागियों द्वारा सराहना की गई।

अपराह्न सत्र में संगोष्ठी के मुख्य विषय पर चर्चा आयोजित की गई। विभिन्न नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों द्वारा मुद्दे पेश किए गए जिन पर विस्तार से चर्चा की गई तथा प्रस्ताव पारित किए गए। ये प्रस्ताव नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

1. बहुत सी नराकासों के संयोजक कार्यालयों में हिंदी के पद नहीं है। वहां न्यूनतम हिंदी पदों के सृजन के लिए आवश्यक कार्रवाई की जाए।

2. हिंदी का काम करने वाले टंककों और आशुलिपिकों को वर्तमान में दी जाने वाले रु. 80 प्रति माह और रु. 120 प्रति माह की राशि को बढ़ाया जाए।

3. राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी में यूनिकोड पर आधारित फांट या किसी एक फांटको प्रमाणिकता प्रदान की जाए और सभी कार्यालयों को निदेश जारी किए जाए कि वे इसी फांट का प्रयोग करें ताकि अंग्रेजी की तरह हिंदी में भी कंप्यूटर पर काम किया जा सकें।

4. नराकास-अध्यक्षों को अन्य गतिविधियाँ चलाने के लिए वित्तीय शक्तियां प्रादन की जानी चाहिए ।

5. नराकासों द्वारा किए जा रहे आवधिक प्रकाशनों को सशुल्क बनाकर वित्तीय रूप से स्व निर्भर बनाया जाना चाहिए ।

6. नराकासों की ओर से कंप्यूटर तथा तकनीकी से जुड़े विषयों पर तिमाही में कम से कम एक अर्थात् वर्ष में कम से कम चार कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ।

7. नराकासों द्वारा अनुवाद पर विशेषकर मशीनी अनुवाद पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ।

8. नराकासों की बैठकों में कार्यालय अध्यक्षों की उपस्थिति सुनिश्चित कराने के लिए कारगर उपाय अपनाएं जाएं ।

9. 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में आनेवाली नराकास के अध्यक्षों के इस तरह के सम्मेलन प्रति वर्ष आयोजित किए जाने चाहिए ।

10. राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष पूरे देश की नराकासों का एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए ।

11. राजभाषा विभाग द्वारा इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार से पुरस्कृत नराकासों की उपलब्धियों को राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर डाला जाना चाहिए।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर परिसर में दिनांक 29-11-2007 को एक हिंदी संगोष्ठी आयोजित किया गया। इस संगोष्ठी में दो विषयों पर पर्ची प्रस्तुत किया: कंप्यूटरीकरण युग में हिंदी प्रयोग बरकरार रखने के उपाय एवं ग्राहक संबंध, भाषा और हिंदी । क्षेत्रीय प्रबंधक श्री बी प्रकाशचन्द्र शेट्टी ने दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने उद्घाटन वक्तव्य में बताया कि राजभाषा नीति का अनुपालन करना अपना कर्तव्य है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारे कार्यालय के कार्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया। साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन को ठीक प्रकार से अनुपालन करने का अनुरोध भी किया।

संगोष्ठी में 'कंप्यूटरीकरण युग में हिंदी प्रयोग बरकरार रखने के उपाय' विषय पर कार्पोरेशन बैंक के मुख्य प्रबंधक डॉ जयन्तीप्रसाद नौटियाल ने पर्चा प्रस्तुत किया। कंप्यूटरों में हिंदी के प्रयोग की दिशा में हो रही कार्य तथा उसमें अधिक से अधिक कार्य करने की संभावनाओं की ओर उन्होंने प्रकाश डाला।

'ग्राहक संबंध, भाषा और हिंदी', इस विषय पर केनरा बैंक के राजभाषा प्रबंधक श्रीमती वनिता वी गडियार ने पर्चा प्रस्तुत किया। उन्होंने ग्राहक संबंध में भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही उत्तम ग्राहक सेवा कैसी हो इसे उदाहरणों के जरिए प्रस्तुत किया। ग्राहक संबंध में भाषा के महत्व एवं उसमें हिंदी के स्थान पर विचार प्रस्तुत किये।

दक्षिण मध्य रेलवे के निर्माण संगठन

दक्षिण मध्य रेलवे के निर्माण संगठन द्वारा दि. 02-01-2008 को राजभाषा हिंदी में "तनाव प्रबंधन" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री अजय कुमार गुप्ता, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण संगठन ने की।

संगोष्ठी में प्रवक्ता के रूप में श्री अजय कुमार गुप्ता, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। तनाव तथा प्रबंधन को परिभाषित करते हुए आपने कार्यस्थल पर इसकी आवश्यकता, इसके लक्षण और इससे निपटने की तकनीक आदि का विवरण दिया। साथ ही आपने तनाव के कुछ नुकसान, तनाव और उत्पादकता का संबंध, तनाव के कारण व उपाय तथा इनसे निपटने के लिए हाल के हमारे अनुभव, तनाव प्रबंधन चावी आदि जैसे उपायों को भी स्पष्ट किया।

तनाव योजना की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने तनाव से बचने के उपायों को विश्लेषित करते हुए तनाव डायरी की उपयोगिता का सुझाव दिया। तनाव से होने वाले खोखलेपन के विभिन्न पहलुओं पर भी आपने प्रकाश डाला।

1752 HA/08—7A

अंत में आपने कहा कि तनाव प्रबंधन से वास्तव में कार्य को व्यवस्थित ढंग से तथा अच्छे तरीके से किया जाना है जिससे न केवल संगठन को लाभ होता है बल्कि कर्मचारी भी स्वयं उससे लाभान्वित होता है। शांतिचित्त मन से काम करने पर उत्पादकता भी बढ़ेगी और व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा जिससे वह सक्रिय रहेगा और अपनी जिम्मेदारियों को बाखूबी निभा सकेगा। उन्होंने कहा कि जो सुझाव दिए गए हैं वे अंतिम समाधान नहीं है। व्यक्ति अपनी खूबियों और खामियों को अच्छी तरह समझकर अपने आपको परखें तथा परिस्थितियों के अनुसार तनाव के कारकों का विश्लेषण करते हुए सकारात्मक तौर तरीकों से तनाव प्रबंधन करें जिससे संगठन के लक्ष्यों के साथ-साथ व्यक्ति अपने व्यावहारिक लक्ष्यों को भी प्राप्त कर सके।

संगोष्ठी का समापन करते हुए उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण तथा उपमुइंजी/नि/भंडार श्री मंजुल माथुर ने संगोष्ठी की सफलता के लिए सभी को बधाई दी और कहा कि समसामयिक विषयों पर ऐसी सेगोष्ठियां होती रहनी चाहिए जिससे एक ओर राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा तथा दूसरी ओर ज्ञान के नए द्वारा खुलेंगे।

पृष्ठ 87 का शेषांक

पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 21 छात्रों ने भाग लिया। पल-प्रतिपल रोमांचित करने वाले इस प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय, तीनों पुरस्कार केंद्रीय विद्यालय, फोंडा, गोवा, के क्रमशः कु. अर्पित कुमार तिवारी, कु. प्रियंका ठाकुर तथा कु. अंकित कुमार ने प्राप्त किए। निर्यायक दल के रूप में प्रो. श्री नरेन्द्र पी. काले, प्रो. श्रीमती मेग्डलिन डिसोजा, हिंदी प्राध्यापिका, सेंट झेवियर्स कॉलेज, म्हापसा तथा श्रीमती जॉली भट्टाचार्य, वास्को ने सक्रिय सहयोग दिया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपने वक्तव्यों के द्वारा निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला :-

- राष्ट्रभाषा की उन्नति ही हमारी उन्नति है।
- लोगों के हृदय में एक भाषा को बसाने के लिए हिंदी ही एकमात्र भाषा है।
- बुंदेलखण्डी, राजस्थानी मिलाकर हिंदी भाषा बनी है।
- भाषा का संबंध मनुष्य के मस्तिष्क व अन्तःकरण से होता है।
- मोहनदास करमचंद गांधी ने कहा हिंदी के बिना भारत गूँगा है।
- कहने को तो हमारा देश हिंदुस्तान है पर कोई भी अपने को हिंदुस्तानी नहीं कहलाना चाहता, वह खुद को गुजराती, मराठी एवं बंगाली कहता है।

राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्वारा धन्यवाद समर्पण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

यूनियन बैंक आफ इंडिया महाप्रबंधक कार्यालय, शहीद भगत सिंह प्लेस, बंगला सहिब मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली

यूनियन बैंक आफ इंडिया, महाप्रबंधक कार्यालय नई दिल्ली में 9 फरवरी 2008 को वेतनमान-5 के कार्यापालकों के लिए राजभाषा संगोष्ठी श्री एस.सी सिन्हा, महा प्रबंधक उत्तरांचल, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राजभाषा संगोष्ठी का उद्घाटन गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी द्वारा किया गया।

इस संगोष्टी में विद्वानों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किए गए। ■

- अंग्रेजी पर क्यों है मान, जब हिंदी है हमारी शान, हिंदी हमारा सम्मान।
- अंग्रेजी को बोलने, लिखने में हमने उसे प्रतिष्ठा का विषय बना दिया है और हिंदी को तुच्छ।
- हमें बिना किसी संकोच के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।
- छोटे थे तो हिंदी बोले, बड़े हुए तो छोड़ चले।
- स्काटलैंड, पोलैंड, हॉलैंड ने अपनी भाषा अपनायी पर हिंदुस्तान ने आज भी इसे नहीं माना।
- हिंदी का सम्मान राजकीय कार्य में नहीं किया जाता।
- हिंदी में है सुर कबीरा, हिंदी रस की खान है।
- हिंदी का संबंध संस्कृत से है और हिंदी को संस्कृत की पुत्री भी कहा जाता है।
- हिंदी समुद्र है जिसमें सभी भाषाएं मिलती हैं।
- हिंदी है पहचान हमारी, हिंदी हमारी शान है।
- भारत की शान कही जाती है हिंदी, आज यह हो रही चिंदी-चिंदी।
- भारत की भाषा है हिंदी, माथे की है यह बिंदी। ■

1752 HA/08 -7B

पुरस्कार/प्रतियोगिताएं

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14-15 फरवरी, 2008 को पणजी, गोवा में आयोजित पश्चिम एवं मध्य क्षेत्रों का दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन में पश्चिम क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले 'ग' क्षेत्रों के उपक्रमों में वर्ष 2006-07 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिंदी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए **भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया ।**

पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री माणिकराव एच. गावित मुख्य अतिथि थे । माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री माणिकराव एच गावित द्वारा श्री डी.पॉल माणिक्कम्, विमानपत्तन निदेशक, भा वि प्रा, गोवा को राजभाषा शील्ड एवं श्री इन्ताज अली, हिंदी अनुवादक, भा वि प्रा, गोवा को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री रंजीत इस्सर, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अलावा श्रीमती पी.वी. वत्सला कुट्टी.संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,भारत सरकार भी उपस्थित थीं ।

भारी पानी संयंत्र,बड़ौदा में

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

भारी पानी संयंत्र, बडौदा में दिनांक 14-11-2007 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। संयंत्र के कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रति वर्ष हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इस वित्त वर्ष के दौरान इन प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 29 अगस्त, 2007 से 28 सितंबर, 2007 तक किया गया था। विभिन्न प्रतियोगिताओं में लगभग 50 कर्मचारियों ने भाग लिया था। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संयंत्र की सहायक निदेशक (रा. भा.), **डॉ रश्मि वार्ष्णेय** ने कहा कि संसदीय राजभाषा समिति ने हाल ही में इस संयंत्र के निरीक्षण के बाद इसे राजभाषा हिंदी की दृष्टि से जागरूक संस्थान बताया था। इसे बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सभी कर्मचारी तथा अधिकारी अपना सरकारी काम-काज पूर्णतः राजभाषा हिंदी में ही करें, विशेषकर हिंदी पत्राचार तथा टिप्पण-लेखन।

संयंत्र के महाप्रबंधक **श्री आदित्य भौमिक** ने अपने उद्बोधन में कहा कि संसदीय राजभाषा समिति ने इस संयंत्र में राजभाषा संबंधी गतिविधियों की सराहना की है। यद्यपि कार्यालय में हिंदी में बातचीत करना भी काम है, लेकिन फाइलों में भी लिखित रूप से हिंदी में काम किया जाना चाहिए। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक **श्री प्रकाश चंद्र जैन** ने सभा को संबोधित करते हुए सोदाहरण यह तथ्य स्थापित किया कि अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाएं कि सभी आपसे संपर्क करने के लिए स्वतः ही हिंदी का प्रयोग करें। बैठकों में अँग्रेजी का प्रयोग करने पर कई बार अधिकारी-गण समझने में कठिनाई महसूस करने पर चुपचाप बैठे रहते हैं, लेकिन हिंदी में बोलने पर सभी बातचीत में हिस्सा लेने लग जाते हैं।

दूरदर्शन केन्द नागपुर

पत्रिका 'संकल्प' को प्रथम पुरस्कार

भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने मीडिया एककों द्वारा वर्ष 2006-07 के दौरान प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं के लिए क्षेत्रवार सर्वश्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार योजना संचालित की थी। उक्त योजना के तहत दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर की हिंदी पत्रिका 'संकल्प' का चयन 'ख' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार हेतु किया गया । 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा एवं पंजाब राज्य शामिल है । शास्त्री भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की सचिव श्रीमती आशा स्वरूप द्वारा उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया । केंद्र की ओर से श्री सुधीर पाटणकर, सहायक केंद्र

निदेशक तथा संकल्प के कार्यकारी संपादक श्री रवीन्द्र कुमार मिश्रा ने उक्त पुरस्कार प्राप्त किया ।

पश्चिम रेलव-राजकोट मंडल

पुरस्कार वितरण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

राजभाषा विभाग, प.रे. -राजकोट मंडल द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी, वाक्, निबंध, कहानी विस्तार, अनुवाद, टिप्पण आदि 10 प्रतियोगिताओं के विजेताओं, हिंदी में अधिकाधिक एवं प्रशंसनीय कार्य करने वालों एवं 2000 शब्दों की प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए दि. 3-11-2007 को सायं 07.00 बजे मंरेप्र कार्यालय के प्रांगण में श्री आर. पी. निबारिया, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में श्री आर.पी. निबारिया-मंरेप्र,श्रीमती सविता निबारिया-अध्यक्षा-प.रे. महिला समाज सेवा समिति और श्री मुकेश कुमार गुप्ता -अपर मंडल रेल प्रबंधक के कर कमलों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती गुरुमुख कौर वासन, श्रीमती कल्पना जोशी, कु. चांदनी जोशी और श्री मुकेश बुच द्वारा गीत एवं मास्टर सिद्धार्थ मिश्रा कु. सोनिया सिंह द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई।

कार्यक्रम का सुंदर संचालन श्रीमती अवनी व्यास, कु. वंदना सिंह और श्री जयेश भुरिया द्वारा किया गया। श्री आर.पी. निबारिया-मंरेप्र ने अपने प्रासंगिक उद्बोधन में बताया कि ऐसे कार्यक्रमों से जहां एक ओर कर्मचारियों को हौसला अफजाई होती है, वहीं दूसरी ओर हिंदी में कार्य करने की मानसिकता भी दृढ होती है।

श्री एम.के. गुप्ता-अमंरेप्र एवं अपर मुराधि के मार्गदर्शन के तहत श्री पी.बी. सिंह-राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा संगठन के कर्मचारियों ने कार्यक्रम की सफलता के लिए काफी जहेमत उठाई थी।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर

दो पुरस्कार हासिल किया

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर को नागपुर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की श्रेणी के अंतर्गत राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में प्रथम पुरस्कार तथा 'श्रम किरण' गृह पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

बोर्ड के माननीय निदेशक श्री वे.परमेश्वरन ने श्री डी. वी. धार्मिक, मुख्य आयकर आयुक्त, विदर्भ नागपुर तथा भारत सरकार की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर के अध्यक्ष एवं भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण कार्यालय, नागपुर के उप महा निदेशक डॉ. के. एस. मिश्र के करकमलों से दिनांक 26-12-2007 को राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी के ऑडिटोरियम में पुरस्कार के रूप में दो शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त किए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नौएडा

छात्र हिंदी प्रतिभा पुरस्कार-वितरण

इण्टरमीडिएट और हाईस्कूल की परीक्षाओं में हिंदी में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को 'हिंदी प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित की जाने वाली पुरस्कार योजना के अर्न्तगत, दिनांक 30.01.08 को भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड, पावर सेक्टर उत्तरी क्षेत्र, सैक्टर-16ए, नौएडा के सभागार में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अठारहवीं बैठक में हिंदी में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले 18 छात्रों को 'हिंदी छात्र प्रतिभा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

केंद्रीय विद्यालय, नौएडा के 12वीं कक्षा के छात्र श्री अभिनय तिवारी और छात्रा सुश्री नीशू त्यागी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किए गए।

नौएडी नगर के विद्यालयी स्तर पर ए. पी. जे. स्कूल की 10वीं की छात्रा सुश्री प्रियांशी अग्रवाल को प्रथम पुरस्कार और केंद्रीय विद्यालय, नौएडा की 10वीं कक्षा के छात्र श्री अनिमेष अग्रवाल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास, नौएडा के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कर्मियों के उन पुत्र-पुत्रियों को भी सदस्य कार्यालयी स्तर पर 'हिंदी छात्र प्रतिमा' पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिन्होंने हाईस्कूल और इण्टर मीडिएट की वर्ष 2006-07 में आयोजित परीक्षाओं में हिंदी विषय में उत्कृष्ट अंक किए हैं। इस योजना में राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, सूरजमल विहार, दिल्ली की 12वीं

की छात्रा सुश्री गीतिका सिंह को प्रथम पुरस्कार, सर्वोदय बालिका सीनियर सेकेण्डरी स्कूल कल्याणपुरी, दिल्ली की 12वीं की छात्रा सुश्री रेखा बिष्ट को द्वितीय पुरस्कार और केन्द्रीय विद्यालय, नौएडा की 12वीं कक्षा की छात्रा सुश्री श्वेता को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

सेंट मैरीज इण्टर कालेज, इटावा (उ.प्र.) की 10वीं की छात्रा सुश्री रिनी यादव को प्रथम पुरस्कार, सेंट मैरी सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, मयूर विहार, दिल्ली की 10वीं की छात्रा सुश्री गरिमा मथपाल को द्वितीय पुरस्कार और विश्व भारती पब्लिक स्कूल, नौएडा के 10वीं के छात्र श्री आयूष शर्मा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। शेष सात छात्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय और प्रोत्साहन पुरस्कारों के लिए क्रमश: 1500, 1000, 750 और 500 की नकद राशि, प्रमाण पत्र, प्रतीक चिन्ह और पुस्तकें प्रदान की गई।

एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना)

एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) में 10 से 21 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी शब्द-ज्ञान, हिंदी निबन्ध, हिंदी श्रुतलेख, वाद-विवाद, स्वरचित कविता-पाठ तथा सितंबर माह में अधिकतम कार्य हिंदी में करने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए 20 नवंबर 2007 को उप सेनाध्यक्ष (आई एस एण्ड टी) लेफ्टिनेंट जनरल सुशील गुप्ता, अति विशिष्ट सेवा मेडल,युद्ध सेवा मेडल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय संग्रहालय ऑडिटोरियम में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में अन्य अतिथियों के साथ-साथ मेजर जरनल एस एस नायर, ए डी जी ए ई, ब्रिगेडियर पी चक्रवर्ती, डी डी जी ए ई तथा रक्षा मंत्रालय से श्री अशोक कुमार, परामर्शदाता शामिल थे।

मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट जनरल सुशील गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। इसके पश्चात् श्रीमती किरण अरोड़ा, उप निदेशक (राजभाषा) ने एम टी-17द्वारा राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख किया। तत्पश्चात् हिंदी-भाषी व अन्य भाषा-भाषी वर्ग से स्वरचित कविता-पाठ के विजेताओं ने अपनी-अपनी पुरस्कृत कविताएं सुनाई। काव्य-पाठ के पश्चात् उप सेनाध्यक्ष महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए।

सीमा सड़क महानिदेशालय

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने व कर्मचारियों में हिंदी के प्रति प्रेरक माहौल उत्पन्न करने के उद्देश्य से मुख्यालय सीमा सड़क महानिदेशालय में दिनांक 01सितम्बर 2007 से 14 सितम्बर 2007 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस/पखवाड़े के आयोजन मे दौरान कर्मचारियों में अभिरुचि पैदा करने क लिए हिंदी से संबंधित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिग प्रतियोगिता एवं भाषण /कविता/गायन प्रतियोगिताओं का आयोजनों किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बढ़-बढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों को अंकों के आधार पर सफल घोषित किया गया। दिनांक 22 नवम्बर 2007 को हिंदी वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता ले. जनरल ए के नन्दा, महानिदेशक, सीमा सड़क ने की महानिदेशालय के कर्मचारियों/ अधिकारियों ने इस समारोह में भाग लिया। समारोह का शुभारम्भ सहायक निदेशक (रा. भा.) बिन्दु सहगल के स्वागत भाषण के साथ हुआ। सहायक निदेशक (रा.भा.) ने आयोजन संबंधी विविध गतिविधियों एवं हिंदी में किए जा रहे काम-काज से अवगत कराया। प्रतियोगिताओं एवं हिंदी प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत जिन कर्मचारियों ने अपना अधिकतम कार्य हिंदी में किया है, प्रतियोगिताओं में सफल कर्मचारियों को हिंदी वितरण समारोह के दौरान महानिदेशक सीमा सड़क द्वारा पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान 26 कर्मचारियों को पुरस्कार दिया गया।

प्रतियोगिता समाप्ति के पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में कहा कि मुझे खुशी है कि हमारे महानिदेशालय में हिंदी को बढ़ावा देने एवं प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार के समारोह न केवल कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि राजभाषा के प्रति हमारे दायित्वों की याद दिलाते हैं। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी समारोह मनाना तभी सार्थक होगा जब हम स्वेच्छा से इसे रोजमर्रा के काम में अपनाएं तथा कार्यालय के सरकारी काम-काज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग कर दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

केनरा बैंक (प्रधान कार्यालय-बेंगलूर) अंचल कार्यालय, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

केनरा बैंकद्वाराआशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ के तत्वाधान में दिनांक 28.11.2007 को केनरा बैंक अंचल कार्यालय लखनऊ के कर्मचारी क्षेत्रीय प्रशिक्षणमहाविद्यालय लखनऊ में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का प्रारंभ श्री टी के दास सहायक महाप्रबंधक द्वारादीप प्रज्जवन तथा संस्थापक के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। अपने स्वागत भाषण में सहायक महाप्रबंधक महोदय ने सभी प्रतिभागियों, माननीय निर्णायकगण तथा प्रेक्षक बैंक के रूप में आये बैंकों का हार्दिक अभिनंदन करते हुये स्वागत किया, उन्होंने कहा की इसी प्रकार मिलजुल कर काम करके ही हम राजभाषा का सफल कार्यान्वयन कर सकते है, प्रतियोगिता में कुल 14 बैंकों के 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया, प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर खुलकर अपने-अपने विचार रखें। प्रतियोगिता में बैकिंग तथा समाजिक दोनों विषयों को रखा गया था। अपने अभिभाषण में निर्णायकगण तथा प्रेक्षक बैंकों ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। मंच का संचालन आयोजन बैंक केनरा बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री अजय कुमार प्रसाद द्वारा किया गया।

निर्माण महानिदेशालय, नई दिल्ली

माननीय शहरी विकास और गरीबी उपशमन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कुमारी शैलजा जी के निर्देशानुसार इस वर्ष निर्माण महानिदेशालय, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग में दिनांक 1.9.2007 से 30.9.2007 तक "हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास" माननीय श्री अमरनाथ चक्रबर्ती, निर्माण महानिदेशक की प्रेरणा से उत्साह के साथ मनाया गया।

मास के दौरान कुल छः प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया यथा-हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता, टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, सरल अनुवाद प्रतियोगिता और टंकण प्रतियोगिता। इस वर्ष हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन पहली बार किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक प्रतिभागियों को पुरस्कार देने की दृष्टि से, पुरस्कार की संख्या में पर्याप्त वृद्धि की गई। इसी वर्ष निर्माण महानिदेशक महोदय के निर्देश पर केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्यालयों में राजभाषा शील्ड योजना का शुभारंभ भी किया गया जिसके अंतर्गत 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालयों के साथ-साथ निर्माण महानिदेशालय के एक अनुभाग को हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए राजभाषा शील्ड/कप दिया गया। दिनांक 27.9.2007 को आयोजित निर्माण महानिदेशक की 92वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इन कार्यालयों के प्रतिनिधियों को माननीय निर्माण महानिदेशक महोदय के कर कमलों से राजभाषा शील्ड एवं कप प्रदान किये गए। निर्माण महानिदेशालय के रोकड़ अनुभाग को हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्ति हुई।

निर्माण महानिदेशालय में हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास के दौरान सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया और हिंदी मास को सफल बनाने का पूरा प्रयत्न किया। मास के दौरान अपना सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने वाले कार्मिकों को प्रस्तुत किए गए कार्य के रिकार्ड की गुणता, प्रकृति एवं मात्रा के आधार पर हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया। इस प्रकार निर्माण महानिदेशालय में पूरे सितम्बर मास के दौरान राजकीय कार्य का माहौल 'हिंदीमय' ही रहा जिसने निश्चित ही सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपना सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। इस प्रकार यह मास सही मायनों में अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल सिद्ध हुआ।

एनएचपीसी क्षेत्र-II बनीखेत 'राजभाषा शील्ड एवं प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित

एनएचपीसी क्षेत्र-II कार्यालय को वर्ष 2005 एवं 2006 में अपने कार्यालय में राजभाषा संबंधी कार्यों में उत्कृष्ट एवं व्यावहारिक निष्पादन हेतु राजभाषा शील्ड एवं प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। उक्त पुरस्कार क्षेत्र-II के कार्यपालक निदेशक श्री नैन सिंह को निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. के. गर्ग ने फरीदाबाद में निगम के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 11-9-2007 को आयोजित राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया। इस पुरस्कार के लिए

क्षेत्र-II कार्यालय लगातार दूसरे वर्ष भी चयनित किया गया है। इस अवसर पर श्री नैन सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी कार्मिकों को राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करने के लिए बधाई दी। उन्होंने आशा व्यक्त की क्षेत्र-II निरंतर राजभाषा के उत्थान हेतु प्रयासरत रहेगा। उक्त पुरस्कार निगम द्वारा अपनी परियोजनाओं/पावर स्टेशनों/क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा शील्ड योजना-2 लागू के अंतर्गत दिया गया। पुरस्कार के रूप में क्षेत्र-II कार्यालय को राजभाषा शील्ड एवं रु. 2500 का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया ।

संघ प्रदेश, दादरा एवं नागर हवेली प्रशासन राजभाषा विभाग सचिवालय, सिलवासा

संघ प्रदेश, दादरा एवं नगर हवेली प्रशासन के राजभाषा विभाग तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलवासा के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 31-08-2007 से 13-09-2007 तक 'संयुक्त हिंदी पखवाडा' के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के लगभग 203 विजेता कर्मचारियों/अधिकारियों को दिनांक 14-09-2007 को 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. एम.एल.गुप्ता, उप निदेशक (राजभाषा),(पश्चिम), भारत सरकार,गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई की उपस्थिति में श्री पी. के. गुप्ता कार्यवाहक प्रशासक एवं सचिव (राजभाषा) के कर-कमलों द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस वर्ष भी वर्ष 2006-07 हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलवासा को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा गोवा में आयोजित संयुक्त क्षेत्री राजभाषा सम्मेलन में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने में लिए माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावित जी द्वारा श्री पी.के. गुप्ता, विकास आयुक्त/अध्यक्ष (नराकेस) सिलवासा को नौवीं बार प्रथम पुरस्कार शील्ड से सम्मानित किया गया है।

तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना, बालुटार, पूर्वी सिक्किम

दूसरी बार क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड से सम्मानित

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., भारत सरकार का उद्यम,की एक इकाई पूर्वी सिक्किम के सिंगताम इलाके में निर्माणाधीन तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना, बालुटार को जहां एक ओर इसी वित्तीय वर्ष में चालू किए जाने की पुरजोर कोशिशें की जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर वैसी ही तन्मयता से राजभाषा के उत्तरोतर प्रयोग में बढ़ोतरी लाने में एकजुट हुई है। परियोजना में राजभाषा का प्रयोग व प्रचार-प्रसार में दिनों-दिन आशातीत प्रगति होते जा रही है।

राजभाषा की यह प्रगति कार्यपालक निदेशक श्री सुभाष राय एवं महाप्रबंधक श्री वी.के.शर्मा के राजभाषा के प्रति अटूट प्रेम एवं विश्वास का प्रतिफल है। वे दोनों ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भाव के पथ पर चलने का संदेश दिया, उसके अलावा राजभाषा के प्रयोग को कारगर बनाने के लिए परियोजना स्तर पर आकर्षक योजनाएं चलवाई है जिससे अनेक अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा के प्रयोग के प्रति जुड़ते चले जा रहे हैं, जिसका लाभ परियोजना को प्राप्त हो रहा है

पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न राज्यों में स्थित केंद्रीय सरकार के उपक्रमों में से तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना में राजभाषा के प्रचार-प्रसार व विकास के क्षेत्र में सराहनीय व उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2006-2007 के लिए दिनांक 13-14 नवम्बर, 2007 को दिनबंधु मंच, सिलीगुड़ी में आयोजित पूर्व व पूर्वोत्तर क्षेत्र की अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में दूसरीबार द्वितीय पुरस्कार से नवाजा गया। इस पुरस्कार के अन्तर्गत राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

यह पुरस्कार श्री सुभाष राय, कार्यपालक निदेशक एवं श्री वी. के. शर्मा, महाप्रबंधक की ओर से श्री अजय कुमार बक्सी, प्रबंधक (राजभाषा) ने श्री रंजीत इस्सर, सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के कर कमलों से प्राप्त किया । उसके अलावा श्री अजय कुमार बक्सी, प्रबंधक (राजभाषा) को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की ओर से राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया ।

प्रशिक्षण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के तत्वाधान में केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित पांच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यकम का समापन समारोह आज दिनांक 24-8-2007 को केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के सभागार में किया गया । इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि उपायुक्त करनाल श्री बलबीर सिंह मलिक पधारे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। अत: हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम संविधान की अनुपालना सुनिश्चित करें। संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने कहा कि केंद्रीय मृदा लवणता संस्थान, इस तरह के अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम पहले भी आयोजित कर चुका है और यहां पर विभिन्न राजभाषा संबंधी गतिविधियां होती रहती है। उन्होंने प्रशिक्षण अधिकारियों श्री इंद्रजीत चावला और श्री राजेश सिंह का आभार प्रकट किया ।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली के प्रशिक्षण अधिकारी श्री इंद्रजीत चावला ने कहा कि भाषा कठिनता से सरलता की ओर बढ़ती है और वाक्य में प्रयोग करने में ही शब्द का निश्चित अर्थ होता है। भाषा परिवर्तनशील होती है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, के प्रशिक्षण अधिकारी श्री राजेश सिंह ने प्रशासनिक शब्दार्थ और अनुवाद के विभिन्न तौर तरीकों पर विस्तार से प्रतिभागियों को जानकारी दी और उनकी समस्याओं का समाधान किया । इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने भी प्रशिक्षण से संबंधित अपने विचार प्रकट किए और प्रशिक्षण को बहुत ही उपयोगी बताया ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति , करनाल के सचिव श्री बृजेश यादव ने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल एक विशिष्ट प्रकार की समिति है जो राजभाषा कार्यान्वयन के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित कर रही है। उन्होंने कहा कि संविधान में हिंदी को सशक्त भाषा के रूप में स्थायित्व प्रदान किया गया है और संविधान के अनुच्छेद 343-351 तक विभिन्न उपबंध राजभाषा के संबंध में उल्लेख किए गए हैं । अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम ने निस्संदेह प्रशिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का विकास किया है। उन्होंने सी.एस. एस. आर.आई., करनाल के निदेशक का आभार प्रकट किया और मुख्य अतिथि उपायुक्त, करनाल का भी धन्यवाद किया और कहा कि राजभाषा संबंधी कार्यक्रम में शिरकत कर उपायुक्त ने राजभाषा के प्रति अपनी निष्ठा को दर्शाया है। संस्थान के प्रभारी अधिकारी श्री राम शंकर त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया, संस्थान की वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती रश्मि शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री रत्नेश यादव सहित कई वैज्ञानिक उपस्थित थे। 35 प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण पत्र दिए गए।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

दो दिवसीय हिंदी आशुलिपि मार्गदर्शन सत्र का आयोजन

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड कार्यालय ने अपने व्यक्तिगत स्तर पर विभागीय व्यवस्था के तहत हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण की व्यवस्था की जिसमें श्री करूण कुमार कनिष्क, हिंदी आशुलिपि अनुदेशक की सेवाएं प्राप्त कर अपने कार्यालय में ही हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्रारंभ किया जिसमें 22 आशुलिपिकों ने भाग लिया । यह प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हो इसके लिए प्रशिक्षण के प्रारंभ में मार्ग दर्शन हेतु

मुंबई से श्री अनंत श्रीमाली, सहा. निदेशक (ट./आ.), उप संस्थान को दिनांक 8 से 9 जनवरी, 2007 को आमंत्रित किया था एवं बाद में प्रशिक्षण के समापन पर दिनांक 4 एवं 5 जनवरी, 2008 को भी परीक्षा पूर्वआमंत्रित किया गया । जिसमे उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों को परीक्षा संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांत, डिक्टेशन के लिप्यंतरण के समय होने वाली व्याकरणिक अशुद्धियां, वाक्य संरचना संबंधी एवं लिंग, वचन के कारण होने वाली भूलों की तरफ विशेष रूप से प्रशिक्षार्थियों को मार्गदर्शन किया । डिक्टेशन कैसे लें? कैसे लिप्यंतरण करें, परीक्षा में अंक किस प्रकार मिलते हैं आदि के बारे में विस्तार से बताया । कम्प्यूटर पर हिंदी संबंधी कठिनाइयों का भी उन्होंने निदान किया। इसके अतिरिक्त भी प्रशिक्षार्थियों की शंकाओं का समाधान किया । प्रारंभ में उदघाटन सत्र में गोशिलि के निदेशक (वित्त) श्री एस. अनंतशयनम ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिंदी आशुलिपि कठिन नहीं है, कार्यालयीन कामकाज के लिए एवं परीक्षा के उत्तीर्ण करने के लिए बस कुल 800-900 शब्दों को ध्यान में रखना पड़ता है, हमें इनका अभ्यास नहीं होता है इसलिए हमें यह कठिन महसूस होता है। श्री प्रमोद मोहन जौहरी, महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.) ने उद्घाटन भाषण में कहा कि अंग्रेजी पिटमैन आशुलिपि का ही हिंदी अनुवाद हम हिंदी आशुलिपि में सीख रहे हैं इसलिए कोई डर हमारे मन में नहीं होना चाहिए । मूल रूप से वही नियम, सिद्धांत हिंदी आशुलिपि में भी हैं। बस भाषा बदल गई है इसलिए भाषा को सीखें तो आशुलिपि आसान लगेगी। यह प्रशिक्षण ले. कर्नल टी. एम. शर्मा, उपमहाप्रबंधक (प्रशा.) के अथक प्रयासों के कारण एवं व्यक्गित रूचि से ही प्रांरभ हो सका है। अंत में सभी का आभार श्री एस. बी. प्रभुदेसाई, उप प्रबंधक (रा.भा.) ने माना । इस दो दिवसीय हिंदी आशुलिपि कार्यशाला में मुरगांव पत्तन न्यास के 28 और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन के 01प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया जो जनवरी, 2008 में हिंदी शिक्षण योजना के अधीन संचालित परीक्षा में शामिल होगें। हिंदी शिक्षण योजना की जनवरी, 2008 में संपन्न होने वाली परीक्षा की पूर्व तैयारी तथा प्रशिक्षणार्थियों को परीक्षा उन्मुख बनाने की दृष्टि से मार्गदर्शन सत्र बहुत ही उपयोगी रही ।

केनरा बैंक प्रधान कार्यालय: बेंगलूर

प्रधान कार्यालय के कार्यपालकों के लिए आकृति कार्यक्रम

बैंक के प्रधान कार्यालय के कार्यपालकों के लिए आकृति के जागरूकता कार्यक्रम दिनांक 15-12-2007 को आयोजित किया गया जिसमें कार्यपालकों ने बहुत ही रुचि व उत्साह से भाग लिया ।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री टी. पी. मुत्तण्णा, उप महाप्रबंधक, कार्मिक विभाग ने किया । श्री एम. पी. गोपालकृष्णन, सहायक महा प्रबंधक, कार्मिक विभाग ने "आकृति" सॉफ्टवेयर के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण सत्र का संचालन श्रीमती सी. एस. विजयलक्ष्मी, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा अनुभाग ने किया ।

सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को काफी उपयोगी पाया तथा अपने दैनंदिन कार्यों में द्विभाषी सॉफ्टवेयर आकृति का उपयोग करने का आश्वासन दिया है।

इन्डस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड भुवनेश्वर-751022 (ओडिशा)

हिंदी डेस्क प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भुवनेश्वर शाखा कार्यालय में 'राकास' की बैठक के उपर्युक्त विषयक निर्णय की अनुवर्ती कार्रवाई के क्रम में दिनांक 28 जनवरी, 2008 से 30 जनवरी, 2008 तक अधिकारियों/स्टाफ-सदस्यों हेतु उनके अपने डेस्क पर एक तीन सत्रीय तीन दिवसीय हिंदी डेस्क प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री. सी. भोई. प्रबंधक, सुश्री श्वेतालीना राउत, सहायक प्रबंधक तथा श्री विश्वनाथ वन, सहायक प्रबंधक ने भाग लिया । उक्त कार्यक्रम में राजभाषा अनुभाग के श्री रामराई बारी सहायक प्रबंधक-हिंदी द्वारा प्रतिभागियों के डेस्कोन्मुखी हिंदी, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर 'आकृति' आदि से संबंधित समस्याओं को दूर किया गया तथा हिंदी पत्र/नोट लिखने आदि में सहायता प्रदान की गयी। इस कार्यक्रम के फलस्वरूप उक्त स्टाफ-सदस्यों ने अपने डेस्क-हिंदी कार्य को कुछ आगे बढ़ाया और आशा है भविष्य में कुछ और-आगे बढ़ा सकने में भी समर्थ हो सकेंगे।

1752 HA/08—8A

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो राजभाषा विभाग : गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा वर्ष 2008-2009 में आयोजित किए जाने वाले अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कैलेंडर

क्रम सं.	पाठयक्रम का नाम	लक्ष्य	प्रशिक्षण पाठयक्रम की समयावधि	परीक्षा की तारीख	प्रशिक्षण केंद्र
1.	त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठयक्रम	16 कार्यक्रम 360 प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष	पहली तिमाही (1 अप्रैल 2008 से 30 जून 2008) दूसरी तिमाही (1 जुलाई 2008 से 30 सितंबर 2008) तीसरी तिमाही (1 अक्तूबर 2008 से 31 दिसंबर 2008) चौथी तिमाही (1 जनवरी 2009 से 31 मार्च 2009)	सत्र की समाप्ति पर	1. नई दिल्ली 2. बेंगलूर 3. कोलकाता 4.मुंबई
2.	21 दिवसीय विशेष अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2 कार्यक्रम 30 प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष	पहली छमाही (अप्रैल 2008 से सितंबर 2008) 1 कार्यक्रम दूसरी छमाही (अप्रैल 2008 से मार्च 2009)	कार्यक्रम की समाप्ति पर	किसी भी कार्यालय/नगर में, जहां से मांग प्राप्त होती है।
3.	5 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद पष्शिण पाठ्यक्रम	16 कार्यक्रम+1 कार्यक्रम (वैज्ञानिकों के लिए) 415 प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष	1 कार्यक्रम पहली तिमाही (अप्रैल 2008 से जून 2008) 4 कार्यक्रम दूसरी तिमाही (जुलाई 2008 से सितंबर 2008) 4 कार्यक्रम तीसरी तिमाही (अक्तू. 2008 से दिसंबर 2008) 4 कार्यक्रम चौथी तिमाही (जनवरी 2009 से मार्च 2009) 4 कायक्रम वैज्ञानिकों के लिए (अप्रैल 2008 से मार्च 2009) 1 कार्यक्रम	कोई परीक्षा नहीं	किसी भी कार्यालय/नगर में, जहां से मांग प्राप्त होती है
4.	उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	3 कार्यक्रम 45 प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष	02-06-2008 से 06-06-2008 13-10-2008 से 17-10-2008 02-02-2009 से 06-02-2009	कोई परीक्षा नहीं	नई दिल्ली (मुख्यालय)
5.	पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	3 कार्यक्रम 45 प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष	07-04-2008 से 11-04-2008 04-08-2008 से 08-08-2008 01-12-2008 से 05-12-2008	कोई परीक्षा नहीं	नई दिल्ली (मुख्यालय)

टिप्पणी :

1. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा संचालित सभी अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम केंद्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्य करने वाले हिंदी अधिकारियों/अनुवादकों तथा हिंदी कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए सेवाकालीन अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम नि:शुल्क आयोजित किए जाते हैं।

1752 HA/08—8B

2. त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में हिंदी अनुवादकों के अतिरिक्त वे कर्मचारी भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं, जो अनुवाद कार्य या राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े हों और जिन्हें हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा का स्नातक स्तर का ज्ञान हो।

3. 21 कार्य-दिवसीय विशेष अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यकम और 5 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यकम का आयोजन अलग-अलग कार्यालयों की मांग पर उन्हीं के कार्यालयों में जाकर प्रशिक्षार्थियों की उपलब्धता और कार्यालयों की सुविधा के अनुसार किया जाता है।

4. 5 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठयक्रम और 21 कार्य-दिवसीय विशेष अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यकम में अनुवाद कार्य अथवा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े हुए अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं, बशर्ते कि उन्होंने स्नातक स्तर तक हिंदी एवं अंग्रेजी दोंनो भाषाएं पढ़ी हों ।

5. उच्चस्तरीय/पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण अनुवादकों/हिंदी अधिकारियों/राजभाषा अधिकारियों तथा उनसे ऊपर के अधिकारियों के लिए आयोजित किए जाते हैं।

6. छात्रावास की व्यवस्था केवल नई दिल्ली और कोलकाता में है।, जिसके लिए प्रतिमास 300/-रु.सेवा प्रभार देय होते है। भोजन व्यय प्रशिक्षार्थी स्वयं वहन करते हैं तथा अन्य आधारभूत सुविधाएं ब्यूरो उपलब्ध कराता है।

7. संपर्क सूत्र :

उत्तरी क्षेत्र	निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यरो, 8वां तल, बी-ब्लॉक, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोदी रोड़, नई दिल्ली -110003 दूरभाष : 24362025, 24362988 फैक्स नं. : 24362151, 24362025	केंद्रीय अनुवाद ब्यरो छात्रावास, क्वार्टर सं. 876 से 890 सेक्ट-7, पुष्प विहार, नई दिल्ली-110017 दूरभाष : 29562873
दक्षिणी क्षेत्र	संयुक्त निदेशक, अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, 5वां तल, केंद्रीय सदन, डी-ब्लॉक, 17वां मेन, दूसरा ब्लॉक, कोरमंगला बेंगलूर-560034 दूरभाष : 25351928 फैक्स नं. : 25531946	छात्रावास उपलब्ध नहीं है।
पूर्वी और पर्वोत्तर क्षेत्र	प्रशिक्षण अधिकारी, अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, 67-बी, बालीगंज, सर्कुलर रोड कोलकाता -700019 दूरभाष : 22876799 फैक्स : 22876044	केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो छात्रावास, 67-बी, बालीगंज, सर्कुलर रोड कोलकाता - 700019
पश्चिमी क्षेत्र	संयुक्त निदेशक, अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, केंद्रीय सदन, छठी मंजिल, सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुंबई - 4000614 दूरभाष : 27572726 फैक्स : 27566902	छात्रावास उपलब्ध नहीं है।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान
(हिंदी टंकण/कंप्यूटर/आशुलिपि गहन प्रशिक्षण केंद्र)
कमरा नं. -423 तीसरा तल, 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700001

विषय :- संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन निगमों, सार्वजनिक क्षेत्रों, लोक उद्यमों, अभिकरणों आदि के कर्मचारियों के लिए दिनांक 10.01.2008 से 17.12.2008 तक चलाये जाने वाले हिंदी टंकण एवं आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।

महोदय/महोदया

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए अन्य पाठ्यक्रमों के साथ-साथ हिंदी टाइपलेखन और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाता है।

2. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता द्वारा चलाए जाने वाले हिंदी टाइपलेखन एवं हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का वर्ष 2008 (कैलेण्डर वर्ष) का कार्यक्रम आपको आवश्यक कार्रवाई हेतु किया जा रहा है: -

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियाँ	प्रशिक्षण केंद्र का नाम
01	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	10.01.2008 से 05.03.2008 तक	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान
02	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	07.03.2008 से 06.5.2008 तक	(हिंदी टंकण/आशु. गहन प्रशिक्षण केंद्र)
03	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	02.06.2008 से 25.07.2008 तक	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कमरा नं.-
04	हिंदी आशुलिपि (टंकण कंप्यूटर पर)	80 कार्यदिवस	21.08.2008 से 17.12.2008 तक	423, तीसरा तल, 1, कौसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700001

3. इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रय में निम्नलिखित कर्मचारी नामित किए जा सकते हैं:-

(क) प्रोबेशनर

(ख) उन स्थानों के कर्मचारी जहां हिंदी टंकण या आशुलिपि का कोई प्रशिक्षण केंद्र नही है।

(ग) शिफ्ट ड्यूटी पर काम करने वाले कर्मचारी।

(घ) अन्य कर्मचारी जिनके लिए कार्यालय यह समझते हैं कि उनको पूर्णकालिक प्रशिक्षण देना लाभदायक होगा।

4. ये पाठ्यक्रम पूणकालिक हैं और प्रशिक्षण के लिए कोई शुल्क नही लिया जाता । इन पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु वही है जो हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत निधारित है । प्रशिक्षण की अवधि में प्रशिक्षार्थी प्रात: 9.30 से सायं 6.00 बजे तक प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम के अंत में प्रशिक्षार्थियों की परीक्षा हिंदी शिक्षण योजना के परीक्षा स्कंध द्वारा ली जाती है । सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं। केंद्र सरकार के ऐसे कर्मचारी जोअधिक

के अंक प्राप्त करते हैं (टाइपलेखन में 90 प्रतिशत या अधिक और आशुलिपि में 88 प्रतिशत या अधिक) संबंधित नियमों के अधीन विहित शर्तें पूरी करने पर अपने कार्यालयों द्वारा नकद पुरस्कार के पात्र होंगे ।

5. केंद्र सरकार के निगमों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैकों आदि को प्रति कर्मचारी 50 (पचास) रुपये की दर से परीक्षा शुल्क देना होता है । परीक्षा शुल्क बैक ड्राफ्ट द्वारा दिया जायेगा जो कि "उप निदेशक परीक्षा, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली" के नाम से देय होगा ।

6. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता में प्रशिक्षार्थियों के लिए भोजन एवं आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं है ।

7. इन पाठ्यक्रमों के लिए अर्हताएं निम्न प्रकार हैं:-

(क) **हिंदी टाइपलेखन**

1. सभी अवर श्रेणी लिपिकों एवं अंग्रेजी टककों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।

2. यू. डी. सी., हिंदी सहायकों एवं हिंदी अनुवादकों को भी स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है।

3. शैक्षणिक योग्यता :- हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों । दिनांक 27.10.1980 के राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं.-14016/17/88-रा. भा. (घ) के अनुसार हिंदी टंकण के प्रशिक्षण के लिए उन सभी कर्मचारियों को जिनकी शैक्षणिक योग्यता हिंदी के साथ मिडिल अथवा समकक्ष परीक्षा जैसे प्रवीण आदि उत्तीर्ण हों, को भी प्रवेश दिया जा सकेगा ।

(ख) **हिंदी आशुलिपि**

1. सभी वर्ग के आशुलिपिकों, पी.ए., सीनीयर पी.ए.के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य हैं।

2. कक्षाओं में स्थान उपलब्ध होने पर ऐसे अवर श्रेणी लिपिकों/टाइपिस्टों, जो हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी टाइप परीक्षा उत्तीर्ण हों तथा संबंधित कार्यालय यह प्रमाण-पत्र दें कि उनका यह प्रशिक्षण जनहित में है, को भी प्रवेश दिया जा सकता है।

3. शैक्षणिक योग्यता:- हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों ।

8. प्रशिक्षण क्षमता का पूरा लाभ उठाया जा सके इसलिए केवल उन्हीं कर्मचारियों को नामित किया जाये, जिन्हें निश्चित रूप से प्रशिक्षण के लिए कार्यमुक्त किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों को लम्बी अवधि का अवकाश स्वीकृत करना संभव नहीं होगा । सत्र के दौरान कर्मचारियों को ऐसा स्थानान्तरण न किया जाए जिससे उसके प्रशिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी कर्मचारी को सत्र के मध्य से वापस बुलाने की अनुमति नहीं दी जायेगी ।

9. आपसे अनुरोध है कि अपने प्रतिभागियों के नाम पाठ्यक्रम आरम्भ होने से कम-से-कम एक महीना पहले **केंद्र के सहायक निदेशक, श्री जीतेन्द्र प्रसाद** को भिजवा दें एवं उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए, पाठ्यक्रमों के लिए नामित कर्मचारियों को प्रशिक्षण आरम्भ होने के दिन प्रशिक्षण केंद्र पर प्रात: 9.30 बजे उपस्थित होने के निर्देश भी दे दें परन्तु यदि किसी अवर श्रेणी लिपिक को आशुलिपिक पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है तो उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाये ।

10. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर दिया जाएगा ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग हिंदी शिक्षण योजना (हिंदी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण)

ईस्ट ब्लाक-7, लेवल-6 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110066

विषयः- ***हिंदी टंकण (कंप्यूटर/मैनुअल) एवं हिंदी आशुलिपि की नई कक्षाओं का गठन-फरवरी, 2008***

महोदय/महोदया

हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अन्तर्गत नई दिल्ली स्थित प्रशिक्षण केंद्रों पर हिंदी टंकण व हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण का आगामी सत्र फरवरी, 2008 से प्रारंभ होगा । प्रशिक्षार्थियों का कक्षाओं में प्रवेश दिनांक **11 फरवरी, 2008** से प्रारंभ होगा तथा नियमित कक्षाएं दिनांक **20 फरवरी, 2008** से चलेंगी । प्रशिक्षण केंद्रों की विस्तृत जानकारी पृष्ट 2-3 में विस्तार से दी गई है।

2. प्रशिक्षण के संबंध में संक्षिप्त जानकारी :

(क) **हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण** की अवधि एक वर्ष है तथा कक्षा प्रत्येक कार्य दिवस पर एक घंटे की होती है । सभी आशुलिपिकों/निजि सहायकों/निजि सचिवों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है । स्थान उपलब्ध होने पर हिंदी टंकण में प्रशिक्षित अवर श्रेणी लिपिकों को भी, विहित शर्तें पूरी होने पर,आशुलिपि प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जा सकता है।

(ख) **हिंदी टंकण प्रशिक्षण** की अवधि 6 माह है तथा कक्षा प्रत्येक कार्य दिवस पर एक घंटे की होती है। सभी अवर श्रेणी लिपिकों/अंग्रेजी टंककों तथा इससे समान पदों पर कार्यरत कर्मचारियों के लिए भी टंकण प्रशिक्षण अनिवार्य है। स्थान उपलब्ध होने पर प्रवर श्रेणी लिपिक (यू.डी.सी.) सहायकों तथा हिंदी अनुवादकों को भी प्रवेश दिया जाता है ।

(ग) हिंदी टंकण/आशुलिपि परीक्षा पास करने पर गृह मंत्रालय के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12014/2/76-रा.भा.(डी) दिनांक 2.9.76 तथा कार्यालय ज्ञापन संख्या 18/3/94-हि.शि.यो.(मुख्या.)दिनांक 14.2.95 के अनुसार निधारित शर्तें पूरी करने पर क्रमशः वैयक्तिक वेतन और नकद पुरस्कार के रूप में प्रोत्साहन दिए जाते हैं जिनका भुगतान संबंधित कार्यालयों द्वारा ही किया जाता है ।

(घ) प्रशिक्षण कक्षा में जाने के लिए कार्यालय ज्ञापन सं. 12/21/61-एच बी दिनांक 26 जून, 1962 के अनुसार 1.6 कि. मी. से अधिक दूरी से आने-जाने का वास्तविक मार्ग-व्यय देय है ।

(च) केंद्रीय उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के कर्मचारियों के लिए टंकण 40/- रुपए तथा आशुलिपि 50/- रुपए प्रति प्रशिक्षार्थी परीक्षा शुल्क का भुगतान **उपनिदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना नई दिल्ली के नाम,**नई दिल्ली में देय ड्राफ्ट द्वारा किया जाना है ।

(छ) प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी **टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण स्कंध, हिंदी शिक्षण योजना, ईस्ट ब्लाक-7, लेवल-6, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-66 से प्राप्त की जा सकती है।**

3. हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण के इस सत्र के लिए नामित किए जाने वाले कर्मचारियों को कक्षाओं में प्रवेश के लिए, कार्यक्रम के अनुसार पृष्ठ 2 व 3 पर दिए गए प्रशिक्षण केंद्र के प्रभारी सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि) से संपर्क करना होगा । संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि) द्वारा प्रशिक्षण हेतु रिपोर्ट करने वाले कर्मचारियों को दाखिला देने की लिखित सूचना दी जाएगी जिसे संबंधित कर्मचारी अपने कार्यालय में सूचनार्थ प्रस्तुत करेंगे, ताकि संबंधित कार्यालय द्वारा प्रवेश न लेने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध यथोचित कार्रवाई समय पर की जा सके। इस पत्र के अलावा प्रशिक्षण के लिए नामित कर्मचारियों को **प्रवेश लेने हेतु अलग से** पुष्टि **पत्र नहीं भेजा जाएगा** । अतः इस पत्र में दिए गए वितरण एवं कार्यक्रम के अनुसार ही उन्हें **प्रवेश हेतु स्वयं संबंधित केंद्र पर निर्धारित तिथि व समय. सम्पर्क करना है।**

4. टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण केंद्रों पर केवल उन्ही अवर श्रेणी लिपिकों/ अंग्रेजी टंककों/आशुलिपिकों को कंप्यूटर अथवा मैनुअल टाइपराइटर पर हिंदी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जाएगा जिन्होंने अभी तक हिंदी टंकण/आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है। नीचे दिए गए क्रम संख्या 1 से 7 तक के केंद्रों पर हिंदी टंकण/शब्द संसाधन का प्रशिक्षण कंप्यूटर पर तथा क्रम संख्या 8 से 10 तक के केंद्रों पर मैनुअल टाइपराइटर पर दिया जाएगा । केंद्रों का विवरण इस प्रकार है:-

क्र.सं.	प्रशिक्षण केंद्रों का नाम व पता	सहायक निदेशक	कार्यालय/भवन जहां के कर्मचारियो को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी
1.	रामकृष्णपुरम ईस्ट ब्लाक-7, लेवल-6, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066	श्री मुकेश कुमार फोन 26176055	रामकृष्णपुरम और आसपास स्थित सभी कार्यालय
2.	रामकृष्णपुरम ईस्ट ब्लाक-2, लेवल-1, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली- 110066	श्री चरणजीत वर्मा फोन 26186035	रामकृष्णपुरम औरर आसपास स्थित सभी कार्यालय
3.	डाक भवन कमरा नं. 109-बी, प्रथम तल, डाक भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली	सुश्री आशा फोन 23036516	डाक भवन, योजना भवन, पटेल भवन, निर्वाचन सदन, संचार भवन, कनाट प्लेस, रिजर्व बैंक, आकाशवाणी, संसद मार्ग तथा आसपास के सभी कार्यालय बैंक आदि ।
4.	रेल भवन कमरा नं. 564-जे, रेल भवन, नई दिल्ली	श्रीमती उषा शर्मा फोन 23303209	रेल भवन, कृषि भवन, परिवहन भवन, शास्त्री भवन, नार्थ ब्लाक, अनुसंधान भवन, श्रमशक्ति भवन तथा आसपास स्थित सभी कार्यालय ।
5.	बी-ब्लाक कमरा नं. 107, बी-ब्लाक हटमेंट्स, (साउथ ब्लाक के पीछे) नई दिल्ली - 110011	श्री जयवीर	सेना भवन, साउथ ब्लाक, नार्थ ब्लाक स्थित सभस्त कार्यालय, राष्टपति भवन तथा आसपास हटमेंट्स में स्थित कार्यालय ।
6.	संघ लोक सेवा आयोग अतिथि गृह भवन, भूतल, धौलपुर हाउस, शाहजहां रोड़ नई दिल्ली-110069	श्री महेन्द्र कुमार फोन 23098591/4711	संघ लोक सेवा आयोग, लोकनायक भवन, निर्माण भवन, मौसम भवन, भारत पर्यावास केंद्र अकबर रोड़ हटमेंट्स, केंद्रीय कार्यालय परिसर तथा आसपास के सभी कार्यालय ।
7.	मानक भवन भारतीय मानक ब्यूरो, कमरा नं. 250, मानक भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002	श्रीमती वीना कश्यप फोन 23230131/4438	मानक भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टैट, बहादुरशाह जफर मार्ग परिसर तथा आसपास के सभी कार्यालय ।
8.	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण सफदरजंग एयरपोर्ट, नई दिल्ली	श्री पी.आर.जायसवाल 24618271-75 एक्स. /556	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण नागर विमानन मंत्रालय तथा आसपास के सभी कार्यालय ।

क्र.सं.	प्रशिक्षण केंद्रों का नाम व पता	सहायक निदेशक	कार्यालय/भवन जहां के कर्मचारियो को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी
9.	उद्योग भवन, अंशकालिक प्रशिक्षण केंद्र, कमरा नं. 540, उद्योग भवन, नई दिल्ली	अंशकालिक अनुदेशक	उद्योग भवन
10.	चर्च रोड़, अंशकालिक प्रशिक्षण केंद्र, कमरा नं. 16, चर्च रोड़, नई दिल्ली	अंशकालिक अनुदेशक	वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लाक

प्रवेश की तिथियां

1-	केंद्रीय मंत्रालय, विभाग, अधीनस्थ कार्यालय	11-02-2008 एवं 12-02-2008
2-	उपक्रम/निकाय/निगम/बैंक के कर्मचारी	13-02-2008

यदि किसी कर्मचारी को उसके निकट के प्रशिक्षण केंद्र में स्थान उपलब्ध न होने के कारण प्रवेश नहीं मिल पाता है तो उसे सूची में दिए गए किसी भी केंद्र में प्रवेश के लिए भेजा जा सकता है। प्रशिक्षण में **प्रवेश पहले आओ पहले पाओ के आधार** पर दिया जाएगा।

उक्त प्राशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले कर्मचारियों के ब्यौरे निम्नलिखित प्रपत्र पर दिनांक 31-1-2008 तक इस कार्यालय को अवश्य भिजवा दिए जाएं। पत्र की एक प्रति संबंधित प्रशिक्षण केंद्र को प्रभारी सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि) को भी प्रेषित की जाएं। कृपया नामांकन निधारित प्रपत्र पर ही किया जाए तथा नामित करने वाले अधिकारी का नाम, कार्यालय का पूरा पता एवं टेलीफोन नं. का पत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाए ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।

कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु नामित किए जाने के लिए प्रपत्र

31-1-2008 को हिंदी टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारी		नामित कर्मचारियों का विवरण, नाम, पद व हिंदी में शैक्षिक योग्यता सहित				सुविधाजनक केंद्र
टंकण	आशुलिपि	प्रशिक्षण		नाम	पद	हिंदी में योग्यता
		टंकण	आशुलिपि			
1	2	3	4	5	6	7 8

नामित करने वाले अधिकारी का नाम, पदनाम.....

कार्यालय का नाम व पूरा पता, दूरभाष नं. सहित.....

सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को अपने सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में परिचालित करने का कष्ट करें तथा यह भी सुनिश्चित करें कि कर्मचारियों को अधिक से अधिक संख्या में प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए, नामित कर्मचारी कक्षाओं में निश्चित रूप से प्रवेश लें, और कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहें तथा अनिवार्य रूप से परीक्षा में भी सम्मिलित हों ताकि प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध सरकारी संसाधनों का पूर्ण सदुपयोग हो और निधारित समय में प्रशिक्षण कार्य संपन्न हो सके।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना माह जनवरी, 2008 की महत्वपूर्ण गतिविधियां

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

1. संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिश संख्या 16.7 (क) के अनुपालन में प्राज्ञोत्तर पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु अनुसंधान एवं विश्लेषण एकक द्वारा दिनांक 28, 29 व 30 जनवरी, 2008 को विषय विशेषज्ञों एवं विभागीय अधिकारियों की सहभागिता में तीन दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई ।
2. दिनांक 14-01-08 से 18-01-08 तक 314वीं गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।
3. दिनांक 17-01-08 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 55वीं बैठक आयोजित की गई ।
4. संयुक्त निदेशक (मुख्यालय) ने 11वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण जारी रखे जाने हेतु आई.आई.पी.ए., नई दिल्ली के अधिकारी के साथ निरीक्षण में सहयोग करने हेतु पूना का दौरा किया। इसी के साथ संयुक्त निदेशक(मुख्यालय), हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली द्वारा उप निदेशक (पश्चिम) के कार्यालय तथा प्रशिक्षण केंद्रों का निरीक्षण किया गया ।
5. भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, निगमों, निकायों और उपक्रमों को वर्ष 2008 में आयोजित होने वाले गहन हिंदी कार्यशाला, अभिमुखी कार्यक्रम और प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम संबंधी परिपत्र भिजवाए गए ।
6. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान एवं उप संस्थानों में गहन हिंदी भाषा प्रशिक्षण के प्रबोध, प्रवीण प्राज्ञ की तिमाही शुरू की गई ।

भाषा पत्राचार

1. सभी क्षेत्रों से प्राप्त उत्तर पत्रों के मूल्यांकन की व्यवस्था की गई तथा जांची गई उत्तर पुस्तिकाएं सभी संबंधित अधिकारियों को वापस भेजी गई ।
2. आई.आई.पी.ए. के अधिकारी ने भाषा पत्राचार पाठ्यक्रम एकक का निरीक्षण किया और 11वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण व्यवस्था पर विचार हेतु पत्राचार द्वारा प्रशिक्षण की संभावनाओं के अध्ययन के संबंध में एकक के अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की ।

गहन हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण

1. दिनांक 11-01-08 को आशुलिपि/टंकण प्रशिक्षण सत्रों का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया ।

हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम

1. हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम के वर्तमान 35वें सत्र के लिए भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, निगमों, निकायों और उपक्रमों से प्राप्त आवेदन पत्रों के आधार पर प्रशिक्षार्थियों को नामांकन हेतु पंजीकृत किया गया ।

हिंदी शिक्षण

1. हिंदी शिक्षण योजना के देशभर में स्थित विभिन्न केंद्रों पर प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ का जनवरी से मई, 2008 सत्र प्रारंभ किया गया ।
2. सीमा सुरक्षा बल, वेतन एवं लेखा प्रभाग, पुष्पा भवन, पुष्प विहार, नई दिल्ली में भाषा का नया केंद्र खोला गया ।
3. दिनांक 25-1-2008 को प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक मामलों के संबंध में उप निदेशक (मध्योत्तर) ने निदेशक महोदय द्वारा आयोजित बैठक में सहभागिता की ।
4. उप निदेशक (पश्चिम) का कार्यालय, हिंदी शिक्षण योजना, नवीं मुंबई द्वारा क्षेत्रीय समाचार बुलेटिन "पश्चिमांचल-हिंदी शिक्षण समाचार" का चौथा अंक प्रकाशित किया गया ।
5. क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्वोत्तर) में दिनांक 21-1-2008 से 25-1-2008 तक तथा क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व) में दिनांक 14-1-2008 से 16-1-2008 तक हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ का व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया ।
6. उप निदेशक (पूर्वोत्तर) के कार्यालय द्वारा दिनांक 7-1-2008 से 11-1-2008 तक इंडियन ऑयल रिफाइनरी, दिगबोई में पांच पूर्ण कार्य दिवसीय गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

7. क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व) द्वारा जनवरी से मई, 2008 सत्र के लिए काशीपुर गन एंड शेल फैक्टरी एवं बी॰एस॰एन॰एल॰, इण्टाली में 2 नए केंद्र एवं मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल का कार्यालय, कोलकाता में राजपत्रित अधिकारियों की एक कक्षा खोली गई ।

8. उप निदेशक (पूर्व) ने दिनांक 23-1-2008 को संपदा प्रबंधक कार्यालय, कोलकाता द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया एवं दिनांक 25-1-2008 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय सरकार) और दिनांक 31-1-2008 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की बैठकों में भाग लिया ।

परीक्षा

1. हिंदी शिक्षण योजना के देशभर में स्थित विभिन्न केंद्रों पर हिंदी टंकण/आशुलिपि परीक्षाएं आयोजित की गई ।

2. दिनांक 28-1-08 को हैदराबाद और कोलकाता में हिंदी प्राज्ञ गहन (विशेष) परीक्षा का आयोजन किया गया ।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना माह फरवरी, 2008 की महत्वपूर्ण गतिविधियां

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

1. दिनांक 18-02-2008 से 22-2-08 तक 315वीं गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । जिसमें 16 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

2. दिनांक 08-02-2008 से देशभर में प्रबोध गहन हिंदी परीक्षा का आयोजन किया गया तथा 11-02-08 से गहन प्रवीण पाठ्यक्रम आरंभ हुआ ।

3. निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने कोलकाता के प्रशिक्षण केंद्रों का निरीक्षण किया तथा टंकण/आशुलिपि (कंप्यूटर) प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया ।

4. संयुक्त निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने राजभाषा विभाग में संयुक्त सचिव (राजभाषा) की अध्यक्षता में दिनांक 18-02-08 को आयोजित बैठक में भाग लिया जिसमें हिंदी में सॉफ्टवेयर विकसित करने के संबंध में राजभाषा विभाग तथा सी-डेक के बीच करार किया गया ।

5. संयुक्त निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने दिनांक 27-02-08 को विज्ञान भवन में आयोजित केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया ।

भाषा पत्राचार

1. फरवरी माह की पाठ्य सामग्री सभी पंजीकृत प्रशिक्षार्थियों को उनके संपर्क अधिकारी के माध्यम से भेजी गई।

2. सभी क्षेत्रों से प्राप्त परीक्षा आवेदन पत्रों की जांच की गई तथा संभावित परीक्षा केंद्रों के अनुसार नामिनल रोल तैयार किए गए।

हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम

1. दक्षिण, पश्चिम, मध्योत्तर तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के कर्मचारियों को पाठ्य विवरण, परीक्षा आवेदन पत्र तथा प्रथम किट भिजवाई गई।

2. जुलाई, 2007 में आयोजित परीक्षा के प्रमाण-पत्र संबंधित कार्यालयों को भिजवाए गए।

गहन हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण

1. हिंदी टंकण की 2 कक्षाओं तथा आशुलिपि की एक कक्षा का संचालन किया गया।

2. दिनांक 09-05-2007, 27-07-07 एवं 18-10-07 को संपन्न टंकण परीक्षा के प्रमाण पत्र प्रशिक्षार्थियों के संबंधित कार्यालयों को भिजवाए गए ।

हिंदी शिक्षण योजना

1. नवंबर, 2007 में हुई हिंदी प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ परीक्षाओं से संबंधित प्रमाणपत्रों को संबंधित कार्यालयों को भेजा गया ।

2. वेतन तथा लेखा कार्यालय में जाकर बजट के संबंध में मिलान का कार्य किया गया ।

3. उप निदेशक (पश्चिम) ने दिनांक 12 से 15 फरवरी, 2008 तक पणजी(गोवा) केंद्र की कक्षाओं का निरीक्षण किया तथा क्षेत्रीय कार्यावन्यन कार्यालय द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लिया । ■

विविध

बेंगलूर दूरसंचार जिला कार्यालय की वेबसाईट को हिंदी में जारी करना

भारत सरकार के राजभाषा नियमों और वार्षिक लक्ष्य के तहत भारत सरकार की सभी संस्थाओं की वेबसाईट के सभी पृष्ठ द्विभाषी - हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में होने चाहिएं। हमें आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि **(कर्नाटक परिमंडल का) बेंगलूर दूरसंचार जिला कार्यालय भारत का पहला दूरसंचार जिला है, जिसकी पूरी वेबसाईट द्विभाषी है**। यह एक बड़ी उपलब्धि है। बेंगलूर दूरसंचार जिला के प्रभावी प्रधान महाप्रबंधक और उनकी टीम **इस शानदार उपलब्धि** के लिए बधाई के पात्र हैं। हमारी बधाई और शुभकामनाएं।

आज दिनांक 9-1-08 को बेंगलूर दूरसंचार जिला कार्यालय द्वारा अपनी वेबसाईट के हिंदी रूप का विमोचन किया गया है। अधोहस्ताक्षरी भी इस महत्वपूर्ण अवसर पर उपस्थित थे।

एन.एच.पी.सी. द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से एन.एच.पी.सी. द्वारा दिनांक 07-12-2007 को फिक्की आडिटोरियम, नई दिल्ली में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का शुभारम्भ निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री एस.के. गर्ग व आमंत्रित प्रतिष्ठित कवियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री एस. के. चतुर्वेदी ने कवि सम्मेलन में पधारे देश के प्रतिष्ठित कवियों, अतिथियों एवं श्रोताओ का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में श्री चतुर्वेदी ने कहा कि कविता में मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं और आकांक्षाओं की अत्यन्त सशक्त एवं प्रभावी अभिव्यक्ति होती है। उन्होंने कहा कि इस तरह के साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजन हमें नई ऊर्जा और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। इस सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना तथा हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले महान साहित्यकारों को नमन करना है।

इस अवसर पर निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री एस.के. गर्ग ने अपने संबोधन में एन.एच.पी.सी. द्वारा जल विद्युति उत्पादन के माध्यम से राष्ट्र की प्रगति में किए जा रहे योगदान का उल्लेख किया तथा विद्युत उत्पादन एवं राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए निरंतर प्रयासरत रहने के संकल्प को दोरहाया। डॉ. अशोक चक्रधर, श्री उदय प्रताप सिंह, श्री हरिओम पंवार, श्री ओम प्रकाश आदित्य, श्री महेन्द्र अजनबी, श्रीमती ममता शर्मा, श्री अरुण जैमिनी व श्री दीपक गुप्ता जैसे प्रतिष्ठित कवियों ने इस सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। अपने काव्य पाठ से इन कवियों ने श्रोताओं को कभी हँसाया, तो कभी व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विडम्बनाओं और सामयिक महत्व के ज्वलंत मुद्दों पर सोचने को विवश किया। इस अवसर पर सभी काव्य रस जैसे मूर्त रूप में मंच पर साकार हो गए थे। सभी कवियों ने अपने काव्य पाठ से इस सम्मेलन को गरिमामय एवं सार्थक बनाया। सम्मेलन के समापन पर श्री उपेन्द्र राय, महाप्रबंधक (मा.सं.वि., का.सं.व रा. भा.) ने आमंत्रित कविगण एवं विशिष्ट अथितियों का आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर एन.एच.पी.सी. परिवार के सदस्यों के साथ-साथ संसदीय राजभाषा समिति तथा अन्य उपक्रमों व कार्यालयों से आए अतिथि उपस्थिति थे। यह आयोजन बहुत ही सफल एवं उत्साहवर्धक रहा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) व कवि सम्मेलन का संचालन प्रतिष्ठित कवि डॉ. अशोक चक्रघर ने किया।

दिल्ली में आयोजित 30वें नागरी लिपी सम्मेलन

सूचना प्रोद्यौगिकी के प्ररिप्रेक्ष्य में नागरी लिपि के मानकीकरण पर गंभीर चिंतन मनन:

नागरी लिपि परिषद् का 30वां अखिल भारतीय सम्मेलन दिनांक 15 व 16 दिसंबर 2007 को, गांधी दर्शन राजघाट, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। जिसमें नागरी लिपि के सामने उपस्थित नई चुनौतियों पर गंभीर चिंतन मनन किया गया। सम्मेलन का उदघाटन प्रसिद्ध गांधीवादी और विनोबाजी की परम अनुयायी संसद सदस्या डॉ. निर्मला देशपांडे ने किया।

अध्यक्षता भूदान यज्ञ बोर्ड के अध्यक्ष और नागरी लिपि के अध्यक्ष श्री सी. वी. चारी ने की।

सुश्री निर्मला देशपांडे ने परिषद् के कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह एक ऐसी संस्था है जो देश-विदेश में नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य कर रही है। आचार्य विनोबा भावे इस कार्य को राष्ट्रीय हित में महत्वपूर्ण मानते थे। निर्मलाजी ने इन सम्भावनाओं पर विचार करने का आवाहन किया कि क्या चीनी जैसी चित्र लिपि वाली भाषा के लिए भी नागरी लिपि उपयोगी लिपि सिद्ध हो सकती है। श्री सी. वी. चारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अब विश्व की निगाहें नागरी लिपि जैसी वैज्ञानिक और समर्थ लिपि पर लगी है, इसलिए प्रथम बार न्यूयार्क सम्मेलन में इस लिपि पर चर्चा हुई।

परिषद् के महामंत्री डॉ. परमानंद पांचाल ने परिषद् द्वारा किए गए कार्यो का ब्यौरा देते हुए कहा कि आज विश्व में रोमन और अंग्रेजी के बढ़ते हुए वर्चस्व के सामने नागरी लिपि एक असहाय की भांति खडी है। उन्होंने कहा कि नागरी जैसी सक्षम लिपि अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं "दीये की और तूफान की"। आज सर्वत्र इलोक्ट्रोनिक मीडिया व समाचार पत्रों में रोमन लिपि आई है व विज्ञापन आदि रोमन लिपि में दिए जा रहे हैं। हमें प्रसन्नता हैं कि इस वर्ष विश्व हिंदी सम्मेलन में देवनागरी लिपि को विशेष स्थान दिया गया। नागरी लिपि परिषद पूर्वोत्तर भारत की बोलियों को नागरी लिपि में लिखने की सम्भावनाओं पर विचार करने कि लिए शीघ्र ही एक सम्मेलन शिलांग में आयोजित करने पर विचार कर रही है।

सम्मेलन में प्रख्यात कवि पूर्व संसद सदस्य एवं मंत्री श्री बालकति बैरागी भी उपस्थित थे। उन्होंने 16 दिसम्बर के सत्र में अपनी मधुर रचनाओं से श्रोताओं से रस-विभोर किया और आवाहन किया कि नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार जैसे राष्ट्रीय कार्यो में सभी भारतवासियों को निष्ठा से भाग लेना चाहिए।

पूर्व संसद सदस्य एवं हिन्दी विद्वान डा. रत्नाकर पाण्डे ने अपने ओजस्वी भाषण में नागरी लिपि को भारत की अस्मित्ता बताते हुए इसके सर्वत्र प्रचार-प्रसार के लिए अभियान छेड़ने का आवाहन किया और प्रस्ताव किया कि मोरीशस स्थित विश्व हिन्दी सचिवालय में विनोबा भावे पीठ (चेयर) स्थापित की जाए।

इस अवसर पर वर्ष 2007 के 'विनोबा नागरी पुरस्कार सुश्री चेन्नम्मा हेलीकेरी, श्री एम. पियोंग तेमेजन जामीर एवं श्री एन. पुरूषोत्तम मल्लया को दिल्ली सरकार के श्रम एवं उद्योग मंत्री श्री मंगतराम सिंघल द्वारा प्रदान किए गए। इस सम्मेलन के अवसर पर परिषद् द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी संसद सदस्या डा. निर्मला देशपांडे द्वारा किया गया।

इस दो दिवसीय सम्मेलन में चार संगोष्ठियाँ आयोजित की गई, जिनमें देश के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया। गोष्ठी के विषय थे-

(1) नागरी एक लिपि श्रेष्ठ लिपि; (2) लिपि रहित बोलियों और भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि; (3) सूचना प्रोद्योगिकी और नागरी लिपि तथा; (4) विज्ञापन में नागरी लिपि एवम् छोटे पत्र व पत्रिकाएं।

इस सम्मेलन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें सूचना प्रौद्योगिकी के युग में नागरी लिपि के समक्ष चुनौतियों पर गंभीरता से चितंन-मनन किया गया और नागरी लिपि के मानकीकरण की समस्या को अतिशीघ्र हल करने पर बल दिया गया। कंप्यूटर आज की अनिवार्यता है, इसलिए देवनागरी लिपि को इसके उपयुक्त काम करने में सक्षम बनाया जाना, हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस संगोष्ठी में डा. एस. एस. अग्रवाल, निदेशक, के.आई.आई.टी. कालेज, गुडगाँव, प्रोफेसर के. के. गोस्वामी, बालेन्दु दाधीच, उमेश चंद त्यागी, सुरजीत सिंह जोबन, डा. दिनेश जैसे प्रबुद्ध विद्वानों ने विशेष रूप से भाग लिया। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री बलदेवराज कामराह ने आगुन्तकों को धन्यवाद देते हुए नागरी लिपि का विकास कंप्यूटर के प्ररिप्रेक्ष्य में करने की महती आवश्यकता बताई।

सम्मेलन की एक विशेषता यह रही की एक कविगोष्ठी में कवियों ने अपनी सरस कविताओं का पाठ किया। प्रमुख कवि श्री बाल कवि बैरागी ने अपनी ओजस्वी कविताओं से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रमुख कवियों में सर्वश्री बाबा कानपुरी, सरदार सुरजीत सिंह जोवन, और बेनी कृष्ण शर्मा, सागर सुद, डा. ज्ञानप्रकाश सैनी आदि थे।

राष्ट्रगान के साथ सम्मेलन का समापन्न हुआ।

प्रस्तुतः

डॉ. परमानन्द पांचाल

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती का प्रौद्योगिकी विशेषांक (अप्रैल -जून, 2007) में आधुनिक प्रौद्योगिकी से संबधित हिंदी के उत्कृष्ट लेखों का एक ही स्थान पर देखकर बड़ी खुशी हुई । इस अंक में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई गई । श्री के. विनोद के लेख राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए साफ्टवेयर और केवल कृष्ण के लेख कंप्यूटर पर हिंदी भाषा संसाधन के लिए यूनिकोड का प्रयोग में उपयोगी जानकारियां दी गई हैं । ब्लूटुथ टेक्नोलोजी पर दी गई जानकारी भी महत्वपूर्ण है । प्रौद्योगिकी से संबंधित विद्वानों द्वारा हिंदी भाषा में लिखित लेखों को राजभाषा भारती के इस अंक में पाकर अपार हर्ष हो रहा है । इस संग्रहणीय विशेषांक के लिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ ।

–रमाकान्त चौधरी,
हिंदी अधिकारी, सर्वेक्षण अभिकल्प एवं अनुसंधान प्रभाग, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन,
भारत सरकार महलानोबिस भवन, 164, गोपाललाल ठाकुर रोड, कोलकाता-700108

राजभाषा भारती का 117वाँ अंक 'प्रौद्योगिकी विशेषांक' के रूप में पत्रिका के आधुनिक कलेवर को सहज ही पहचाना जा सकता है । आधुनिकता की इस मंजिल तक पहुँचने का पत्रिका का सफर एक लंबे स्वप्न के साकार होने जैसा है । पत्रिका की विषय वस्तु वास्तव में आधुनिक ज्ञान का महासागर है । इसमें न केवल हिंदी के साफ्टवेयर के बारे में विस्तृत जानकारी है, अपितु सूचना और प्रौद्योगिकी से संबंधित अन्य विद्याओं जैसे ब्लूटुथ इत्यादि के बारे में सांगोपांग जानकारी है । इसी प्रकार बैंकिंग सेवा, कृषि क्षेत्र और मोबाईल सेवा के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति और उसमें सूचना और प्रौद्योगिकी की भूमिका पर सारगर्भित जानकारी दी गई है ।

राजभाषा भारती के कुशल प्रकाशन एवं ज्ञानोपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) खड़की कार्यालय की और से साधुवाद ।

–बापूसाहेब शिवाप्पा कोरे,
हिंदी अधिकारी, कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.), लेखा कार्यालय,
गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411003

'राजभाषा भारती' पत्रिका का अंक-117 (अप्रैल -जून, 2007) में अन्तर्विष्ट सारी उद्गार स्वरूप साम्रगी उच्चत्तर स्तरीय सूरूचिपूर्ण उपयोगी और ज्ञानवर्धक संग्रहणीय है । 'मोबाईल सेवा में हिंदी की स्थिति एवं संभावनाएं' श्री विजय प्रभाकर कांबले का लेख-जिसमें मल्टीमीडिया मैसेजिंग सर्विस (एमएमएस) विडियों मैसेजिंग, संगीत, गेम समाचार, चित्रपट, मनोरंजन आदि सेवाओं का आस्वाद मोबाईल इंटरनेट द्वारा प्रस्तुत किया जाना, मोबाइल के क्षेत्र में संचार मीडिया तथा मनोरंजन व्यवसाय का मिश्रण, भारत में विदेशी कंपनियों के अपने नेटवर्क में वृद्धि मोबाईल सेवा में भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान प्रदान किया गया है ।

'कमाल की है ब्लुटूथ टेक्नोलॉजी' – श्री आभास सुखर्जी का लिखा गया लेख उपकरणों आदि को बिना तारों के आपस में जोड़ने की तकनीक का नाम सम्राट हेरॉल्ड के नाम पर ब्लूटुथ टैक्नोलॉजी केबल प्रतिस्थापन (रिप्लेसमेंट) टेक्नोलॉजी का ही दूसरा नाम है, लेकिन, एस. आई. जी. द्वारा इस तकनीक में सुधार लाने तथा इसकी गुणवत्ता में निरन्तर सुधार लाए जाने के सार्थक प्रयास हैं ।

प्रबुद्ध संपादक ने प्रौद्योगिकी विशेषांक को व्यावहारिक रूप प्रदान करने का सफल व सार्थक प्रयास किया है । पत्रिका का अंतिम आवरण पृष्ठ 'राजभाषा भारती' के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना पूर्ण व्यापक विवरण प्रस्तुत करती है ।

–गुलशन लाल चोपड़ा,
उप निदेशक (रा. भा.) विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, बायोटेक्नोलॉजी विभाग,
ब्लाक -27वां तल, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

राजभाषा भारती का प्रौद्योगिकी विशेषांक 'राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए सॉफ्टवेयर' के बारे में दी गई विस्तृत जानकारी बहुत उपयोगी है । इसी प्रकार कंप्यूटर पर हिंदी भाषा संसाधन एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का

अनुप्रयोग हिंदी भाषा की बदली हुई भूमिका के लिए मार्गदर्शक है । इस अंक में परंपरा से अलग हिंदी का एक नया रूप देखने को मिला है । समय-समय पर इस प्रकार के विशेषांक का प्रकाशन लाभदायक होगा ।

–डॉ. पन्ना प्रसाद,

सहायक निदेशक क्षेत्रीय कार्यालय (उड़ीसा), कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
पंचदीप भवन, जनपथ यूनिट-9, भुवनेश्वर-22

'राजभाषा भारती' का 117 वां अंक 'प्रौद्योगिकी विशेषांक' राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित विशेषांकों में विशिष्ट स्थान रखता है । यह इस संक्रमण काल, जब कार्यालयों में परम्परागत कार्यालयीन पद्धति का स्थान सूचना प्रणाली ले रही है तथा नित नए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप कार्यालयीन कार्य-संस्कृति प्रभावित हो रही है, के लिए उपयोगी व सूचना परक है । प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो अविष्कार हो रहे हैं वे विभिन्न भाषाभाषियों के द्वारा किए जा रहे हैं । प्रौद्योगिकी की जानकारी के प्रचार-प्रसार में तत्सम शब्दों व संपूर्ण शब्दानुवाद के स्थान पर संप्रेषण पर अधिक केंद्रित होना स्वाभावकि है । लेखकों ने यह भी ध्यान रखा है कि कहीं तत्सम अनुवाद बोझिल न बने और जहां उन्हें यह लगा कि बोझिल लग सकती है वहां पाठकों की सुविधा के लिए अंग्रेजी में या अंग्रेजी शब्द को देवनागरी में लिख दिया । संक्रमण काल में यह आवश्यक भी लगता है क्योंकि बारबार प्रयोग से ही नए शब्दों को आत्मसात कर पाएंगे । प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी लेखक हिंदी में पाठक तक वह सरलता से संप्रेषित कर पाए हैं जो वे चाहते थे । इससे आशा और भी बलवती हुई है कि आने वाले वर्षों में हिंदी इसी प्रकार के प्रयासों से अन्य सभी क्षेत्रों में छा जाएगी और "वैज्ञानिक"व "विधि" के क्षेत्रों में भी हिंदी सक्षमता से विचार विनियम कर पाएगी । हिंदी के बढ़ते कदम संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय तक पहुँच चुके हैं । वह दिन दूर नहीं जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भी अधिकारिक भाषा होगी ।

–मेहरबान सिंह नेगी,

संपादक, लेखापरीक्षा-प्रकाश, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली -2

'पत्रिका' में प्रकाशित सचित्र लेख 'अंतरिक्ष से उपग्रह को वापस लाया भारत' अंतरिक्ष विज्ञान में देश की उपलब्धियों और प्रौद्योगिकी क्षमताओं के नवीन प्रतिमानों व उज्जवल भविष्य का दिग्दर्शन कराता है । श्री के. विनोद के "राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराये गये साफ्टवेयर" नामक लेख के द्वारा सरकारी कार्यालयों में उक्त सॉफ्टवेयरों की मदद से हिंदी कार्यन्वयन को सुविधाजनक, सरल, प्रभावी व सर्वग्राह्य बनाना निश्चय ही सहायक होगा । इस प्रकार के लेखों को नियमित रूप से प्रकाशित करने से इस भ्रांति का भी निराकरण हो सकेगा कि कंप्यूटर के आने से कार्यालयों में कदाचित हिंदी का प्रगति अवरूद्ध हो गया है । प्रौद्योगिकी विशेषांक निकालने का साधुवाद ।

–अजय दत्त गौड़,

हिंदी प्रभारी भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय : 572, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001

"राजभाषा भारती" का 117वां अंक "प्रौद्योगिकी विशेषांक" में निहित समस्त शोधपरक सामग्री पठनीय, सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी है । इसमें प्रकाशित लेख एवं रचनाओं में पाठकों को वैज्ञानिक क्षेत्रों में हो रहे अनुसंधान संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध कराई गई हैं, जो कि अत्यन्त सराहनीय है ।

मुझे विश्वास है कि उक्त विशेषांक के माध्यम से आम जन भी प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक विकास और इस क्षेत्र में होने वाले नित नए परिवर्तनों से लाभान्वित हो सकेगा । मैं पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देती हूँ ।

–मधु शर्मा,

निदेशक (राजभाषा) भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग, नई दिल्ली

"प्रौद्योगिकी विशेषांक" निश्चय की ज्ञानवर्द्धक, पठनीय और संग्रहणीय है । ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में तकनीकी विषयों पर लिखे मौलिक लेख हिंदी में पढ़कर प्रसन्नता हुई । इससे यह भ्रम दूर हो जाता है कि हिंदी में प्रौद्योगिकी विषयों पर लिखना कठिन है । आप इस क्रम को जारी रखिए । तकनीकी संस्थानों और विश्वविद्यालयों में हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को इनसे अवश्य सहायता मिलेगी । सर्वश्री के. विनोद, केवल कृष्ण, विजय प्रभाकर काम्बले, जयन्ती प्रसाद नौटियाल, राधाकांत अग्रवाल तथा सुदेश तिवारी तथा अन्य सभी 17 लेखकों के प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों पर लिखे उच्च कोटि के हैं ।

कुशल संपादन के लिए बधाई ।

–डॉ. परमानंद पांचाल,

232-ए, पाकेट-1, मयूर बिहार फेस-1, दिल्ली-110091

प्रौद्योगिकी विशेषांक में प्रकाशित लेख "राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए सॉफ्टवेयर" बहुत ही ज्ञानवर्द्धन व उपयोगी लगा । श्री विजय प्रभाकर काम्बले जी द्वारा लिखित लेख "मोबाइल सेवा मे हिंदी की स्थिति एवं सम्भावनाएं" एक नई जानकारी लेकर आया । इससे मोबाइल उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा । प्रत्येक अंक की भाँति पत्रिका की "सम्पादकीय" प्रेरणाप्रद लगी । पत्रिका की पृष्ठ सज्जा एवं छपाई उत्कृष्ठ स्तर की है । कुशल सम्पादन के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें ।

–वी. आर. अम्बेडकर,
उप स्टेशन प्रबन्धक द. प. रेवले निम्बाल, ताल्लुक -इण्डि, जिला बीजापुर, कर्नाटक-586211

"राजभाषा भारती " का प्रौद्योगिकी विशेषांक (अप्रैल-जून, 2007) प्राप्त कर आपको बधाई देने का मन करता है । राष्ट्र के भौतिक उत्कर्ष के लिए प्रौद्योगिकी का स्थान सर्वोच्च है । इसके बिना कोई भी देश विकसित देशों की अग्रपंक्ति में स्थान नहीं पा सकता । आपने राजभाषा हिंदी के माध्यम से ऐसे अद्यतन चर्चित विषय पर विशेषांक प्रस्तुत कर अत्यंत सराहनीय कार्य किया है । हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य के लेखन के इतिहास में इस विशेषांक का स्थान सदैव स्मरणीय रहेगा । विशेषांक की सामग्री जितनी श्लाधनीय है उतनी ही उत्कृट है उसकी प्रस्तुति और छपाई -सफाई । मैं कामना करता हूँ कि आपके सुयोग्य सम्पादन में ऐसे ही उल्लेखनीय विषयों पर राजभाषा भारती विशेषांक प्रस्तुत करती रहेगी ।

–डॉ. भगवानशरण भारद्वाज,
चित्रकूट, 43, सिन्धु नगर, बरेली, उत्तर प्रदेश-243005

"राजभाषा भारती" अंक 117 पत्रिका अनूठी है । पत्रिका में श्री केवल कृष्ण का लेख ''कंप्यूटर पर हिंदी भाषा संसाधन के लिए यूनिकोड का प्रयोग'' समयोचित वांछित है । इसी तरह मोबाइल सेवा में शनैः शनैः बढ़ना निरंतर जारी है तथा उत्तरोत्तर आगे भी निस्संदेह ऐसी वृद्धि बनी रहेगी । सूचना, प्रौद्योगिकी , संचार माध्यम, ऊर्जा एवम् पर्यावरण आदि समसामयिक विषयों से भरा यह विशेषांक उत्कृष्ट विद्वानों के सारगर्भित विचारों से पाठकों को अवगत कराने में बेजोड़ है ।

–सौ. श्वेता नि. अग्रवाल,
द्वारा अग्रवाल 39 हाऊस, रतनलाल प्लॉट चौक, अकोला

"राजभाषा भारती" अकं 117 "प्रौद्योगिकी " के विविध् पक्षों पर विशेषांक प्रकाशित कर आपने समय की मांग की पूर्ति की है । सभी सामग्री पठनीय है ।

–कैलाश चंद्र भाटिया नंदन,
भारती नगर, मैरिस रोड, अलीगढ़ 202001

राजभाषा भारती प्रौद्योगिकी विशेषांक में प्रौद्योगिकी पर इतनी गंभीर एवं विविध सामग्री आपने बड़े परिश्रम से इकट्ठी की है । सरकारी औपचारिक काम से ऊपर उठकर आपने इसे संदर्भ ग्रंथ सा बना दिया । साथ ही तकनीकी भाषा के रूप में हिंदी को परिमार्जित भी किया है । इस आदर्श प्रस्तुति पर पुनः अभिनंदनम ।

–डॉ. एस. ई. विश्वनाथ अय्यर,
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय, 24/1129, पदमपुरम,
ज्योतिपुरम लेमिन, बलिय चाला-तिरूवनंतपुरम-36

"राजभाषा भारती" का 116वां अंक (जनवरी -मार्च, 2007) पत्रिका में समाविष्ट सभी सामग्री पठनीय, ज्ञानवर्द्धक एवं उच्च स्तरीय है । तथापि डॉ. आर. पी. सिंह का लेख "वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग, समस्याएं और समाधान", श्री प्रशांत कुमार मिश्र का लेख "एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक- सेवक" तथा डॉ. एन. एस. शर्मा का लेख "हिंदी साहित्य के संत कवियों की प्रेम साधना" विचार प्रदान एवं चिन्तनशील लेख है । राजभाषा गतिविधियों का विस्तृत विवरण पत्रिका में चार-चाँद लगाता है ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन, संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है । पत्रिका की अविराम प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

–उपमहालेखाकार (प्रशासन),
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का कार्यालय, मध्य प्रदेश, 'लेखा भवन', ग्वालियर-474020

"राजभाषा भारती" का 117 वां प्रौद्योगिकी विशेषांक है और इसमें दिए गए लेखों से सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकों आदि में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल, अनुवाद के लिए कंप्यूटर के प्रयोग, ब्लूटुथ टेक्नॉलोजी, नैनो प्रौद्योगिकी आदि के बारे में अच्छी जानकारी मिली। इस अंक से यह भी पता लगता है कि तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के विकास का हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं से कितना गहरा संबंध है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए बधाई।

–डॉ. मुक्ता,

प्रधानाचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, भिवानी-125021 (हरियाणा)

हिंदी की अमर ज्योति की ज्वाला "राजभाषा भारती" को नागालैंड के आंगन तक बिखेरने हेतु भारती परिवार को नमन करते हुए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ। भारती की ज्योति जो इस परिवेश में विकीर्ण हो रही है। इसके मूल में भारती परिवार की भूमिका अत्यन्त सराहनीय है। उनकी सेवा भावना की उत्कृष्टता, शैक्षणिक जागरुकता एवं प्रगतिशील क्रियाशीलता की रवि-रश्मियों से विभासित यह राजभाषा भारती हम सबों का हार्दिक अभिनन्दन करने को प्रस्तुत रहती है।

हिंदी के सुखद अतीत के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए यही चाहूँगा कि वर्तमान अपने अतीत के आलोक में अपने भविष्य का निर्माण करे।

साधुवाद,

–अशोक कुमार सिंह,

वरिष्ठ संयंत्र अभियंता, यांत्रिक/प्रभारी राजभाषा, नागालैंड पल्प एंड पेपर कंपनी लिमिटेड,
पोस्ट-पेपर नगर, जिला-मोकोक चुंग, नागालैंड-7798623

"राजभाषा भारती" का प्रौद्योगिकी विशेषांक (अप्रैल-जून, 2007) अंक में आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान और तकनीक पर आधारित उत्कृष्ट आलेख प्रकाशित हुए हैं जो हिंदी के शब्द-सामर्थ्य को रेखांकित करते हैं। श्री केवल कृष्ण के आलेख से यूनिकोड के संबंध में विस्तृत जानकारी मिलती है। श्री के. विनोद, श्री राजेंद्र सिंह, श्री रवि दिवाकर गिरहे के आलेख संचार के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम आविष्कारों पर प्रकाश डालते हैं जो हिंदी पाठकों के मानसिक-क्षितिज का विस्तार करते हैं।

–डॉ वीरेन्द कुमार सिंह,

उप निदेशक (रा. भा.), केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, जन संसाधन मंत्रालय,
"भूजल भवन" एन.एच.4, फरीदाबाद-121001

"राजभाषा भारती" अंक 117 में प्रकाशित सभी रचनाएं सराहनीय हैं। इसमें श्री केवल कृष्ण का लेख "कंप्यूटर पर हिंदी भाषा संसाधन के लिए यूनिकोड का प्रयोग" और श्री विजय प्रभाकर कांवले का लेख "मोबाईल सेवा में हिंदी की स्थिति एवं संभावनाएं पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

–डी.के. माथुर,

कल्याण अधिकारी, भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान

राजभाषा भारती अंक-117, प्रौद्योगिकी विशेषांक में प्रकाशित सामग्री इस विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अतीव उपयोगी होगी, ऐसा विश्वास है। इस बहुआयामी पत्रिका के समावेश से यह पुस्तकालय अधिक समृद्ध और उपयोगी हुआ है।

–नन्द किशोर,

पुस्तकालयाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, (ए.आई.बी.ए.एस.), एमिटी परिसर,
शिक्षा विभाग सैक्टर-44, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201303

प्रौद्योगिकी-विशेषांक बहुत ही अच्छा अंक था। बहुत ही उपयोगी जानकारी इस अंक से मिली।

–रामगोपाल राही,

गणेशपुरा-लाखेरी-323615, जिला बूंदी (राजस्थान)

राजभाषा भारती अंक-116 विविधता से भरपूर है। विभिन्न शीर्षकों यथा-चिंतन, प्रशासनिक, साहित्यिकी, पुरानी यादें नए परिप्रेक्ष्य, आर्थिक एवं भूगोलिक में समाविष्ट सामग्रियां सूचनाओं से भरपूर हैं। संपादकीय कौशल से पत्रिका में निरंतर निखार आ रहा है।

–ललन चतुर्वेदी,

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची-835303

MGIPRRND—1752 HA/08—5,000

राजभाषा विभाग द्वारा गोवा में आयोजित पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोच्ची की रजत जंयती राजभाषा समारोह का उद्घाटन करती हुई भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी. वी. वल्सला जी कुट्टी ।

पं. सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुपालन में राजभाषा हिंदी के प्रसार और विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में इसके प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है । वर्ष 2008-09 का वार्षिक कार्यक्रम इसी क्रम में जारी किया जा रहा है ।

सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किंतु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं । सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है किंतु अभी भी बहुत सा काम अंग्रेजी में हो रहा है । लक्ष्य यह है कि सरकारी काम-काज में मूल टिप्पण और प्रारूपण के लिए हिंदी का ही प्रयोग हो । यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा । कहने की आवश्यकता नहीं कि जनता की भाषा में सरकारी काम-काज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी ।

वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय हैं :-

- यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के सात खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए ।
- कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए ।
- संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें ।
- हिंदी, हिंदी टंकण/आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जा सके ।
- राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अधिक अच्छी तरह निभा पाएं ।
- मंत्रालय/विभाग अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें ।
- संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए । जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए मंत्रालय/विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं ।

सचिव, भारत सरकार,
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय

मार्च, 2008

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।